श्री सिद्धचक्र

महामण्डल विधान

रचनाकार

आचार्य गुप्तिनंदी

श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान रचनाकार - आचार्य गुप्तिनंदी

धर्मतीर्थ पर पंचकल्याणक महोत्सव में – आचार्य गुप्तिनंदी गुरुदेव सूरिमंत्र प्रदान करते हुए

धर्मतीर्थ पर पंचकल्याणक महोत्सव में - आचार्य गुप्तिनंदी गुरुदेव सूरिमंत्र प्रदान करते हुए

श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान

आशीर्वाद

गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव
वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव

रचनाकार
आचार्य गुप्तिनंदी

प्रकाशक
श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन
C/o धर्मराजश्री तपोभूमि दिगम्बर जैन ट्रस्ट, धर्मतीर्थ
पोस्ट-धर्मतीर्थ मार्ग, कचनेर अतिशय क्षेत्र के पास
पैठण-तालुका, जिला-छः संभाजी नगर (महाराष्ट्र)
www.jainacharyaguptinandiji.org
E-mail : dharamrajshree@gmail.com

पुस्तक का नाम : श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान

आशीर्वाद : गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव
: वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव

रचनाकार : आचार्य गुप्तिनंदी

सर्वाधिकार सुरक्षित : रचनाकाराधीन

प्रकाशन वर्ष : 2023

संस्करण : प्रथम 1000

प्रकाशक : श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
Email : dharamrajshree@gmail.com

प्राप्ति स्थान
1. प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव ससंघ
2. श्री धर्मतीर्थ, औरंगाबाद (महाराष्ट्र) 9421503332
3. श्री नितिन नखाते, नागपुर, 9422147288
4. श्री राजेश जैन (केबल वाले), नागपुर 9422816770
5. श्री रमणलाल साहू जी, औरंगाबाद मो. 9823182922

मुद्रक : राजू ग्राफिक आर्ट, जयपुर Mob. : 9829050791
Email : rajugraphicart@gmail.com

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पेज नं.
1.	मेरा आशीर्वाद गणधराचार्य कुन्थुसागर	4
2.	शुभाशीर्वाद व शुभकामनायें आचार्य कनकनन्दी	5
3.	णमो सिद्धाणं प्रज्ञाश्रमण आचार्य देवनन्दी	6
4.	पासवर्ड है विधान आचार्य गुणधरनन्दी	7
5.	सिद्धचक्र व्रत विधान विधि आचार्य गुप्तिनंदी	8
6.	सर्वकार्य सिद्धि प्रदाता श्री सिद्धचक्र विधान आचार्य सुयशगुप्त	21
7.	विधानों का राजा आचार्य चन्द्रगुप्त	23
8.	जिन भक्ति मुक्ति का कारण मुनि विमलगुप्त	24
9.	धर्मतीर्थ सम सुन्दर विधान गणिनी आर्यिका क्षमाश्री माताजी	25
10.	सिद्धचक्र की महिमा गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी	27
11.	सरल, रुचिकर श्री सिद्धचक्र विधान आर्यिका सुखदमति माताजी	31
12.	सर्व सुखदायक सिद्धचक्र विधान क्षुल्लक धर्मगुप्त	32
13.	मधुर व अर्थपूर्ण है विधान क्षुल्लक शांतिगुप्त	33
14.	धन्य हो गयी कलम क्षुल्लिका धन्यश्री माताजी	34
15.	धर्मतीर्थ का उपहार क्षुल्लिका तीर्थश्री माताजी	35
16.	कविवर 'आचार्य गुप्तिनंदीजी' की रचनाओं में शिरोमणी रचना- श्री सिद्धचक्र विधान प्रदीप कुमार जैन 'मधुर' कुसुंबा	36
17.	मेरे गुरु मेरे भाग्य विधाता पं.दीपक कुमार उपाध्ये	37
18.	पुराण सिद्ध - श्री सिद्धचक्र चंद्रकांत गुंडप्पा पंडित, इंडी (कर्नाटक)	39
19.	श्री सिद्धाचक्राभिषेक श्री सिद्धचक्र यन्त्र का अभिषेक पाठ भट्टारक श्री शुभचंद्र प्रणीत	40
20.	सिद्धभक्ति (प्राकृत)	43
21.	विनय पाठ	44
22.	पूजा आरंभ (हिन्दी)	45
23.	श्री नित्यमह पूजा ग. आर्यिका राजश्री माताजी	50
24.	ऋद्धि मंत्र	54
25.	श्री विनायक यंत्र पूजा	55
26.	श्री सिद्धचक्र यंत्रोद्धार सिद्ध पूजा	62
27.	सिद्धचक्र समुच्चय पूजा	63
28.	श्री सिद्धचक्र विधान- आठ गुण सहित प्रथम पूजा	73
29.	अथ षोडश गुणसहित द्वितीय पूजा	77
30.	अथ बत्तीस गुणसहित तृतीय पूजा	83
31.	चौंसठ गुण सहित चतुर्थ पूजा	92
32.	128 गुणसहित पञ्चम पूजा	105
33.	256 गुण सहित षष्ठम पूजा	122
34.	512 गुण सहित सप्तम पूजा	152
35.	1024 गुण सहित अष्टम पूजा	214
36.	बड़ी जयमाला	334
37.	प्रशस्ति	337
38.	सिद्धचक्र चालीसा	339
39.	सिद्धचक्र विधान की आरती	341
40.	समुच्चय अर्घ	342
42.	शांतिपाठ (हिन्दी), विसर्जन पाठ	343-344

मेरा आशीर्वाद

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि हमारे शिष्य प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी ने भक्तों के धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की सिद्धी के लिए ''सिद्धचक्र महामण्डल विधान'' की रचना की है। वह भी हिन्दी राष्ट्र भाषा में तथा गीता, नरेन्द्र, शम्भु, दोहा आदि सुन्दर छंदों में अत्यन्त सरल एवं सुबोध भाषा में लिखा है।

यह कृति दिगम्बर जैन श्रावक एवं साधुओं के लिए विशेष पुण्य के सम्पादन हेतु सहायक कारी है, साथ ही परम्परा से मोक्ष का भी कारण है।

जैन परम्परा में सिद्धचक्र आराधना का विशष प्रभाव है, भक्त लोग तीनों अष्टाह्निका में सिद्धचक्र विधान करके महान् पुण्य का संचय करते हैं। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए आचार्यश्री ने यह सिद्धचक्र विधान लिखा है। पहले आचार्यश्री विमलसागरजी द्वारा संकलित विधान जो कि संस्कृत में है। दूसरा कवि संतरामजी ने इसकी हिन्दी दोहों में रचना की वह तथा तीसरा गणिनी आर्यिका ज्ञानमती द्वारा रचित यह विधान भी बहुत उत्तम रीति से विद्वत्तापूर्वक चारों अनुयोगों को ध्यान में रखते हुए आगमानुसार लिखा है। अभी सब जगह कवि संतराम जी कृति या फिर माताजी की कृति चलती है। संस्कृत सिद्धचक्र विधान क्वचित् कदाचित् ही कोई भक्त करते हैं। इसका प्रभाव बहुत है। अब यह चौथी कृति आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी ने लिखी है। यह विधान भी आपने आर्ष मार्गानुसार चारों अनुयोगों को ध्यान में रखते हुए लिखा है। यह कृति कई नवीन रूप में लिखी है जो कि सभी आराधक-पूजक-संगीत के साथ गाकर पुण्य लाभ ले सकेंगे। यह कृति अशुभ कर्मों की निर्जरा में बहुत बड़ा कारण बनेगी।

सभी आराधकों को कहना है कि अवश्य ही इस कृति का उपयोग कर लाभ उठायेंगे।

लेखक को प्रतिनमोऽस्तु एवं ग्रंथ के प्रकाशकों को तथा इसका उपयोग करने वाले सभी जिनेन्द्र भक्तों को आशीर्वाद।

5-7-2023

गणधराचार्य कुन्थुसागर
श्री क्षेत्र कुन्थुगिरी
आनंद वन, आलते (महा.)

शुभाशीर्वाद व शुभकामनायें

(चाल : 1 भातुली... 2. चांदी की दीवार...)

''वन्दे तद्गुण लब्धये'' हेतु ही करो हे ! सिद्धचक्र विधान !
''णिकम्मा अट्ठ गुणा'' बनने हेतु करो हे ! सिद्ध समूह के पूजन॥1॥

एक सिद्ध में अनन्त सिद्ध अवगाहन गुण के कारण।
अनन्त ज्ञान दर्शन सुख वीर्य, अस्तित्व वस्तुत्व, प्रभुत्व॥2॥

इस हेतु करणीय है रत्नत्रय आराधना मन-वचन-काय शुद्धि से।
द्रव्य-भाव आलम्बन सहित राग-द्वेष-मोह भाव रहित से॥3॥

इह परलोक भोगाकांक्षा निदान रहित केवल आत्म विकास हेतु।
ख्याति पूजा लाभ प्रसिद्धि वर्चस्व रिक्त आत्मा को परमात्मा-बनाने हेतु॥4॥

संकीर्ण कट्टर पंथ मत रहित, आगमोक्त करो है पूजा विधान।
इस हेतु मम है शुभाशीर्वाद, स्व-पर विश्व का हो कल्याण॥5॥

इस हेतु मम शिष्य ''सूरी गुप्तिनंदी'' कर रहे हैं ग्रन्थ निर्माण।
उन्हें भी मम प्रतिनमोऽस्तु सहित शुद्ध-बुद्ध बनना चाहे ''कनक श्रमण''॥6॥

26-8-2023

-आचार्य कनकनन्दी

योगीन्द्रगिरी (विश्व केन्द्र)

णमो सिद्धाणं

श्री सिद्धचक्र विधान अनन्तानन्त सिद्धप्रभु की भक्ति के निमित्त किया जाने वाला वृहत् विधान है। इस विधान में सिद्धों के अष्ट गुणों के अर्घ्य, सोलह कारण के अर्घ, चौंसठ ऋद्धियों के अर्घ, जिनगुण संपत्ति, कर्मदहन, पंचपरमेष्ठी आदि के अर्घ के साथ सहस्त्रनामावली के साथ अनन्तानन्त सिद्धात्माओं के अर्घ्य प्रदान किये जाते हैं।

'उत्सव प्रियाः मनुष्याः' जैन समाज में बहुलता से श्री सिद्धचक्र विधान की आराधना की जाती है। अष्टाह्निका, सिद्धचक्र अनादि निधन होने पर भी श्री मैनासुन्दरी द्वारा अपने पति कोटिभट श्रीपाल के कुष्ठ रोग निवारण हेतु किया गया विधान है।

अनेक विद्वान्, कवि, पंडित, मुनिराज, माताजी द्वारा सिद्धचक्र रचित होने पर भी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदी जी महामुनिराज द्वारा सिद्धचक्र विधान की रचना होना जैन समाज के लिये बड़े ही गौरव की बात है।

आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी जैन समाज के सर्वमान्य निर्विवाद संत हैं। आपकी लेखनी के द्वारा निःसृत रचना आगमोक्त होने के साथ-साथ आर्षमार्ग की समर्थक भी होती है। आप अद्भुत कवि, आशु रचनाकार, शब्द शिल्पी एवं आधुनिक तर्ज के आधार पर उत्कृष्ट रचनायें लिखकर समाज के सम्मुख प्रस्तुत करते हैं।

'श्री सिद्धचक्र विधान' की रचना आबाल वृद्धों के साथ युवा वर्ग के लिये बहुत ही महत्त्व की कृति है। विधान का अर्थ-भावार्थ उद्देश्य सभी विधान कर्त्ताओं को, पाठकों को सरलता से समझ में आ सके। अतः हरेक पूजा व अर्घ्यों के साथ जयमाला आदि में 'श्रीपाल मैनासुन्दरी' चरित को उल्लेखित किया जाना, यह लेखक की मेधावी प्रतिभा और 'प्रज्ञा' को उद्घाटित करता है।

मैं उनकी रचनाओं की अनुशंसा करते हुए इनकी लेखनी अनवरत चलती रहे, यह भावना व्यक्त करते हुए प्रति 'नमोऽस्तु' पूर्वक श्री सिद्धचक्र विधान बहु उपयोगी सिद्ध हो यही शुभ कामना करता हूँ।

णमोकार तीर्थ
भ. नेमीनाथ जन्मकल्याण-2023

आपका ही
प्रज्ञाश्रमण आचार्य देवनन्दी

पासवर्ड है विधान

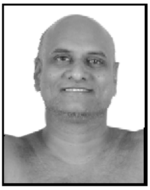

प्रज्ञायोगी आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी एक अद्भुत लेखनी के धनी हैं। जिनकी लेखनी से निःसृत मानव कल्याणार्थ अनेकानेक साहित्य, विधान, पूजा, चालीसा आदि अनेकों रचना जैन समाज में प्रचलित हैं। अब इस बार आपने जनजीवन को मुक्ति द्वार के अंदर ले जाने के लिए एक विशेष आध्यात्मिक विधान की रचना की है जो कि अद्भुत अलौकिक ऐतिहासिक और जन–जन के मन से जुड़ी रचना है। ये विधानों का राजा श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान है। बहुत ही जल्दी ये विधान हम सबके बीच होगा। हम इस विधान रचना की बहुत–बहुत अनुमोदना करते हैं। जो भक्ति को जगाने, दुःखों को मिटाने और आध्यात्मिक जीवन को प्रकाशित करने का एक अनुपम साधन सिद्ध होगा। भक्ति के रूप में भगवान ने मानव मात्र के लिए एक बैंक बनाकर दिया है जिसमें सुख, शान्ति, आनंद, समृद्धि, आरोग्य, विद्या, प्रगति आदि अनेक दौलत से भरा हुआ है। उसका पासवर्ड विधान है। मानव मात्र विधान करके समृद्ध बने और यह विधान भारत सहित विश्व के कोने–कोने में, हर घर–घर में, नगर–नगर में पहुँचे यही नव तीर्थंकर भगवान से प्रार्थना है।

26–8–2023

–आचार्य गुणधरनन्दी
नवग्रह तीर्थ वरूर

श्रीपाल महाराज का राज्याभिषेक

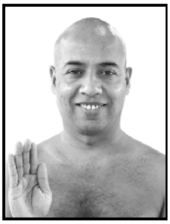

सिद्धचक्र व्रत विधान विधि

दोहा– पंच परम पद में प्रमुख, सिद्ध अनंत महान्।
सिद्धार्चा से सिद्धी हो, बनें सिद्ध भगवान॥

सिद्ध भक्ति प्रत्येक कार्य का आद्य, मंगलाचरण है। दीक्षान्वय, गर्भान्वय, कर्त्रन्वय, क्रियाओं का आरंभ सिद्ध भक्ति से होता है।

हमारी श्रमणचर्या में प्रतिक्रमण, सामायिक, भक्ति, जप–तप, अनुष्ठान, दीक्षा, समाधि आदि प्रत्येक कार्य का प्रारम्भ सिद्धभक्ति से ही होता है।

विद्यार्थी बालकों का सर्वप्रथम उच्चारण 'ॐ नमः सिद्धम्' ही कराया जाता था/ कातंत्र आदि व्याकरण शास्त्रों में भी प्रथम सूत्र **सिद्धो वर्ण समाम्नायाः** कहा है।

परम वीतरागी सातिशय पुण्य पुरुष, तीर्थंकर भगवान भी 'नमः सिद्धेभ्यः' कहकर सिद्धों की साक्षी में 'मुनि दीक्षा' धारण करते हैं।

उपरोक्त इन सबसे सिद्ध भक्ति का महत्त्व समझ में आता है।

सिद्ध सगुण है, अनंतानंत गुणी है, कर्मजन्य पौद्गलिक देह से रहित निराकार है। लेकिन चरम शरीर में कुछ कम ज्ञान घनाकार है। इसलिये सिद्ध भगवान की प्रतिमा ठोस ही होना चाहिए।

सिद्ध प्रतिमा के नाम पर खोखले खांचे नहीं बिठाना चाहिए। वास्तु शिल्प, मूर्ति शिल्प, प्रतिष्ठा शिल्प शास्त्रों के अनुसार खोखले खांचे बिठाने वाले, प्रतिष्ठा करने, कराने वाले सभी शनैः–शनैः खोखले होते जाते हैं। अंत में पूरे बर्बाद हो जाते हैं। इसलिये सिद्ध प्रतिमा सावयव ठोस ही बनानी चाहिये।

सिद्ध भगवान त्रैकालिक और त्रिलोक पूज्य हैं। इसलिये सिद्धचक्र मंडल विधान भी अनादि सिद्ध है। लेकिन इस हुंडवसर्पिणी काल में 'महासती मैनासुंदरी और कोटिभर श्रीपाल' के निमित्त से सिद्धचक्र महामंडल विधान विख्यात हुआ।

श्री सकलकीर्ति आचार्य विरचित श्रीपाल चरित्र के अनुसार महासती मैना सुन्दरी उज्जैन के **राजा प्रजापाल और रानी सौभाग्य सुंदरी** की छोटी कन्या थी। जो बचपन से ही जिन मंदिर जाती थी। आठ वर्ष अन्तर्मुहूर्त के बाद नित्य देवदर्शन, जिनाभिषेक, पूजन, स्वाध्याय आदि धार्मिक कार्य करती थी। उसलने गुरुकुल में जाकर दिगम्बर जैनाचार्य **श्री यमधर आचार्य** से सम्पूर्ण लौकिक शास्त्र और जैन वांग्मय का, चारों अनुयोगों का गहन अध्ययन किया। विद्या, विनय सदाचार से उसका सौन्दर्य और भी सुशोभित हो गया।

एक दिन राजकुमारी **मैनासुन्दरी** ने जिन मन्दिर में जाकर जिन प्रतिमा का भव्य पंचामृत अभिषेक किया, महाशान्तिधारा व पूजन करके गंधोदक राजदरबार में ले जाकर अपने पिता राजा प्रजापाल को दिया। गंधोदक लेते समय राजा ने अपनी छोटी पुत्री को ध्यान से देखा और समझ लिया मेरी लघु कन्या भी अब विवाह के योग्य हो गयी है। इसलिये भरी सभा में ही राजा ने अपनी पुत्री से कहा– मैना ! तुम्हारे मन में जिस किसी भी वर की इच्छा हो– तुम जिससे अपना विवाह करना चाहती हो सो कहो, हम तुम्हारी सब अभिलाषा पूरी करेंगे। मैनासुन्दरी ने कहा–पिताजी कुलवती कन्यायें विवाह से पूर्व तक ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करती हैं। अपने मन से किसी भी पुरुष का वरण नहीं करती है। माता–पिता ही जिस योग्य वर के लिये कन्यादान करते हैं। उसे अपना भाग्य समझकर स्वीकार करती हैं। राजा ने पूछा–तुम यहाँ किसका दिया खाती हो ? मैना ने कहा–मैं अपने भाग्य का खाती हूँ। और सभी अपने–अपने भाग्य का खाते हैं। इससे राजा के ईश्वरवादी अहम को चोट लगी।

राजा ने मैना सुन्दरी के भाग्य की परीक्षा लेने के लिये एक कोढ़ियों के राजा से ब्याह कर दिया। उज्जैन राज्य के बाहर रहने के लिये राजमहल रथ आदि भी दिया।

अब मैनासुन्दरी अपने पति के संग जिनमन्दिर में गयी। वहा जिन अभिषेक, पूजन आदि करने के बाद **'सुगुप्ताचार्य'** के दर्शन किये, धर्मोपदेश प्राप्त किया। फिर आचार्यश्री से अपने पति के कोढ़ रोग को मिटाने का उपाय पूछा। निर्ग्रंथ यतिवर सुगुप्ताचार्य ने कोढ़ व्याधि समाप्त करने के लिये रत्नत्रय सहित सिद्धचक्र व्रत विधान करने का उपाय बताया।

व्रत विधि– आचार्यश्री ने बताया– गुरु आज्ञा लेकर उनके सान्निध्य में आषाढ़ कार्तिक और फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष में अष्टमी से पूर्णिमा तक यह व्रत विधान करना चाहिए। विधान के लिए जिन मंदिर में भव्यातिभव्य सजावट शोभा करना चाहिए। आठ दिन ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए और सभी जीवों को अभयदान देना चाहिए। सोने–चांदी या ताम्र पत्र पर सिद्धचक्र यंत्र लिखना चाहिए। फिर उस पर केशर से रचना करके मंडल पर

जिन प्रतिमा के साथ सिंहासन पर उसकी स्थापना करें। अभिषेक पीठ पर श्री सिद्ध प्रतिमा या जिनेन्द्र भगवान की प्रतिमा के साथ यंत्र पर मंत्रोच्चार पूर्वक पंचामृत अभिषेक करें, महाशांतिधारा करें। जिनबिम्ब और यंत्र को सम्मार्जन कर मंडल पर अचल सिंहासन पर विराजमान करें। फिर भक्ति भाव पूर्वक गीत, संगीत नृत्य सहित बड़े उत्साह से अष्ट द्रव्य से यथार्थ पूजा करें।

'ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः' इस मंत्र का विशेष पल्लवादिक से विधिवत जाप करना चाहिए। आठ दिन में क्रम से 8-16-32-64-128-256-512-1024 अर्घ चढ़ाना चाहिये।

ततस्नानं गन्धतोयेन सिक्तव्यं तव वल्लभः।
गत व्याधिस्तथा कामदेवो वा सम्भविष्यति॥

श्रीपाल चरित्र परिच्छेद-3 श्लोक (118)

आचार्य श्री सुगुप्त महामुनिराज-मैनासुन्दरी को उपाय बताते हुए कहते हैं- हे पुत्री ! श्री जिनदेव और यंत्र के पंचामृताभिषेक गंधोदक को तुम तुम्हारे पति के सर्वांग पर छिड़को। निश्चय ही इससे उसका रोग नष्ट होगा तथा उसका सौन्दर्य कामदेव के समान हो जायेगा।

मैनासुन्दरी ने रत्नत्रय के साथ सिद्धचक्र व्रत ग्रहण किया। श्रीपाल ने भी व्रत लिया। लेकिन अभिषेक पूजा विधान मंत्रानुष्ठान सिर्फ मैनासुन्दरी ने स्वयं ही किया-

मुनिं नत्वा सुभावेन गृहमागत्य सा सती।
सिद्धचक्रं महायन्त्रं चारू चामी करोद्भवम्॥121॥

कारयित्वा तदा शीघ्रं पूर्वोक्त विधिना शुभम्।
सामग्रीं सा विधायोच्चैर्जगच्चेतोऽनुरंजिनीम्॥122॥

स्वयं स्नात्वा पवित्रात्मा धौतवस्त्र समन्विता।
जिनेन्द्र भवने रम्ये कृत्वा शोभां मनः प्रियाम्॥123॥

रात्रौ जागरणं कृत्वा संध्येन महता सह।
नवम्यां दशधोपेतां तथा स्तवन पूर्वकम्॥125॥

दशम्यां शतधापूजामेकादश्यां सहस्रधा।
द्वादश्यां तद्दशोपेतां त्रयोदश्यां च लक्षिकाम्॥126॥

दशलक्षगुणां पूजा चतुर्दश्यां विधाय च।
कोटिधा पूर्णिमायां च पूजां चक्रे शुभाशया॥127॥

तदा श्री जिन सिद्धानां स्नान गंधोदकेन च।
तच्चन्दनान्वितेनोच्चै स्तयाति परमादरात्॥128॥

नित्यं यथा-यथा भर्त्ता सिक्तोलिप्तस्तथा तथा।
दिनं दिनं प्रतिव्यक्तम् सिद्धचक्र प्रभावतः॥129॥

स श्रीपालो लसत्वालो दिव्यमूर्तिर्भवंस्तथा।
अष्टमे दिवसे प्राप्ते नष्ट व्याधिर्बभूव सः॥130॥ श्रीपाल चरित्र परिच्छेद-3

अर्थ- आचार्यश्री ने सिद्धचक्र पूजा विधान की सम्पूर्ण विधि जिस प्रकार उपदिष्ट की थी उसे मैना सुन्दरी ने पति के साथ श्रद्धा से ध्यानपूर्वक श्रवण किया। परम भक्ति से आचार्यश्री से सिद्धचक्र व्रत लिया और अपने पति को भी दिलवाया। दोनों दम्पत्ति व्रत लेकर हर्षातिरेक से गद्‌गद् हो गये। दोनों ने विनयपूर्वक परम भक्ति से हाथ जोड़कर गुरु को नमस्कार किया और अपने राजमहल में लौट आये। उस महासती शिरोमणि ने सुवर्ण पत्र पर सिद्धचक्र यंत्र को तैयार करवाया। जिनालय में जाकर सर्वप्रथम जिन भवन को शोभित किया। मनोरम तोरण, घंटा, पताका, चमर, ध्वज, सिंहासन आदि अष्ट प्रातिहार्य, अष्ट मंगल द्रव्य के साथ अन्य सजावट की सामग्री से सजाया। महायंत्र तैयार होने पर उस पतिव्रता ने अन्य अष्ट द्रव्यों को समन्वित किया। सभी सामग्री पूर्ण शुद्ध उज्ज्वल और मनोहर थी। अति विशिष्ट फल पुष्पादि एकत्रित करवाये। उस शोभनीय सामग्री को देखकर सभी का मन मोहित हो जाता था। पुनः स्वयं सती ने स्नान किया। शुद्ध सफेद वस्त्र धारण किये।

पुनः अष्टमी के दिन विशिष्ट-विशिष्ट अष्ट द्रव्यों से अत्यंत वैभव पूर्वक सिद्धचक्र पूजा की। रात्रि में जागरण किया। स्तुति पाठ, भजन, कीर्तन, सिद्ध समूह की भक्ति की। नवमी के दिन अष्टमी की अपेक्षा 10 गुने वैभव भक्ति से विधि विधान महोत्सव किया। दशमी के दिन उससे भी अधिक 100 गुना द्रव्यों से आराधना की। एकादशी को हजार

गुणित नाना सामग्री से मण्डल विधान पूजा कर श्री सिद्धचक्र की आराधना की। द्वादशी के दिन दशहजार गुने, त्रयोदशी के दिन एक लाख गुना, चतुर्दशी को दश लाख गुणा और पूर्णिमा के दिन करोड़ गुणा वैभव द्रव्यादि से श्री सिद्धचक्र की आराधना कर स्वयं को धन्य समझा। द्रव्य के साथ भावों की पवित्रता भी उत्तरोत्तर बढ़ती गयी। उसी प्रकार पाप का क्षय और पुण्य की वृद्धि होती गयी।

पतिव्रता मैनासुन्दरी ने अखण्ड ब्रह्मचर्य से पावन मन-वचन-काय से आठ दिन तक व्रत पूर्वक श्री सिद्धचक्र की विधिवत् अभिषेक पूजा की। वह नित्य प्रतिदिन श्री जिनेन्द्र सिद्ध प्रतिमा सहित सिद्धचक्र यन्त्र पर पंचामृत अभिषेक करती थी। बाद में गन्धोदक से अपने पति श्रीपाल के आपाद मस्तक सर्वांग पर गंधोदक छिड़कती और चन्दन लेपन करती। जैसे-जैसे प्रतिदिन वह गंधोदक से स्नान कराती गयी वैसे-वैसे महाराज श्रीपाल के शरीर से व्याधि निकलकर उस प्रकार भागती थी जैसे मयूर को देखकर सर्प भाग खड़े होते हैं। दिन-प्रतिदिन उसका रूप लावण्य निखरने लगा, महासाता होती गयी। कुष्ठ व्याधि शमित हो गयी। आठवें दिन काया कंचन सी हो गयी। श्रीपाल कोढ़ी से कामदेव बन गये। इतना ही नहीं रोग होने से पहले जितना सौन्दर्य था उससे भी अधिक रूप लावण्य संपत्ति की प्राप्ति हुई। श्री सिद्धचक्र के प्रसाद से रूप, सौभाग्य, सम्पदा अतुलनीय हो गयी। इस अघटित घटना से सिद्धचक्र की महिमा, पतिव्रत धर्म का प्रताप और जिनशासन माहात्म्य की यशोपताका तीनों लोकों में फहराने लगी।

वात्सल्य सरिता, जिनागम परायणा, जिनभक्ता उस मैनासुन्दरी ने जिस प्रकार अपने पति श्रीपाल का कोढ़ मिटाया उसी प्रकार उनके साथी 700 कोढ़ियों का भी कोढ़ दूर किया। कोढ़ मिटने से वे सभी जिनधर्म के दृढ़ श्रद्धालू हो गये।

साभार-श्रीपाल चरित्र, रचना-आ.सकलकीर्ति,
हिन्दी अनुवाद-गणिनी आर्यिका श्री विजयमति माताजी

इसके बाद सिद्धचक्र आराधना के अतिशय से कोटिभट श्रीपाल महाराज अपनी माता कमलावती और प्रियपत्नि मैना सुन्दरी को उज्जैन में ही छोड़कर 12 वर्ष के लिये विदेश यात्रा पर अपने भाग्य की परीक्षा के लिये जाते हैं। जहाँ जहाज संचालन, डाकूओं पर विजय, सहस्त्रकूट जिनालय, महाद्वार, उद्‌घाटन, रयण मंजूषा सती का लाभ, सागर में पतन, एक मासतक हाथों से समुद्र को तैरना, गुणमाला सती का लाभ, भांड़ों का षड़यंत्र, शूली, मृत्युदंड की सजा आदि अनेक संकट आते हैं।

श्रीपाल उन सभी संकटों पर सिद्ध मंत्र के जाप व भक्ति से विजय प्राप्त करते हैं। सिद्ध भक्ति के पुण्य से आती हुई सभी आपदा सम्पदा रूप बन जाती है। बारह वर्षों में अनेक राज्यों पर विजय प्राप्त करते हुए 8000 से अधिक सती कन्याओं का ससम्मान पाणिग्रहण करते हैं।

बारह वर्ष के बाद उज्जैन में माता कमलावती और मैनासुन्दरी से मिलन बाद पट्‌टरानी मैना सुन्दरी की भावनानुसार उनके पिता राजा प्रजापाल को सम्यग्दृष्टि बनाते हुए चम्पापुर का पैतृक राज्य प्राप्त करते हैं।

सिद्धचक्र की महिमा से कोटिभट श्रीपाल महामण्डलेश्वर राजा बन गये। प्रतिदिन आपने श्रावकोचित छह आवश्यक कर्त्तव्य का पालन करते हुए समता शान्ति से लोकप्रिय राज्य का संचालन किया। हजारों वर्षों तक राज्य वैभव भोगोपभोग करने के बाद एक दिन चम्पापुर के उद्यान में एक अवधिज्ञानी श्रुत सागर मुनिवर का आगमनहुआ।

उनके दर्शन के लिए कोटिभट श्रीपाल अपने कुटुम्ब परिवार, प्रजाजन के साथ भक्ति से गये। उनसे धर्मोपदेश सुनने के बाद अपने जीवन के समस्त सुख–दुःख, उतार–चढ़ाव का कारण पूछा। तब अवधिज्ञानी संघनायक आचार्यश्री ने कहा–यह सब तुम्हारे ही शुभाशुभ कर्मों का फल है।

तुम पूर्व में श्रीकान्त विद्याधर थे और मैना सुन्दरी तुम्हारी श्रीमती पत्नी थी। तुमने एक बार एक घोर तपस्वी शान्तमूर्ति मुनिराज को देखा। उन्हें कोढ़ी–कोढ़ी कहकर निन्दा की, तुम्हारे 700 साथियों ने भी तुम्हारी अनुमोदना की। इस पाप से तुम्हें इस भव में भयंकर गलित कुष्ठ रोग हुआ और तुम्हारे साथियों को भी हुआ। बहुत भारी मुनि निन्दा करने से उन्हें अपशब्द कहने से तुम्हें बचपन में पितृ वियोग हुआ। मुनि को उनके स्थान से हटाने के कारण तुम्हारा षडयंत्र पूर्वक राज्य छीना गया। तुम्हारी माँ को तुम्हारे प्राण बचाने के लिये जंगल–जंगल भटकना पड़ा। तुमने पूर्व भव में मुनिराज को क्रोधवश सरोवर में

फेंका इसलिये तुम्हें समुद्र में फेंका गया। बाद में दयावश मुनि को तालाब से बाहर निकाला इस कारण तुम समुद्र को तैरकर पार कर पाये। तुमने मुनि को भांड कहकर निरादर किया। इससे तुम पर भांड होने का झूठा आरोप आया। तुमने निर्दोष मुनि की हत्या का दुस्साहस किया। फिर दयावश छोड़ दिया। इसलिये तुम्हें पहले शूली दंड मिला, बाद में गुणमाला और रयणमंजूषा के प्रयास से तुम्हारे प्राणों की रक्षा हुई।

तुम्हारी पत्नी को तुम्हारे पाप कार्यों की जानकारी मिली तो वह बहुत दुःखी हुई। उसने तुम्हें मुनिचर्या, उनकी त्याग तपस्या का परिचय कराया और गुरु पर किये गये उपसर्ग के दुष्परिणाम बताये जिससे तुम्हारे मन में अपने पाप का पश्चात्ताप हुआ। रानी ने तुमसे मुनिराज के पास ले जाकर क्षमा मंगवायी। दयालू मुनि ने क्षमा भी कर दिया। फिर प्रायश्चित्त स्वरूप रानी ने सिद्धचक्र विधान किया और तुमसे भी करवाया। सो सिद्धचक्र व्रत महामंडल विधान मंत्रानुष्ठान के सुफल से तुम्हें महामण्डलेश्वर राजा का राजवैभव, आठ हजार से अधिक पत्नि का लाभ मिला। मुनि की निन्दा करने से उनके साथ दुर्व्यवहार करने से तुम्हारे जीवन में अनेको मृत्यु तुल्य संकट आये लेकिन सिद्धभक्ति से तुम्हें सभी आपदाओं के बाद संपदा का लाभ मिला। मुनि की वैयावृत्ति करने से उन्हें औषधि दान करने से तुम्हें कोटिभट का बल प्राप्त हुआ।

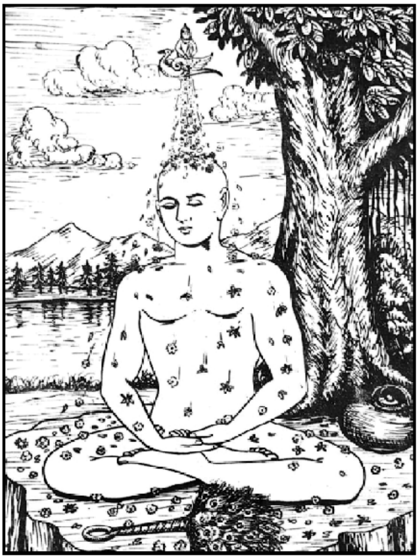

अपने पूर्वभव के पाप कार्यों को सुनकर श्रीपाल के मन में बहुत पश्चात्ताप हुआ। उनके प्रायश्चित्त में उन्हें वैराग्य हो गया। तब श्रीपाल ने अपने ज्येष्ठ पुत्र महीपाल को अपना मुकुट देकर राजभार सौंपकर अपनी सभी रानियों व हजारों प्रजाजनों मंत्री के साथ 'श्री सुव्रत आचार्य' से मुनि दीक्षा ले ली। मुनि बनकर घोर तपस्या की। चार घातिया कर्मों का क्षयकर पहले केवलज्ञानी सर्वज्ञ अरिहंत बने। अरिहंत बनकर आर्यखंड में विहार करते हुए धर्मोपदेश दिया। फिर आयु के अन्त में शेष चार अघातिया कर्मों का क्षयकर अविनश्वर सिद्ध पद को प्राप्त किया।

महासती मैना सुन्दरी ने भी अपने पति का अनुसरण करते हुए उनके साथ ही आर्यिका दीक्षा ग्रहण की। बारह भावना को भाते हुए परीषहों को सहन किया। घोर तपश्चरण किया। रत्नत्रय का दृढ़ता से पालन किया। चार आराधना करते हुए अन्त में उत्तम समाधिमरण किया। जिससे 10वें महाशुक्र स्वर्ग में इन्द्र का पद प्राप्त किया। आगे वो भी मनुष्य भव को प्राप्तकर, मुनि बनकर, आठ कर्मों का नाशकर सिद्धपद को प्राप्त करेगी। यह सब सिद्धचक्र आराधना का चमत्कार है।

शेष सभी रानियों व पुत्रों परिजनों ने भी श्रीपाल केवली और प्रमुख आर्यिका मैना सुन्दरी का अनुसरण करते हुए यथायोग्य संयम ग्रहण करके स्वशक्ति अनुसार तपश्चरण किया। तद्नुसार स्वर्ग मोक्षादि सुखों को प्राप्त किया।

ऐसे श्रीपाल सिद्ध भगवान हमें भी मोक्ष सिद्धी प्रदान करें। तीनों लोक में तीन कालों में सर्वश्रेष्ठ परमेष्ठी श्री सिद्ध परमेष्ठी हैं। सिद्ध अनंतानंत हैं। उनमें प्रत्येक सिद्ध के गुण अनंतानंत हैं। उनके गुणों को कोई पूर्णरूप से नहीं गा सकता है। गणधर, इन्द्र आदि भी उनका बखान करने में समर्थ नहीं है। फिर हम जैसे साधारण मुनि की कितनी सामर्थ्य है।

फिर भी बचपन से एक प्रसिद्ध गीत सुनते आ रहे हैं–

श्री सिद्धचक्र का पाठ, करो दिन आठ, ठाठ से प्राणी...

फल पायो मैना रानी...।

भोपाल में चौक जैन मंदिर की धर्मशाला में श्रीपाल मैना का महानाटक देखा और 'महासती मैना सुन्दरी' नाम की पिक्चर भी देखी। फिर मुनि वा दीक्षा आचार्य पदारोहण के बाद अनेकों बार सिद्धचक्र विधान कराया। कभी संत कवि के विधान को कराया। तो कभी गणिनी प्रमुख ज्ञानमति माताजी द्वारा रचित सिद्धचक्र विधान को किया। तब मन में सिद्धचक्र विधान लिखने की भावना हुई। श्री उत्तर पुराण जी चौबीस तीर्थंकर के चरित्र का स्वाध्याय किया। उसमें भी सभी तीर्थंकरों द्वारा–सिद्धों को नमस्कार पूर्वक मुनिदीक्षा लेने का प्रसंग

आया। प्रवचन से पूर्व लगभग सभी आचार्यों, मुनिराजों को 'ॐ नमः सिद्धेभ्यः' मंत्र के उच्चारण सहित प्रवचन व स्वाध्याय, आरंभ करते देखा।

तीर्थराज श्री सम्मेदशिखर जी की वन्दना के समय जब अचानक पैरों में दर्द होने से सम्मेदशिखर की तीसरी वन्दना असंभव सी लग रही थी। तब सुबह की सामायिक में सम्मेदशिखर पहाड़ के अनेक स्थानों पर लगे बोर्डों से आचार्य श्री महावीरकीर्ति जी की डायरी से लिखे मंत्र का ध्यान आया।

'ॐ ह्रीं श्री अनंतानंत परम सिद्धेभ्यो नमो नमः' पूरी सामायिक में इसी मंत्र का ध्यान किया। उससे अस्वस्थ शरीर में तुरंत शक्ति आ गयी और मेरे कदम स्वयमेव वन्दना को चल पड़े। निर्विघ्न वन्दना हुई। इससे सिद्धार्चा की भावना और भी प्रबल हो गयी। साथ ही दक्षिण भारत उपाध्याय समिति के अनेकों विद्वानों ने एवं संघस्थ साधु-साध्वियों ने भी सिद्धचक्र विधान लिखने का विशेष आग्रह किया। तब स्वात्म प्रेरणा और सभी के निवेदन पर भोलानाथ नगर, दिल्ली के वर्षायोग में इस विधान को लिखना प्रारम्भ किया। इस बीच में अनेक विधानों की रचना हुई, महामृत्युंजय, भैरव पद्मावती आदि विधान लिखे। साथ ही अनेकों ग्रन्थों का संपादन भी किया। अंजनगिरी का जीर्णोद्धार, धर्मतीर्थ का निर्माण, अनेकों भव्य पंचकल्याणक दिल्ली से देवपुरा गुरु दर्शन, राजस्थान से अंजनगिरी, णमोकार तीर्थ, मांगीतुंगी के पंचकल्याणक, धर्मतीर्थ से कुंथुगुरु दर्शन, श्रवणबेलगोला महामस्तकाभिषेक हेतु महायात्रा, धर्मतीर्थ नवजिन शांति जिनालय का भव्य शिलान्यास, नव निर्माण, ऐतिहासिक, अन्तर्राष्ट्रीय पंचकल्याणक इत्यादि कार्यों की व्यस्तता व स्वयं प्रमाद से जुलाई 2022 में श्री सिद्धचक्र विधान को पूर्ण किया।

स्वयं सिद्धपद पाने की भावना से हमने सिद्धों गुणानुवाद किया है।

वैसे तो अष्टाह्निका पर्व त्रैकालिक शाश्वत पर्व है। सिद्धचक्र भी त्रैकालिक है। इसलिए सिद्धचक्र आराधना भी त्रैकालिक है। फिर भी इस हुंडावसर्पिणी काल की अपेक्षा सकलकीर्ति आचार्य विरचित श्रीपाल पुराण के अनुसार सुगुप्ताचार्य के उपदेशानुसार महासती मैना सुन्दरी ने बड़े वैभव से सिद्धचक्र महामण्डल विधान किया। जिससे अपने पति राजा श्रीपाल सहित 700 कुष्ट रोगियों का कोढ़ मिटाया था। इससे सिद्धचक्र विधान विख्यात हुआ।

वर्तमान कलिकाल में (1) भट्टारक श्रीमद् ललितकीर्ति आचार्य विरचित श्री सिद्धचक्र पूजा है। यह संस्कृत श्लोक सहित है। यह विधान सन् 1961 में श्री शांतिसागर जैन सिद्धांत प्रकाशिनी संस्था श्री महावीरजी से प्रकाशित हुई है।

(2) 'श्री सिद्धचक्र मंडल विधान' नाम से है। इसके संग्रहकर्ता व रचयिता भट्टारक श्रीमद् शुभचन्द्र जी है। यह वि.सं. 2470 में सेठ राजकुमार जी द्वारा इन्दौर से प्रकाशित है। इसमें पूजायें संस्कृत में है। जलादि अर्घ्य में मंत्र ही है। जयमालायें संस्कृत में हैं।

1024 मंत्र दो प्रकार के हैं। एक पंडित श्री आशाधर जी द्वारा रचित सहस्रनाम से हैं, दूसरे श्री जिनसेनाचार्य विरचित सहस्रनाम से है।

(3) श्री सन्त कवि विरचित 'सिद्धचक्र विधान' है। यह भी प्राचीन हिन्दी भाषा में है।

(4) सर्वाधिक विख्यात-गणिनी प्रमुख आर्यिका शिरोमणी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा रचित 'श्री सिद्धचक्र विधान' है। यह सरल सुगम हिन्दी भाषा में है। विभिन्न तर्जों व छंदों में लिखा है। माताजी के विधान के बाद ही सम्पूर्ण जैन जगत् में विधानों का महा आयोजन शुरू हुआ। हमने संतकवि और गणिनी आर्यिका ज्ञानमति माताजी के विधान के आधार से ही प्रस्तुत विधान लिखा है।

विनायक यंत्र पूजा से विधान का शुभारम्भ किया है। उसके बाद सिद्धचक्र यंत्र पूजा है। इसके बाद सिद्धचक्र समुच्चय पूजा है जिसमें मुख्य रूप से कामन लाइन में मैना सुन्दरी व श्रीपाल का उल्लेख किया है। इसकी जयमाला में मैनासती व श्रीपाल की सिद्धचक्र विधान की महिमा संबंधी कथा का संक्षिप्त समावेश किया है। उसके बाद प्रथम वलय में आठ गुणों के आठ अर्घ, दूसरे वलय में उससे दूने 16 अर्घ, आगे-आगे दूने-दूने, 32-64-128-256-512-1024 अर्घ हैं। इसके प्रत्येक वलय की पूजा चमत्कारिक है।

चौथे वलय में 64 अर्घ में 48 ऋद्धि समाहित हैं। पाँचवे वलय में 128 अर्घ में 108 प्रकार पापाश्रव के निवारक अर्घ है। छठे वलय में 256 अर्घों में 148 कर्म प्रकृति सहित अनेकों कर्मों के निवारक अर्घ हैं। साथ में अन्य गुणों के अर्घ हैं। सातवें वलय में 512 अर्घों में भूत-भावी नैगम नय और एवंभूत नय के अनुसार सिद्धों की पंच परमेष्ठी पर्यायों के अर्घ हैं। आठवें वलय में 1024 अर्घों में जिनसहस्रनाम का समावेश है। इस प्रकार इस विधान में आठ गुण विधान, चौंसठ ऋद्धि विधान, कर्मदहन विधान, जिनगुण सम्पत्ति विधान, पंच परमेष्ठी, सर्वसिद्धी विधान, जिनसहस्रनाम विधान, महामृत्युंजय विधान, सर्वरोग निवारक व सिद्धपद प्रदायक विधानों का समावेश है।

वर्ष की तीनों अष्टाह्निकाओं में नियम से यह विधान करना चाहिए। इसके अलावा जब भी कोई आपत्ति हो या जब भी भक्ति करने के भाव हो तब कभी भी यह विधान किया जा सकता है।

द्रव्य और भाव शुद्धि पूर्वक वृहद् या संक्षिप्त रूप में यथाशक्ति विधान अवश्य करें और सिद्ध संपदा को प्राप्त करें।

विधान से लाभ– इस विधान की महिमा, अतिशय जग प्रसिद्ध है।

महासती मैनासुन्दरी ने जैनाचार्य की आज्ञानुसार विधिवत इस विधान को करके अपने पति राजा श्रीपाल को कोढ़ी से कोटिभट कामदेव महामंडलेश्वर राजा श्रीपाल बनाया था। साथ में उनके 700 साथियों का भी कोढ़ रोग दूर किया था। इसलिए यह विधान कोढ़ सहित अनेकों रोग विनाशक विधान है। साथ ही व्यापार वृद्धि, कर्ज मुक्ति, कोर्ट, मुकदमे वाद आदि में विजय, योग्य वर/वधु, पुत्र, पौत्र आदि वंश वृद्धि, यश, धन–धान्य, ऐश्वर्य समृद्धि आदि सभी मनोरथों को पूर्ण करने वाला विधान है। इहलोक सुख के साथ परम्परा से निर्वाण मोक्ष सुख प्रदान कराने वाला विधान है। विधानों का राजा है।

विधान की विधी– अष्टाह्निका में या किसी भी मास के शुभ मुहूर्त में घटयात्रा झण्डारोहण करें। अंकुरारोपण करें। फिर जिनालय में वेदी के सामने या बाहर विशाल मंडप लगाकर ध्वज आय में विशाल मंडल बनायें। इस पर रत्न, अनाज, चावल या रांगोली से सुन्दर मांडना बनावें। बीच में ॐ की रचना करें फिर आठों वलय में क्रम से 8–16–32–64–128–256–512–1024 कोष्ठक बनावें।

मंडल के बीच में गंधकुटी रखकर उसमें विधिनायक श्री जिनेन्द्र या सिद्ध की ठोस प्रतिमा, सिद्धचक्र यंत्र, विनायक यंत्र के साथ विराजमान करें। संभव हो तो आचार्य मुनिसंघों के सानिध्य में ही विधान करना चाहिए। यदि वे उपलब्ध नहीं हो तो विधि विधान के ज्ञाता–प्रतिष्ठाचार्य या विधानाचार्यों के मार्गदर्शन में विधान करें। ध्वजारोहण के बाद–सकलीकरण, यज्ञदीक्षा, मंडप प्रतिष्ठा, घट स्थापना, अंकुरारोपण, अखंड दीप प्रज्ज्वलन करके श्री जिन प्रतिमा व यंत्र का अभिषेक, महाशांतिधारा करें। तत्पश्चात् पूजा विधि आरम्भ करके नित्यमह पूजा करें सिद्धचक्र समुच्चय पूजा प्रतिदिन करें। मंडल पर स्थापना जी में मुख्य इन्द्र–इन्द्राणी ही स्थापना करें। सम्पूर्ण विधान होने पर ठोने में मुख्य इन्द्र–इन्द्राणी के द्वारा ही विसर्जन किया जाता है। शेष सभी नित्य पूजा का आह्वान व विसर्जन सभी अपने–अपने ठोने में रोज अलग से करें।

सिद्ध समुच्चय पूजा से पहले विनायक यंत्र व सिद्धचक्र यंत्र पूजा भी अवश्य प्रतिदिन करें।

प्रत्याख्यान (त्याग)– विधान की अवधि तक यजमान–प्रतिष्ठाचार्य सभी संयम (आठ दिन के ब्रह्मचर्य) का पालन करें। यथाशक्ति उपवास या एकाशन करें। यदि शक्ति नहीं हो तो दोनों समय शुद्धि पूर्वक मौन सहित भोजन करें। शुद्ध भोजन ही करें। बाजार का बना या अशुद्ध भोजन नहीं करें। रात्रि भोजन, सप्त व्यसन का सर्वथा त्याग करें।

इन्द्र दीक्षा में यज्ञोपवीत अवश्य धारण करें। यज्ञोपवीत व तिलक के बिना अभिषेक, पूजा, विधान, आहारदान आदि धार्मिक कार्यक्रमों का समुचित फल नहीं मिलता है ऐसी जिनाज्ञा है।

मंडल पर प्रतिमा एवं अर्घ्य– प्रतिष्ठा रत्नाकर, प्रतिष्ठा तिलक, प्रतिष्ठा सारोद्धार आदि ग्रन्थों के अनुसार मंडल पर समोशरण या गंधकुटी की रचना करके उस पर जिन प्रतिमा व यंत्र को अवश्य विराजमान करें। जिन प्रतिमा के बिना मंडल अधूरा है। मंडप प्रतिष्ठा का कोई लाभ नहीं है। जिनेन्द्र भगवान से ही मंडप प्रतिष्ठा सम्पूर्ण सफल होती हैं। क्योंकि मंडल समोशरण का प्रतीक है और जिनेन्द्र भगवान के बिना समोशरण अधूरा है। जैसे वर के बिना बारात अधूरी है।

जाप्यानुष्ठान यज्ञशाला में करना चाहिए। यज्ञशाला में भी एक वेदी पर श्री जिनेन्द्र भगवान की प्रतिमा, सिद्धचक्र यंत्र, देव–शास्त्र–गुरु की प्रतिमा और सर्वाण्ह यक्ष की मूर्ति स्थापना करना चाहिए। मंडल, घट, अखंड दीप व अंकुरारोपण पात्र यज्ञशाला में ही स्थापित करें। सभी प्रमुख पात्र व अन्य इन्द्र–इन्द्राणी जाप अवश्य करें। आठ दिनों में साढ़े बारह लाख, पाँच लाख या सवा लाख मंत्रों के जाप का संकल्प करें या कम से कम 21 हजार मंत्र जाप अवश्य करें।

क्योंकि जैनागम में कहा है– 'स्तोत्र कोटि समं जपः' एक करोड़ स्तोत्र के बराबर एक जाप का फल होता है।

जाप्य मंत्र– (1) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं असिआउसा सिद्धचक्राधिपतये नमः। (2) ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा अनाहत विद्यायै नमः। (3) ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनंतानंत परम सिद्धेभ्यो नमः। (4) ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा नमः। (5) ॐ ह्रीं असिआउसा नमः।

इसमें से कोई भी जाप किया जा सकता है। आठ दिनों में प्रतिदिन प्रमुख इन्द्रों द्वारा हवन अवश्य करना चाहिए। नवमे दिन अन्य स्थंडिल कुण्डों की स्थापना करके सभी इन्द्र–इन्द्राणियों को हवन विधी के अनुसार महायज्ञ करना चाहिए। लेकिन जिसने एक दिन भी अभिषेक, पूजा, विधान, जाप नहीं किया हो उसे अकेले हवन मन्त्र नहीं करना चाहिए।

अभिषेक से लेकर हवन तक सभी क्रियायें त्रियोग शुद्धि पूर्वक करना चाहिए। महायज्ञ के बाद विशाल रथयात्रा करें। 1008 या 108 कलशों से महामस्तकाभिषेक करके धर्मप्रभावना करना चाहिए।

इस प्रकार जो भी भव्यात्मा सिद्धों की द्रव्य और भावों से अर्थपूर्ण भक्ति करेंगे। अर्घों के अर्थ को समझते हुए श्रीजी को अर्घावली समर्पित करते हैं। वे संसार के सभी श्रेष्ठ सार सुखों को पाते हुए आगे पंच परम पद को प्राप्त करेंगे। आगे सिद्ध परमेष्ठी बनकर, शाश्वत सुख का लाभ लेंगे। इसलिए सभी इस विधान को अवश्य करें। अपने सभी मनोरथों को सफल करें।

इस विधान की रचना में पूर्वाचार्यों की रचना ही प्रमाण है। श्री सिद्धों की परम कृपा से, माता वागेश्वरी की अनुकंपा से, आचार्य भगवन् श्री कुन्थुसागर जी और आचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव के आशीर्वाद से ही यह रचना सम्पूर्ण हुई है। उन्हें अनंत नमन। हमारें संघस्थ साधु–साध्वियों की प्रेरणा, विद्वानों, भक्तों के निवेदन पर इस विधान का सृजन हुआ है। प्रूफ संशोधन में संघस्थ विद्वान् साधु–साध्वियों, त्यागी–व्रतियों का सहयोग रहा है। एतदर्थ सबको हमारा यथायोग्य प्रति नमोऽस्तु। समाधिरस्तु। आशीर्वाद।

विधान के पुण्यार्जक श्री विजेंदर–श्रीमती निर्मल, शीतल, आदित्य, जितेन्द्र जैन परिवार, गुरुगाम (हरियाणा) हैं। उन्हें हमारा आशीर्वाद।

ग्रन्थ के प्रेरक, पुण्यार्जक, प्रकाशक, पूजक–पाठक सभी को परम सिद्धपद की प्राप्ति हो।

वर्धतां । जिनशासनम् !

–आचार्य गुप्तिनंदी

(धर्मतीर्थ क्षेत्र)

सर्वकार्य सिद्धि प्रदाता श्री सिद्धचक्र विधान

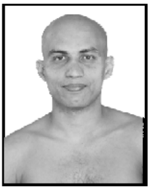

स्पर्धा और भौतिक चकाचौंध के इस युग से प्रभावित आज का मानव संकटों से घिरा हुआ है। उसका हृदय अन्दर से आतंकित और अशांत प्रतीत होता है। बाहर से समृद्ध होने पर भी भीतर एक खालीपन प्रतीत हो रहा है। इन्द्रिय सुखों की अत्यधिक आसक्ति के चलते मानव का सम्पूर्ण जीवन जटिलता, चिंता और तनाव से ग्रसित हो रहा है। उन्हें दूर करने के लिए मनोरंजन के नये-नये साधनों का आविष्कार कर रहा है। बचपन, अज्ञानता, जवानी व्यसनों में और वृद्धावस्था डॉ. की फीस चुकाने में व्यतीत हो रही है। यह मानव इन्द्रिय जन्य सुख को ही सच्चा सुख मान बैठा है और उस शाश्वत सुख, अविनश्वर सुख से अनभिज्ञ है। उस सुख की प्राप्ति के लिये या संकटों से मुक्ति के लिये वह किसी अदृश्य शक्ति (invisible power) की तरफ आश लगाकर उसकी उपासना करता है।

लगभग भारत के विभिन्न सम्प्रदाय इसी परम्परा का अनुकरण करते हैं। कुछ रूढ़ियों को ही सन्मार्ग मान लेते हैं और वास्तविकता से सदैव अछूते रहते हैं। वास्तविक अविनश्वर सुख की जिन्हें कल्पना भी नहीं है।

जिनमार्ग में इस प्रकार की व्यवस्था नहीं है। जिनमार्ग में भक्त अपने उपास्य के गुणों को जानकर उन गुणों से अनुराग करता है और अभीष्ट सिद्धि को प्राप्त कर लेता है। कहा भी है- ''**पूज्येषु गुणेषु अनुरागः भक्तिः**'' आराध्य के गुणों में जो निःस्वार्थ प्रेम उमड़ता है वही भक्ति है।

आचार्य जिनसेन स्वामी ने आदिपुराण में कहा- '**स्तुतिः पुण्य गुणोत्कीर्तिः**'' अर्थात् स्तुत्य के पवित्र गुणों का उत्कीर्तन स्तुति है।

साधना के क्षेत्र में भी भक्ति को ही महत्त्व दिया गया है। क्योंकि मन चंचल है और उसकी स्थिरता कठिन कार्य है। दान और स्वाध्याय की प्रक्रिया से बहिर्भूत मन प्रभु भक्ति का अवलम्बन लेकर अनिष्ट से बच जाता है। जैनदर्शन में साधु परमेष्ठि के अहोरात्र के 28 कृतिकर्म में भी सभी जगह भक्ति को प्रमुखता दी गई है। अध्यात्म जगत् के आचार्य श्री कुन्दकुन्द, पूज्यपादाचार्य, समन्तभद्राचार्य, मानतुंगाचार्य, कुमुदचन्द्राचार्य, जिनसेनाचार्य, वादिराज सूरि आदि सभी ने प्रभु भक्ति को सर्वश्रेष्ठ बताते हुए स्वयं भी उसका अनुसरण किया है। आचार्य कुन्दकुन्द देव ने दस भक्ति प्राकृत भाषा में तो आचार्य पूज्यपाद स्वामी ने दस भक्ति संस्कृत भाषा में रचना की है, महान् तार्किक समंतभद्र आचार्य ने स्वयंभू स्तोत्र की रचना की है।

श्री रयणसार में आचार्य कुन्दकुन्द देव ने दान और पूजा को श्रावक का प्रमुख कर्तव्य बताया है। समन्तभद्र स्वामी ने रत्नकरण्ड श्रावकाचार में कहा-

''देवाधिदेव चरणे परिचरणं सर्व दुःख निर्हरणं।
कामदुहिकामदाहिनी, परिचिनुयादादृतो नित्यम्॥

अर्थात् आदर के साथ प्रतिदिन की जाने वाली जिनेन्द्र देव की पूजन सभी दुखों का हरण करने वाली, काम अर्थात् लौकिक सुखों को देने वाली और काम का नाश करने वाली है।

प्रतिदिन पूजा करना श्रावक का आवश्यक कर्त्तव्य है– नित्यमह, सदार्चन के साथ–साथ श्रावकगण विशेष पर्व के दिनों में विशेष विधान महानुष्ठान पूर्वक सम्पन्न करते हैं। जिनेन्द्राराधना में निःश्रेयस सुख की प्राप्ति के लिये बड़े–बड़े इन्द्रध्वज, सर्वतोभद्र, सिद्धचक्र आदि विधान करने की अनादिकालीन परम्परा रही है।

इसी श्रृंखला में पूर्वाचार्यों के द्वारा प्रणीत, अनुसरित भक्ति मार्ग का अनुसरण करते हुए हमारे दीक्षा–शिक्षा प्रदाता **प.पू. प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदी जी गुरुदेव ने** अनंत सिद्ध परमेष्ठि एवं उनके अनंत गुणों की स्तुति के हेतु यह **'श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान'** की रचना की है।

आप महाकवि हैं, इसके पूर्व भी स्व–पर कल्याण और शुभोपयोग की भावना में रत आपने अनेक बड़े और छोटे विधानों की रचना की है। आपकी सिद्ध भगवंतों के प्रति अगाढ़ श्रद्धा है। आप अपने प्रत्येक कार्य की शुरूआत यहाँ तक के दिन का प्रारम्भ भी सिद्ध प्रभु को नमन वंदन जयकार के साथ करते हैं।

सिद्धों की महिमा अचिन्त्य है। जगत् प्रसिद्ध है कि सिद्धचक्राराधना से मैना सुन्दरी के द्वारा श्रीपाल राजा सहित 700 कुष्टियों का कुष्ठ रोग दूर हो गया था। यह सिद्धचक्र आराधना किसी भी माह में व किसी भी पर्व में किसी भी दिन किया जा सकता है, समाज में यह विधान प्रायः अष्टाह्निका पर्व में करने का प्रचलन है।

यह विधान कुष्ठ आदि रोगों, मानसिक, अशांति, गृहक्लेश के नाश के साथ–साथ, व्यापार वृद्धि, पुत्र–पौत्र–प्राप्ति, यश लाभ, आदि अनेक मनोरथों को पूर्ण करने वाला है। यह आराधना सभी कार्य को सिद्ध करने वाली है और अभ्युदय सुखों के साथ–साथ निश्रेयस सुख को प्रदान करने वाली है। सार में कहे तो **सर्व सिद्धि प्रदाता है, यह सिद्धचक्र विधान।**

प्रस्तुत विधान को आचार्य भगवन् ने वर्तमान समय की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए विभिन्न लयों में सुन्दर शब्दों के संयोजन के साथ छन्दोबद्ध किया है। आपके द्वारा रचित विधान–पूजाएँ सदैव भारत और विश्व में प्रचलित हैं। सरल शब्द संरचना होने से उसे आबालवृद्ध शीघ्र हृदयंगम कर लेते हैं।

उपरोक्त विधान के सृजन के फलस्वरूप पूज्य गुरुदेव अचिर सिद्ध सुखों को प्राप्त करें यही भावना करता हूँ।

प्रस्तुत कृति के दानदाता पुण्यार्जक, प्रकाशक, विधान करने वाले पूजकों के लिये, सर्वकार्यसिद्धि, स्वात्मोपलब्धि में कारण बने इसी भावना के साथ आचार्य गुरुदेव के पुनीत चरण युगल में सिद्ध–श्रुत–आचार्य भक्ति पूर्वक कोटिशः नमोस्तु–नमोस्तु–नमोस्तु।

वीर शासन जयंती, 4 जुलाई 2023, श्रीरामपुर **–आचार्य सुयशगुप्त**

विधानों का राजा

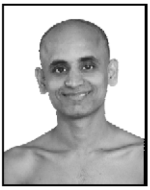

मंत्रों का राजा णमोकार, यंत्रों का राजा ऋषिमंडल – तीर्थों का राजा सम्मेदशिखर उसी प्रकार विधानों का राजा सिद्धचक्र विधान कहलाता है। जिसकी सुन्दर, अप्रतिम तथा अद्वितीय रचना हमारे पूज्य गुरुवर परम पूज्य प्रज्ञायोगी आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी गुरुदेव द्वारा हुई है।

विधान रचना गुरुदेव के लिए तो कुछ नवीन नहीं है परन्तु श्रोतागण तथा पूजकों के लिए यह विधान अपनी पृथक् विधा के साथ प्रतीत होगा। इसका प्रमुख कारण यह है कि गुरुदेव को प्रारम्भ से ही सिद्ध परमेष्ठी के प्रति असीम श्रद्धा है। इसी कारण गुरुदेव के कर–कमलों से जहाँ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा होती हैं, वहाँ गुरुदेव प्रायः सिद्ध प्रतिमा की स्थापना करते हैं, प्रत्येक कार्य में सिद्ध पूजा, प्रतिदिन सिद्धों का अर्घ तथा गृह चैत्यालयों में सिद्ध प्रतिमाओं की स्थापना कराना गुरुदेव को अत्यन्त इष्ट है। अतः गुरुदेव के श्रद्धा के आधार होने से ही यह विधान अत्यन्त ही लोकप्रिय सिद्ध होगा। विधान के छन्द–रस–अलंकार आदि का सम्यक् सम्मेलन अतीव परिणाम विशुद्धि का साधन होता है। एक योग्य रचनाकार की कलम, कलम ना होकर माँ सरस्वती की वीणा होती है, जिसके सात तार सप्त भंग रूप स्याही बनकर जब कलम से बाहर आते हैं, तो फिर से वे अक्षर नहीं कहलाते, बल्कि वे जैन सिद्धांत के मोती रूप होकर पन्नों पर ही नहीं भक्तों के हृदय पर बिखर जाते हैं।

यही माध्यम भक्त के कार्य सिद्धि और पाप क्षय का कारण होता है।

ये सारी विशिष्टता गुरुदेव द्वारा रचित इस सिद्धचक्र विधान में भरी हुई है।

पूज्य गुरुदेव के चरणों में बारम्बार नमन करते हुए यही भावना भाता हूँ कि आपकी यह लेखनी जिनशासन की ध्वजा दिगदिगंत में फहरायें।

आपके चरण स्वरूप पूज्य पवित्र गंगा में हम सबके पाप–कल्मष नष्ट हों, इसी मंगल भावना के साथ गुरुदेव के चरणों में त्रय भक्ति पूर्वक बारंबार नमोऽस्तु करता हूँ।

दिनांक 26–7–2023 — आपका शिष्य

लासूर स्टेशन — **आचार्य चन्द्रगुप्त**

जिन भक्ति मुक्ति का कारण

एकापि समर्थेयं जिनभक्ति दुर्गतिं निवारयितुं,
पुण्यानि च पूरयितुं दातुं मुक्ति श्रियं कृतिनः।

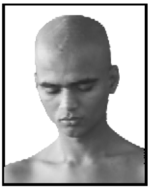

एकमात्र जिन भक्ति ही नरकादि दुर्गतियों का निवारण करने के लिये पुण्यों को पूर्ण करने के लिये और मुक्ति लक्ष्मी को देने के लिये समर्थ है।

पंचम काल में जिनभक्ति ही कर्म निर्जरा का एक अचुक उपाय है विधान, अभिषेक आदि के माध्यम से जिन भक्ति की जाती है। हमारे दीक्षा शिक्षा प्रदाता आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव ने अप्रतिम अद्‌भुत सुन्दर सिद्धचक्र विधान की रचना की है। यह रचना संसार के सभी प्राणी को सुख समृद्धि देने वाली है। मैना सुन्दरी ने सिद्धचक्र विधान करके अपने पति का कुष्ठ रोग दूर किया। गुरुदेव की यही भावना है संसार में सभी प्राणी सुखी रहे इसलिये गुरुदेव ने यह सुन्दर सी रचना की है।

मैं गुरुदेव को नमोऽस्तु, अनन्त शुभकामनाएँ देता हूँ, आपकी ये सिद्धचक्र विधान की रचना केवलज्ञान की प्राप्ति में कारण बने। जब तक सूरज-चाँद है तब तक यह रचना अमर रहेगी।

29-6-2023 **-मुनि विमलगुप्त**

(संघस्थ-आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव)

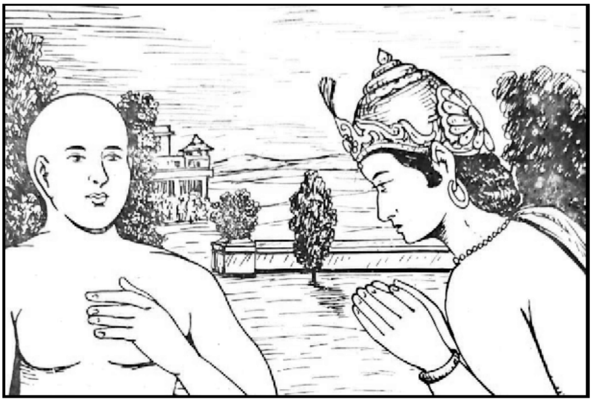

मुनिराज के दर्शन करते हुए कोटिभट्ट महामण्डलेश्वर राजा श्रीपाल

धर्मतीर्थ सम सुन्दर विधान

कर्माष्टक विर्निमुक्तं मोक्ष लक्ष्मी निकेतनम्।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहम्॥

सिद्धचक्र आराधना, सफल करें सब काम।
मैना वा श्रीपाल सम, भक्ति करें निष्काम॥
गुप्तिनंदी गुरुदेव ने, रचा विधान महान्।
भक्ति भाव से नित करूँ, गुरु के चरण प्रणाम॥

जिन आगम में आचार्यों भगवंतों ने पंचमकाल में मानव जाति के उद्धार हेतु भक्ति का मार्ग बताया है क्योंकि इस काल में द्रव्य क्षेत्र, काल, भाव की विपरीतता के साथ संहनन भी हीन होगा तो तप–ध्यान भी कम होगा। ऐसे समय में भक्त श्रद्धा की डोर थाम कर अपने परमात्मा तक पहुँचने की राह पर आरूढ़ होने का प्रयास करेंगे और उनके प्रयासों को सफल बनाने में हमारा आचार्य गण सेतु बनेंगे क्योंकि हर कार्य में निमित्त का मिलना जरूरी है। इसी श्रृंखला में आगे की कड़ी जोड़ते हुए परम पूज्य **दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदी जी गुरुदेव** अपनी लेखनी में भावना, विद्वत्ता, जनकल्याण, सहृदयता की स्याही लगाकर लिखते हैं– विधान, पूजन, भजन, आरती, काव्य आदि।

आपने छोटी उम्र से ही अपनी लेखनी को अनवरत बढ़ाया है और आज भी उसे विराम नहीं देते। अब की बार और नया अविष्कार 'सिद्धचक्र विधान' महाविधान का यह अभियान भी पूरा कर डाला। मैंने गुरुदेव से कहा था आप सिद्धचक्र विधान भी लिखते तो अच्छा होता। गुरुदेव ने कहा– मैंने रचना प्रारम्भ कर दी है पर समय लगेगा। एक वर्ष से भी कम समय में आचार्यश्री ने आखिर इस रचना को भी पूर्ण कर लिया। आनंद से परमानंद की अनुभूति से ओतप्रोत यह विधान भव्य जीवों के हेतु रचा गया है।

धर्मतीर्थ के मनोरम वातावरण सदृश्य यह विधान भी अपनी अनुपमता से भक्त हृदयों को आकर्षित करता हुआ परमामृत का पान करायेगा। क्योंकि गुरुदेव ने इसमें छन्द, अलंकार, शब्द सौष्ठव व सुन्दर भावों की सुमनावली पिरोयी है जहाँ जो अर्घ्य उस अर्घ्य के अनुसार ही शब्द प्रयोग आनंद पहुँचाता है जैसे–शुद्ध गर्भाय अर्घ्य में आया। निम्न पंक्ति देखें–

महासती जग पूजित माँ के शुद्ध गर्भ तुम आये।
गर्भवास विधी पूर्ण छेदकर शुद्ध गर्भ कहलाये॥

ऐसी सभी पंक्तियाँ अर्थ को प्रगटित करती हुई भक्तों व विद्वानों के पुण्य कोष भरेंगी और आत्मोत्कर्ष का लक्ष्य भी बनायेगी–

हम सिद्धचक्र की महाआराधना करें।
'सर्वोच्च सिद्धि' हेतु नित उपासना करें।।

शब्दानुप्रास व भावों की महत्ता मन की वीणा को अवश्य झंकृत करेगी और आत्मा को अशुभ से शुभ में लाकर श्रीपाल मैना सुन्दरी जैसे हमें भी संकट व दुःख के समय प्रभु भक्ति में लीन रहना है क्योंकि आचार्यों ने कहा है–

व्रत शीलं तपोदानं संयमो हेत्पूजनम्।
दुःख विच्छित्तये सर्वं प्रोक्तमेतन्न संशयः।।

व्रत, शील, तप, दान, संयम, पूजन आदि से दुःखों का विच्छेद होता इसमें कोई संशय नहीं है। मैना सुन्दरी व श्रीपाल ने कष्ट में भी इन कर्त्तव्यों को निभाया। यही शिक्षा गुरुदेव अभी श्रीपाल चरित्र से भी भक्तों को दे रहे हैं। हम सभी यही भावना भायें गुरुदेव की यह कृति भव्यों को इस भव परभव में सुखी बनायें व उनकी यशोपताका लहराती हुई इन्हें तीन लोक विजयी बनाये, यही शुभ भावना सहित चरणों में बारम्बार– नमोऽस्तु....

–गणिनी आर्यिका क्षमाश्री माताजी

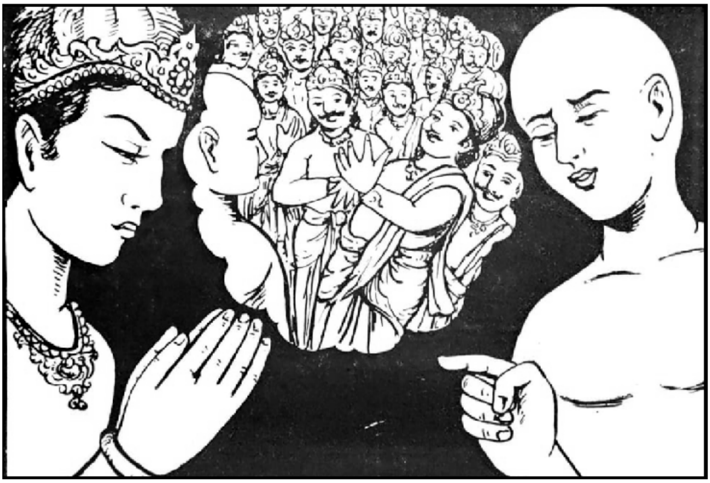

मुनिराज राजा श्रीपाल को उसके पूर्व भव की घटना क्रम बताते हुए

सिद्धचक्र की महिमा

जैन धर्म में अनेक व्रत, उपवास विधान आदि होते रहे हैं और होते रहेंगे। इतिहास के पन्नों को देखते हैं तो हमें पढ़ने–सुनने में आता है। एक ऐसा विधान जो आज भी भारत की वसुन्धरा पर युगों–युगों से होता आ रहा है। उसका नाम है **श्री सिद्धचक्र मंडल विधान**। यह अपने आप में चमत्कार और अतिशय से युक्त है। इस हुंडावसर्पिणी काल में जिसके निमित्त से हमें इतना बड़ा विधान मिला, **वो मुख्य कर्णधार चंपापुर के राजा श्रीपाल और पट्टरानी मैनासुंदरी हैं।** मैना सुंदरी ने अपने पति का कुष्ठ रोग इस विधान को करके ही मिटाया था। विधान से पूर्व वह महासती छः अंगों सहित अभिषेक, पूजा करती थी। भगवान के गंधोदक को उसके कुष्ठी पति और 700 कुष्ठियों पर छिड़कने से उनका सम्पूर्ण कोढ़ मिटा दिया। श्रीपाल कामदेव थे, रोग मिटते ही उनका शरीर और भी अधिक सोने की तरह चमकने लगा।

जब–जब भी श्रीपाल पर किसी प्रकार का संकट आया तब–तब उसने हर समय सिद्धप्रभु का ध्यान किया। हमारे आचार्य कहते हैं सांसारिक जीव को अपने कार्य सिद्ध करने के लिये सिद्ध प्रभु का ध्यान जाप करना चाहिये।

हमारे जितने भी तीर्थंकर दीक्षा ग्रहण करते हैं। दीक्षा लेने से पूर्व **नमः सिद्धेभ्यः** बोलते हैं।

जो भगवान है यदि वो भी सिद्धों का नाम ले रहे हैं तो हमें कितनी बार कितनी श्रद्धा से **णमो सिद्धाणं** बोलना चाहिये।

ऐसे अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठियों की भक्ति करने के भाव, गुणानुवाद लिखने के भाव आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी गुरुदेव के आये और उन्होंने अपनी कलम को चलाना शुरू किया। अपनी काव्य कुशलता का उपयोग किया।

गुरुदेव ने वैसे तो अनेकों विधान लिखे हैं। उसी श्रृंखला में सिद्धचक्र भी लिखा है। यह सिद्धचक्र विधान सब विधानों में बड़ा है, विधानों का राजा है। इसमें 8, 16, 32, 64, 128, 256, 512,1024 अर्घ चढ़ाये जाते हैं।

इस विधान की समुच्चय पूजा बहुत सुन्दर बनी है। हमें ये विधान किसके कारण मिला, उनका नाम अष्ट द्रव्य की कॉमन लाईन में दिया है। सिद्धचक्र विधान तो पूर्व में अनेक विद्वानों ने लिखे हैं परन्तु गुरुदेव के द्वारा लिखा गया विधान बहुत सरल शब्दों में, प्रत्येक अर्घ को पढ़कर उसका अर्थ हम समझ सकते हैं।

मैना सती श्रीपाल सम, हम सिद्ध का अर्चन करें।
श्री सिद्धचक्र विधान से, वसु कर्म का भंजन करें।

समुच्चय पूजा और उसकी जयमाला में श्रीपाल मैना सुन्दरी के जीवन चारित्र को गीता,

शंभु छंद में लिखा है, उस जयमाला को पढ़कर हम उनके जीवन के सुख–दुःख और कर्मों के फल को समझ सकते हैं।

इस विधान में गुरुदेव ने अनेक छंदों का उपयोग किया है।

शेरछंद, नरेन्द्र छंद, चौपाई, दोहा, अडिल्ल छंद, शंभु छंद, गीता छंद, सखी छंद, चामर छंद, पंच चामर आदि छंदों में लिखा है। हरेक नर–नारी संगीत के साथ इस विधान को करके आनंद को प्राप्त कर सकते हैं। हम कोई विषय तब तक ही पढ़ते हैं, जब तक हमें उसका अर्थ समझ में आता है। अर्थ समझ में नहीं आने पर व्यक्ति भक्ति भी नहीं करता है। जो मंत्र आया है उसको शब्दों में छंदोंबद्ध किया है।

आचार्य श्री का जहाँ–जहाँ भी चातुर्मास हुआ है, वहाँ की समाज को वे कभी खाली नहीं बैठने देते हैं। स्वयं भी विश्राम नहीं करते, दूसरों को भी धर्म में एवं धार्मिक कार्यों में लगाये रखते हैं। आपने उपाध्याय परमेष्ठि के गुणों का वर्णन करते हुए ऐसा ही लिखा है।

शिक्षक ज्ञान दान में तत्पर, कभी नहीं लेते विश्राम।
कभी न थकते कभी न रुकते, आत्म वीर्य चेतन अभिराम॥

कहावत प्रसिद्ध है– ''खाली माथा भूतों का डेरा'' इसलिए व्यक्ति को खाली बैठे नहीं रहना चाहिये। अपने आपको भगवान की भक्ति आदि सत्कृत्यों में लगाये रखना चाहिये।

आचार्य आदि पाँचों परमेष्ठि का दर्शन मंगल स्वरूप होता है। वे संसार के सारे अमंगल को दूर करते हैं। विश्व में मंगल हो ऐसी भावना हमेशा करते रहते हैं। देखें–

मंगल रूप अमंगल हरते, सूरि विश्व का मंगल करते।

आपने सिद्धचक्र विधान में बहुत सुन्दर छंदों की रचना की है। सरल शब्दों में हरेक अर्घ को लिखा है। जिनको पढ़कर हरेक भक्त बड़ी सहजता से समझ सकता है। भगवान ही हमारे गुरु हैं, माता–पिता हैं, शरण प्रदाता है। आचार्यश्री ने लिखा है :–

आप गुरु त्रैलोक्य के, सब विद्या के ईश।
हमको विद्या दान दो, हे 'सूरि' जगदीश॥189॥

भगवान के सहस्रनाम में धर्मतीर्थ का नाम स्वयं सौधर्म इन्द्र ने स्तुति के माध्यम से बताया है :–

धर्मतीर्थ कर्ता प्रभो, 'धर्मतीर्थकृत' नाम।
धर्मतीर्थ शाश्वत रहे, रहे धर्म का नाम॥148॥

धर्मतीर्थ प्रणेता आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी गुरुदेव की यह अद्भुत अनुपम कृति जग में प्रसिद्ध होगी, विधान करने वालों का भाग्य जगायेगी, पुण्य बढ़ायेगी। सुदृष्टि प्राप्त करायेगी। स्वयं भगवान के नाम का अर्थ इस बात का संकेत दे रहा है जो आचार्यश्री ने अपनी लेखनी से लिखा है।

भाग्य जगे सब जीव का, तुम दृष्टि से देव।
भाग्य जगाने हम जपें, 'दिष्टि' नाम सदैव॥172॥

भाग्य जगाने वाले भगवान और गुरु को हम अपने मन मंदिर में बसायें, उनकी भक्ति करें, जिस दिन हमारा मन मंदिर बन जायेगा उस दिन हमारा ये तन भी मंदिर बन जायेगा। तन को मंदिर बनाने से पूर्व मन को मंदिर बनाना जरूरी है।

गुरुदेव ने बहुत सुन्दर मन मंदिर पर लिखी है–

मन मंदिर में वास तुम्हारा, गोप्त नाम रक्षक दुःखहारा।
सिद्धचक्र को हम सब ध्यायें, उनको मंगल अर्घ चढ़ायें॥837॥

जब हमारा मन मंदिर बन जायेगा तब हम भी निर्ग्रंथों की श्रेणी में आ पायेंगे। धन्य हैं निर्ग्रंथ गुरु और उनका ज्ञान–

वस्त्र रहित जिन आप निरम्बर, छोड़ा वस्त्रों का आडंम्बर।
ज्ञान चक्षु के चक्षु निराले, ज्ञानामृत बरसाने वाले॥

ऐसे संत महात्मा ही जब परमात्मा बनते हैं वो बाह्य लक्ष्मी को छोड़ते जाते हैं, जितना छोड़ते हैं उनती ही लक्ष्मी उनके पीछे आती है, सेवा करती है।

गुरुदेव ने बहुत सुन्दर विधान बनाया है। पूरे विधान को करके और अर्घों के अर्थ को समझ कर वाणी गद्‌गद् हो जाती है। मन आनंद विभोर हो जाता है।

गुरुदेव की कवित्व शक्ति को प्रणाम करती है। किस प्रकार लक्ष्मी भगवान की सेवा में तत्पर रहती है।

लक्ष्मी सेवा करें तुम्हारी, तुम श्रीश्रित पादाब्ज बिहारी।
आप 'श्रीश' श्री के ईश्वर हो, लक्ष्मी सुखदाता ईश्वर हो॥

घातिकर्म का क्षय करने वाले केवलज्ञानी भगवान का केवलज्ञान ही नेत्र होता है।

केवलज्ञान नेत्र के धारी, केवलज्ञान वीक्ष्य सुखकारी।
आप कृपालु कृपायुक्त हो, सब कर्मों से आप मुक्त हो॥1000॥

सिद्धचक्र विधान की जयमाला में मैना सुन्दरी श्रीपाल का पूरा जीवन परिचय छंद के रूप में बहुत सुन्दर लिखा है। जयमाला में–

जिनवर संग सिद्धयंत्र ऊपर, मैना पंचामृतधार करें।

आगम वर्णित स्त्री अभिषेक व पंचामृत का भी उल्लेख गुरुदेव ने किया है।

कोटी भट श्रीपाल ने किन से दीक्षा ली एवं कहाँ से निर्वाण प्राप्त किया वो सब जयमाला को पढ़कर हम ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

सम्यक्त्वी सती जिन भक्ति से, सब कोढ़ व्याधि को नशती है।

किस कारण श्रीपाल को कोढ़ हुआ, राज्य छूटा, सिंहासन छूटा, पिता का वियोग, अपशब्द समुद्र में गिराया गया आदि-आदि विषय जयमाला में दिया है। जयमाला पढ़कर हम पूरे श्रीपाल मैना सुन्दरी के पुराण का अध्ययन कर सकते हैं। श्रीपाल अपने पूर्व भवों को मुनिराज के मुख से सुनते हैं तो बहुत पश्चात्ताप करते हैं, प्रायश्चित्त करते हैं।

जयमाला में गुरुदेव ने लिखा है-

श्रीपाल स्वयं की पाप कथा, सुनकर लज्जित हो जाते हैं।
तत्काल छोड़ सब राजभोग, निर्ग्रंथ श्रमण बन जाते हैं॥
सिद्धों को ध्या वसु कर्म नशे, वे अंत सिद्ध पद पाते हैं।
श्रीपाल सिद्ध का यशोगमन, जैनागम हमें सुनाते हैं॥

अंत में जब श्रीपाल दीक्षा ग्रहण कर लेते हैं तो मैना सुंदरी भी आर्यिका बन जाती है। सभी रानियाँ दीक्षा ग्रहण करती हैं। उत्तम समाधि मरण करके स्त्री पर्याय का छेदन करती हैं। **मैना भी आर्या दीक्षा ले, फिर महाशुक्र पद पाती है।** अगले भव में अवश्य ही मैना सुन्दरी कर्म काटकर मोक्ष जायेगी।

आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी गुरुदेव भी इस विधान के फलस्वरूप अवश्य ही कर्म काटकर अरहंत सिद्ध पद को प्राप्त करें। ऐसी मैं प्रभु से प्रार्थना करती हूँ। गुरुदेव को एवं गुरुदेव की विशेष कृति को बारम्बार कोटि-कोटि प्रणाम करती हूँ। त्रय भक्तिपूर्वक नमोऽस्तु करती हूँ।

गुरु की महिमा वर्णी न जाय।
गुरु नाम जपों मन वचन काय॥

गुरुदेव के द्वारा लिखा गया ये सिद्धचक्र विधान भारत भर के सभी भक्त एक बार अवश्य करें। ये विधान अष्टाह्निका पर्व में विशेष रूप से किया जाता है। परन्तु हमारे आचार्य कहते हैं। जब विधान करने की भावना हो तब भी कर सकते हैं।

जब तक इस धरती पर सूरज चाँद रहेगा। तब तक गुरुदेव का ये विधान होता रहेगा।

गुरुदेव बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। स्वयं विधान, पूजन, कविता, भजन आदि लिखते हैं, गाते हैं। ऐसे गुरुवर के लिये जितना लिखूँ उतना कम है। मैंने आज तक जितने भी विधान पूजा आदि लिखे हैं, उन सबका संपादन गुरुदेव ने ही किया है।

गुरुदेव के द्वारा हर क्षेत्र में समाज में स्थाई काम हुये हैं। सरल स्वभावी ज्ञानी विद्वान, आर्षमार्ग के संरक्षक, धर्मतीर्थ क्षेत्र प्रणेता आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी गुरुदेवको त्रय भक्तिपूर्वक नमोऽस्तु करती हूँ।

पूजक, प्रकाशक, पुण्यार्जक सभी भक्तों को आशीर्वाद।

-गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी
(संघस्थ आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी गुरुदेव)

सरल, रुचिकर श्री सिद्धचक्र विधान

प्रज्ञायोगी गुरुवर आचार्य गुप्तिनन्दी गुरुदेव के चरणों में नमोऽस्तु-नमोऽस्तु।

आपके द्वारा लिखा गया सिद्धचक्र विधान बहुत ही सरल और रुचिकर और छोटा भी है। विधान करने वाला अकेला भी कर सकता है। कम समय में कर सकता है। सिद्धचक्र विधान मैना सुन्दरी ने किया था। यह विधान अपने आप में बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस विधान के द्वारा मैना सुन्दरी ने श्रीपाल का कुष्ट मिटाया था। श्रीपाल कोटीभट था। साथ में 700 कोड़ियों का कुष्ट मिटाया था। सिद्धचक्र विधान में सोलहकारण विधान, कर्मदहन विधान, परमेष्ठि विधान और सहस्रनाम विधान गर्भित है इसलिये भी सिद्धचक्र बहुत महान है, सब दुःखों का हर्ता है। गुरुदेव के द्वारा लिखा गया विधान अच्छा और जल्दी समझ में आ जाता है, सरल भाषा में है। उसी प्रकार चौबीसों भगवान का विधान भी बहुत अच्छा लिखा है। सरल भाषा में है। चौबीसों भगवान के विधान अलग-अलग तरह से लिखा है। उसी में सभी विषय आ जाते हैं। सरल रुचिकर सिद्धचक्र विधान और छोटा भी है। मुझे बहुत अच्छा लगा। मैं जितनी प्रशंसा करूँ उतनी कम है।

-आर्यिका सुखदमति माताजी

आचार्यश्री के दर्शन करते हुए मैनासुन्दरी और श्रीपाल

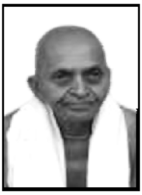

सर्व सुखदायक सिद्धचक्र विधान

सिद्ध प्रभु गुणवान, सिद्धि के हो दाता ।
कर्म आठ सब काट, पाते शिव सुख साता ।।
शुद्ध बुद्ध अविकार, तुम हो मोक्ष प्रदाता ।
ऋद्धि सिद्धि सब पाय, जो नित नावें माथा ।।

जिनभक्ति ही संसार के दुःखों से छुड़ाकर उत्तम सुख प्रदान करने वाली है। अंत में मोक्ष सुख प्रधानता से देने वाली है। उदारणार्थ- कोटिभट् राजा श्रीपाल कोढ़ व्याधि से ग्रस्त थे और उनके साथ 700 कोढियों का दल था। उन सभी के कोढ़ को मिटाने के लिए महासती रानी मैनासुंदरी ने दिगंबर जैनाचार्य सुगुप्त गुरुदेव की प्रेरणा से श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान किया। वह अकेली ही श्री जिनेन्द्र भगवान का अभिषेक करती थी और अकेले ही संपूर्ण विधान करती थी। विधान के बाद वही अभिषेक का गंधोदक लेकर अपने पति के सर्वांग पर छिड़कती थी। साथ में सभी 700 कोढियों पर भी छिड़कती थी। जिससे प्रतिदिन राजा श्रीपाल सहित सभी कोढियों का कोढ़ शनैः-शनैः समाप्त होता गया और आठ दिनों में संपूर्ण रोग समाप्त हो गया। शरीर स्वस्थ हो गया गंधोदक की महिमा से काया कंचन हो गई। श्रीपाल राजा कोढ़ि से कोटिभट् कामदेव बन गए।

इसी भक्ति और श्रद्धा से हमारे दीक्षा-शिक्षा प्रदाता आचार्य श्री गुप्तिनन्दी जी गुरुदेव ने श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान की रचना की है। वह सराहनीय है। इसके अलावा उन्होंने अनेकों कविता, पूजाओं, विधानों व चालीसाओं की रचना की है। वे कथाओं और प्रवचनों में भी आकर्षक शैली में उसका उपयोग करते हैं अतः वे महान् कवि हैं। धर्मतीर्थ में इस वर्ष चातुर्मास लगते ही लगभग एक महीने तक आचार्यश्री द्वारा रचित सिद्धचक्र विधान का आयोजन हुआ। साथ में श्रीपाल चरित्र पर आचार्यश्री ने स्वाध्याय प्रवचन दिया। इसमें मैनासुंदरी श्रीपाल की सिद्धचक्र विधान के प्रति अपार श्रद्धा दिखाई दी। उसका सातिशय चमत्कार उनके जीवन में अनेकों बार घटित हुआ।

अतः मुझे विश्वास है कि जो भव्य जीव श्रद्धा भक्ति से श्री जिनेन्द्र भगवान की वाणी सुनते हैं या आचार्य, उपाध्याय, मुनिराज का सदुपदेश सुनकर उस पर श्रद्धा रखते हुए आकुलता रहित होकर श्री जिनेन्द्र प्रभु का दर्शन, अभिषेक, पूजा, विधान, दान करते हैं। स्वाध्याय करते हुए महाव्रत/देशव्रत को पाने की भावना रखते हुए उन्हें नवधा भक्ति से आहार दान देते हैं। आहार, विहार, वैयावृत्ति में सदैव तत्पर रहते हैं और आगे उत्तम संयम धारण करके आगे उत्कृष्ट समाधिमरण करते हैं वे तीन या चार भवों में उत्तम से उत्तम पद प्राप्त करते हुए आगे परम निर्वाण सिद्धपद को अवश्य प्राप्त करेंगे।

इसी उद्देश्य से आचार्य श्री गुप्तिनंदी पूजा अर्चना विधानों की रचना करते हैं जिससे संसार के सभी जीव निरोगी, सुखी, बने। पुण्य से समृद्ध रहें। मेरी धर्मगुप्त की यही भावना है कि हमारे गुरुदेव सदैव स्वस्थ रहें। आपके रत्नत्रय आरोग्य की निरन्तर वृद्धि हो। आपकी शरण में हम जैसे जीवों का निरन्तर कल्याण उत्थान होता रहे। आपके द्वारा युगों-युगों तक ऐसी ही जिनधर्म की महती प्रभावना होती रहे।

धर्मतीर्थ वर्षायोग, 26-7-2023 -आपका आज्ञाकारी शिष्य

क्षुल्लक धर्मगुप्त

मधुर व अर्थपूर्ण है विधान

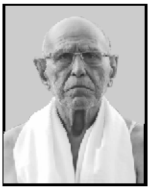

प.पू. प्रज्ञायोगी दिगम्बराचार्य गुप्तिनंदी जी गुरुदेव के चरणों में कोटि–कोटि प्रणाम।

पूज्य गुरुदेव ने आपने मुनिकाल से जिनधर्म प्रभावना पूजन, अभिषेक एवं अन्य विषयों पर अनेक ग्रन्थों की रचना की है।

अब इस समय में पूज्य गुरुदेव ने समाज में प्रचलित एवं सर्व पूजनीय **'श्री सिद्धचक्र विधान'** का सरल, सुबोध एवं सभी को प्रिय होगा ऐसा विधान का छंदबद्ध रूप से लेखन किया है।

इसके लेखन के लिए पूज्यश्री प्रातः में उठकर इसकी रचना करते थे। जब हम सभी शिष्य जाते थे, तब उनके मुख से वह गुनगुनाते थे। बाद में अष्टाह्निका पर्व में सिद्धचक्र विधान की पूजा प्रारम्भ हुयी। उस समय श्री मंदिरजी में पूजन करते समय बहुत सुन्दर ढंग से पूज्यश्री उसका छंद रूप से वाचन पूजन करते थे और सभी श्रावक–श्राविका उस पर पूजन का आनंद लेते थे। इस 'सिद्धचक्र पूजन विधान' में जयमाला में कोटिभट् राजा श्रीपाल एवं मैनासुन्दरी के जीवन चरित्र का सम्पूर्ण अर्थपूर्ण परिचय दिया है। जो इससे पूर्व में कभी सुनने में नहीं आया।

इस जयमाला में आये सम्पूर्ण जीवन चरित्र पर भक्तों द्वारा बहुत ही सुन्दर प्रतिक्रिया प्राप्त हुयी है।

इसे सुनकर भक्तगण बहुत प्रभावित होते थे। इस अष्टाह्निका पर्व में पूज्यश्री के वाणी से अनमोल–छंदबद्ध विधान की रचना सुनी जो कि समाज उपयोगी एवं बहुत ही मीठीचाल की पूजन सिद्ध होगी।

प.पू. मेरे दीक्षागुरु पूज्य गुप्तिनंदी जी गुरुदेव के चरणों कोटि–कोटि प्रणाम।

–क्षुल्लक शांतिगुप्त

धन्य हो गयी कलम

भगवन् मेरी नजरों में वो खुशी हो जाए।
नजर जिस चीज पर डालूँ, गुप्तिनंदी गुरु की तस्वीर बन जाए।।

मेरे गुरुदेव वात्सल्यमयी मूरत, कविहृदय, आर्षमार्ग संरक्षक, श्रमण संस्कृति उन्नायक, धर्मतीर्थ प्रवर्तक, ज्ञान दिवाकर, महाकवि, प्रज्ञायोगी, दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदी जी गुरुदेव के चरणों में कोटि-कोटि नमन करती हूँ।

गुरुदेव का सभी जीवों से बहुत लगाव है। आपने हर क्षेत्र में बहुत अच्छा काम किया है। समाज को अच्छा लगे जब से आपने धर्म प्रभावना के लिए गुरु आज्ञा से बहुत विधान लिखे और आप अच्छे से करवाते हैं। गुरुदेव आपकी प्रवचन शैली बहुत अच्छी है। आप संगीतमय कथा करते हैं। गीत, संगीत, कविता, पूजन, भजन, विधान, आदि की रचना करते और मधुर वाणी से गाते हैं। आपने अनेक विधानों की अच्छी रचना की। आप गुरु भक्ति भी सबसे अच्छी करवाते हैं। आप पूजन, भजन, चालीसा, आरती, खुद भी करते और भक्तों से भी करवाते हैं। आप पंचकल्याणक, वेदी प्रतिष्ठा छोटे-बड़े सभी काम करवाते हैं। आप ज्योतिष, वास्तु से जिन मंदिर, संत भवन बनवाते हैं। आर्षमार्ग का पट भी मंदिरजी में लगवाते हैं। आपने बालाजी नगर, हडको नगर, अरिंहत नगर आदि बहुत मंदिर बनवाये और पंचकल्याणक भी करवाये और गुरुदेव आपने बहुत विधान लिखे और गुरुदेव आपने सिद्धचक्र विधान लिखा। सिद्धचक्र विधान मैना सुन्दरी ने किया और श्रीपाल का कुष्ठ रोग दूर किया और 700 भक्तों का कोढ़ दूर किया। मैना सुन्दरी ने आठ दिन विधान किया और अभिषेक किया और सभी का कुष्ठ दूर किया। मेरे गुरुदेव छोटे से थे तभी से मंदिर जाना, पूजा-पाठ करते थे। मेरे पिताजी बोलते थे, बेटा आपने कौनसी घुट्टी पिलाई जिससे इसे बचपन से धर्म से लगाव है। और गुरुदेव पढ़ाई में बहुत तेज थे। सभी भाईयों-बहिनों में भी बहुत प्यारे थे। स्कूल में अच्छी पढ़ाई एवं सुन्दर गीत गाते थे। और सभी जगह ईनाम भी प्राप्त करते थे।

कैसे लिखूँ मैं बात गुरुदेव की, लेखनी रूक-रूक जाय रे।
खुशियाँ बह रही पोर-पोर से, मस्तक झुक-झुक जाय रे।।

-क्षुल्लिका धन्यश्री माताजी
(संघस्थ आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी गुरुदेव)

धर्मतीर्थ का उपहार

आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी गुरुदेव को नमोऽस्तु, शत्-शत् वंदन।

पूरे संघ को नमोऽस्तु, वंदामि, इच्छामि, इच्छामि।

हमने हमारे गुरुदेव की कृपा से दो शब्द लिखें हैं,

जो सुबह रोज श्रीपाल चरित्र का स्वाध्याय होता है। स्वाध्याय में गुरुदेव रोज समझाते हैं कि मैना सुन्दरी एक नारी भी बहुत अच्छी थी। उसके योग-संयोग से कोड़ी पति मिला था। उसके गाँव के 700 कोड़ी की सेवा करके बहुत पुण्य कमाया। सबको इस विधान को करने की शिक्षा मिलती है। कि दुःखी रोगी की सेवा करना, दुःखी के घृणा नहीं करना। गुरुदेव ने मुझे दीक्षा विजया दशमी के दिन धर्मतीर्थ पर पहली दीक्षा दी। नाम रखा क्षुल्लिका तीर्थश्री माताजी। गुरुदेव ने मेरे जीवन का कल्याण किया। गुरुदेव ने मार्ग पर लगाया, मुझे सुनने में नहीं आता तो भी गुरुदेव बड़ी शांति से अच्छे से समझाते हैं, माताजी भी समझाती है, सभी गुरुजन मुझमें दिल लगाते हैं और मैं बहुत खुश रहती हूँ। आनंद के साथ रहती हूँ। आपको मोक्ष की प्राप्ति हो यही मेरी कामना है।

गुरुदेव ने बहुत से विधान ग्रंथ लिखे हैं. अभी सिद्धचक्र विधान लिखा है। बहुत ही सरल शब्दों में सुन्दर विधान लिखा है। आप सभी अवश्य करें और पुण्य कमायें।

-क्षुल्लिका तीर्थश्री माताजी

(संघस्थ आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी गुरुदेव)

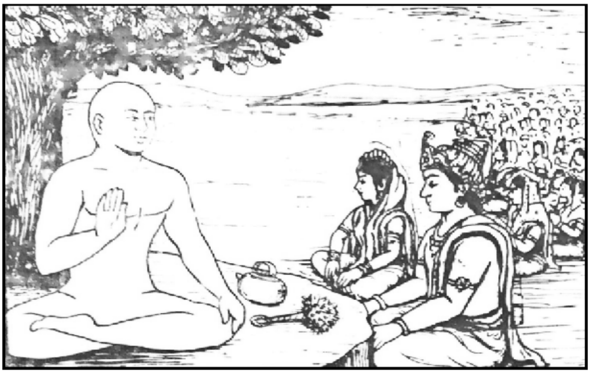

आचार्यश्री के दर्शन करते हुए कोटिभट्ट राजा श्रीपाल और मैनासुन्दरी आदि रानियाँ

कविवर 'आचार्य गुप्तिनंदीजी' की रचनाओं में शिरोमणी रचना

श्री सिद्धचक्र विधान

प.पू. आचार्यश्री के द्वारा अनेक पूजा विधान की रचना अब तक हुई है, ऐसी महान् रचना जिसके पढ़े–सुने बिना मन में एक रिक्तता का आभास होता है, एक ऐसी महान् रचना जिसका एक–एक शब्द अध्यात्म से परिपूर्ण है, और एक ऐसी महान् रचना जो अंतस्थल को छू लेती है। सिद्धांत ग्रन्थों का सहारा लेकर एक से एक अनुपम रचनाओं का आपने सृजन किया। भक्ति भाव से प्रेरित रचनाओं के लेखन कार्य में वे सदा प्रवृत्त रहते है। उनकी अध्यात्मिक शक्ति अद्‌भुत है। उनकी पूजायें केवल शास्त्रीय ज्ञान के ठोस धरातल पर ही नहीं बल्कि सरसता, सरलता व सुलभता के कारण छंद लयबद्धता के कारण लोकप्रिय हैं। चाहे आरती हो, पूजन हो, भजन हो, भक्त की विनम्र भक्ति है। इन रचनाओं की अलौकिक प्रस्तुतीकरण हर किसी को भक्ति रस में ओतप्रोत हो झूमने–नाचने के लिए मजबूर कर देता है। कविवर 'आचार्य गुप्तिनंदी जी' की रचनायें वर्षों से जैन जगत् में अपनी आभा बिखेर रही है। भक्त की भावनाओं को भगवान तक पहुँचा रही है। पूजा महोत्सव को आकर्षक बना रही है। उनका यह सत्कार्य निश्चित रूप से उन्हें एक 'आर्षमार्ग संरक्षक' रचनाकार होने का गौरव प्रदान कर रहा है। उनकी कृतियाँ युगों–युगों तक हम सबके मानस पटल पर अपनी आभा बिखेरती रहें, यही हम सबकी ईश्वर से प्रार्थना है।

उक्त रचना में सिद्ध गुणों से जुड़ने का महान् लक्ष है, मैना सुन्दरी एवं श्रीपाल राजा की कथा हम अलग से पढ़ते हैं, लेकिन अब गुरुदेव ने पूरा श्रीपाल एवं मैना सुन्दरी का चरित्र जयमाला के रूप में विधान पूजा के अंदर भर दिया है। हिन्दी भाषा में सिद्धचक्र विधान की बहुत सारी रचनाएँ अनेक कवियों ने बनाई है। अब परम पूज्य गुरुदेव ने भाषा सहज, सरल वर्तमान की प्रचलित शब्दों में शुद्ध एवं स्पष्ट साधारण जन समझ सके ऐसा महान् प्रयास किया है। श्रीपाल चरित्र अप्राप्त था वह प्राप्त होने पर प्रथम गणिनी आर्यिका विजयामती माताजी ने हिन्दी टीका लिखकर प्रकाशित किया था, उसमें बहुत सारी रहस्यमय बातें मैना सुन्दरी के बारे में प्राप्त हुई वह सारी बातें गुरुदेव ने उक्त रचना में बहुत सहज और सरलता में हमें प्रदान की है, सब भक्तगण गद्‌गद् हुए बिना नहीं रहेंगे ऐसा मुझे विश्वास है। यह विधान रचना मुझे भी आशीर्वाद प्रदान करे यही भावना करता हुआ गुरुदेव के चरणों में नमन करता हूँ।

प्रतिष्ठाचार्य – प्रदीप कुमार जैन 'मधुर' कुसुंबा (बोरीवली–मुम्बई)

मेरे गुरु मेरे भाग्य विधाता

अज्ञानोपास्ति-ज्ञानं, ज्ञान ज्ञानिसमाश्रयः।
ददाति यत्तु यस्याति, सुप्रसिद्धं मिदं वचः॥

अज्ञानी की उपासना संगति से अज्ञान प्राप्त होता है, ज्ञानी की उपासना से ज्ञान की प्राप्ति होती है। विद्वानों द्वारा ऐसे कई श्लोक मिलते हैं, और ये भी सच है कि आप किसके साथ बैठते हैं, उठते हैं, इस पर आपके जीवन के संस्कार निर्धारित होते हैं। अज्ञानता, मिथ्यात्व हमें जन्म से ही प्राप्त होते हैं। जन्मतः माता-पिता गुरु होते हैं, लौकिक शिक्षा में विद्यालय के गुरुजन का सानिध्य मिलता है, लेकिन यदि हमारा जीवन संसार समुद्र से तरना है तो आध्यात्मिक गुरु की आवश्यकता जरूर होती है।

मेरे जीवन में आध्यात्मिक गुरु की प्राप्ति सन् 2003 में फलटण का वो दिन याद है जो चातुर्मास आषाढ़ अष्टाह्निक पर्व में आचार्य परमेष्ठी दिगम्बर जैनाचार्य गुप्तिनंदी जी गुरुदेव का ससंघ चातुर्मास होने वाला था। उसी चातुर्मास में मंदिरजी में श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान का समाज द्वारा आयोजन किया था और मुझे उस विधान में प्रथम बार गुरु की छत्रछाया प्राप्त होने से मैं धन्य हो गया।

उस विधान में गुरुदेव ने अनेक छंदों में विधान को अप्रतिम तरीके से करवाया। मैं भी धन्य हो गया। ऐसे गुरु जो साक्षात् कविहृदय हैं, इनकी जिह्वा पर साक्षात् सरस्वती विराजित है, तबसे मैं गुरु के चरणों से जुड़ गया।

2004 में गुरुदेव का सांगली में चातुर्मास के लिए प्रथम बार पश्चिम महाराष्ट्र से आगमन हुआ। तब बेड़ग पंचकल्याणक प्रतिष्ठा हुयी उसका प्रभाव जन-जन में उमड़ा गुरुदेव के अनुशासन में पूजन भक्ति, भगवान के प्रति भक्ति की सबने सराहना की।

2004 में मेरे जीवन में सबसे बड़ा भाग्योदय हुआ धर्म का प्रभाव और गुरु सेवा का साक्षात्कार हुआ। सांगली में प्रथम बार गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी (जो प्यार से सभी लोग, संघ में अम्मू कहके बुलाते थे) ऐसे दयालू माँ के कलम से लिखित वृहत् गणधर वलय महामण्डल विधान सांगली में तरूण भारत स्टेडियम 5500 जोड़ों इन्द्र-इन्द्राणी द्वारा **'भूतो न भविष्यति'** ऐसा कोल्हापुर, सांगली जिले के सभी जैन श्रावक-श्राविका सभी ने आनन्द उठाया। इसमें गजराज से मंडल पर पुष्पवृष्टि, रात्रि में लक्ष दीपोत्सव का आयोजन, नाटिका, सांस्कृतिक कार्यक्रम से ये सब यहाँ पर पूरा नया था उसमें मुझे गुरुदेव ने 'वाणीभूषण' पदवी से सम्मानित किया।

तब से 2004 से पश्चिम महाराष्ट्र और कर्नाटक में संगीत पूजन प्रारम्भ हुआ। आज तक गुरुदेव के आशीर्वाद से भारतवर्ष में लखनऊ, बाराबंकी, श्रावस्ती, उज्जैन, दिल्ली, नागपुर, औरंगाबाद बहुत सारी जगह पर पूज्य गुरुदेव के सानिध्य में आशीर्वाद से पूजन एवं भक्ति करने का अवसर प्राप्त हुआ।

आज तक गुरुदेव की लेखनी से अनेक कविता, पूजन, विधान का सृजन हुआ है। गुरुदेव की मूर्ति छोटी है पर कीर्ति चारों दिशाओं में है। अब हमारे जैन समाज को ऐसा अवसर पुनः गुरुदेव से प्राप्त हो रहा है। **श्री वृहत् सिद्धचक्र महामण्डल विधान** जो अनेक छंदों सहित उसमें आज तक कथा के माध्यम से महासती मैना सुन्दरी और राजा श्रीपाल चरित्र का उल्लेख मिलता है। जो कभी देखने को नहीं मिलता। इसी तरह गुरुदेव का ज्ञान गागर में सागर समान है। जो छंद, रचना संक्षिप्त परन्तु पूर्ण ज्ञान से भरा है।

हमारे गुरुदेव का पूरा संघ कवियों का है जिसमें आचार्य सुयशगुप्त जी, आचार्य चन्द्रगुप्त जी व गणिनी आर्यिका क्षमाश्री माताजी, गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी जैसे विद्वानों से भरा है।

मुझे इस सिद्धचक्र महामण्डल विधान के नई पुस्तक हेतु कलम चलाने का अवसर प्राप्त हुआ ये सब गुरुदेव के आशीर्वाद से हुआ है। क्योंकि मैं तो अज्ञानी था, गुरुदेव ने मुझे ज्ञान देकर उपकृत किया है।

ऐसे हमारे आचार्य गुप्तिनंदी सदा जयवंत हो, यही मंगल भावनाओं के साथ यह विधान सम्पूर्ण जैन समाज को मंगलमय हो, प्रभावना युक्त हो, सभी लोग इसका उपयोग करके अपने कर्मों का प्रक्षालन करें। इसी भावना के साथ वाणी को विराम देता हूँ।

आचार्यश्री के चरणों में त्रि–बार शुद्धिपूर्वक नमोऽस्तु–3

1–10–2023 **प्रतिष्ठाचार्य वाणीभूषण**

सांगली (महा.) **पं.दीपक कुमार उपाध्ये**

पुराण सिद्ध – श्री सिद्धचक्र

कर्माष्टक विनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मी निकेतनम्।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहम्॥

हर एक मंदिर में तीर्थंकर और उनके साथ एक यंत्र जरूर रहता है। उसी का नाम 'श्री सिद्धचक्र यंत्र' है। श्री सिद्धचक्र ये शब्द बहुत गूढ़ार्थ है। सहस्रनाम में प्रथम नाम श्री मान है। श्री का अर्थ है आत्म, आत्म सहित जो शरीर है उसे मूल्यवान मानते हैं। इसलिये 'श्रीमान' देवदत्त ऐसे बोलते हैं। जब देवदूत का शरीर से आत्म तत्त्व निकल जाता हैं तब 'श्री' के स्थान में दिवगंत लिखते हैं। 'श्री' अंतरंग और बहिरंग लक्ष्मी का तत्त्व प्रतीक है।

गृहस्थ लोग अपने जीवन काल में किसी भी कार्य के पहले और कार्य परिपूर्ण होने के बाद। चार पुरुषार्थ के साधना सिद्धि होने के लिये या होने के बाद श्री सिद्धचक्र आराधना करनी चाहिये। ये बात महापुराण में प्रमाण है। यात्रा–विवाह–युद्ध–वास्तु, गृह प्रवेश आदि कार्यारंभ के पूर्व सिद्धचक्र आराधना करनी चाहिये। आत्मा को विशिष्ट गुणों की जो प्राप्ति के लिए स्वयं आत्मा पर संस्कार देना ही मूल उद्देश्य है। तीन काल में फाल्गुण, आषाढ़, कार्तिक ये तीन माह के अष्टाह्निक में शुद्ध अष्टमी से पूर्णिमा तक आठ दिवस नंदीश्वर पर्व में करने की परम्परा है।

इस विधान को शीलवती मैना सुन्दरी ने किया, यहाँ से यह विधान प्रचलित हुआ क्योंकि उसकी श्रृद्धा और यंत्र की महिमा से पति श्रीपाल जी और साथ–साथ अनेक लोगों को रोगमुक्त किया था। आज भी प्रत्येक त्यागी लोग इस आराधना को उत्कृष्ट भक्ति से करवाते हैं। मूल संस्कृत ग्रंथ से आदि कवि त्यागियों ने लिखकर श्री सिद्धचक्र विधान का गुणगान किया। ऐसे आचार्य श्री कवि गुप्तिनंदी जी ने आज की परिस्थिति में कम शब्दों में बड़े अर्थ में मानो **'गागर में सागर'** इस युक्ती से अत्यन्त सुन्दर काव्य, श्लोक रचना करके बहुत उपकार किया है। उपलब्ध इस ग्रंथ में आचार्यश्री ने अर्घावली में भी पूरा श्रीपाल राजा व मैना सुंदरी का कथन महिमा गायी हैं। इससे और श्रद्धा, वृद्धि होकर पूजक वाचकों को भी प्रभावित करने का प्रयास किया है। यह ग्रंथ भारत वर्ष में प्रचलित होगा ही होगा ऐसी मेरी भावना है। प.पू. आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी के चरणों में उपकृत अनंत नमोऽस्तु।

सज्जनों आप भी इस ग्रंथ का सदुपयोग करके आत्म कल्याण प्राप्त करें। इस चार शब्द बोलकर मंगल करता हूँ।

प्रतिष्ठाचार्य – चंद्रकांत गुंडप्पा पंडित, इंडी (कर्नाटक)

श्री सिद्धाचक्राभिषेक

श्री सिद्धचक्र यन्त्र का अभिषेक पाठ

–भट्टारक श्री शुभचंद्र प्रणीत

अनन्तरूपं सुगुणैः समग्रं, कर्मारिभेत्तारमहं सुमन्त्रैः।
संस्थापये श्रीशिवसातधारं, सिद्धं विबुद्धं परमात्मरूपम्॥1॥

ॐ णमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिन् ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानं।
ॐ णमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिन् ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः संस्थापनं।
ॐ णमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिन् ! अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधापनं।

नत्वा सिद्धं विशुद्धेद्धं, चिन्मात्रं लोकमूर्ध्वगम्।
तदग्रे स्थापये कुम्भं, वार्भिः पूर्णं हिरण्यजम्॥2॥

ॐ चतुष्कलशस्थापनं

(जल से अभिषेक)

गंगादिवरपानीयैर्हिमचन्दनशीतलैः।
शुद्धात्मपदमारूढं[1], स्नापयाम्यजमुत्तमम्॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं शुद्धजलेन श्रीसिद्धचक्रयंत्रं अभिषेचयामीति स्वाहा।

शुद्धोदकाभिषेकः।

अर्घ्य– वनगन्धाक्षतपुष्पैर्नैवेद्यैर्दीपधूपफलनिचयैः।
चाये सिद्धं सिद्ध्यै, कर्माष्टकभावनिर्मुक्तम्॥4॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्रयंत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्ड्रेक्षुनालिकेरादिरसै रम्यैःशुभावहैः।
शुद्धात्मपदमारूढं, स्नापयायजमुत्तमम्॥5॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं इक्षुरसेन, श्रीसिद्धचक्रयंत्रं अभिषेचयामीति स्वाहा।

इक्षुरसाभिषेकः। (नालिकेररसेन, नारंगरसेन आदि)

1. 'शुद्धात्मनः पदारूढं'' पाठ भी संभव है।

वनगंधाक्षतपुष्पैः... ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्रयंत्राय अर्घ्यं....

सर्वांगपुष्टिदै रम्यै–राज्यैर्घोणादिसत्प्रियैः।
शुद्धात्मपदमारूढं, स्नापयाम्यजमुत्तमम्॥6॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं घृतेन श्रीसिद्धचक्रयंत्रं अभिषेचयामीति स्वाहा।

घृताभिषेकः।

वनगंधाक्षतपुष्पैः... ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्रयंत्राय अर्घ्यं....

शुभैः स्निग्धैर्वरक्षीरैः शुक्लध्यानोज्वलैः परैः।
शुद्धात्मपदमारूढं, स्नापयाम्यजमुत्तमम्॥7॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं दुग्धेन श्रीसिद्धचक्रयंत्रं अभिषेचयामीति स्वाहा।

दुग्धाभिषेकः।

वनगंधाक्षतपुष्पैः... ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्रयंत्राय अर्घ्यं....

पुण्यपिण्डैरिवाखण्डैः स्थिरैर्दधिभिरुत्प्रभैः।
शुद्धात्मपदमारूढं, स्नापयाम्यजमुत्तमम्॥8॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं दध्नेन श्रीसिद्धचक्रयंत्रं अभिषेचयामीति स्वाहा।

दध्याभिषेकः।

वनगंधाक्षतपुष्पैः... ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्रयंत्राय अर्घ्यं....

लवङ्गैलासुकर्पूर–चर्णैः पूर्णैः सुगन्धिभिः।
शुद्धात्मपदमारूढं, स्नापयाम्यजमुत्तमम्॥9॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं सर्वौषधिना श्रीसिद्धचक्रयंत्रं अभिषेचयामीति स्वाहा।

सर्वौषध्यभिषेकः।

वनगंधाक्षतपुष्पैः... ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्रयंत्राय अर्घ्यं....

चतुर्वर्गैरिवोद् भूतैश्–चतुष्ककलशामृतैः।
शुद्धात्मपदमारूढं, स्नापयाम्यजमुत्तमम्॥10॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं चतुष्कोणकलशैः श्रीसिद्धचक्रयंत्रं अभिषेचयामीति स्वाहा।

चतुष्कलाभिषेकः।

वनगंधाक्षतपुष्पैः... ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्रयंत्राय अर्घ्यं....

कर्पूरचन्दनद्रव्यै-र्व्यक्तैर्गन्धोदकैः शुभैः।
शुद्धात्मपदमारूढं, स्नापयाम्यजमुत्तमम्॥11॥

ॐ नमो भगवते सिद्धाय सकलकर्मप्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशबन्ध-रूपरजोमुक्ताय शांताय शांतये विश्वरूपतायै ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अनाहतपराक्रमाय कर्मदहनाय मम शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

गंधोदकाभिषेकः।

वनगंधाक्षतपुष्पैः... ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्रयंत्राय अर्घ्यं....

यदंगसंगितो येन, याति पापं नृणां क्षणात।
तदर्पये निजे मूर्ध्न्यं-घं तिष्ठति कथं मम॥12॥

गंधोदकवंदनम्ः।

गंधोदक की वंदना करके पुनः गंधोदक को अपने माथे पर, सिर पर, नेत्रों में, कंठ में, हृदय में और नाभि में लगाना चाहिये।

स्नापयित्वेति ये भक्त्या, चायन्ते सिद्धनायकम्।
भुक्त्वा स्वर्भूपदं मुक्तौ, सुखायन्ते हितैषिणः॥13॥

इति पुष्पाञ्जलिः।

॥ इत्याशीर्वादः॥

इति सिद्धचक्राभिषेकः।

इस प्रकार यह सिद्धचक्र यंत्र का अभिषेक पूर्ण हुआ।

***

सिद्धभक्ति (प्राकृत)

असरीरा जीवघना उवजुत्ता दंसणे य णाणे य।
सायार-मणायारा लक्खणमेयंतु सिद्धाणं॥1॥
मूलोत्तरपयडीणं बंधोदयसत्तकम्मउम्मुक्का।
मंगलभूदा सिद्धा अट्ठगुणा - तीदसंसारा॥2॥
अट्ठविहकम्मवियला सीदीभूदाणिरंजणा णिच्चा।
अट्ठगुणा किदकिच्चा लोयग्गणिवासिणो सिद्धा॥3॥
सिद्धा णट्ठट्ठमला विसुद्धबुद्धीय लद्धिसब्भावा।
तिहुअणसिर सेहरया पसियंतु भडारया सव्वे॥4॥
गमणागमणविमुक्के विहडिय कम्म पयडि संघारा।
सासहसुहसंपत्ते ते सिद्धा वंदिमो णिच्चं॥5॥
जय मंगलभूदाणं विमलाणं णाणदंसणमयाणं।
तइलोयसेहराणं णमो सदा सव्वसिद्धाणं॥6॥
सम्मत्त णाण दंसण, वीरिय सुहमं तहेव अवग्गहणं।
अगुरुलघुं अव्वावाहं अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं॥7॥
तवसिद्धे णयसिद्धे, संजमसिद्धे चरित्तसिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मि य सिद्धे सिरसा णमस्सामि॥8॥

अञ्चलिका

इच्छामि भंते ! सिद्धभक्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेओ सम्मणाण-सम्मदंसण-सम्मचरित्तजुत्ताणं अट्ठविह कम्मविप्पमुक्काणं, अट्ठ गुणसंपण्णाणं उड्ढलोयमत्थम्मि पयिट्ठियाणं तवसिद्धाणं णयसिद्धाणं संजमसिद्धाणं चरित्तसिद्धाणं अतीदादाणागद वड्ढ माणकालत्तय-सिद्धाणं सव्वसिद्धाणं सया णिच्चकालं अच्चेमि पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं। इति पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजा-वंदनास्तवसमेतं श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान प्रारंभ करणार्थं कायोत्सर्ग करोमि।

(यह नौ बार णमोकार मन्त्र पढ़कर विधान का संकल्प करें तत्पश्चात् विधान आरम्भ करें।)

पूजन की थाली में निम्नलिखित श्लोक बोलते हुए स्वस्तिक बनायें व अंक लिखें–

श्लोक– **रयणत्तयं च वंदे चउवीस जिणे च सव्वदा वंदे।**
पञ्च गुरुणां वंदे चारण–चरणं च सव्वदा वंदे॥

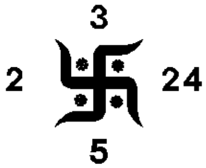

विनय पाठ

(दोहा)

प्रथम जिनेश्वर देव हो, वीतराग सर्वज्ञ।
हित उपदेशी नाथ तुम, ज्ञानरवि मर्मज्ञ॥1॥

केवलज्ञानी बन प्रभो, हरा जगत् अंधियार।
तीन लोक के बंधु बन, किया जगत् उपकार॥2॥

धर्म देशना से मिला, जग को दिव्य प्रकाश।
तव चरणों में नित रहे, यही करें अरदास॥3॥

कर्म बेड़ियाँ तोड़ने, भक्ति करें त्रयकाल।
तीन योग से हे प्रभो !, चरणों में नत भाल॥4॥

चतुर्गति भव भ्रमण से, तारों हमें जिनेश।
दयानिधि जिन ! कर दया, हरलो पाप विशेष॥5॥

प्रभुवर पूजा आपकी, सर्व रोग विनशाय।
विष भी अमृत हो प्रभो !, शत्रु मित्र बन जाय॥6॥

हलधर बलधर चक्रधर, अर्चा के उपहार।
परम्परा जिनभक्ति से, दे प्रभु पद उपहार॥7॥

बड़े पुण्य से जिन मिले, मिला प्रभु का द्वार।
मुक्त करो त्रय रोग से, विनती बारम्बार॥8॥

हम सेवक प्रभु आपके, हे अबोध ! अनजान।
राग-द्वेष अज्ञान हर, दे दो सच्चा ज्ञान॥9॥

मंगल उत्तम शरण है, मंगलमय जिनधर्म।
मंगलकारी सब गुरु, हरो हमारे कर्म॥10॥

चौबीसों जिनवर नमूँ, नमन पंच परमेश।
जिनवाणी गणधर गुरु, 'आस्था' नमें हमेश॥11॥

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पूजा आरंभ (हिन्दी)

ॐ जय-जय-जय - नमोस्तु-नमोस्तु-नमोस्तु।
णमो अरिहन्ताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं॥

(ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः परिपुष्पाञ्जलि क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पवज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा, पुरिपुष्पाञ्जलि क्षिपामि।

णमोकार मंत्र महिमा

(चौपाई)

अपवित्र या जन पवित्र हो, सुस्थित हो या दुस्थित भी हो।
नमस्कार मंत्रों को ध्यायें, पापों से छुटकारा पायें।।1।।

सर्व अवस्था में भी ध्यायें, पापी भी पावन बन जाये।
जो सुमिरे नित परमातम को, अन्दर बाहर शुचि बने वो।।2।।

अपराजित ये मंत्र कहाता, सब विघ्नों को दूर भगाता।
सब मंगल में मंगलकारी, प्रथम सुमंगल जग उपकारी।।3।।

महामंत्र णवकार हमारा, सब पापों से दे छुटकारा।
सब मंगल में प्रथम कहाता, महामंत्र मंगल कहलाता।।4।।

परम ब्रह्म परमेष्ठी वाचक, सिद्धचक्र सुन्दर बीजाक्षर।
मैं मन–वच–काया से नमता, नमस्कार मंत्रों को करता।।5।।

अष्टकर्म से मुक्त जिनेश्वर, श्रीपति जिन मंदिर परमेश्वर।
सम्यक्त्वादि गुणों के स्वामी, नमस्कार मैं करता स्वामी।।6।।

जिनवर की संस्तुति करने से, मुक्ति मिले सारे विघ्नों से।
भूतादि का भय मिट जाता, विष निर्विष निश्चित हो जाता।।7।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे कल्याणमहंयजे।।1।।

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण पंचकल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनइष्टमहंयजे।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत्सिद्ध आचार्य उपाध्याय सर्वसाधुभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाममहंयजे॥3॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति मंगल विधान

(शंभु छंद)

श्री मज्जिनेन्द्र हो विश्ववंद्य, तुम तीन जगत के ईश्वर हो।
तुम चऊ अनंत गुण के धारी, स्याद्वाद धर्म परमेश्वर हो॥
श्री मूल संघ की विधि से मैं, अपना बहु पुण्य बढ़ाने को।
मैं मंगल पुष्प चढ़ाता हूँ, जिन पूजा यज्ञ रचाने को॥1॥

त्रैलोक्य गुरु हे जिनपुंगव !, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ।
अपने स्वभाव में सुस्थित जिन, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ॥
सम्पूर्ण रत्नत्रय के धारी, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ।
हे समवशरण वैभव धारी, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ॥2॥

अविराम प्रवाहित ज्ञानामृत, सागर को पुष्प समर्पित है।
निज परभावों के भेद विज्ञ, जिनवर को पुष्प समर्पित है॥
त्रिभुवन को सारे द्रव्यों के, नायक को पुष्प समर्पित है।
त्रैकालिक सर्व पदार्थों के, ज्ञायक को पुष्प समर्पित है॥3॥

पूजा के सारे द्रव्यों को, श्रुत सम्मत शुद्ध बनाया है।
यह भाव शुद्धि के अवलम्बन, द्रव्यों को शुद्ध सजाया है॥
शुचि परमातम का अवलम्बन, आतम को शुद्ध बनाता है।
उसको पाने हे जिन ! तेरी, यह पूजा भव्य रचाता है॥4॥

अर्हत् पुराण पुरुषोत्तम जिन, उनमें न सचमुच गुरुता है।
मैं भी स्वभाव से उन सम हूँ, मुझमें न निश्चय लघुता है।।
प्रभु से हो एकाकार मेरा, मैं ऐसी भक्ति रचाता हूँ।
केवल ज्ञानाग्नि में अपना, मैं पुण्य समग्र चढ़ाता हूँ।।5।।

ॐ ह्रीं जिनप्रतिमोऽपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्वस्ति मंगल पाठ

(चौपाई)

वृषभ सुमंगल करे हमारा, अजित सुमंगल करे हमारा।
संभव स्वामी मंगलकारी, अभिनंदन हैं मंगलकारी।।1।।

सुमतिनाथ हैं मंगलकारी, पद्मप्रभु हैं मंगलकारी।
श्री सुपार्श्व जिन मंगलकारी, चंद्रप्रभु हैं मंगलकारी।।2।।

पुष्पदंत हैं मंगलकारी, शीतल स्वामी मंगलकारी।
श्री श्रेयांस जिन मंगलकारी, वासुपूज्य हैं मंगलकारी।।3।।

विमलनाथ हैं मंगलकारी, श्री अनंत जिन मंगलकारी।
धर्मनाथ हैं मंगलकारी, शांतिनाथ हैं मंगलकारी।।4।।

कुंथुनाथ हैं मंगलकारी, अरहनाथ हैं मंगलकारी।
मल्लिनाथ हैं मंगलकारी, मुनिसुव्रत हैं मंगलकारी।।5।।

नमि जिनवर हैं मंगलकारी, नेमीनाथ हैं मंगलकारी।
पार्श्वनाथ हैं मंगलकारी, वीर जिनेश्वर मंगलकारी।।6।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्वस्ति मंगल विधान

(यहाँ प्रत्येक श्लोक के अंत में पुष्पाञ्जलि क्षेपण करना चाहिए।)

नित्य अचल क्षायिक ज्ञानधारी, विशुद्ध मनःपर्यय ज्ञानधारी।
देशावधि आदि युत ऋषि मुनिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥1॥

महाकोष्ठ बीजबुद्धि पदानुसारि, संभिन्न संश्रोतृ स्वयं बुद्धिधारी।
प्रत्येकबुद्ध-बोधिबुद्ध ऋषिवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥2॥

अभिन्नदशपूर्व-चतुर्दश पूर्वी, दिव्य मतिज्ञान महाबलधारी।
अष्टांगनिमित्त ज्ञाता ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥3॥

स्पर्श-चक्षु-कर्ण-घ्राण-रसना, आदि प्रबल इन्द्रिय के धारी।
महाशक्तिवन्त जिनमुनि-यति-ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥4॥

फल-तन्तु-नीर-जंघा-श्रेणी, पुष्प-बीज-अंकुर-रवि-अग्नि-गामी।
नभ-जल-वायुचारण ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥5॥

अणु-महालघु-गुरुऋद्धिधारी, सकामरूपित्व-वशित्वधारी।
वर्द्धमान बल के धारी गुरुवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥6॥

मन औ वचनबल-कायबल ऋद्धि, प्राकाम्य-अप्रतिघात गुणधारी।
विक्रिया-क्रियाऋद्धि धारी गुरुवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥7॥

उग्रोग्रतप-दीप्त-तप-तप्ततपसी, अवस्थित-उग्रतप-महातपऋद्धि।
तपो-लब्धि आदि से युक्त ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥8॥

आमर्ष-सर्वौषध ऋद्धिधारी, आषीर्विष-दृष्टिविष बल धारी।
सखिल्ल-विडजल्ल-मल्लौषधियुक्त, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥9॥

क्षीरास्रवी-घृतस्रावी मुनीश्वर, अमृत-मधु-महारस के धारी।
अक्षीणआलय-महानस आदि, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥10॥

इति परमर्षि स्वस्ति मंगल विधानं

(9 बार णमोकार मंत्र का जाप करें)

श्री नित्यमह पूजा

रचियित्री : ग. आर्यिका राजश्री माताजी

शंभु छन्द *(तर्ज– हे वीर तुम्हारे...)*

अरिहंत, सिद्ध, सूरी, पाठक, साधु और जिनवर चौबीसों।
गणधर जिन पंच बालयतिवर, जिन आगम गुरु प्रभुवर बीसों।।
माँ जिनवाणी, निर्वाणभूमि, रत्नत्रय, दशलक्षण प्यारा।
नंदीश्वर पंचमेरू जिनवर, जिनचैत्य चैत्यालय मनहारा।।
जिनधर्म जिनागम बाहुबली, सोलहकारण पूजन करता।
इनका आह्वानन करके मैं, श्री मोक्ष महल का सुख वरता।।1।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

नरेन्द्र छन्द *(तर्ज : माइन–माइन...)*

धीर वीर गंभीर प्रभु की अर्चा मैं नित करता हूँ।
निर्मल जल की त्रय धारा दे जन्म–जरा–मृत हरता हूँ।।
देव–शास्त्र–गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा।।
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा।।1।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चंदन चरण चढ़ाता शीतलता मुझको देना।
भव का बन्धन हरने वाले भव की ज्वाला हर लेना।। देव शास्त्र..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल मनोहर अक्षत लाया अक्षयपद पाने हेतू।
अक्षयपद को देने वाली पूजन है सबका सेतू ।। देव शास्त्र..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जल भूमिज बहु पुष्प चढ़ाऊँ श्रद्धा से जिन गुण गाऊँ।
कामबाण को वश में करके मन ही मन मैं हर्षाऊँ ॥
देव-शास्त्र-गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा॥
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा॥4॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पुआ पकौडी रबड़ी घेवर आदिक व्यंजन मैं लाया।
क्षुधावेदनी के भेदन को प्रभु सन्मुख दौड़ा आया॥ देव शास्त्र..॥5॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग दीपों की थाली ले आरती प्रभु की गाऊँगा।
मोहकर्म का नाश मेरा हो सम्यक्भाव बनाऊँगा॥ देव शास्त्र..॥6॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप धूपायन में खेकर मैं अष्टकर्म का हनन करूँ।
प्रभु प्रतिमा के दर्शन करके निज स्वभाव का वरण करूँ॥ देव शास्त्र..॥7॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे मीठे फल से अर्चा मनवांछित फल देती है।
प्रभु की अर्चा मेरे जीवन के संकट हर लेती है॥ देव शास्त्र..॥8॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादिक आठों द्रव्यों का सुन्दर थाल सजाया है।
पद अनर्घ्य की अभिलाषा से भक्तिभाव जगाया है॥ देव शास्त्र..॥9॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : वीतराग भगवान की, पूजा सब सुख खान।
त्रयधारा जल की करूँ, छोड़ूँ सब अभिमान॥

शांतये शांतिधारा।

दोहा– काम सृष्टि का नाश हो, पुष्पवृष्टि के साथ।
पुष्पांजलि क्षेपण करूँ, पूर्ण विनय के साथ॥

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : जयमाला की माल से, गूंजे जय–जयकार।
जयमाला हम पढ़ रहे, मिलकर सब नर–नार॥

शंभु छन्द *(तर्ज : ये देश है वीर...)*

श्री वीतराग सर्वज्ञ हितैषी अरिहंतों को नमन करूँ।
श्री सिद्ध सूरी पाठक साधु जिनचैत्य जिनालय नमन करूँ॥
सब द्वीपों के प्रभुवर न्यारे सीमंधर आदिक को ध्याऊँ।
श्री पंचमेरू अरू नंदीश्वर के चैत्यालय के गुण गाऊँ॥1॥

दशलक्षणधर्म हृदय धारूँ सोलहकारण भावन भाऊँ।
रत्नत्रय धारण करने के सम्यक् साधन को अपनाऊँ॥
चौदह सौ बावन गणधर जी सब ऋद्धि–सिद्धि देने वाले।
प्रभु के पाँचों कल्याणक भी सबका संकट हरने वाले॥2॥

जिनवर के सब जन्मस्थल को करता हूँ मैं शत–शत वंदन।
श्रावस्ती कौशाम्बी काशी अयोध्या चंद्रपुरी वंदन॥
काकंदी राजगृही मिथिला चंपापुर कुंडलपुर वंदन।
वैशाली सिंहपुरी कम्पिल हस्तिनापुर आदि वंदन॥3॥

अतिशय औ सिद्धक्षेत्र जी का सुमरण सब पाप तिमिर हरता।
मैं चंपा पावा ऊर्जयंत सम्मेदशिखर वंदन करता॥

पावा द्रोणा सोना तुंगी कैलाश चूलगिरी ध्याऊँगा।
रेसंदी मुक्ता उदयरत्न कुंथलगिरी को मैं जाऊँगा॥4॥

विपुलाचल पोदनपुर मथुरा तारंगा गजपंथा वंदन।
श्री सिद्धवरकूट कमलदहजी गुणावा शत्रुंजय वंदन॥
अहिक्षेत्र अणिंदा णमोकार जटवाडा पैठण चंवलेश्वर।
कचनेर चाँदखेड़ी पाटन जिन्तूर तिजारा गोमटेश्वर॥5॥

कुन्थुगिरी नवग्रह धर्मतीर्थ मांडल केशरिया को वंदन।
श्री महावीरजी पदमपुरा ऋषितीर्थ आदि को भी वंदन॥
जय ऊर्ध्व मध्य और अधोलोक के सब चैत्यालय मनहारी।
निर्वाण सिधारे पूज्य पुरुष की पूजा सब संकटहारी॥6॥

श्री राम हनु सुग्रीव नील महानील कुम्भ शम्बु ज्ञानी।
लवमदनांकुश सागर वरदत्त श्री बाहुबली स्वामी ध्यानी।
गौतम जम्बू सुधर्मा श्री त्रय पांडवसुत अनिरूद्ध नमन।
इस ढाईद्वीप से मोक्ष पधारे उन गुरुओं को है वंदन॥7॥

श्री पँचबालयति को ध्यायें नवदेवों की शरणा पायें।
सातिशय पुण्य कमाने को मंगलमय पूजा हम गायें॥
जिनगुण के अनुरागी बनकर संसार भ्रमण का नाश करें।
शिवपुर के राजतिलक हेतु यह 'राज' प्रभुगुण आश करे॥8॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : श्री जिन के आशीष से, प्रगटाऊँ निज ज्ञान।
पूजन-कीर्तन-भजन से 'राज' वरे शिव थान॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

ऋद्धि मंत्र

स्वाहा बोलते हुये प्रत्येक मंत्र में यहाँ पुष्प चढ़ायें या धूप चढ़ायें। विधान करने से पूर्व ऋद्धि मंत्र अवश्य पढ़े।

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं ।।1 ।।

1. णमो जिणाणं
2. णमो ओहि-जिणाणं
3. णमो परमोहि-जिणाणं
4. णमो सव्वोहि-जिणाणं
5. णमो अणंतोहि-जिणाणं
6. णमो कोट्ठ-बुद्धीणं
7. णमो बीज-बुद्धीणं
8. णमो पादाणु-सारीणं
9. णमो संभिण्ण-सोदारणं
10. णमो सयं-बुद्धाणं
11. णमो पत्तेय-बुद्धाणं
12. णमो बोहिय-बुद्धाणं
13. णमो उजु-मदीणं
14. णमो विउल-मदीणं
15. णमो दस पुव्वीणं
16. णमो चउदस-पुव्वीणं
17. णमो अट्ठंग-महा-णिमित्त-कुसलाणं
18. णमो विउव्वइड्ढि-पत्ताणं
19. णमो विज्जाहराणं
20. णमो चारणाणं
21. णमो पण्ण-समणाणं
22. णमो आगासगामीणं
23. णमो आसी-विसाणं
24. णमो दिट्ठिविसाणं
25. णमो उग्ग-तवाणं
26. णमो दित्त-तवाणं
27. णमो तत्त-तवाणं
28. णमो महा-तवाणं
29. णमो घोर-तवाणं
30. णमो घोर-गुणाणं
31. णमो घोर-परक्कमाणं
32. णमो घोर-गुण-बंभयारीणं
33. णमो आमोसहि-पत्ताणं
34. णमो खेल्लोसहि-पत्ताणं
35. णमो जल्लोसहि-पत्ताणं
36. णमो विप्पोसहि-पत्ताणं
37. णमो सव्वोसहि-पत्ताणं
38. णमो मण-बलीणं
39. णमो वचि-बलीणं
40. णमो काय-बलीणं
41. णमो खीर-सवीणं
42. णमो सप्पि-सवीणं
43. णमो महुर सवीणं
44. णमो अमिय-सवीणं
45. णमो अक्खीण महाणसाणं
46. णमो वड्ढमाणाणं
47. णमो सिद्धायदणाणं
48. णमो सव्व साहूणं
(णमो भयवदो-महदि-महावीर-वड्ढमाण-बुद्ध-रिसीणो चेदि।)

इति पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

श्री विनायक यंत्र पूजा

स्थापना (शंभु छंद)

जय अर्हत् सिद्धाचार्य देव, जय पाठक श्रमण मुनीश्वर की।
जय-जय पाँचों परमेष्ठी की, जय-जय चत्तारि दण्डक की॥
जय सत्रह बीजाक्षर शोभित, जय सिद्ध विनायक यंत्र अहा।
पुष्पाञ्जलि ले आह्वान सहित, भवि यंत्रराज को पूज रहा॥

ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा मंगलोत्तम शरण भूता विनायक यंत्र अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्।

ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा मंगलोत्तम शरण भूता विनायक यंत्र अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा मंगलोत्तम शरण भूता विनायक यंत्र अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टक (अडिल्ल छंद)

सागर सरवर नदियों का शुचि नीर ले।
पाँचों परमेष्ठी के पद हम पूज लें॥
मंगल उत्तम शरण भूत हैं पाँच पद।
यंत्र विनायक पूजत हो जीवन सुखद॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा मंगलोत्तम शरण भूतेभ्यः श्री पंच परमेष्ठिभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित चन्दन केशर गंध मिलाईये।
पंच परम चरणों में नित्य लगाईये॥ मंगल...॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा मंगलोत्तम शरण भूतेभ्यः श्री पंच परमेष्ठिभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत तंदुल नव रत्नों के पुंज ले।
प्रभु को पूजें जायें मोक्ष निकुंज में॥ मंगल...॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा मंगलोत्तम शरण भूतेभ्यः श्री पंच परमेष्ठिभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

छह ऋतुओं के फूल फूल की माल ले।
जिन अर्चा कर जायें त्रिभुवन भाल पे।।
मंगल उत्तम शरण भूत हैं पाँच पद।
यंत्र विनायक पूजत हो जीवन सुखद।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा मंगलोत्तम शरण भूतेभ्यः श्री पंच परमेष्ठिभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घेवर मोदक षट्रस व्यंजन शुद्ध ले।
जिनपद पूजें रोग क्षुधादिक् जीत लें।। मंगल...।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा मंगलोत्तम शरण भूतेभ्यः श्री पंच परमेष्ठिभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत कपूर रत्नों के उज्ज्वल दीप ले।
मोह विनाशक पाँचों पद हम पूज लें।। मंगल...।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा मंगलोत्तम शरण भूतेभ्यः श्री पंच परमेष्ठिभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित धूप चढ़ायें पावक में सदा।
कर्मनाश हम सिद्धि वरें शिव सौख्यदा।। मंगल...।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा मंगलोत्तम शरण भूतेभ्यः श्री पंच परमेष्ठिभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आमादिक् षट् ऋतु के फल की थाल ले।
पाँचों पद हम पूजें नित्य त्रिकाल के।। मंगल...।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा मंगलोत्तम शरण भूतेभ्यः श्री पंच परमेष्ठिभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगल द्रव्य चढ़ायें उत्तम अर्घ में।
पद अनर्घ पा जायें हम अपवर्ग में।। मंगल...।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा मंगलोत्तम शरण भूतेभ्यः श्री पंच परमेष्ठिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा— यंत्र विनायक राज पर, कर हम शांतिधार।
पुष्पाञ्जलि चढ़ाय हम, करें आत्म उद्धार।।

शांतये शांतिधारा... दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

विनायक यंत्र विधान

दोहा– श्रेष्ठ विनायक यंत्र का, कर हम भव्य विधान।
सत्रह बीजाक्षर भजें, मेंटें कर्म विधान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

अथ प्रत्येक अर्घ (शंभु छंद)

जो गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष, पाँचों कल्याणक पाते हैं।
कुछ दो या तीन कल्याणक भी, तीर्थंकर बनकर पाते हैं।।
जो चार घातिया हनन करें, वे श्री अर्हंत कहाते हैं।
सर्वज्ञ हिंतकर वीतराग, उनको हम अर्घ चढ़ाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनंत चतुष्टय समवशरणादि लक्ष्मी विभ्रते श्री अरिहंत परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो घाति अघाति कर्म नशें, शाश्वत सिद्धालय वास करें।
आत्मोत्थ अनंत ज्ञान आदिक्, गुणश्रेष्ठ अनंत विकास करें।।
तीर्थंकर भी जिनको ध्याते, गणधर मुनि ध्यान लगाते हैं।
उन सिद्ध प्रभु की अर्चा से, सब कार्य सिद्ध हो जाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं अष्ट कर्म काष्ठ भस्मीकर्त्रे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो श्रमण संघ के नायक हैं, दीक्षा शिक्षा अनुग्रह दाता।
वे सूरि पंचाचार धरें, सब विघ्न हरें सत्पथ दाता।।
मुनि पद रत्नत्रय पाने हित, हम उनको अर्घ चढ़ाते हैं।
आचार्य श्रेष्ठ की अर्चा से, सब कार्य सिद्ध हो जाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं पंचाचार परायणाय श्री आचार्य परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो द्वादशांग जैनागम का, अध्यन करते करवाते हैं।
वो रत्नत्रयधारी शिक्षक, नित प्रज्ञादीप जलाते हैं।।
अज्ञान विनाशक यति गुरु को, हम उत्तम अर्घ चढ़ाते हैं।
पाठक गुरुवर की पूजा से, सब कार्य सिद्ध हो जाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं द्वादशांग पठन पाठनोद्योताय श्री उपाध्याय परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो सम्यक्दर्शन ज्ञान चरित, रत्नत्रय आराधन करते।
मुनि ज्ञान ध्यान लवलीन रहे, समतामय शिव साधन करते॥
निर्ग्रन्थ दिगम्बर मुनियों को, हम वसुविध अर्घ चढ़ाते हैं।
जिनसम श्रमणों की संगत से, सब कार्य सिद्ध हो जाते हैं॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं त्रयोदश प्रकार चारित्राराधकाय श्री साधु परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जय अरि रज रहस विहीन प्रभो, अर्हंत जिनेश कहाते हैं।
शत इन्द्र सदा वन्दन करते, मुनि गणधर शीश झुकाते हैं॥
पापों का गालन कर सुख दे, चतुः मंगल श्रेष्ठ कहाते हैं।
अरिहंत सुमंगल सन्मुख हम, श्रद्धा से अर्घ चढ़ाते हैं॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अर्हन्मंगलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज घाति अघाति विनाश करें, लोकाग्र क्षेत्र में वास करें।
सब सिद्धि प्रदाता सिद्ध प्रभो, मम आत्म भुवन में वास करें॥
पापों का गालन कर सुख दे, चतुः मंगल श्रेष्ठ कहाते हैं।
श्री सिद्ध सुमंगल सन्मुख हम, श्रद्धा से अर्घ चढ़ाते हैं॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिद्ध मंगलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विषयाशा रहित निरारंभी, निर्ग्रंथ साधु दुःखहारी हैं।
तप ज्ञान ध्यान लवलीन श्रमण, शिक्षक सूरी उपकारी हैं॥
पापों का गालन कर सुख दे, चतुः मंगल श्रेष्ठ कहाते हैं।
श्री साधु सुमंगल सन्मुख हम, श्रद्धा से अर्घ चढ़ाते हैं॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री साधु मंगलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों के बन्धन से जग में, जिनधर्म मात्र छुड़वाता है।
संसारी जीवों को दुःख से, उत्तम सुख में ले जाता है॥
पापों का गालन कर सुख दे, चतुः मंगल श्रेष्ठ कहाते हैं।
केवली प्रज्ञप्त धर्म मंगल, उनका हम अर्घ चढ़ाते हैं॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री केवलि प्रज्ञप्त धर्म मंगलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वज्ञ हितैषी वीतराग, अरिहंत निराकुल सुखधारी।
जिनवर का समोशरण सुन्दर, धनपति सौधर्म रचे भारी॥
जो निज गुण चर्या से महान्, वे लोकोत्तम कहलाते हैं।
अरिहंत जिनोत्तम के सन्मुख, हम मनहर अर्घ चढ़ाते हैं॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अर्हल्लोकोत्तमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों का पिण्ड जला जिनने, निज आतम स्वर्ण बनाया है।
शिव लक्ष्मी धर श्री सिद्ध प्रभो, उनको भावों से ध्याया है॥
जो निज गुण चर्या से महान्, वे लोकोत्तम कहलाते हैं।
श्री सिद्ध जिनोत्तम के सन्मुख, हम मनहर अर्घ चढ़ाते हैं॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिद्ध लोकोत्तमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मोक्षमार्ग साधन करते, निस्पृह सन्मार्ग प्रदाता हैं।
गणधर आचार्य श्रमण शिक्षक, निज सम मुनि पद के दाता हैं॥
जो निज गुण चर्या से महान्, वे लोकोत्तम कहलाते हैं।
श्री साधु नरोत्तम के सन्मुख, हम मनहर अर्घ चढ़ाते हैं॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री साधु लोकोत्तमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकांत मतों का खण्डन कर, जो अनेकान्त बतलाता है।
स्याद्वाद अमोघ चिन्ह भूषित, अर्हत् जिनधर्म कहाता है॥
लोकोत्तम जैन धर्म पाकर, प्राणी भव से तिर जाते हैं।
जिनवर भाषित श्री जैन धर्म, उनको हम अर्घ चढ़ाते हैं॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री केवलिप्रज्ञप्त धर्म लोकोत्तमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनधर्म प्रवर्तक तीर्थंकर, कैवल्य निधी के स्वामी हैं।
श्री अर्हत जिन त्रय जग पूजित, त्रैकालिक त्रिभुवन स्वामी हैं॥
दुर्मार्ग पाप से जो रोके, वो शरण भूत कहलाते हैं।
अर्हंत प्रभु हैं श्रेष्ठ शरण, हम उनको अर्घ चढ़ाते हैं॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अर्हत् शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय चैतन्य सुधाकर जो, चिर नूतन शिवलक्ष्मी वरते।
सब विध विद्या सिद्धिदाता, ऐसे सिद्धों को हम भजते॥
दुर्मार्ग पाप से जो रोके, वो शरण भूत कहलाते हैं।
श्री सिद्धप्रभु हैं श्रेष्ठ शरण, हम उनको अर्घ चढ़ाते हैं॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिद्ध शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो पंच परम पद आराधक, रत्नत्रय पथ के साधक हैं।
निर्ग्रंथ निराकुल सुखधारी, श्रमणों के हम आराधक हैं॥
दुर्मार्ग पाप से जो रोके, वो शरण भूत कहलाते हैं।
मुनि यतिवर ऋषिवर श्रेष्ठ शरण, हम उनको अर्घ चढ़ाते हैं॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री साधु शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिव सुन्दर सप्त तत्त्व बोधक, जिन भाषित जैन धरम प्यारा।
जो जैन धरम का शरणा ले, वो होता निश्चय भव पारा॥
दुर्मार्ग पाप से जो रोके, वो शरण भूत कहलाते हैं।
श्री मज्जिनशासन धर्म शरण, हम उनको अर्घ चढ़ाते हैं॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री केवली प्रज्ञप्त धर्मशरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (दोहा)

मंगल उत्तम शरण हैं, परमेष्ठी जिन पंच।
उनका आराधन हरें, सब विध कर्म प्रपंच॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अर्हदादि सप्तदश मंत्रेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- श्रेष्ठ विनायक यंत्र पर, करें त्रिशांति धार।
विघ्न विनाशन हित करें, पुष्पाञ्जलि सुखकार॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा नमः। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा- सत्रह बीजाक्षर सहित, श्रेष्ठ विनायक यंत्र।
उसकी जयमाला पढ़ें, पानें शिवसुख मंत्र॥

दोहा

चार घातिया नाशते, तीर्थंकर अरिहंत।
वीतराग सर्वज्ञ जिन, पायें सुगुण अनंत॥1॥
आठ कर्म को नाशकर, सिद्ध बनें भगवान।
गुण अनंत से शोभते, देते मोक्ष विधान॥2॥
पालें पंचाचार नित, श्री आचार्य मुनीश।
दीक्षा-शिक्षा दे हमें, बनने त्रिभुवन ईश॥3॥
रत्नत्रय पालें सदा, करते ज्ञान प्रदान।
पढ़ें पढ़ायें शिष्य को, उपाध्याय भगवान॥4॥
रत्नत्रय आराधना, करते श्रमण महान्।
क्रम से सब अघ नाशकर, पाते मोक्ष महान्॥5॥
मंगल उत्तम शरण हैं, परमेष्ठी जिन पाँच।
सिद्ध विनायक यंत्र के, अधिपति ये ही पाँच॥6॥
विघ्न हरे मंगल करें, विघ्न विनायक यंत्र।
सर्व सिद्धि हमको मिले, हम पूजें श्री यंत्र॥7॥
सोना-चाँदी धातु में, मढ़वाकर यह यंत्र।
पूजें ध्यायें भक्ति से, बनने सिद्ध महंत॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा मंगलोत्तम शरण भूतेभ्यः सप्तदशः बीजाक्षर सहित विनायक यंत्रेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छंद

त्रय रत्नयुत सब सिद्ध का, जो नित्य आराधन करे।
श्री सिद्धचक्र विधान से, वो मोक्ष सुख साधन वरे॥
तीर्थेश आदिक् श्रेष्ठ पद, श्री सिद्ध पूजक पायेंगे।
''गुप्ति'' सकल दु:ख नाश वो, लोकाग्र में बस जायेंगे॥

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री सिद्धचक्र यंत्रोद्धार सिद्ध पूजा

(शार्दूल विक्रीड़ित छंद)

ऊर्ध्वाधोरयुतं सबिंदु सपरं ब्रह्मस्वरा वेष्टितम्।
वर्गापूरित-दिग्गताम्बुजदलं तत्संधितत्वान्वितम्॥
अंतःपत्र तटेष्वनाहत युतं ह्रींकार संवेष्टितम्।
देवं ध्यायति यः स मुक्ति सुभगो वैरीभ कंठीरवः॥1॥

स्थापना (चौबोल छंद)

तीन काल के सब सिद्धों का, हम नित ध्यान लगायें।
सिद्धयंत्र की सुन्दर रचना, अपने हृदय बनायें।
सिद्धचक्र यंत्रोद्धार से, हो उद्धार हमारा।
पुष्प लिये आह्वान करें हम, मंगल करो हमारा॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपते अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपते अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपते अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टक (नरेन्द्र छंद)

मुनि मन जैसा निर्मल जल ले, सिद्ध यंत्र पर धार करें।
सिद्ध यंत्र की भक्ति रचा हम, जन्मादिक् परिहार करें॥
सिद्धचक्र यंत्रोत्तम का हम, पूजन अर्चन ध्यान करें।
आराधक साधक हम सबका, सिद्ध यंत्र उत्थान करें॥1॥

ॐ ह्रीं अनाहत पराक्रमाय श्री सिद्धचक्र यंत्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर गंध कपूर मिला हम, सिद्ध यंत्र पर लेप करें।
सिद्ध यंत्र बीजाक्षर मंडित, वसु कर्मों का लेप हरे॥ सिद्धचक्र..॥2॥

ॐ ह्रीं अनाहत पराक्रमाय श्री सिद्धचक्र यंत्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध यंत्र सन्मुख त्रैकालिक, मुक्ता अक्षत पुंज धरें।
सिद्ध बीज अक्षर को भज हम, निश्चय मोक्ष निकुंज वरें॥
सिद्धचक्र यंत्रोत्तम का हम, पूजन अर्चन ध्यान करें।
आराधक साधक हम सबका, सिद्ध यंत्र उत्थान करें॥3॥

ॐ ह्रीं अनाहत पराक्रमाय श्री सिद्धचक्र यंत्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कमल मोगरा कुन्द मौलश्री, पुष्पमाल द्वय हाथ लिये।
अर्पण करते उन सिद्धों को, जिनने नित परमार्थ किये॥ सिद्धचक्र..॥4॥

ॐ ह्रीं अनाहत पराक्रमाय श्री सिद्धचक्र यंत्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घेवर मोदक बर्फी चमचम, षट्रस व्यंजन थाल लिये।
उन्हें चढ़ायें हम त्रैकालिक, जिनने नित्य कमाल किये॥ सिद्धचक्र..॥5॥

ॐ ह्रीं अनाहत पराक्रमाय श्री सिद्धचक्र यंत्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत कपूर रत्नों के सुन्दर, उज्ज्वल दीपक थाल सजा।
मोहजयी हम करें आरती, बहुविध सुन्दर वाद्य बजा॥ सिद्धचक्र..॥6॥

ॐ ह्रीं अनाहत पराक्रमाय श्री सिद्धचक्र यंत्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप दशांग हवन सामग्री, अग्नि कुण्ड में नित्य चढ़ा।
सिद्ध यंत्र को ध्या हर भविजन, पायें मोक्ष स्वराज बड़ा॥ सिद्धचक्र..॥7॥

ॐ ह्रीं अनाहत पराक्रमाय श्री सिद्धचक्र यंत्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल सेव आम नारंगी, षट् ऋतु के फल श्रेष्ठ लिये।
भक्ति भाव से उन्हें चढ़ायें, जो जिनपद को श्रेष्ठ जिये॥ सिद्धचक्र..॥8॥

ॐ ह्रीं अनाहत पराक्रमाय श्री सिद्धचक्र यंत्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य के थाल चढ़ा हम, पूजन व जयकार करें।
निशदिन सिद्धयंत्र को ध्यायें, निज आतम उद्धार करें॥ सिद्धचक्र..॥9॥

ॐ ह्रीं अनाहत पराक्रमाय श्री सिद्धचक्र यंत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ दिशा के अर्घ (दोहा)

अवर्ग सोलह स्वर सहित, देवाधिष्ठित जान।
उन्हें अर्घ दे पूर्व में, बने सिद्ध भगवान॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः अनाहत पराक्रमाय श्री सिद्धाधिपतये नमः पूर्व दिशि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्ण कवर्ग प्रसिद्ध है, अग्नि दोष निवार।
अग्नि दिशी पूजा करें, नाशें अग्नि विकार॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं क ख ग घ ङ अनाहत पराक्रमाय श्री सिद्धाधिपतये नमः आग्नेय दिशि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्ण चवर्ग महानतम्, टाले यम की मार।
दक्षिण दिशि पूजा करें, नाशें मृत्यु विकार॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं च छ ज झ ञ अनाहत पराक्रमाय श्री सिद्धाधिपतये नमः दक्षिण दिशि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्ण टवर्ग विशेष है, देता उच्च प्रभाव।
नैऋत दिशि पूजा करें, पायें सिद्ध स्वभाव॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं ट ठ ड ढ़ ण अनाहत पराक्रमाय श्री सिद्धाधिपतये नमः नैऋत्य दिशि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्ण तवर्ग उदार है, करें पाप दुःख शांत।
पश्चिम दिशि पूजा करें, बनने सिद्ध सुशांत॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं त थ द ध न अनाहत पराक्रमाय श्री सिद्धाधिपतये नमः पश्चिम दिशि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्ण पवर्ग विशाल है, व्यंतर वायु निवार।
वायव्य दिशि पूजा करें, नाशें कर्म विकार॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं प फ ब भ म अनाहत पराक्रमाय श्री सिद्धाधिपतये नमः वायव्य दिशि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्ण यवर्ग कुबेर सम, सुख अनंत दातार।
उत्तर दिशि पूजा करें, पायें सुख भण्डार॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं य र ल व अनाहत पराक्रमाय श्री सिद्धाधिपतये नमः उत्तर दिशि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्ण शवर्ग मनोज्ञ है, दे ऐश्वर्य अपार।
दिश ईशान उसे भजें, पायें गुण भण्डार॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं श ष स ह अनाहत पराक्रमाय श्री सिद्धाधिपतये नमः ईशान दिशि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (अडिल्ल छंद)

सोलह स्वर नित पूज्य बतायें शास्त्र में।
तैंतिस व्यंजन भी पूजित परमार्थ से॥
वर्ण मातृका सभी पूज्य हैं आर्ष में।
उन्हें पूज हम जायें सिद्धावास में॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं षोडश स्वर–त्रयस्त्रिंशद् व्यंजन समन्वित्ाय अनाहत पराक्रमाय श्री सिद्धाधिपतये नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– सिद्ध यंत्र पर सिद्धि हित, करें त्रि शान्ति धार।
पुष्पांजलि चढ़ाय हम, बनें सिद्ध साकार॥

शांतये शांतिधारा... दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः (9, 27 या 108 बार जाप करें)।

जयमाला

दोहा– सिद्धचक्र वरयंत्र की, गायें हम जयमाल।
बनें सिद्ध जिनदेव हम, मिले आत्म गुणमाल॥

अडिल्ल छंद

जय-जय सिद्ध यंत्र को हम पूजें सदा।
सिद्ध यंत्र अर्चा से मिटती आपदा।।
सिद्ध यंत्र पूजा से आती सपंदा।
यश सुख वैभव संपत् पायें सर्वदा।।1।।

'अ' आदिक् सोलह स्वर जग में सिद्ध हैं।
क वर्ग आदि पाँच हि व्यंजन सिद्ध हैं।।
श वर्ग व्यंजन अंतिम सब तैंतीस हैं।
स्वर के बिना हलंत कहें जगदीश हैं।।2।।

वर्ण मातृका स्वर व्यंजन श्रुत मान्य हैं।
श्रुत रचना में ये सब मूल प्रधान हैं।।
मंत्र-यंत्र-तंत्रों के निश्चय कोश हैं।
इनको ध्याकर भव्य बनें निर्दोष हैं।।3।।

वाक्य आदि सब कार्य सिद्धि इनसे मिले।
आराधक को सब विद्या इनसे मिले।।
सब बीजाक्षर देवाधिष्ठित श्रेष्ठ हैं।
गणधर मुनिवर इनके साधक ज्येष्ठ हैं।।4।।

व्यंतर भूत पिशाच डाकिनी शाकिनी।
यंत्रार्चा से मिटे दुष्ट बाधा घनी।।
दुष्ट देव या असुर सतायें ना कभी।
सिद्ध यंत्र का ध्यान करें साधक सभी।।5।।

सुन्दर पत्नि गृह लक्ष्मी धन धान्य हों।
पुत्र पुत्रियाँ शीलवान जग मान्य हों।।
सप्त परम स्थान मिलें इस यंत्र से।
स्वर्ग मोक्ष वैभव मिलता इस यंत्र से।।6।।

सिद्ध बिम्ब संग, सिद्धयंत्र का कर न्हवन।
गंधोदक सर्वांग लगायें भव्य जन।।
कुष्ठादिक् सब रोग मिटें जग सिद्ध हो।
''गुप्तिनंदि'' भी इसको ध्याकर सिद्ध हो।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनाहत पराक्रमाय श्री सिद्धाधिपतये सिद्धचक्र यंत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

त्रय रत्नयुत सब सिद्ध का, जो नित्य आराधन करें।
श्री सिद्धचक्र विधान से वो मोक्ष सुख साधन वरें।।
तीर्थेश आदि श्रेष्ठ पद, श्री सिद्ध पूजक पायेंगे।
'गुप्ति' सकल दुःख नाश वो, गुण गण अनंतों पायेंगे।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्रीपाल अपनी रानियों से मैनासुन्दरी का परिचय कराते हुए

महाराज श्रीपाल एवं पट्टरानी मैनासुन्दरी सिंहासनारूढ़ हुए

सिद्धचक्र समुच्चय पूजा

स्थापना (गीता छंद)

वसु कर्म इन्धन भस्म कर, बनते निरंजन सिद्ध हैं।
सम्यक्त्व दर्शन ज्ञान व्रत, चारित्र तप नय सिद्ध हैं॥
श्री सिद्धचक्र विधान में, सब सिद्ध का आह्वान है।
ध्वज पुष्प ले भक्ति सहित, हमने किया गुणगान है॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपते अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपते अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपते अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टक (गीता छंद)

फल फूल माला पान से, सज्जित कलश जल के लिये।
जल धार दे सब सिद्ध को, जन्मादि त्रय हम वश किये॥
मैनासती श्रीपाल सम, हम सिद्ध का अर्चन करें।
श्री सिद्धचक्र विधान से, सब कर्म का भंजन करें॥1॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर मिश्रित दिव्य चन्दन, सिद्ध पद चर्चन करें।
फिर शेष निज मस्तक लगा, आताप भव भंजन करें॥ मैना..॥2॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चम-चम चमकते रत्न ले, अक्षय अखंडित पुंज लें।
सब सिद्ध को अर्पण करें, बस जायें मोक्ष निकुंज में॥ मैना..॥3॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित सहसदल कमल युत, सुन्दर सुमन माला बना।
उन सिद्ध को अर्पण करें, जिनने मदन शत्रु हना॥ मैना..॥4॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

रबड़ी इमरती रसभरी, षट्रस मधुर व्यंजन लिये।
शाश्वत सुखी सब सिद्ध को, सुख लाभ हित अर्पण किये॥
मैनासती श्रीपाल सम, हम सिद्ध का अर्चन करें।
श्री सिद्धचक्र विधान से, सब कर्म का भंजन करें॥5॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्ज्वल चमकते दीप की, अर्पण करें दीपावली।
चैतन्य रवि श्री सिद्ध सम, हम पायेंगे गुण आवली॥ मैना..॥6॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सिद्ध जिन शिव भूप हैं, गुण गण अनंत अनूप हैं।
उन सम बनें शिव भूप हम, इस हित समर्पित धूप है॥ मैना..॥7॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर सीता रामफल, रसदार षट् ऋतु के सजा।
शिवफल प्रदाता सिद्ध को, अर्पण करें बाजे बजा॥ मैना..॥8॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु द्रव्य का दे अर्घ हम, संगीत भक्ति नृत्य संग।
पाने अनर्घ निजात्म पद, जिन भक्ति का चढ़ जाय रंग॥ मैना..॥9॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

सब सिद्धों के चरण में, करें त्रि शांतिधार।
जिन मुद्रा पाने करें, पुष्पाञ्जलिं मनहार॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र – ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा– सिद्ध अनन्तानन्त को, कोटि अनन्त प्रणाम।
उनकी जयमाला पढ़ें, बने सिद्ध अविराम॥

(शंभु छंद)

श्री सिद्धचक्र की जय–जय हो, वसु कर्मजयी की जय–जय हो।
तीर्थंकर भी जिनको ध्यायें, उन सिद्धों की नित जय–जय हो॥
श्री सिद्धचक्र मंडल विधान, जो भव्य भक्ति से करते हैं।
वो पाप रोग संकट विनशा, यश सुख वैभव नित वरते हैं॥1॥

उज्जैन भूप पुहुपाल[1] सुता, मैनासुन्दरी लघु कन्या थी।
गुरुकुल में जिनगुरु से पढ़कर, पंचामृत धारा करती थी॥
इक दिन मैना अभिषेक करें, गंधोदक निज गृह लाती है।
आदर से मात–पिता को दे, श्रद्धा से स्वयं लगाती है॥2॥

तब राजा राजसभा में ही, पुत्री से अनुचित बात करें।
मनवांछित वर माँगो हमसे, हम सब अभिलाषा पूर्ण करें॥
मैना कहती हे पूज्य पिता !, सतियाँ विकृत नहीं होती हैं।
जिस वर संग मात–पिता ब्याहें, उस संग समता से जीती हैं॥3॥

मैना का समुचित आवेदन, दंभी नृप को नहिं रुचता है।
पुत्री के भाग्य परीक्षा का, षडयंत्र पिता ही रचता है॥
अविचारी राजा प्रजापाल, इक दिन जब वन में जाता है।
तब सात शतक कोढ़ी जन संग, श्रीपाल वहाँ मिल जाता है॥4॥

---

1. प्रजापाल

सुकुमारी मैना का राजा, कोढ़ी संग ब्याह रचाता है।
पुत्री का मंगल परिणय कर, नृप अंत बहुत पछताता है॥
मैना सति कोढ़ी पति पाकर, किंचित् विषाद ना लाती है।
आचार्य सुगुप्त मुनीश्वर को, वह अपनी व्यथा सुनाती है॥5॥

मुनिवर से कुष्ठ रोग नाशक, व्रत सिद्धचक्र अपनाती है॥
अब पति के कोढ़ मिटाने को, श्री सिद्धचक्र को ध्याती है॥
अतिशय युत सिद्धों की प्रतिमा, विधियुत मैना बनवाती है।
अति सुन्दर स्वर्णिम सिद्ध यंत्र, मैना सती भव्य रचाती है॥6॥

श्री सिद्धचक्र मंडल विधान, आष्टाह्निक में व्रत सहित करें।
जिनवर संग सिद्धयंत्र ऊपर, मैना पंचामृत धार करें॥
गंधोदक वसुदिन श्रद्धा से, पति के सर्वांग छिड़कती है।
सम्यक्त्वी सती जिन भक्ति से, सब कोढ़ व्याधि को नशती है॥7॥

कोढ़ी नृप कामदेव बनते, श्री सिद्धचक्र की महिमा से।
संग सात शतक भी स्वस्थ हुए, पाकर गंधोदक अतिशय से॥
श्री सिद्धचक्र की महिमा से, कोटिभट यान चलाते हैं।
श्री सहसकूट मंदिर के पट, श्रीपाल छुऐ खुल जाते हैं॥8॥

अब मदन मंजूषा सती मिली, मंदिर के दर खुल जाने से।
गुणमाला सती का लाभ मिला, सागर को तिरकर आने से॥
सागर में पतन शूलीरोहण, बहु कष्ट मार्ग में आते हैं।
श्रीपाल जपें नित सिद्ध मंत्र, हर संकट पर जय पाते हैं॥9॥

इक युग में आठ हजार अधिक, सती धर्म पत्नी का लाभ मिला।
वे महामंडली भूप बने, बहु देश राज्य का लाभ मिला॥
इक दिन ज्ञानी मुनि के दर्शन, श्रीपाल कुटुम्ब संग पाते हैं।
श्रीपाल भूप की भवावली, कारण युत श्रमण सुनाते हैं॥10॥

निर्ग्रंथ साधु की निंदा से, बचपन में पितृ वियोग मिला।
मुनिवर को कोढ़ी कहने से, इस भव में दुस्सह कोढ़ मिला॥
मुनि को जल में फिकवाने से, विधि ने सागर में फिकवाया।
भिक्षुक को भांड बताने से, ये भांड गोत्र का कहलाया॥11॥

मुनि को आसन से हटा दिया, इससे सिंहासन छूट गया।
मुनि की हत्या का भाव किया, इससे शूली तक पहुँच गया॥
इन सब अघ के प्रायश्चित्त में, मैना ने सिद्ध विधान किया।
निजपति को प्रायश्चित्त दिलवा, पिछले भव भी कल्याण किया॥12॥

श्रीपाल स्वयं की पाप कथा, सुनकर लज्जित हो जाते हैं।
तत्काल छोड़ सब राजभोग, निर्ग्रंथ श्रमण बन जाते हैं॥
सिद्धों को ध्या वसु कर्म नशे, वे अंत सिद्धपद पाते हैं।
श्रीपाल सिद्ध का यशोगान, जैनागम हमें सुनाते हैं॥13॥

मैना भी आर्या दीक्षा ले, फिर स्वर्ग सोलहवाँ पाती है।
वो आगे निश्चय सिद्ध बने, जिनवाणी हमें बताती है॥
श्री सिद्धचक्र मंडल रचकर, हम भी सिद्धों के गुण गायें।
'गुप्तिनंदी' सिद्धों को ध्या, निज रूप सिद्ध पद पा जाये॥14॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

त्रय रत्नयुत सब सिद्ध का, जो नित्य आराधन करें।
श्री सिद्धचक्र विधान से वो मोक्ष सुख साधन वरें॥
तीर्थेश आदि श्रेष्ठ पद, श्री सिद्ध पूजक पायेंगे।
'गुप्ति' सकल दुःख नाश वो, गुण गण अनंतों पायेंगे॥

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री सिद्धचक्र विधान

आठ गुण सहित प्रथम पूजा

स्थापना (गीता छंद)

सब सिद्ध का शिव सिद्धी हित, हम नित्य आराधन करें।
उनके गुणों में लीन हो, हम नित्य अभिवादन करें।।
वसुकर्म जेता सिद्धी दाता, सिद्ध का आह्वान है।
सुमनावलि ले हम भजें, आओ प्रभु नित ध्यान में।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सम्कत्वादि अष्टगुण समन्वित श्री अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठी समूह अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सम्कत्वादि अष्टगुण समन्वित श्री अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठी समूह अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सम्कत्वादि अष्टगुण समन्वित श्री अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठी समूह अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शेर छंद)

नदि वा पवित्र तीर्थ का हम नीर मंगायें।
स्वर्णाभ कुम्भ में लिये जिनवर को चढ़ायें।।
हम सिद्धचक्र की महा आराधना करें।
सर्वोच्च सिद्धि हेतु नित उपासना करें।।1।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, सम्यक्त्व ज्ञान दर्शन वीर्य सूक्ष्मत्व अवगाहनत्व अगुरुलघुत्व अव्याबाधत्व अष्ट गुण समन्वित श्री अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर कपूर गंध चंदनादि घिस लिये।
सब सिद्ध को चढ़ा के पाप ताप क्षय किये।। हम सिद्ध... ।।2।।

ॐ ह्रीं णमो.... चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अखंड मोती तंदुलों को सजाया।
अक्षय अखंड लाभ हित सिद्धों को चढ़ाया।। हम सिद्ध... ।।3।।

ॐ ह्रीं णमो.... अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सब देश सब ऋतु के श्रेष्ठ पुष्प चुनायें।
बहुरंगी पुष्प नाथ के चरणों में चढ़ायें।।
हम सिद्धचक्र की महा आराधना करें।
सर्वोच्च सिद्धि हेतु नित उपासना करें।।4।।

ॐ ह्रीं णमो.... पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नमकीन व मिठाई हमने शुद्ध बनाई।
जिनवर को चढ़ा मानों अपनी क्षुधा नशाई।। हम सिद्ध...।।5।।

ॐ ह्रीं णमो.... नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर को जगमगायें दीप के प्रकाश से।
फिर मोह तम नशायें ज्ञान के विकास से।। हम सिद्ध...।।6।।

ॐ ह्रीं णमो.... दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्दोष श्रेष्ठ धूप अग्निपात्र में चढ़ा।
जिनवर को चढ़ा फोड़ें आठ कर्म का घड़ा।। हम सिद्ध...।।7।।

ॐ ह्रीं णमो.... धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मीठे मनोज्ञ षट्ऋतु के फल की थाल ले।
सब सिद्ध को चढ़ायें जायें लोक भाल पे।। हम सिद्ध...।।8।।

ॐ ह्रीं णमो.... फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु द्रव्य का समूह मिला अर्घ बनाया।
पाने अनर्घ सौख्य हमने आज चढ़ाया।। हम सिद्ध...।।9।।

ॐ ह्रीं णमो.... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ विधान प्रारम्भ

अष्ट गुण पूजा (प्रत्येक अर्घ)

दोहा– सर्व सिद्ध के चरण में, करते हम जल धार।
पुष्पाञ्जलि चढ़ाय हम, पाने शिवपुर द्वार।।

अथ मण्डलस्योपरि प्रथम वलये पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(चौपाई छंद)

मिथ्यात्वादिक् सर्व कषायें, मोह नाश क्षायिक गुण पायें।
प्रभु सम हम भी यह गुण पायें, इस कारण नित अर्घ चढ़ायें॥1॥

ॐ ह्रीं शुद्ध सम्यक्त्व गुणाय अनाहत पराक्रमाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानावरण कर्म को नाशें, तत्क्षण केवलज्ञान प्रकाशे॥ प्रभु..॥2॥

ॐ ह्रीं अनंत ज्ञान गुणाय अनाहत पराक्रमाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म दर्शनावरण नशायें, गुण अनंत दर्शन प्रगटायें॥ प्रभु..॥3॥

ॐ ह्रीं अनंत दर्शन गुणाय अनाहत पराक्रमाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतराय अघ आप नशाये, वीर्य अनंत तुरत प्रगटाये॥ प्रभु..॥4॥

ॐ ह्रीं अनंत वीर्यत्व गुणाय अनाहत पराक्रमाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम कर्म जिस क्षण विनशायें, आप अतिन्द्रिय सूक्ष्म कहायें। प्रभु..॥5॥

ॐ ह्रीं सूक्ष्मत्व गुणाय अनाहत पराक्रमाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आयु कर्म का नाश करा है, अवगाहन गुण श्रेष्ठ वरा है॥ प्रभु..॥6॥

ॐ ह्रीं परमावगाहनत्व गुणाय अनाहत पराक्रमाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गोत्र कर्म सब सिद्ध नशायें, उत्तम अगुरुलघु गुण पायें॥ प्रभु..॥7॥

ॐ ह्रीं अगुरुलघुत्व गुणाय अनाहत पराक्रमाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वेदनीय अघ सिद्ध नशायें, अव्याबाध महागुण पायें॥ प्रभु..॥8॥

ॐ ह्रीं अव्याबाधत्व गुणाय अनाहत पराक्रमाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं (गीता छंद)

सब सिद्ध को हम शुद्ध हो सद्भाव से वन्दन करें।
अर्चन भजन पूजन रचा वसु कर्म का बन्धन हरें॥
श्री सिद्धचक्र विधान में सब सिद्ध की आराधना।
हम स्वात्म सिद्धी लाभ हित, उन सम करेंगे साधना॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सम्यक्त्वादि अष्ट गुण समन्वितेभ्यः अनाहत पराक्रमेभ्यः श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– सिद्ध चरण में सिद्धी हित, करते शांतिधार।
सिद्ध लोक में वास हित, पुष्पाञ्जलि मनहार।।

शांतये शांतिधारा... दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः। (इस मंत्र का 9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा– त्रैकालिक सब सिद्ध को, नितप्रति करें प्रणाम।
उनकी जयमाला पढ़ें, बने सिद्ध अविराम।।

शम्भू छंद

हम त्रैकालिक सब सिद्धों की, त्रैकालिक भक्ति रचाते हैं।
उनको निज मन में बैठाकर, मंगल जयमाला गाते हैं।।
जो सिद्धचक्र को ध्याता है, वो सब दुःख शोक मिटाता है।।
व्यंतर ग्रह भूत पिशाचों पर, वो सहज विजय पा जाता है।।1।।

वन में विकराल मृगेन्द्र जाल, जब ग्रसने आगे बढ़ते हो।
या महा विषैले सर्पराज, विष ज्वाला तीव्र उगलते हों।।
पर्वत सम क्रोधी गज आदिक, जब महाकाल बन आते हैं।
तब सिद्धचक्र की अर्चा से, सब शांत सखा बन जाते हैं।।2।।

तन में प्राणान्तक क्रूर रोग, जब महाव्याधियाँ लाते हों।
या अग्नि के दुष्प्रेक्ष्य ज्वाल, पत्तों सम सर्व जलाते हों।।
आंधी तूफाँ भूकम्पादिक, जब महाप्रलय बन आते हैं।
तब सिद्धचक्र की अर्चा से, सब शीघ्र शांत हो जाते हैं।।3।।

डाकू खल चोर लुटेरे गर, सर्वस्व लूटने आते हैं।
या सर्व शत्रु संग्राम रचा, यमराज रूप धर आते हैं।।

उस समय अनंतानंत सिद्ध, इक दिव्य कवच बन जाते हैं।
श्री सिद्धचक्र की अर्चा से, सब पाप शांत हो जाते हैं॥4॥

श्री सिद्धचक के आराधक, वसु कर्मों पर जय पाते हैं।
संसार सार सुख पाकर वे, फिर अंत सिद्ध पद पाते हैं॥
''गुप्तिनंदी'' शिवपुर पाने, सब सिद्धों को नित ध्याते हैं।
ध्वज अर्घ सहित जयमाल लिए, हम सिद्धों के गुण गाते हैं॥5॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सम्मत्त णाण दंसण वीरिय सुहुमं तहेव अवगहणं अगुरुलघुं, अव्वावाहं अष्ट गुण समन्वितेभ्यः अनाहत पराक्रमाय सकल कर्म मुक्त श्री सिद्धाधिपतये नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

त्रय रत्नयुत सब सिद्ध का जो नित्य आराधन करें।
श्री सिद्धचक्र विधान से वो मोक्ष सुख साधन वरे॥
तीर्थेश आदि श्रेष्ठ पद, श्री सिद्ध पूजक पायेंगे।
'गुप्ति' सकल दुःख नाश वो, गुण गण अनंतो पायेंगे॥

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

अथ षोडश गुणसहित द्वितीय पूजा

स्थापना (शंभु छंद)

जय-जय अनंत श्री सिद्धों की, जय कर्म मुक्त भगवंतों की।
जय-जय त्रैकालिक सिद्धों की, भव जल तारण भगवंतों की॥
सब ऋतु के सुरभित पुष्प लिये, आह्वान करें हम जिनवर का।
श्रीमत् शाश्वत अतिशय शोभित, सोलह गुणधारी जिनवर का॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपते अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपते अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपते अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

काव्य छंद (अष्टक)

मणिमय कंचन झारि, तीर्थोदक भर लाऊँ
सुरभित जल की धार, प्रभु पर नित्य चढ़ाऊँ॥
त्रैकालिक सब सिद्ध, सर्व सिद्धी के दाता।
सिद्धी पाने भव्य, सिद्धन् भक्ति रचाता॥1॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर मिश्रित गंध, घिस कर्पूर मिलाऊँ।
चर्चूं जिनपद कुंज, भव आताप नशाऊँ॥ त्रैकालिक..॥2॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत मोती रत्न, शालि सुगन्धित लाऊँ।
पूजूँ सिद्ध अनंत, अक्षय पद पा जाऊँ॥ त्रैकालिक..॥3॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

छह ऋतुओं के पुष्प, सुरभित माल सजाऊँ।
भजूँ सिद्ध पद कुंज, काम रोग विनशाऊँ॥ त्रैकालिक..॥4॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्रसमय पक्वान्न, शुचि मिष्ठान्न बनाऊँ।
अर्पूं नेवज थाल, क्षुधा रोग विनशाऊँ॥ त्रैकालिक..॥5॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक विविध प्रकार, घृत रत्नों के लाऊँ।
सजा सिद्ध दरबार, मोह तिमिर विनशाऊँ॥ त्रैकालिक..॥6॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप अनेक प्रकार, सुरभित श्रेष्ठ जलाऊँ।
बनूँ सिद्ध हितकार, सिद्ध सुयश फैलाऊँ॥ त्रैकालिक..॥7॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

दाड़िम जामुन आम, विविध फलों को लाऊँ।
बनूँ सिद्ध अभिराम, रत्नत्रय फल पाऊँ॥ त्रैकालिक..॥8॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल फूल सजाय, आठों द्रव्य मिलाऊँ।
प्रभु को अर्घ चढ़ाय, पद अनर्घ को पाऊँ॥
त्रैकालिक सब सिद्ध, सर्व सिद्धी के दाता।
सिद्धी पाने भव्य, सिद्धन् भक्ति रचाता॥9॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ सोलह गुण प्रत्येक अर्घ

दोहा– षोडश कोठों से सजा, मंडल युगल विशेष।
पुष्पांजलि उस पर करें, पूजें सिद्ध अशेष॥

अथ मंडलस्योपरि द्वितीय वलये पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(दोहा)

अनंत दर्शन गुणवरा, दृगावरण अघ नाश।
उन सिद्धों को हम भजें, पाने मोक्ष निवास॥1॥

ॐ ह्रीं अनंत दर्शनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंत ज्ञानी जिन बने, ज्ञानावरण विनाश॥ उन...॥2॥

ॐ ह्रीं अनंत ज्ञानाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीर्य अनंत जगा लिया, अंतराय को नाश ॥ उन...॥3॥

ॐ ह्रीं अनंत वीर्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुख अनंत पायें प्रभो, कर्म असाता नाश ॥ उन...॥4॥

ॐ ह्रीं अनंत सुखाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंत सम्यक्त्वी बने, मोह कर्म को नाश॥ उन...॥5॥

ॐ ह्रीं अनंत सम्यक्त्वाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण सूक्ष्मत्व प्रगट किया, नाम कर्म को नाश ॥ उन...॥6॥

ॐ ह्रीं अनंत सूक्ष्माय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अव्याबाधी जिन बने, वेदनीय को नाश॥ उन...॥7॥

ॐ ह्रीं अव्याबाधाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवगाहन गुण पा लिया, आयु कर्म को नाश।
उन सिद्धों को हम भजें, पाने मोक्ष निवास॥8॥

ॐ ह्रीं अवगाहनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व सिद्ध अक्षोभ हैं, करें क्षोभ का नाश॥ उन...॥9॥

ॐ ह्रीं अक्षोभाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध अचल गुण के धनी, करें अचल शिव वास॥ उन...॥10॥

ॐ ह्रीं अचलाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं छेद गुण सिन्धु में, धर्म अछेद प्रकाश॥ उन...॥11॥

ॐ ह्रीं अच्छेद्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अभेद सब सिद्ध के, जैसे है आकाश॥ उन...॥12॥

ॐ ह्रीं अभेद्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आय बुढ़ापा ना कभी, किया जरा का नाश॥ उन...॥13॥

ॐ ह्रीं अजराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अमर कहाते नाथ! तुम, किया मरण का नाश॥ उन...॥14॥

ॐ ह्रीं अमराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अप्रमेय अल्पज्ञ के, सिद्धालय में वास॥ उन...॥15॥

ॐ ह्रीं अप्रमेयाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अविलीन जिन आप हो, होय न कभी विनाश॥ उन...॥16॥

ॐ ह्रीं अविलीनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं (गीता छंद)

सब सिद्ध को हम शुद्ध हो, सद्भाव से वन्दन करें।
अर्चन भजन पूजन रचा, वसु कर्म का बन्धन हरें॥
श्री सिद्धचक्र विधान में, सब सिद्ध की आराधना।
हम स्वात्म सिद्धी लाभ हित, उन सम करेंगे साधना॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनंत दर्शन ज्ञानादि षोडश गुण संयुक्तेभ्यो श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– सिद्ध चरण में सिद्धी हित, करते शांतिधार।
सिद्ध लोक में वास हित, पुष्पाञ्जलि मनहार॥

शांतये शांतिधारा... दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः। (इस मंत्र का 9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा– सर्व काल के सिद्ध जिन, देवें सिद्धि त्रिकाल।
उन सम हम भी सिद्ध हो, पढ़कर यह जयमाल॥

(चौपाई)

जय–जय–जय सब सिद्ध जिनेशा, तुमको पूजें श्रमण गणेशा।
मैं भी गाता हूँ जयमाला, तुमने सबको पार निकाला॥1॥
मैं अनादि से भटक रहा हूँ, चारों गति में विचर रहा हूँ।
काल अनंत निगोद बिताया, एकेन्द्रिय साधारण काया॥2॥
इक तन में बहु जीव समायें, जन्मादिक् दुःख युगपत् पायें।
फिर पंच स्थावर तन पाया, उसमें घोर महा दुःख पाया॥3॥
ज्यों चिंतामणि रत्न मिला था, त्यों विकलत्रय रूप मिला था।
कभी बना पंचेन्द्रिय प्राणी, मन बिन रहा निपट अज्ञानी॥4॥
कभी क्रूर सिंहादि बना था, निर्बल पशु को खूब हना था।
कभी बना जिन निर्बल प्राणी, उसकी सुन लो करुण कहानी॥5॥
निर्बल को बलवान सताये, निर्बल पशु सबसे भय खायें।
छेदन भेदन भूख व व्याधी, भार वहन हिम ताप तृषादी॥6॥
इतने वध बंधन दुःख पाये, कोटि जिह्वा से कहे न जायें।
घोर क्लेश भय मरण उपाया, नरक रूप दुःख सागर पाया॥7॥

नरक वास भी अति दुःखदायी, छिपा नहीं तुमसे जिनरायी।
नरक वास बहु सागर पाया, फिर ज्यों-त्यों कर नर तन पाया॥8॥
मात जठर नव मास बिताया, झूठन वमन मलाशय पाया।
जन्म समय भारी दुःख पाया, उसे न सुर गुरु भी कह पाया॥9॥
बाल्य काल खेलो में खोया, तरुण समय तरुणी में खोया।
अर्द्ध मृतक सम वृद्धावस्था, जान न पाया आत्म व्यवस्था॥10॥
हुई अकाम निर्जरा जैसे, भवनत्रिक भव पाया वैसे।
वहाँ जलायें नित विषयाशा, अंत बिलखते सुर तन नाशा॥11॥
यदि विमानवासी तन पाया, सम्यक्दर्शन बिन दुःख पाया।
फिर च्युत हो थावर तन पाया, यो बहु भव परिवर्तन पाया॥12॥
मोह जनित ये सर्व दशायें, पंच परावर्तन बहु पाये।
अब मेरा पुण्योदय आया, सिद्धचक्र को मैंने ध्याया॥13॥
अब मैं सिद्ध विधान करूँगा, उन सम रत्नत्रय वर लूँगा।
'गुप्तिनंदी' मैं सिद्ध बनूँगा, फिर नहीं आवागमन करूँगा॥14॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं षोडश गुण समन्वितेभ्यो श्री अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

त्रय रत्नयुत सब सिद्ध का जो नित्य आराधन करें।
श्री सिद्धचक्र विधान से वो मोक्ष सुख साधन वरें॥
तीर्थेश आदि श्रेष्ठ पद, श्री सिद्ध पूजक पायेंगे।
'गुप्ति' सकल दुःख नाश वो, गुण गण अनंतों पायेंगे॥

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

अथ बत्तीस गुणसहित तृतीय पूजा

स्थापना (चामर छंद)

सिद्ध को प्रणाम सिद्ध लोक को प्रणाम हो।
तीन योग से अनंत सिद्ध को प्रणाम हो।।
पुष्प पुञ्ज हाथ ले सुभव्य गीत गा रहे।
सिद्धि हेत भव्य सिद्ध भक्तियाँ रचा रहे।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपते अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपते अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपते अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टक (चामर छंद)

नीर धार रत्न हेम कुम्भ से चढ़ा रहे।
सिद्ध देव भव्य को त्रिरोग से छुड़ा रहे।।
सर्व सिद्ध नाथ की करें विशेष अर्चना।
सिद्ध नाशते समस्त पाप कर्म वञ्चना।।1।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्वेत पीत वर्ण युक्त गंध चंदनादि ले।
सिद्ध चर्ण में लगाय आत्म आपदा टले।। सर्व सिद्ध..।।2।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

श्वेत रत्न शालि पुञ्ज मुट्ठी में भरा प्रभो।
आपको चढ़ाय आत्म सौख्य के लिये विभो।। सर्व सिद्ध..।।3।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मौलश्री व कुन्दश्री गुलाब चम्पकादि ले।
सिद्ध पाद में चढ़ाय काम वासना टले।। सर्व सिद्ध..।।4।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरियाँ कचौरियाँ मिठाई शुद्धि से बना।
सिद्ध को चढ़ा क्षुधादि रोग शत्रु को हना॥
सर्व सिद्ध नाथ की करें विशेष अर्चना।
सिद्ध नाशते समस्त पाप कर्म वञ्चना॥5॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घी कपूर रत्न के अनेक वर्ण दीप ले।
आरती उतार मोह शत्रु आपदा टले॥ सर्व सिद्ध..॥6॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप ले अनूप अग्नि पात्र में चढ़ाइये।
सिद्ध भक्ति से अशेष कर्म को नशाइये॥ सर्व सिद्ध..॥7॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आम जाम श्रीफलादि द्राक्ष गुच्छ ले लिये।
सिद्ध को चढ़ाय मोक्ष सिद्धि लाभ के लिये॥ सर्व सिद्ध..॥8॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य युक्त अर्घ थाल को सजा लिया।
गीत नृत्य भक्ति संग सिद्ध को चढ़ा दिया॥ सर्व सिद्ध..॥9॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बत्तीस गुण पूजा (प्रत्येक अर्घ)

दोहा– सिद्ध स्वयं को सिद्ध कर, सिद्धानंद जगाय।
उन सम सिद्धी के लिये, पुष्पांजलि चढ़ाय॥

अथ मंडलस्योपरि तृतीय वलये पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

नरेन्द्र छंद

निर्मल शुद्ध चेतना जिनकी, वे हैं सिद्ध जिनेशा।
उन सम शुद्ध चेतना पाने, उनको नमन हमेशा॥

सिद्धचक्र मण्डल विधान में, सब सिद्धों को ध्यायें।
ध्यान भजन पूजन से हम सब, आत्म सिद्धि को पायें॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्ध चेतनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानावरणी कर्म नाशकर, मलिन ज्ञान विनशाया।
निर्मल केवल शुद्ध ज्ञान को, तत्क्षण ही प्रगटाया॥ सिद्धचक्र..॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्ध ज्ञानाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम शुद्ध चिद्रूप आपका, आत्मशक्ति दर्शाये।
निज चिद्रूप रूप को पाने, हम सिद्धों को ध्यायें॥ सिद्धचक्र..॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्ध चिद्रूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म जन्य सब रूप नशाकर, बनते शुद्ध स्वरूपी।
पूजें उनको ध्वजा अर्घ ले, बनने शुद्ध स्वरूपी॥ सिद्धचक्र..॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्ध स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध स्वरूप भाव प्रगटाया, रागादिक् विनशा कर।
उन सम भाव मिलेगा हमको, सिद्धावस्था पाकर॥ सिद्धचक्र..॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्ध स्वरूप भावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान ध्यान व्रत योग गुप्ति में, जो थे दृढ़ अविकारी।
ऐसे महादृढ़ी सिद्धों का, तीनों जगत् पुजारी॥ ॥ सिद्धचक्र..॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्ध दृढ़ीयसे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध शुद्ध अवलोकन करते, शुद्ध ज्ञान के द्वारा।
सर्व शुद्ध अवलोकी जिन को, नमन अनंत हमारा॥ सिद्धचक्र..॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धावलोकिने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध स्वयंभू स्वयं स्वयं में, स्वात्म संपदा पायें।
पर सहयोग तनिक ना लेते, हम उनके गुण गायें॥ सिद्धचक्र..॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्ध स्वयंभुवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन–वच–तन कृत सर्व योग तज, योगातीत कहाये।
''शुद्ध योग'' मय सब सिद्धों की, हम सब भक्ति रचायें॥
सिद्धचक्र मण्डल विधान में, सब सिद्धों को ध्यायें।
ध्यान भजन पूजन से हम सब, आत्म सिद्धि को पायें॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्ध योगाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म जन्य सब इन्द्रिय जाति, सिद्धों को नहीं भायी।
''शुद्धजात'' सब सिद्ध जिनेश्वर, हमको बनो सहायी॥ सिद्धचक्र..॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्ध जाताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किया शुद्ध तप बने सिद्ध तब, तप ही शुद्ध करावे।
तप से शुद्ध बने सब प्राणी, सिद्धरूप सिखलावे॥ सिद्धचक्र..॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्ध तपसे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मज् मूर्तिक रूप नाशकर, रूप अमूर्तिक पाये।
चरम देह से न्यून[1] ज्ञान घन, शुद्ध मूर्त कहलाये॥ सिद्धचक्र..॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्ध मूर्तये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग के सुख दुःखमय दुःखकारण, नाथ ! तुम्हें न भाये।
आत्म जन्य सुख पूर्ण प्राप्त कर, ''शुद्ध सुखी'' कहलाये॥ सिद्धचक्र..॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्ध सुखाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंत मोक्ष पुरुषार्थ सिद्ध कर, अग्रिम त्रय[2] को छोड़ा।
पौरुष शुद्ध सिद्ध से हमने, निज आतम को जोड़ा॥ सिद्धचक्र..॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्ध पौरुषाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब शरीर व उसके बन्धन, सिद्धों के नहीं होते।
परम शुद्ध घन ज्ञान शरीरी, शुद्ध शरीरी होते॥ सिद्धचक्र..॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्ध शरीराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. कम, 2. धर्म, अर्थ, काम, पुरुषार्थ।

शुद्ध ज्ञान के गम्य सिद्ध जिन, और ज्ञान नहीं जाने।
इस विध ''शुद्ध प्रमेय'' कहाते, हम उनको श्रद्धानें॥
सिद्धचक्र मण्डल विधान में, सब सिद्धों को ध्यायें।
ध्यान भजन पूजन से हम सब, आत्म सिद्धि को पायें॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्ध प्रमेयाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध ज्ञान दर्शन चेतन मय, सिद्ध शुद्ध उपयोगी।
परम शुद्ध उपयोगी बनने, तुमको ध्याते योगी॥ सिद्धचक्र..॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धोपयोगाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग के भोग रोग व दुःख मय, सिद्धों को नहीं भायें।
आत्म जन्य आनंद भोग वे, ''शुद्ध भोग'' कहलाये॥ सिद्धचक्र..॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्ध भोगाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध ज्ञान से नाथ आपने, सर्व ज्ञेय अवलोके।
अन्य ज्ञान के ज्ञेय नहीं तुम, शुद्ध ज्ञान अवलोके॥ सिद्धचक्र..॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धावलोकिने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध योग्य अर्हत् कुल जन्में, अर्हज्जात कहाये।
जन्म मरण व कर्म श्रृंखला, तुम सम हम विनशायें॥ सिद्धचक्र..॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्ध अर्हज्जाताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवल प्रज्ञा दृष्टि धरें जिन, शुद्ध निपात कहाये।
शुद्ध निपात आप सम पाने, हम तुम शरणा आये॥ सिद्धचक्र..॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्ध निपाताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महासती जग पूजित माँ के, ''शुद्ध गर्भ'' तुम आये।
गर्भवास विधी पूर्ण छेद कर, शुद्ध गर्भ कहलाये॥ सिद्धचक्र..॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धार्ह गर्भवासाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध अनंतानंत सिद्ध में, सहज वास पा जायें।
फिर भी वे सब भिन्न-भिन्न हैं, सिद्ध वास कहलायें॥
सिद्धचक्र मण्डल विधान में, सब सिद्धों को ध्यायें।
ध्यान भजन पूजन से हम सब, आत्म सिद्धि को पायें॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं ''शुद्ध सिद्ध वासाय'' श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे जिन ! तुमने निज को निज से, निज मय निज में पाया।
परम वास है सिद्ध आपका, वहीं हमें भी भाया॥ सिद्धचक्र..॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं ''शुद्ध परमवासाय'' श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध सिद्ध परमात्मा तुमने, सिद्ध किया परमातम।
लोक प्रसिद्धि छोड़ बनें हम, सिद्धों सम सिद्धातम॥ सिद्धचक्र..॥25॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्ध सिद्ध परमात्मने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म रहित वा गुण अनंत युत, सिद्ध अनंतानंता।
मेरे अन्तर्मन में राजो, शुद्ध सिद्ध भगवंता॥ सिद्धचक्र..॥26॥

ॐ ह्रीं अर्हं ''शुद्ध अनंत गुणाय'' श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राग द्वेष को पूर्ण नाशकर, ''शुद्ध शांत'' कहलाये।
शांति प्रदाता सर्व सिद्ध जिन, हमको शांति दिलायें॥ सिद्धचक्र..॥27॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्ध शांताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस जग में सच्चे हितकारक, सिद्ध भदंत कहाये।
तुम विद्या का अंत नहीं हो, आप विदंत कहाये॥ सिद्धचक्र..॥28॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्ध भदंताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब उपमायें तुम पर फीकी, आप निरूपम स्वामी।
आप ज्ञानज्योति पूजें हम, बने सिद्ध शिवगामी॥ सिद्धचक्र..॥29॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्ध निरूपमाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग निवृत्ति आत्म प्रवृत्ति, यह निर्वाण विधी है।
तुम सम वह निर्वाण लाभ हित, आये शरण सुधी हैं॥
सिद्धचक्र मण्डल विधान में, सब सिद्धों को ध्यायें।
ध्यान भजन पूजन से हम सब, आत्म सिद्धि को पायें॥30॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्ध निर्वाणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतिम गर्भ वास कर जिन तुम, फिर से गर्भ न आये।
तुम सम चर्या करने वाले, गर्भवास ना पायें॥ सिद्धचक्र..॥31॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्ध संदर्भ गर्भाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वांत सुखाय स्वांत तप करके, स्वांत सिद्धी सुख पाया।
शुद्ध स्वांत उन सर्व सिद्ध का, हमने पाठ रचाया॥ सिद्धचक्र..॥32॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्ध स्वांताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (गीता छंद)

सब सिद्ध को हम शुद्ध हो, सद्भाव से वंदन करें।
अर्चन भजन पूजन रचा, वसु कर्म का बंधन हरें॥
श्री सिद्धचक्र विधान में, सब सिद्ध की आराधना।
हम स्वात्म सिद्धि लाभ हित, उन सम करेंगे साधना॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं द्वात्रिंशत गुण संयुक्तेभ्यो श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– सिद्ध चरण में सिद्धी हित, करते शांतिधार।
सिद्ध लोक में वास हित, पुष्पाञ्जलि मनहार॥

शांतये शांतिधारा... दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः। (इस मंत्र का 9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा– सिद्ध अनंतानंत गुण, मंडित रहे त्रिकाल।
उन सम गुण के लाभ हित, पढ़ते हम जयमाल॥

(शंभु छंद)

जय स्वात्म लीन जग श्रेष्ठ सिद्ध, सुख ज्ञान प्रदाता सिद्धों की।
जय निस्पृह क्षायिक वीतराग, सर्वज्ञ हितंकर सिद्धों की॥
हे नाथ ! आपने बतलाया, जग के सब सुख क्षणभंगुर हैं।
पर आत्म संपदा नित्य नव्य, आत्मोत्थ अनंत अभंगुर है॥1॥

निज दुःख संकट की घड़ियों में, कोई ना शरण सहायी है।
जिन धर्म पंच परमेष्ठि शरण, निज आत्म शरण सुखदायी है॥
संसार असार विभाव भरा, इसमें सच्चा सुख लेश नहीं।
पर मोक्ष आत्म का लक्ष्य श्रेष्ठ, अक्षय सुख का आगार यही॥2॥

अपने सुख–दुःख संवेदन का, यह जीव अकेला भोगी है।
जो अनेकत्व में सुख खोजे, वह राग–द्वेष का रोगी है॥
''मैं'' पर द्रव्यों से भिन्न सदा, फिर बांधव अपने कैसे हो।
निज के अनंत गुण हैं अभिन्न, सिद्धों में प्रज्ञा जैसे हो॥3॥

तन में अशौच तन भी अशोच, लेता अशौच वा देता है।
फिर भी इससे ध्यानी योगी, शुचि मोक्ष तत्व वर लेता है॥
मिथ्यात्वादिक् पण[1] प्रत्यय से, कर्मों का आश्रव होता है।
जो इन पाँचों का त्याग करें, वह जीव निराश्रव होता है॥4॥

व्रत समिति गुप्ति धर्मादिक् से, संवर कर्मों का होता है।
मोही अज्ञानी जीवों के, आश्रव कर्मों का होता है॥

1. पाँच

तप कर्म निर्जरा करता है, इकदेश मोक्ष दिलवाता है।
इससे विपरीत विभाव भाव, कर्मों का बंध कराता है॥5॥

यह लोक अलौकिक ज्ञेय द्रव्य, नहि छद्मस्थों के गोचर है।
संग लोक अनंत अलोक द्रव्य, अर्हंत सिद्ध के गोचर है॥
नरगति जिन कुल संयम दुर्लभ, अतिदुर्लभ साम्य सुबोधि है।
सर्वत्र सुलभ जो मोह राग, शिवसुख का घोर विरोधी है॥6॥

वस्तु स्वभाव मय जैन धर्म, भवि भाग्यवान ही वरते हैं।
मिथ्या धर्मों में मोही वा, मिथ्यात्वी जीव विचरते हैं॥
हितकारी ये अनुप्रेक्षायें, वैराग्य भाव दातारी हैं।
आत्मोत्थ अखंड अचिंत्य श्रेष्ठ, सिद्धत्व सौख्य दातारी हैं॥7॥

सिद्धत्व पूर्व अर्हंत हमें, जिन धर्म देशना देते हैं।
जो उसे पूर्णतम अपनाये, वे भी उन सम हो लेते हैं॥
वह लाभ हमें भी मिल जाये, इसलिए उन्हें हम ध्याते हैं।
''गुप्तिनंदी'' त्रय योग सहित, श्री सिद्धचक्र को ध्याते हैं॥8॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं द्वात्रिंशत गुण सहितेभ्यो श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

त्रय रत्नयुत सब सिद्ध का जो नित्य आराधन करें।
श्री सिद्धचक्र विधान से वो मोक्ष सुख साधन वरें॥
तीर्थेश आदि श्रेष्ठ पद, श्री सिद्ध पूजक पायेंगे।
'गुप्ति' सकल दुःख नाश वो, गुणगण अनंतों पायेंगे॥

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

चौंसठ गुण सहित चतुर्थ पूजा

स्थापना (शंभु छंद)

जय–जय सब सिद्ध जिनेश्वर की, चौंसठ ऋद्धीधर जिनवर की।
जय–जय हो सब तीर्थंकर की, ऋद्धीधर गणधर मुनिवर की।।
हम जिनवर का स्वागत करते, स्वागत मुद्रा अपनाते हैं।
शुभ गीत नृत्य आह्वान सहित, पुष्पांजलि नित्य चढ़ाते हैं।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपते अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपते अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपते अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टक (शंभु छंद)

हम मृण्मय मणिमय कुंभों से, जल धार अपार चढ़ाते हैं।
सब सिद्ध जिनेश्वर निश्चय ही, त्रय रोग सहज विनशाते हैं।।
सब ऋद्धि सिद्धियाँ देय सिद्ध, सब विघ्न समूह भगाते हैं।
श्री सिद्ध काम सब सिद्ध करें, हम सिद्ध विधान रचाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन कपूर केशर घिसकर, सुरभित श्रीगंध बनाया है।
श्री सिद्ध चरण को चर्चित कर, हमने भव ताप नशाया है।। सब..।।2।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गजमुक्ता मोती अक्षत वा, रत्नों के पुञ्ज बनाये हम।
सब सिद्धों को अर्पण करके, अक्षय पद गुण पा जायें हम।। सब..।।3।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदार मोगरा ब्रह्म कमल, सब ऋतु के सुरभित पुष्प लिये।
मदनारि जयी श्री सिद्धचक्र, हम पूजें नित जयमाल लिये।। सब..।।4।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

बर्फी खाजे षट्रस व्यंजन, छप्पन भोगों के थाल सजा।
हम भेंट करें सब सिद्धों को, नाशें कर्मों की दुःखद सजा॥
सब ऋद्धि सिद्धियाँ देय सिद्ध, सब विघ्न समूह भगाते हैं।
श्री सिद्ध काम सब सिद्ध करें, हम सिद्ध विधान रचाते हैं॥5॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रज्वल दीपों के थाल लिये, सिद्धों को नित्य चढ़ाते हैं।
अज्ञान मोह विनशाने हम, श्री सिद्ध शरण में आते हैं॥ सब..॥6॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अग्नि पात्र में धूप चढ़ा, सिद्धालय को महकायेंगे।
मुनि बन सिद्धों का ध्यान लगा, हम आठों कर्म नशायेंगे॥ सब..॥7॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर आम केला दाड़िम, षट् ऋतु के सुन्दर फल लाये।
हम सर्व सिद्ध को भेंट करें, इक मोक्ष महाफल को पायें॥ सब..॥8॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु मंगल द्रव्यों प्रातिहार्य, अर्घों के उत्तम थाल लिये।
अपवर्ग प्रदाता सिद्धों को, बहु भक्ति नृत्य संग भेंट किये॥ सब..॥9॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौंसठ गुण पूजा

(प्रत्येक अर्घ)

दोहा– चौंसठ गुण ऋद्धि वरी, किया स्वपर कल्याण।
फिर वसु कर्म विनाशकर, पाया पद निर्वाण॥

अथ मंडलस्योपरि चतुर्थ वलये पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(चौपाई)

चार घातिया कर्म नशाये, श्री जिनवर अर्हंत कहाये।
अंत अघाति कर्म विनाशे, नमूँ सिद्ध लोकाग्र निवासे॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हंत जिन श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवधि ज्ञानावरण विनाशा, अवधिज्ञान को पूर्ण विकासा।
क्रम से बनते केवलज्ञानी, नमूँ सिद्ध अविचल शिवथानी॥2॥

ॐ ह्रीं अवधि जिन श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री परमावधि ज्ञान महाना, पाकर जिनवर जग दुःख हाना।
परम श्रेष्ठ रत्नत्रय पाया, केवल ज्ञान सिद्ध पद पाया॥3॥

ॐ ह्रीं परमावधि जिन श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मुनि सर्व विशुद्धि गामी, सर्वावधि के बनते स्वामी।
फिर वे आठों कर्म नशायें, अविचल श्रेष्ठ सिद्ध पद पायें॥4॥

ॐ ह्रीं सर्वावधि जिन श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षय कर ज्ञानावरण महंता, पाया अवधि ज्ञान अनंता।
बने वही जिन केवलज्ञानी, अंतिम वरें मोक्ष रजधानी॥5॥

ॐ ह्रीं अनंतावधि जिन श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मुनि ज्ञान विशुद्धि धारें, कोष्ठ बुद्धि ऋद्धि वे धारें।
अंतिम श्रेष्ठ सिद्ध पद धारा, उनको सौ-सौ नमन हमारा॥6॥

ॐ ह्रीं कोष्ठ बुद्धि ऋद्धि जिन श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तदावरण ज्यों कर्म निवारा, बीज बुद्धि ऋद्धि को धारा।
वे जिन सिद्ध बने अभिरामी, उनके भक्त बने शिवगामी॥7॥

ॐ ह्रीं बीज बुद्धि ऋद्धि जिन श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः निर्वपामीति स्वाहा।

इक पद से सब श्रुत को जाना, पदानुसारिणी बुद्धि महाना।
पाते श्रमण सिद्ध विज्ञानी, उनको पूज बने शिवथानी॥8॥

ॐ ह्रीं पदानुसारिणी बुद्धि ऋद्धि सम्पन्न जिन श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

संख्य शब्द इक साथ सुन, करते भिन्न विचार।
संभिन्न श्रोतृत्व ऋद्धि धर, श्रमण सिद्ध अविकार।।
उन सिद्धों की अर्चना, सिद्ध भक्ति के साथ।
सर्व कार्य सिद्धि करें, मिले सिद्ध का साथ।।9।।

ॐ ह्रीं संभिन्न श्रोतृत्व ऋद्धि सम्पन्न जिन श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयंबुद्ध ऋद्धीश बन, किया आत्म कल्याण।
ध्यान साधना श्रेष्ठ कर, पाया पद निर्वाण।। उन सिद्धों..।।10।।

ॐ ह्रीं स्वयंबुद्ध ऋद्धि संपन्न जिन श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि बुद्धि प्रत्येक से, जान तत्त्व प्रत्येक।
सिद्ध किया निज आत्म को, आगम में उल्लेख।। उन सिद्धों..।।11।।

ॐ ह्रीं प्रत्येक बुद्धि ऋद्धि संपन्न जिन श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बुद्ध प्रबोधन से बने, पायी बुद्धि विशाल।
बने बुद्ध से सिद्ध वे, उनको नमन त्रिकाल।। उन सिद्धों..।।12।।

ॐ ह्रीं बोधित बुद्धि ऋद्धि संपन्न जिन श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋजुमति मनःपर्यय मुनि, ऋजुतम तत्त्व विचार।
ऋजुता से प्रभुता वरे, नमूँ सिद्ध अविकार।। उन सिद्धों..।।13।।

ॐ ह्रीं ऋजुमति मनःपर्यय ऋद्धि संपन्न जिन श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विपुलमति ऋद्धीश ने, कर चरित्र उत्थान।
आत्म सिद्धी से पूर्व ही, पाया केवलज्ञान।। उन सिद्धों..।।14।।

ॐ ह्रीं विपुलमति मनःपर्यय ऋद्धि संपन्न जिन श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दश पूर्वी ऋद्धीश ने, दश पूर्वों को जान।
किंचित् ना उपयोग कर, पाया मोक्ष महान्।। उन सिद्धों..।।15।।

ॐ ह्रीं दश पूर्वित्व ऋद्धि संपन्न जिन श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदह पूरब ऋद्धि धर, ध्याया अंतिम ध्यान।
गुणस्थान को छोड़कर, बनें सिद्ध भगवान।।
उन सिद्धों की अर्चना, सिद्ध भक्ति के साथ।
सर्व कार्य सिद्धि करें, मिले सिद्ध का साथ।।16।।

ॐ ह्रीं चतुदश पूर्वित्व ऋद्धि संपन्न जिन श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अवतार छंद)

ऋद्धि अष्टांग निमित्त, पाकर सिद्ध बने।
हम उनको पूजें नित्य, उन सम सिद्ध बनें।।
सम्पूर्ण सिद्ध भगवान, मम कल्याण करो।
हम करते सिद्ध विधान, सिद्धि प्रदान करो।।17।।

ॐ ह्रीं अष्टांग निमित्त ऋद्धि सम्पन्न जिन श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वे ऋद्धि विक्रिया पाय, शुभ उपयोग करें।
निज आत्म विकार भगाय, शुचि उपयोग धरें।। सम्पूर्ण... ।।18।।

ॐ ह्रीं विक्रिया ऋद्धि संपन्न जिन श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विज्जाहरणादिक् ऋद्धि, आयी काम नहीं।
बस पाऊँ आतम सिद्धि, उत्तम लक्ष्य यही।। सम्पूर्ण... ।।19।।

ॐ ह्रीं विज्जाहरणादि ऋद्धि संपन्न जिन श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जंघा पर धर दो हाथ, गगन विहार करें।
वसु कर्म काट जिननाथ, आत्म विहार करें।। ।। सम्पूर्ण... ।।20।।

ॐ ह्रीं चारण ऋद्धि सम्पन्न जिन श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पा गगन गामिनी ऋद्धि, शुद्ध विहार किया।
फिर करने आतम सिद्धि, आत्म विहार किया।। सम्पूर्ण... ।।21।।

ॐ ह्रीं आकाशगामिनी ऋद्धि संपन्न जिन श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिटते सब वाद विवाद, प्रज्ञा श्रमण जहाँ।
मिलता शिवसूत्र प्रसाद, ऐसे संत जहाँ॥
सम्पूर्ण सिद्ध भगवान, मम कल्याण करो।
हम करते सिद्ध विधान, सिद्धि प्रदान करो॥22॥

ॐ ह्रीं प्रज्ञाश्रमण ऋद्धि संपन्न जिन श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्विष जिनका आशीष, सब विष शांत करे।
हम उन्हें झुकायें शीश, वे मम क्लांत हरें॥ सम्पूर्ण... ॥23॥

ॐ ह्रीं आशीनिर्विष ऋद्धि संपन्न जिन श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दृष्टि निर्विष ऋद्धीश, जिस-जिस को देखें।
वो होते निर्विष स्वस्थ, आगम उल्लेखे॥ सम्पूर्ण... ॥24॥

ॐ ह्रीं दृष्टि निर्विष ऋद्धि संपन्न जिन श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

ऋद्धि उग्र तपस्वी मुनिवर, उग्र तपस्या धारी।
कर्म काटकर सिद्ध बने वे, उनको ढोंक हमारी॥
चौंसठ गुणधारी सिद्धों को, चौंसठ अर्घ चढ़ायें।
उन सम गुण को धारण कर हम, सिद्ध सौख्य को पायें॥25॥

ॐ ह्रीं उग्र तप ऋद्धि संपन्न जिन श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप्त तपोधन ऋद्धि तेज से, आत्म प्रभाव बढ़ावें।
तपस्तेज से कर्म जलाकर, सिद्ध लोक में जावें॥ चौंसठ... ॥26॥

ॐ ह्रीं दीप्त तप ऋद्धि संपन्न जिन श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप्त तपोधन तपो ऋद्धि से, कर्म श्रृंखला कांटें।
सिद्ध सौख्य पा सिद्धालय से, सिद्ध सूक्तियाँ बाटें॥ चौंसठ... ॥27॥

ॐ ह्रीं तप्त तप ऋद्धि संपन्न जिन श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि महातप धारी जिनवर, महातपस्या करते।
कर्म समूल नष्ट कर अपने, मोक्ष लक्ष्मी वरते॥
चौंसठ गुणधारी सिद्धों को, चौंसठ अर्घ चढ़ायें।
उन सम गुण को धारण कर हम, सिद्ध सौख्य को पायें॥28॥

ॐ ह्रीं महातप ऋद्धि संपन्न जिन श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर घोर तपस्या करके, कर्म कलंक मिटाते।
कर्म समूल नशाकर भगवन्, सिद्ध परम पद पाते॥ चौंसठ...॥29॥

ॐ ह्रीं घोर तप ऋद्धि संपन्न जिन श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घोर पराक्रम तप ऋद्धि जिन, करते घोर पराक्रम।
जीते सब उपसर्ग परीषह, बनते जिन परमातम॥ चौंसठ...॥30॥

ॐ ह्रीं घोर पराक्रम तप ऋद्धि संपन्न जिन श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर घोर गुणी ऋद्धिधर, दुर्गुण सभी विनाशें।
जिनगुण संपत् प्राप्त करें वे, लोकालोक प्रकाशें॥ चौंसठ...॥31॥

ॐ ह्रीं घोर गुण ऋद्धि संपन्न जिन श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्मचर्य की घोर साधना, करें ब्रह्म के ज्ञाता।
ब्रह्म विजय का सूत्र सिखाते, जय भव्यों के त्राता॥ चौंसठ...॥32॥

ॐ ह्रीं घोर ब्रह्म गुण ऋद्धि संपन्न जिन श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(कुसुमलता छंद)

आमर्शौषधि ऋद्धिधारी, करते सकल रोग परिहार।
इसी पुण्य से कर्म काट वें, पायें मोक्ष-महल अनिवार॥
चौंसठ गुणधारी सिद्धों का, करते हम सब महाविधान।
ऋद्धि सिद्धि शिव सौख्य दिलाये, निश्चय सिद्ध समूह विधान॥33॥

ॐ ह्रीं आमर्शौषधि ऋद्धि जिन श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनके नाक कान का मल भी, औषधि बन व्याधि हर लेय।
क्ष्वैलोषधि ऋद्धिधर मुनिवर, सब जीवों के दुःख हर लेय॥
चौंसठ गुणधारी सिद्धों का, करते हम सब महाविधान।
ऋद्धि सिद्धि शिव सौख्य दिलाये, निश्चय सिद्ध समूह विधान॥34॥

ॐ ह्रीं क्ष्वेलौषधि ऋद्धि जिन श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विडौषधि ऋद्धिधर मुनिवर, तजें जहाँ मल मूत्र पुरीष।
वो भी औषधि बन जीवों के, रोग नाश दे जिनपद ईश॥ चौंसठ... ॥35॥

ॐ ह्रीं विडौषधि ऋद्धि जिन श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनका स्वेद देह का जलकण, करता रोगों का परिहार।
जल्लौषधि ऋद्धि सिद्धों की, त्रिभुवन करता जय जयकार॥ चौंसठ... ॥36॥

ॐ ह्रीं जल्लौषधि ऋद्धि जिन श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वौषधि ऋद्धिधर मुनि का, तन-मन औषधिमय बन जाय।
सब जीवों के रोग मिटाये, क्रम से सिद्ध देव बन जाय॥ चौंसठ... ॥37॥

ॐ ह्रीं सर्वौषधि ऋद्धि जिन श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रमण मनोबल ऋद्धि द्वारा, सर्व शास्त्र क्षण में पढ़ लेय।
निज पर का हित करें निरन्तर, क्रम से मुक्ति वधु वर लेय॥ चौंसठ... ॥38॥

ॐ ह्रीं मनोबल ऋद्धि जिन श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रमण वचोबल ऋद्धि द्वारा, क्षण में कर आगम का पाठ।
नहीं थके उत्साह बढ़ाये, पायें मोक्ष महल का ठाठ॥ चौंसठ... ॥39॥

ॐ ह्रीं वचोबल ऋद्धि जिन श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु कायबल ऋद्धि द्वारा, करें निरन्तर व्रत उपवास।
जिससे आतम शक्ति बढ़ाये, पायें सिद्ध लोक आवास॥ चौंसठ... ॥40॥

ॐ ह्रीं कायबल ऋद्धि जिन श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीर स्रावी ऋद्धि से विष भी, सुन्दर क्षीरमयी बन जाय।
क्षीर स्रावी मुनि आत्म क्षीर का, स्वाद चखे शिवपुर को जाय॥
चौंसठ गुणधारी सिद्धों का, करते हम सब महाविधान।
ऋद्धि सिद्धि शिव सौख्य दिलाये, निश्चय सिद्ध समूह विधान॥41॥

ॐ ह्रीं क्षीरस्रावी ऋद्धि जिन श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृतस्रावी ऋद्धि धर मुनि के, भोजन शुचि घृतमय हो जाय।
भव्यों को ज्ञानामृत घृत दे, वे मुनी सिद्ध रूप को पाय॥ चौंसठ... ॥42॥

ॐ ह्रीं घृतस्रावी ऋद्धि जिन श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करपुट में विष कटु मय भोजन, जिनके मधु अमृत हो जाय।
आतम सुख का मधुर स्वाद ले, वे जिन सिद्ध मधुर पद पाय॥ चौंसठ... ॥43॥

ॐ ह्रीं मधुस्रावी ऋद्धि जिन श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विष भोजन भी कर पुट में आ, बनता अमृत मय आहार।
अमृत स्रावी ऋद्धिधर मुनि, पाते अमृत सिद्ध विहार॥ चौंसठ... ॥44॥

ॐ ह्रीं अमृतस्रावी ऋद्धि जिन श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि अक्षीण महानस ऋद्धि, भर देते अक्षय भंडार।
निज पर का हित करते भगवन्, पाते सिद्ध सौख्य भंडार॥ चौंसठ... ॥45॥

ॐ ह्रीं अक्षीण महानस ऋद्धि जिन श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्द्धमान ऋद्धि धर मुनिवर, नित नव वृद्धि करते जाय।
भाव विशुद्धि नित्य बढ़ायें, और विशुद्ध सिद्ध पद पाय॥ चौंसठ... ॥46॥

ॐ ह्रीं वर्द्धमान ऋद्धि जिन श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व सिद्ध सिद्धायतनों को, हम पूजें नित बारम्बार।
सिद्धचक्र पूजा विधान में, उनको अर्पें अर्घ अपार॥ चौंसठ... ॥47॥

ॐ ह्रीं सर्व सिद्धायतन जिन श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व शत्रु व्याधि विध्वंसक, वर्द्धमान अतिवीर जिनेश।
सिद्ध हुये उनको हम ध्यायें, पाने हम सिद्धों का वेष॥
चौंसठ गुणधारी सिद्धों का, करते हम सब महाविधान।
ऋद्धि सिद्धि शिव सौख्य दिलाये, निश्चय सिद्ध समूह विधान॥48॥

ॐ ह्रीं भय विध्वंसक महावीर वर्द्धमानाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षपक श्रेणी आरोहण करके, योगीश्वर जिन बने सयोग।
कर्मों के बंधन को तोड़ें, बने जिनेश्वर सिद्ध अयोग॥ चौंसठ...॥49॥

ॐ ह्रीं योगाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर भी मुनि बनते जब, करते हैं सिद्धों का ध्यान।
जीवन में सब सिद्धि प्रदाता, तुम हो ध्येय सिद्ध भगवान॥ चौंसठ...॥50॥

ॐ ह्रीं ध्येयाय सिद्ध श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वकाल के सब सिद्धों को, पूजें ध्यायें हम धर ध्यान।
सिद्धचक्र पूजा विधान से, निश्चय हो आतम उत्थान॥ चौंसठ...॥51॥

ॐ ह्रीं वसु सिद्धाय जिन श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध सभी कल्याणमयी हैं, करते औरों का कल्याण।
स्वस्ति मंगल करो हमारा, इस हित हमने किया विधान॥ चौंसठ...॥52॥

ॐ ह्रीं स्वस्तये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन में सर्वोत्तम पूजित, जिनवर श्रेष्ठ सिद्ध भगवान।
उनकी पूजा योग्य बनाये, करे पुजारी का उत्थान॥ चौंसठ...॥53॥

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हते श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच परम पद में प्रधान हो, एक मात्र श्री सिद्ध स्वरूप।
जो श्रद्धा से इनको ध्यायें, वो ही पाये सिद्ध स्वरूप॥ चौंसठ...॥54॥

ॐ ह्रीं सिद्धाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम को परमात्म बनाकर, करते निज पर का कल्याण।
सिद्धी प्रदाता सब सुख दाता, सिद्ध हमें दे पद निर्वाण॥
चौंसठ गुणधारी सिद्धों का, करते हम सब महाविधान।
ऋद्धि सिद्धि शिव सौख्य दिलाये, निश्चय सिद्ध समूह विधान॥55॥

ॐ ह्रीं परमात्मने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध परम सिद्धि के दाता, नव निधि लब्धि के भंडार।
करें परम कल्याण जगत् का, देते अक्षय गुण भंडार॥ चौंसठ... ॥56॥

ॐ ह्रीं परम ब्रह्मणे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमागम का ज्ञान प्राप्त कर, करते परमागम का ध्यान।
परमागम सिद्धि के दाता, जग में एक सिद्ध भगवान॥ चौंसठ... ॥57॥

ॐ ह्रीं परमागमाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुणअनंत निज के प्रकाश कर, पायें जिन गुण वैभव सार।
मोक्ष मार्ग का दे प्रकाश जिन, बने प्रकाश सिद्ध भगवान॥ चौंसठ... ॥58॥

ॐ ह्रीं प्रकाशमानाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप स्वयंभू सिद्धनाथ हो, बने स्वयंभू सिद्ध जिनेश।
मोक्ष सिद्धि का मार्ग बताते, तुम को नमते सर्व सुरेश॥ चौंसठ... ॥59॥

ॐ ह्रीं स्वयंभुवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्म ब्रह्म में लीन हुये जिन, पाया सिद्ध रूप अविकार।
सिद्ध रूप को पाने हम सब, करते सिद्धों की जयकार॥ चौंसठ... ॥60॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मणे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध नाथ में गुण अनंत हैं, इंद्रादिक नहीं पाये पार।
गुण अनंत को पाने हम सब, करते सिद्धों का सत्कार॥ चौंसठ... ॥61॥

ॐ ह्रीं अनंत गुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अनंत धारी परमात्मा, सर्व तत्त्व में तत्त्व महान्।
वे ही सिद्ध जिनेश कहाते, उनका हमने किया विधान॥ चौंसठ... ॥62॥

ॐ ह्रीं परम अनंताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक शिखर में वास करें जिन, जो शाश्वत सिद्धों का धाम।
लोकालोक प्रकाशित करके, सिद्ध बने पहुँचें निज धाम॥
चौंसठ गुणधारी सिद्धों का, करते हम सब महाविधान।
ऋद्धि सिद्धि शिव सौख्य दिलाये, निश्चय सिद्ध समूह विधान॥63॥

ॐ ह्रीं लोकाग्रवासाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महासाधना कर हर भविजन, बनते रहे सिद्ध भगवान।
यही अनादि परम्परा है, उन सबका हम करें विधान॥ चौंसठ... ॥64॥

ॐ ह्रीं अनादि सिद्धाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं (कुसुमलता छंद)

सब सिद्धों में गुण अनंत है, कह ना सके पूर्ण गणराय।
उन सबका पूर्णार्घ चढ़ा हम, इक दिन सिद्ध परम पद पाय॥
चौंसठ गुणधारी सिद्धों का, करते हम सब महाविधान।
ऋद्धि सिद्धि शिव सौख्य दिलाये, निश्चय सिद्ध समूह विधान॥

ॐ ह्रीं चतुषष्ठि ऋद्धि आदि अनंत गुणात्मकेभ्यो श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- सब सिद्धों के चरण में, करते शांतिधार।
पुष्पाञ्जलि अर्पण करें, पाने पद अविकार॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा- चौंसठ ऋद्धि गुण धरें, सर्व सिद्ध भगवान।
जयमाला उनकी पढ़ें, करते हम गुणगान॥

(सखी छंद)

हम सर्व सिद्ध को ध्यायें, उनके अनंत गुण गायें।
वे थे जब श्रमण मुनीश्वर, पायें चौंसठ ऋद्धीश्वर॥1॥
हैं सर्व ऋद्धियाँ न्यारी, निज पर जग हित उपकारी।
अष्टादश प्रज्ञा ऋद्धि, देती हैं विद्या सिद्धी॥2॥
औ बारह विक्रिया ऋद्धि, देती हैं सक्रिय सिद्धी।
वसुविध चारण ऋद्धि हैं, दे योग गमन सिद्धी में॥3॥
तप ऋद्धि सात ही जानो, कर्मों पे अंकुश मानो।
बल ऋद्धि तीन बताई, व्रत तप में होय सहाई॥4॥
छहविध औषध ऋद्धि हैं, सब रोग हरण सिद्धि दे।
आशीर्दृष्टि विष ऋद्धी, विषहारक उत्तम ऋद्धी॥5॥
षड् विध रस ऋद्धि धारी, हो जन-जन मंगलकारी।
अक्षीण महानस ऋद्धि, भंडार भरे दे सिद्धी॥6॥
अक्षीणालय उपकारी, जग को आश्रय दातारी।
चौंसठ ऋद्धी उपकारी, ऋद्धीधर जिन दुःखहारी॥7॥
हम उनकी भक्ति रचायें, जयमाला अर्घ चढ़ायें।
''गुप्तिनंदी'' नित ध्यायें, जिन-गुण-संपत्ति पाये॥8॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं चौंसठ ऋद्धि गुण समन्वितेभ्यो श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

त्रय रत्नयुत सब सिद्ध का जो नित्य आराधन करें।
श्री सिद्धचक्र विधान से वो मोक्ष सुख साधन वरें॥
तीर्थेश आदि श्रेष्ठ पद, श्री सिद्ध पूजक पायेंगे।
'गुप्ति' सकल दुःख नाश वो, गुण गण अनंतों पायेंगे॥

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

128 गुणसहित पञ्चम पूजा

स्थापना (पंचचामर छंद)

जयो अनंत सिद्ध को, त्रिलोक वन्दना करें।
जयो प्रसिद्ध सिद्ध की, प्रसिद्ध अर्चना करें॥
जयो समस्त सिद्ध को, सुपुष्प ले बुला रहे।
जयो सुघोष भक्ति नृत्य मंत्र गीत गा रहे॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपते अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपते अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपते अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टक (पंचचामर छंद)

सुहेम रत्न कुंभ ले अपार नीर धार दे।
अशेष सिद्ध को चढ़ा निजात्म व्याधियाँ हनें॥
अनंत सिद्ध को अनंत भक्ति से प्रणाम हो।
अनंत सिद्ध भक्ति से अनंत सिद्ध काम हो॥1॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कपूर गंध चन्दनादि पात्र में मिलाइये।
अनंत सिद्ध चर्ण में चढ़ा सुपुण्य पाईये॥ अनंत..॥2॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अखंड शालि पुञ्ज दिव्य रत्न मुट्ठी में लिया।
अनंत सिद्ध को चढ़ा अखंड सौख्य पा लिया॥ अनंत..॥3॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

गुलाब मोगरा सुपदम, श्रेष्ठ गन्धवान ले।
अनंत सिद्ध को चढ़ा अकाम काम को करें॥ अनंत..॥4॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जलेबियाँ कचौरियाँ विशिष्ट व्यंजनादि ले।
अशेष सिद्ध को चढ़ा क्षुधादि कष्ट जीत लें॥
अनंत सिद्ध को अनंत भक्ति से प्रणाम हो।
अनंत सिद्ध भक्ति से अनंत सिद्ध काम हो॥5॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रदीप्त दीप ले असंख्य आरती उतारते।
जिनेन्द्र सिद्ध देव मोह ध्वांत को निवारते॥ अनंत..॥6॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिलोक भूप को अनूप धूप अग्नि में चढ़ा।
प्रसिद्ध सिद्ध जाप से मिटाय कर्म का घड़ा॥ अनंत..॥7॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अनार आम संतरा फलादि श्रेष्ठ ले सदा।
चढ़ाय सिद्ध को सदैव पाय मोक्ष संपदा॥ अनंत..॥8॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

मनोज्ञ अर्घ ले महान्, सिद्ध अर्चना करें।
त्रिकाल सिद्ध भक्ति से अनर्घ संपदा मिले॥ अनंत..॥9॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

128 गुण के प्रत्येक अर्घ

दोहा

इक सौ अट्ठाइस सकल, गुण सिद्धों के जान।
उन्हें चढ़ा पुष्पांजलि, आरम्भ करें विधान॥

अथ मंडलस्योपरि पंचम वलये पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(त्रोटक छन्द)

निर्बाध तत्त्व श्रद्धान किया, निज चित्स्वरूप पहचान लिया।
परमावगाढ समकित पाया, हमने सब सिद्धों को ध्याया॥1॥

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञान अंधेरा विनशाया, सम्पूर्ण ज्ञानरवि विकसाया।
जिन सिद्ध ज्ञान सम्यक् पाया, हमने सब सिद्धों को ध्याया॥2॥

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज राग-द्वेष परिहार किया, चारित्र परम गुण धार लिया।
प्रभु यथाख्यात संयम पाया, हमने सब सिद्धों को ध्याया॥3॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत् रूप द्रव्य का लक्षण है, अस्तित्व नाम शुभ लक्षण है।
सब सिद्धों ने इसको पाया, हमने सब सिद्धों को ध्याया॥4॥

ॐ ह्रीं अस्तित्व धर्माय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज वैभव को जो ना छोड़े, हमने उन सन्मुख कर जोड़े।
वस्तुत्व सुगुण उनने पाया, हमने सब सिद्धों को ध्याया॥5॥

ॐ ह्रीं वस्तुत्व धर्माय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छद्मस्थों के जो नहीं ज्ञेय, अर्हत् सिद्धों को हो प्रमेय।
जिन अप्रमेय गुण को पाया, हमने सब सिद्धों को ध्याया॥6॥

ॐ ह्रीं अप्रमेयत्व धर्माय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण पर्यय रूप दशा सुन्दर, निज रूप न छोड़ें किंचित् भर।
शुचि अगुरुलघु गुण को पाया, हमने सब सिद्धों को ध्याया॥7॥

ॐ ह्रीं अगुरुलघुत्व धर्माय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दश प्राणों का प्रभु नाश किया, निज चेतन धर्म विकास किया।
प्रभु शुद्ध चेतना को पाया, हमने सब सिद्धों को ध्याया॥8॥

ॐ ह्रीं चेतनत्व धर्माय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु भौतिक अंग उपांग नहीं, भौतिक रस रूप शुभांग नहीं।
जिनवर अमूर्त्त गुण को पाया, हमने सब सिद्धों को ध्याया॥9॥

ॐ ह्रीं अमूर्त्तत्व धर्माय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज मिथ्या तिमिर विनाश किया, औ समकित सूर्य विकास किया।
सम्यक्त्व धर्म प्रभु ने पाया, हमने सब सिद्धों को ध्याया॥10॥

ॐ ह्रीं सम्यक्त्व धर्माय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञान तिमिर का नाश किया, निज सत् चित् ज्ञान विकास किया।
प्रभु ज्ञान धर्म को प्रगटाया, हमने सब सिद्धों को ध्याया॥11॥

ॐ ह्रीं ज्ञान धर्माय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवत्व धर्म को धारा है, निज जीवन मरण सुधारा है।
निज शुद्ध चेतना को पाया, हमने सब सिद्धों को ध्याया॥12॥

ॐ ह्रीं जीवत्व धर्माय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्पूर्ण धर्म को जान लिया, फिर सूक्ष्म रूप व्याख्यान किया।
सूक्ष्मत्व धर्म को अपनाया, हमने सब सिद्धों को ध्याया॥13॥

ॐ ह्रीं सूक्ष्मत्व धर्माय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनमें बहु जिन अवगाहित हैं, निर्बाध स्वतंत्र विराजित हैं।
उनने अवगाहन गुण पाया, हमने सब सिद्धों को ध्याया॥14॥

ॐ ह्रीं अवगाहनत्व धर्माय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्बाध रहे नहीं बाधित हैं, अव्यय निज रूप विराजित हैं।
प्रभु अव्याबाध धरम पाया, हमने सब सिद्धों को ध्याया॥15॥

ॐ ह्रीं अव्याबाधत्व धर्माय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज में निज से निज को जाना, उन सम हमकों भी गुण पाना।
स्व संवेदन गुण को पाया, हमने सब सिद्धों को ध्याया॥16॥

ॐ ह्रीं स्व-संवेदन ज्ञानाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप से निज आत्म प्रकाश किया, निज आत्म स्वरूप विकास किया।
निज आत्म तेज को विकसाया, हमने सब सिद्धों को ध्याया॥17॥

ॐ ह्रीं स्व स्वरूप तपसे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चऊ घाति करम को नाश किया, फिर नंत चतुष्टय प्राप्त किया।
प्रभु ने चारों गुण को पाया, हमने सब सिद्धों को ध्याया॥18॥

ॐ ह्रीं अनंत चतुष्ट्यात्मकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुख समकित् आदिक् गुण पायें, वे सर्व कर्म को विनशायें।
प्रभु सिद्ध साध्य पद को पाया, हमने सब सिद्धों को ध्याया॥19॥

ॐ ह्रीं सम्यक्त्वादि गुणात्मकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पंचाचार वरे पहले, तुमसे सब कर्म रिपू दहले।
आचार पाल जिनपद पाया, हमने सब सिद्धों को ध्याया॥20॥

ॐ ह्रीं पंचाचार चरण संपन्नाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय धर्म प्रकाश किया, जिन आत्म स्वरूप विकास किया।
निश्चय रत्नत्रय को पाया, हमने सब सिद्धों को ध्याया॥21॥

ॐ ह्रीं रत्नत्रय प्रकाशाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि स्व स्वरूप को साध लिया, रत्नत्रय सिद्ध अबाध लिया।
मुनिव्रत से जिनपद को पाया, हमने सब सिद्धों को ध्याया॥22॥

ॐ ह्रीं स्व स्वरूप साधक सर्व साधुभ्यो श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

अकृत मनोयोग को साधा, क्रोधारम्भ जीत तप साधा।
क्रोध विजेता सिद्ध कहाये, उन सिद्धों को अर्घ चढ़ायें॥23॥

ॐ ह्रीं अकृत मनःक्रोध संरंभ मनो गुप्तये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन कारित क्रोधी संरंभी, करते चूर पाप आरंभी।
इनको जीत सिद्ध पद पाये, उन सिद्धों को अर्घ चढ़ायें॥24॥

ॐ ह्रीं अकारित मनः क्रोध संरंभ सानंद धर्माय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुमोदित मन क्रोध विनाशी, निजानंद पाये अविनाशी।
कर्म नाश सिद्धत्व जगायें, उन सिद्धों को अर्घ चढ़ायें॥25॥

ॐ ह्रीं नानुमोदित मनःक्रोध संरम्भ सानंद धर्माय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समारंभ क्रोधी मन वाला, महा आपदा पाये आला।
इन पापों को सिद्ध नशायें, उन सिद्धों को अर्घ चढ़ायें॥26॥

ॐ ह्रीं अकृत मनःक्रोध समारंभ परमानंद धर्माय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमःअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन से क्रुद्ध समारंभ वाला, पाय महादुःख जग में आला।
इनके त्यागी कर्म नशायें, उन सिद्धों को अर्घ चढ़ायें॥27॥

ॐ ह्रीं अकारित मनः क्रोध समारंभ परमानन्दाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समारंभ क्रोधी मन वाले, कर अनुमोदन पाप कमाले।
ये दुर्भाव सिद्ध विनशायें, उन सिद्धों को अर्घ चढ़ाये॥28॥

ॐ ह्रीं नानुमोदित मनः क्रोध समारंभ परमानन्द संतुष्टाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधित मन निज आरंभ ठाने, अनुमोदन कर निज सुख हाने॥ ये..॥29॥

ॐ ह्रीं अकृत मनः क्रोधारंभ स्व संस्थानाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधित मन आरंभ करें जो, कर प्रेरित बहु पाप करें वो॥ ये..॥30॥

ॐ ह्रीं अकारित मनःक्रोधारंभ बंध संस्थानाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रुद्ध चित्त जो आरंभ देखे, कर अनुमोदन हर्ष विषेखे।
ये दुर्भाव सिद्ध विनशायें, उन सिद्धों को अर्घ चढ़ाये॥31॥

ॐ ह्रीं नानुमोदित मनःक्रोधारम्भ संस्थानाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानी मन संरम्भ करें जब, कर्म बंधे संसार बढ़े तब॥ ये..॥32॥

ॐ ह्रीं अकृत मनो मान संरंभ साधर्माय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानी मन संरंभ कराये, करा-करा कर पाप कमाये॥ ये..॥33॥

ॐ ह्रीं अकारित मनो मान संरंभ अनन्य शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानी मन संरंभ कराये, अनुमोदन कर पाप कराये॥ ये..॥34॥

ॐ ह्रीं नानुमोदित मनो मान संरंभ सुगुण भावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समारंभ करता मनमानी, घोर कर्म बांधे अज्ञानी॥ ये..॥35॥

ॐ ह्रीं अकृत मनो मान समारंभ सुखात्म गुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनोमानी आरंभ कराये, उससे जनित घोर दुःख पाये॥ ये..॥36॥

ॐ ह्रीं अकारित मनोमान समारंभ अनन्य गताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनो मानकर अघ अनुमोदन, आत्म शक्ति का कर अवरोधन॥ ये..॥37॥

ॐ ह्रीं नानुमोदित मनो मान समारंभ अनंत वीर्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयं मनो माना आरंभी, घोर कर्म बांधे वह दंभी॥ ये..॥38॥

ॐ ह्रीं अकृत मनो मानारम्भ अनंत सुखाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन मानी आरंभ कराता, अपना ही संसार बढ़ाता॥ ये..॥39॥

ॐ ह्रीं अकारित मनो मानारम्भ अनंत ज्ञानाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनो मानी रंभः अनुमोदन, कर पाये निज का अवरोधन॥ ये..॥40॥

ॐ ह्रीं नानुमोदित मनो मानारम्भ अनंत गुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माया से कर मन सरंभी, महादुःखी हो पापारंभी॥ ये..॥41॥

ॐ ह्रीं अकृत मनो माया संरंभ ब्रह्म स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माया मन संरम्भ कराये, बिन कारण बहु पाप कमाये॥ ये..॥42॥

ॐ ह्रीं अकारित मनो माया संरम्भ चेतन्य भावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माया मन रम्भानुमोदन, करके नहीं पाये निज बोधन।
ये दुर्भाव सिद्ध विनशायें, उन सिद्धों को अर्घ चढ़ायें॥43॥

ॐ ह्रीं नानुमोदित मनो माया संरम्भ अनन्य स्वभावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मायावी मन समारम्भ कर, निज संसार बढ़ाये दुष्कर॥ ये..॥44॥

ॐ ह्रीं अकृत मनो माया समारम्भ स्वानुभूति रताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समारम्भ कारित कपटी मन, देख न पाये निज अंतर्मन॥ ये..॥45॥

ॐ ह्रीं अकारित मनो माया समारम्भ साम्य धर्माय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समारंभ माया अनुमोदन, मन से करे आत्म अवरोहण॥ ये..॥46॥

ॐ ह्रीं नानुमोदित मनो माया समारम्भ गुरुवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर आरंभ वक्र मन द्वारा, दुःख पाये कर्मों के द्वारा॥ ये..॥47॥

ॐ ह्रीं अकृत मनो माया आरंभ परम शांताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुटिल चित्त आरंभ कराये, कारित जनित पाप दुःख पाये॥ ये..॥48॥

ॐ ह्रीं अकारित मनो माया आरंभ निराकुलाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुमोदन आरंभ कपट मन, करके पाये भव परिवर्तन॥ ये..॥49॥

ॐ ह्रीं नानुमोदित मनो मायारम्भ अनंत सुखाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभी मन संरम्भ करे जब, उसको बंधते कर्म प्रचुर तब॥ ये..॥50॥

ॐ ह्रीं अकृत मनो लोभ संरम्भ अनंत दृगात्मने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभी मन संरम्भ कराये, घोर कर्म बांधे दुःख पाये॥ ये..॥51॥

ॐ ह्रीं अकारित मनो लोभ संरम्भ दृगानंद भावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभी मन संरम्भ नुमोदन, कर करके पाये भव वर्धन॥ ये..॥52॥

ॐ ह्रीं नानुमोदित मनो लोभ संरम्भ सिद्ध भावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समारंभ करके लोभी मन, पाता है पाँचों परिवर्तन॥ ये..॥53॥

ॐ ह्रीं अकृत मनो लोभ समारम्भ चिद्देवाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समारंभ करवाय लुब्ध मन, चेतन होकर बने अचेतन।
ये दुर्भाव सिद्ध विनशायें, उन सिद्धों को अर्घ चढ़ायें॥54॥

ॐ ह्रीं अकारित मनो लोभ समारम्भ निराकाराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुमोदन कर समारंभ का, लोभी मन भागी हो दुःख का॥ ये..॥55॥

ॐ ह्रीं नानुमोदित मनो लोभ समारम्भ साकाराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभी मन आरम्भ करे जब, पाप श्रृंखला को बांधे तब॥ ये..॥56॥

ॐ ह्रीं अकृत मनो लोभारम्भ चिदानंदाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लुब्ध चित्त आरंभ कराये, कर्मों के आवरण चढ़ाये॥ ये..॥57॥

ॐ ह्रीं अकारित मनो लोभारम्भ चिन्मय स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभी मन आरंभ अनुमत, करके फोड़े अपनी किस्मत॥ ये..॥58॥

ॐ ह्रीं नानुमोदित मनो लोभारम्भ स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर संरम्भ क्रोध वचनों से, वंचित होता जिन वचनों से॥ ये..॥59॥

ॐ ह्रीं अकृत वचन क्रोध संरम्भ वागुप्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध वचन संरम्भ कराये, आत्म शांति वो रंच न पाये॥ ये..॥60॥

ॐ ह्रीं अकारित वचन क्रोध संरम्भ स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधी वच संरम्भ अनुमत, करके नहीं पाता है जिनमत॥ ये..॥61॥

ॐ ह्रीं नानुमोदित वचन क्रोध संरम्भ स्वानुभव लब्धये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समारंभ कर क्रोध वचन से, वंचित होता धर्म वचन से॥ ये..॥62॥

ॐ ह्रीं अकृत वचन क्रोध समारंभ स्वानुभुति रमणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समारम्भ कारित क्रोधी वच, उसे मिले ना कभी धर्म वच॥ ये..॥63॥

ॐ ह्रीं अकारित वचन क्रोध समारंभ साधारण धर्माय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समारंभ अनुमत क्रोधी वच, इन पापों से मिले न जिन वच।
ये दुर्भाव सिद्ध विनशायें, उन सिद्धों को अर्घ चढ़ायें॥64॥

ॐ ह्रीं नानुमोदित वचनक्रोध समारंभ परम शांताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधी वच आरंभ जो कर्त्ता, होता उन कर्मों का भोक्ता॥ ये..॥65॥

ॐ ह्रीं अकृत वचन क्रोधारम्भ परमामृत तुष्टाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रुद्ध वचन आरंभ कराता, उससे वही महादुःख पाता॥ ये..॥66॥

ॐ ह्रीं अकारित वचन क्रोधारम्भ समरसाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधी वच रम्भानुमोदन, पाये नहीं धर्म उद्बोधन॥ ये..॥67॥

ॐ ह्रीं नानुमोदित वचन क्रोधारम्भ परम प्रीतये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानी वच संरम्भ करे हैं, निज पापों का घड़ा भरे हैं॥ ये..॥68॥

ॐ ह्रीं अकृत वचन मान संरम्भ, अविनश्वर धर्माय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान वचन संरम्भ कराये, बांधे नाना विधि दुःख पाये॥ ये..॥69॥

ॐ ह्रीं अकारित वचन मान संरम्भ अव्यक्त स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुमोदन संरम्भ मान वच, कभी नहीं पाये वो जिन वच॥ ये..॥70॥

ॐ ह्रीं नानुमोदित वचन मान संरम्भ दुर्लभाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समारम्भ मानी वच से कर, घोर कर्म बांधे अति दुष्कर॥ ये..॥71॥

ॐ ह्रीं अकृत वचन मान समारम्भ परमगम्य निराकाराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समारम्भ प्रेरक वच मानी, प्रचुर पाप बांधे अज्ञानी॥ ये..॥72॥

ॐ ह्रीं अकारित वचन मान समारम्भ परम स्वभावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान वचन रम्भानुमोदन, नहि सुन पाये आत्म प्रबोधन॥ ये..॥73॥

ॐ ह्रीं नानुमोदित वचन मान समारम्भ एकत्वगताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानी वच आरंभ करें जब, निंद्य कर्म का बंध करे तब॥ ये..॥74॥

ॐ ह्रीं अकृत वचन मानारंभ परमात्म धर्मराज स्वभावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान वचन आरंभ कराये, तत्क्षण महत्कर्म बंध जाये।
ये दुर्भाव सिद्ध विनशायें, उन सिद्धों को अर्घ चढ़ायें॥75॥

ॐ ह्रीं अकारित वचन मानारम्भ शाश्वतानन्दाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान वचन आरंभ अनुमत, वचन वाण से फूटे किस्मत॥ ये..॥76॥

ॐ ह्रीं नानुमोदित वचन मानारम्भ अमृत पूरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुटिल वचन संरम्भ करे जो, निज संसार बढ़ाये शठ हो॥ ये..॥77॥

ॐ ह्रीं अकृत वचन माया संरम्भ अनंत धर्मैक रूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कपट वचन संरम्भ कराये, अघ बांधे जग में भरमाये॥ ये..॥78॥

ॐ ह्रीं अकारित वचन माया संरम्भ अमृत चन्द्राय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वंचक वच संरम्भ अनुमत, कैसे पायेगा वो जिनमत॥ ये..॥79॥

ॐ ह्रीं नानुमोदित वचन माया संरम्भ अनेक मूर्तये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समारंभ कर कुटिल वचन से, ताडित होता दुष्ट वचन से॥ ये..॥80॥

ॐ ह्रीं अकृत वचन माया समारंभ नित्य निरंजन स्वभाव लब्धये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समारम्भ करवाये कपट वच, भोगेगा वो आगे दुर्वच॥ ये..॥81॥

ॐ ह्रीं अकारित वचन माया समारम्भ आत्मैक धर्माय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कपट वचन रम्भानुमोदन, कैसे हो चित् ऊर्ध्वारोहण॥ ये..॥82॥

ॐ ह्रीं नानुमोदित वचन माया समारम्भ परम सूक्ष्माय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वक्री वच आरम्भ करे है, कर्म जाल वो स्वयं रचे है॥ ये..॥83॥

ॐ ह्रीं अकृत वचन मायारम्भ अनन्तावकाशाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वक्री वच आरंभ कराये, कर्म बांध संसार भ्रमाये॥ ये..॥84॥

ॐ ह्रीं अकारित वचन मायारम्भ अमल गुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वक्रवचन रम्भानुमोदन, उसे रूचे ना धर्म प्रबोधन।
ये दुर्भाव सिद्ध विनशायें, उन सिद्धों को अर्घ चढ़ायें॥85॥

ॐ ह्रीं नानुमोदित वचन मायारम्भ निरवधि सुखाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभी वच संरम्भ करे हैं, कर्म उसे हैरान करे हैं॥ ये..॥86॥

ॐ ह्रीं अकृत वचन लोभ संरम्भ व्यापक धर्माय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभ वचन संरम्भ कराता, अपना ही संसार बढ़ाता॥ ये..॥87॥

ॐ ह्रीं अकारित वचन लोभ संरम्भ व्यापक गुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभी वच संरम्भ अनुमत, उसकी निश्चय होती दुर्गत॥ ये..॥88॥

ॐ ह्रीं नानुमोदित वचन लोभ संरम्भ अचलाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समारम्भ कर लोभ वचन से, वंचित होता जिन प्रवचन से॥ ये..॥89॥

ॐ ह्रीं अकृत वचन लोभ समारम्भ निरालंबाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समारम्भ उपदेश लोभ से, पीडित होता पाप क्षोभ से॥ ये..॥90॥

ॐ ह्रीं अकारित वचन लोभ समारंभ निराश्रयाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समारंभ अनुमत वच लुब्धक, बनता है कर्मों का बंधक॥ ये..॥91॥

ॐ ह्रीं नानुमोदित वचन लोभ समारम्भ अखंडाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लुब्ध वचन आरंभ करे है, नीच कर्म का बन्ध करे है॥ ये..॥92॥

ॐ ह्रीं अकृत वचन लोभारम्भ परीतावस्थाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभी वच आरंभ कराये, स्वयं बंधे पर को बंधवाये॥ ये..॥93॥

ॐ ह्रीं अकारित वचन लोभारम्भ समयसाराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभी वच आरम्भ समर्थन, करवाये कर्मों का बन्धन॥ ये..॥94॥

ॐ ह्रीं नानुमोदित वचन लोभारम्भ निरंतराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधी तन सम्रम्भ करें जब, घोर कर्म का बंध करे तब॥ ये..॥95॥

ॐ ह्रीं अकृत काय क्रोध संरंभ काय गुप्तये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधित तन संरंभ कराये, अपना ही जग भ्रमण बढ़ाये॥ ये..॥96॥

ॐ ह्रीं अकारित काय क्रोध संरंभ शुद्ध कायाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधित तन संरंभ समर्थन, बढ़वाता है भव परिवर्तन।
ये दुर्भाव सिद्ध विनशायें, उन सिद्धों को अर्घ चढ़ायें॥97॥

ॐ ह्रीं नानुमोदित काय क्रोध संरंभ अकायाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समारंभ कर क्रुद्ध देह से, कभी न छूटे जीव देह से॥ ये..॥98॥

ॐ ह्रीं अकृतकाय क्रोध समारंभ स्वान्वयगुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समारंभ तन क्रुद्ध कराये, नाना दुःख भव बंधन पाये॥ ये..॥99॥

ॐ ह्रीं अकारित काय क्रोध समारंभ स्वभावरतये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समारंभ अनुमत तन क्रोधी, होने ना देवे वो बोधी॥ ये..॥100॥

ॐ ह्रीं नानुमोदित काय क्रोध समारंभ स्वान्वय धर्माय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधी तन आरंभ करे है, बहु कर्मों का त्रास वरे है॥ ये..॥101॥

ॐ ह्रीं अकृत काय क्रोधारंभ शुद्ध द्रव्य रताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधित कायारंभ कराये, निज भव वास अनंत बढ़ाये॥ ये..॥102॥

ॐ ह्रीं अकारित काय क्रोधारंभ संसार छेदकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधित कायारंभ अनुमत, निश्चय फोड़े अपनी किस्मत॥ ये..॥103॥

ॐ ह्रीं नानुमोदित काय क्रोधारंभ जैन धर्माय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन संरंभ करे मानी जब, कर्म बांध हो अज्ञानी तब॥ ये..॥104॥

ॐ ह्रीं अकृत काय मान संरंभ स्वरूप गुप्तये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानी तन संरंभ कराये, महापाप से अति दुःख पाये॥ ये..॥105॥

ॐ ह्रीं अकारित काय मान संरंभ निज कृतये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानी तन संरम्भ समर्थन, स्वयं बढ़ाये दुःख आवर्तन॥ ये..॥106॥

ॐ ह्रीं नानुमोदित काय मान संरम्भ ध्येय भावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समारंभ मदयुत तन द्वारा, पाये अघ बन्धन अनिवारा॥ ये..॥107॥

ॐ ह्रीं अकृत काय मान समारम्भ परमाराधनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समारंभ तन मत्त कराये, असह कर्म का बंध कराये।
ये दुर्भाव सिद्ध विनशायें, उन सिद्धों को अर्घ चढ़ायें॥108॥

ॐ ह्रीं अकारित काय मान समारम्भ आनंद गुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समारम्भ अनुमत तन मानी, अघ बंधन करता अज्ञानी॥ ये..॥109॥

ॐ ह्रीं नानुमोदित काय मान समारम्भ स्वानंदानंदिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर आरम्भ देह से मानी, पाता है दुःख की रजधानी॥ ये..॥110॥

ॐ ह्रीं अकृत काय मानारम्भ संतोषाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानी तन आरम्भ कराये, अघ बांधे जग बन्धन पाये॥ ये..॥111॥

ॐ ह्रीं अकारित काय मानारम्भ स्वरूप रताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानी तन आरम्भ समर्थन, कर्म बंधे बढ़ता भव वर्तन॥ ये..॥112॥

ॐ ह्रीं नानुमोदित काय मानारम्भ शुद्ध पर्यायाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कपट देह संरम्भ करे जो, नीच पाप अघ बन्ध करे वो॥ ये..॥113॥

ॐ ह्रीं अकृत काय माया संरम्भ अमृत गर्भाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कपटी तन संरम्भ कराये, भव-भव में दुःख बंधन पाये॥ ये..॥114॥

ॐ ह्रीं अकारित काय माया संरम्भ चैतन्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वक्र देह संरम्भ अनुमत, करने वाला हो बदकिस्मत ॥ ये..॥115॥

ॐ ह्रीं नानुमोदित काय माया संरम्भ आनंद समरसाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समारम्भ कपटी तन से कर, कर्म श्रृंखला बांधे दुष्कर॥ ये..॥116॥

ॐ ह्रीं अकृत काय माया समारम्भ भवच्छेदकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समारम्भ करवाय कपट तन, कपट कर्म से पाय वक्र तन॥ ये..॥117॥

ॐ ह्रीं अकारित काय माया समारम्भ स्वातंत्र्य धर्माय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समारम्भ अनुमत वक्री तन, इससे बढ़ता है भव वर्तन॥ ये..॥118॥

ॐ ह्रीं नानुमोदित काय माया समारम्भ धर्म समूहाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर आरम्भ देह से मायी, जीवन की सुख शांति गँवायी।
ये दुर्भाव सिद्ध विनशायें, उन सिद्धों को अर्घ चढ़ायें॥119॥

ॐ ह्रीं अकृत काय मायारम्भ परमात्म सुखाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माया तन आरम्भ कराये, भव-भव में वक्री दुःख पाये॥ ये..॥120॥

ॐ ह्रीं अकारित काय मायारम्भ निष्ठात्मने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माया तन आरंम्भ समर्थन, कैसे पाये पुण्य समर्थन॥ ये..॥121॥

ॐ ह्रीं नानुमोदित काय मायारम्भ चेतनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभी तन संरम्भ करे जब, नीच कर्म का बंध करे तब॥ ये..॥122॥

ॐ ह्रीं अकृत काय लोभ संरम्भ परम चित परिणताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लुब्ध काय संरम्भ कराये, प्रचुर कर्म का बंध कराये॥ ये..॥123॥

ॐ ह्रीं अकारित काय लोभ संरम्भ स्वसमय रताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभी तन संरंभ समर्थन, बढ़वाये संसार प्रवर्तन॥ ये..॥124॥

ॐ ह्रीं नानुमोदित काय लोभ संरम्भ व्यक्त धर्माय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समारंभ लोभी तन से कर, भव-भव बाँधे कर्म भयंकर॥ ये..॥125॥

ॐ ह्रीं अकृतकाय लोभ समारंभ नित्य सुखाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समारंभ प्रेरक लोभी तन, चेतन होकर बने अचेतन॥ ये..॥126॥

ॐ ह्रीं अकारित काय लोभ समारंभ अकषायाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समारंभ अनुमत लोभी तन, पाये नित कर्मों का बंधन॥ ये..॥127॥

ॐ ह्रीं नानुमोदित काय लोभ समारंभ शौच गुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभी तन आरंभ करे जो, सर्व दुःखों का पात्र बने वो॥ ये..॥128॥

ॐ ह्रीं अकृत काय लोभारंभ चिदात्मने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभी तन आरंभ कराये, दुर्गति बाँध महा दुःख पाये॥ ये..॥129॥

ॐ ह्रीं अकारित काय लोभारंभ निरालंबाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभी तन आरंभ समर्थन, देता है कर्मों का बंधन।
ये दुर्भाव सिद्ध विनशायें, उन सिद्धों को अर्घ चढ़ायें॥130॥

ॐ ह्रीं नानुमोदित काय लोभारंभ आत्मरत सिद्धाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पूर्णार्घ-शंभु छंद)

हम सब सिद्धों को ध्याते हैं, उनकी ही महिमा गाते हैं।
जो योग तीन संरम्भ आदि, चारों कषाय विनशाते हैं॥
इन सबसे अर्जित सर्व कर्म, श्री सिद्ध जिनेश्वर विनशायें।
उन सम वसु कर्म नशाने हम, श्री सिद्धचक्र पूजा गायें॥
सिद्धों को आगम सिद्ध द्रव्य, अति उत्तम अर्घ चढ़ाते हैं।
ध्वज श्रीफल मोदक अष्ट द्रव्य, पूर्णार्घ मनोज्ञ चढ़ाते हैं॥

ॐ ह्रीं अष्टाविंशत्यधिकशत गुण युक्तेभ्यो श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- सिद्ध चरण में सिद्धी हित, करते शांतिधार।
सिद्ध लोक में वास हित, पुष्पाञ्जलि मनहार॥

शांतये शांतिधारा... दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः। (इस मंत्र का 9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा- सिद्ध अनंत भदंत की, गायें हम जयमाल।
पुष्पों की माला चढ़ा, पायें हम गुणमाल॥

चौपाई

जय-जय-जय श्री सिद्ध जिनेशा, लोक अग्र में वास हमेशा।
तुमने आत्म ज्ञान प्रगटाया, आत्म शक्ति को आप जगाया॥1॥

मन–वच–तन आश्रव करवाते, संरम्भ आदि तीव्रता लाते।
ये नवकोटि अधम बतायी, इनसे कर्म बंधे दुःखदायी।।2।।
चार कषायें आग लगाये, कर्मों के बहु भंग बनाये।
जो इन सबके वश हो जाते, कर्म जाल में वो फस जाते।।3।।
तीन योग तुम वश में आये, संरम्भ आदि रंच न भाये।
सर्व कषाय जीत जिनरायी, निष्कषाय जिन संज्ञा पायी।।4।।
सिद्ध जिनेश कर्म को जीतें, दुर्जय कर्म शत्रु को जीतें।
रत्नत्रय की सिद्धी पायें, आत्म स्वभाव पूर्ण विकसायें।।5।।
भव्यों को सन्मार्ग दिखायें, सहज सिद्धी के सूत्र बतायें।
द्वादशांग उनके गुण गाये, तीर्थंकर भी उनको ध्यायें।।6।।
जीवन की प्रत्येक क्रिया में, गर्भवास से अन्त क्रिया में।
मानव के प्रत्येक कार्य में, सिद्ध पूज्य हरपल हरक्षण में।।7।।
सिद्ध अनंतानंत कहाये, उन सबका हम पाठ रचायें।
''गुप्तिनंदी'' सब जिन को ध्याये, क्रमशः सिद्ध परम पद पाये।।8।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अष्टाविंशत्यधिक शतगुण संयुक्तेभ्यो श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

त्रय रत्नयुत सब सिद्ध का जो नित्य आराधन करें।
श्री सिद्धचक्र विधान से वो मोक्ष सुख साधन वरें।।
तीर्थेश आदि श्रेष्ठ पद, श्री सिद्ध पूजक पायेंगे।
'गुप्ति' सकल दुःख नाश वो, गुण गण अनंतों पायेंगे।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

256 गुण सहित षष्ठम पूजा

स्थापना (मत्तगयंद छंद)

सिद्ध जिनेश्वर, कर्म जयीश्वर, लोक शिखर पर जाय विराजे।
त्रिजगदीश्वर मोक्ष महेश्वर, भव्यन् चित्त सदैव विराजें।।
आज निमंत्रण है प्रभु तुमको, पुष्प समूह लिये नित ताजे।
सिद्धिपति सब सिद्धी प्रदाता, आतम मन्दिर आन विराजें।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपते अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपते अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपते अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टक (मत्तगयंद छंद)

तीर्थ सरोवर का जल ले हम, श्री जिनवर पर धार करावें।
नीर चढ़ा भव नीर निधि तर, जन्म जरादिक् रोग नशावें।।
सिद्धि समृद्धि विशुद्धि प्रदायक, हे प्रभो ! सिद्ध अनंत अनंता।
सिद्ध महार्चन से हम भी प्रभो, आप समान बने गुणवंता।।1।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित चन्दन स्वर्णिम केशर, मनहर गंध कपूर मिलाया।
सिद्ध चरण युग में चर्चन कर, शेष स्वयं के शीश लगाया।। सिद्धि..।।2।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णिम् रत्नज् शालिज् अक्षत, अर्पित सुन्दर माणिक मोती।
अक्षय ज्योतिमयी सुख धारक, दो हमको वह अक्षय ज्योती।। सिद्धि..।।3।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित और सुगंधित मनहर, नैनन् प्राणन् को सुखकारी।
माल व पुष्प चढ़ाकर के हम, शिवसुख माल वरें दुःखहारी।। सिद्धि..।।4।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

बूंदी बर्फी सेव कचौरी बहुविध षट्‌रस व्यंजन लाये।
सिद्ध जिनेश्वर को कर अर्पित, भक्त क्षुधादिक् रोग नशायें॥
सिद्धि समृद्धि विशुद्धि प्रदायक, हे प्रभो ! सिद्ध अनंत अनंता।
सिद्ध महार्चन से हम भी प्रभो, आप समान बने गुणवंता॥5॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

झिलमिल चमचम दीप जला हम, सिद्ध शिलाकृति भव्य बनायें।
नृत्य रचा जयघोष करें हम, मोहजयी बन कर्म नशायें॥ सिद्धि..॥6॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित प्रासुक धूप जलाकर, दशदिश को हम सब महकायें।
सिद्ध जिनेश्वर का कर अर्चन, कर्मन् पिण्ड सुशीघ्र जलायें॥ सिद्धि..॥7॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्ऋतु के फल उत्तम उत्तम, जामुन दाड़िम आम बिजौरा।
श्रीपद में कर आज समर्पण, मोक्ष महापट ज्यों अब खोला॥ सिद्धि..॥8॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसुविध अर्घ मनोज्ञ चढ़ा हम, वसुविध मंगल द्रव्य चढ़ावें।
अष्टम भूपति सिद्ध हमें अब, अष्टम् भू अतिशीघ्र दिलावें॥ सिद्धि..॥9॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

256 गुणों के प्रत्येक अर्घ

दोहा– दिव्य अनन्तानंत गुण, सब सिद्धों के जान।
द्वयशत छप्पन अधिक गुण, उनका करें विधान॥

अथ मंडलस्योपरि षष्ठम वलये पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(अडिल्ल छंद)

निज अज्ञान तिमिर को जिनवर नाशते।
पूर्ण ज्ञान पा लोकालोक प्रकाशते।।
सब कर्मों के नाशक सिद्ध जिनेश हैं।
हम उनको भज जायें मोक्ष प्रदेश में।।1।।

ॐ ह्रीं चिरतर संसार कारण अज्ञान निर्धूत केवलज्ञानातिशय संपन्न सिद्धाधिपतये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँचों इन्द्रिय वा मन से मतिज्ञान हो।
क्षयोपशम मतिज्ञानावरण प्रधान हो।। सब...।।2।।

ॐ ह्रीं अभिनिबोध कर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मति पूर्वक हो द्वादशांग श्रुत ज्ञान है।
श्रुतावरण अघ रखता है अज्ञान में।। सब...।।3।।

ॐ ह्रीं श्रुत ज्ञानावरण कर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

असंख्य जग सम होता अवधिज्ञान है।
अवधि ज्ञानावरण करे अज्ञान है।। सब...।।4।।

ॐ ह्रीं असंख्य लोक भेद भिन्न अवधिज्ञानावरण कर्म विनाशक श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

असंख्यात मनःपर्यय ज्ञान प्रमाण है।
यह क्षायोपशमिक चौथा शुचिज्ञान है।। सब...।।5।।

ॐ ह्रीं असंख्य प्रकार मनःपर्ययज्ञानावरण विमुक्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब केवलज्ञानावरणी का नाश हो।
तब ही निश्चय केवलज्ञान विकास हो।। सब...।।6।।

ॐ ह्रीं निखिल द्रव्य गुण पर्याय बोधक केवलज्ञानावरण विमुक्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वारपाल सम कर्म दर्शनावरण है।
दर्शन गुण में बने यही आवरण है।।
सब कर्मों के नाशक सिद्ध जिनेश हैं।
हम उनको भज जायें मोक्ष प्रदेश में।।7।।

ॐ ह्रीं सकल दर्शनावरण कर्म विनाशकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चक्षु दर्शनावरण कर्म को नाशकर।
प्रभु का दर्शन पायें आत्म विकास कर।। सब...।।8।।

ॐ ह्रीं चक्षुदर्शनावरण कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चक्षु बिना सब इन्द्रिय से सत्ता ग्रहण।
उसका कर्म विनाश मिटे, अघ का ग्रहण।। सब...।।9।।

ॐ ह्रीं अचक्षु दर्शनावरण कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मर्यादा को लेकर अवधिज्ञान हो।
अवधि दर्शनावरण नशे उत्थान हो।। सब...।।10।।

ॐ ह्रीं अवधि दर्शनावरण कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रैकालिक द्रव्यों का अवलोकन करे।
केवल दर्शनावरण कर्म सब जिन हरें।। सब...।।11।।

ॐ ह्रीं केवलदर्शनावरण कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निद्रा दर्शनावरण कर्म जब हो उदय।
अति निद्रा आती करती सुकृत विलय।। सब...।।12।।

ॐ ह्रीं निद्रा कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुत जगाने पर भी निद्रा ना भगे।
निद्रानिद्रा कर्म वहाँ निश्चय जगे।। सब...।।13।।

ॐ ह्रीं निद्रानिद्रा कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन्दरूप निद्रा आये जागृत दिखे।
प्रचला कर्म यहीं जिसको जिनवर नशें॥
सब कर्मों के नाशक सिद्ध जिनेश हैं।
हम उनको भज जायें मोक्ष प्रदेश में॥14॥

ॐ ह्रीं प्रचला कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति निद्रा अति लार बहे सब तन हिले।
प्रचला प्रचला कर्म वहाँ निश्चय मिले॥ सब...॥15॥

ॐ ह्रीं प्रचला प्रचला कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निद्रा में अनवांछित भीषण कार्य हो।
वहाँ स्त्यानगृद्धि विधि अनिवार्य हो॥ सब...॥16॥

ॐ ह्रीं स्त्यानगृद्धि दर्शनावरणी कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुख दुःख का वेदन करवाये वेदनी।
वही सुखी जिसने इसकी बाधा हनी॥ सब...॥17॥

ॐ ह्रीं वेदनीय कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साता वेदनीय से इन्द्रिय जग सुख मिले।
शहद लपेटी असि जैसा मानो भले॥ सब...॥18॥

ॐ ह्रीं सातावेदनीय कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म असाता दुःख संकट पीड़ा दिला।
भव भोगों से अरति दिलाये ये भला॥ सब...॥19॥

ॐ ह्रीं असाता वेदनीय कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मदिरा पी ज्यों मानव होता बावला।
मोह महामद की उससे बदतर कला॥ सब...॥20॥

ॐ ह्रीं मोह कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तत्त्वों का श्रद्धान ना हो जिस कर्म से।
वही पंच मिथ्यात्व जिसे जिनवर नशें॥
सब कर्मों के नाशक सिद्ध जिनेश हैं।
हम उनको भज जायें मोक्ष प्रदेश में॥21॥

ॐ ह्रीं मिथ्यात्व कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दधि गुड़ जैसे मिले जुले परिणाम हो।
वैसे समकित मिथ्या का परिणाम हो॥ सब...॥22॥

ॐ ह्रीं सम्यक्त्वमिथ्यात्व कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रद्धा में चल-मल अगाढ़ त्रयदोष हो।
सम्यग्दर्शन नष्ट न हो कुछ दोष हो॥ सब...॥23॥

ॐ ह्रीं सम्यक् प्रकृति रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष मार्ग में बाधक क्रोध कषाय है।
अनंतानुबंधी जग में भरमाय है॥ सब...॥24॥

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धी क्रोध कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव-शास्त्र-गुरु सन्मुख कर अभिमान जो।
अविनय कर पाता मिथ्या श्रद्धान वो॥ सब...॥25॥

ॐ ह्रीं अनन्तानुबंधी मान कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनन्तानुबन्धी कषाय माया बुरी।
मोक्षमार्ग में बाधक पापों की धुरी॥ सब...॥26॥

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धी माया कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनन्त लोभी ही निर्माल्य खसोट कर।
नरकादिक में दुःख पाये वो पाप कर॥ सब...॥27॥

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धी लोभ कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अप्रत्याख्यानावरणी हो क्रोध जब।
अणुव्रत लेने का होवे ना बोध तब॥
सब कर्मों के नाशक सिद्ध जिनेश हैं।
हम उनको भज जायें मोक्ष प्रदेश में॥28॥

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरण क्रोध कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दूजा मान जहाँ अणुव्रत ना हो वहाँ।
गुणस्थान पंचम उपलब्ध न हो वहाँ॥ सब...॥29॥

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरण मानकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कपट दूसरा देशव्रतों से दूरकर।
अविरत श्रद्धा में रोके मजबूर कर॥ सब...॥30॥

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरण मायाकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अणुव्रतों का शत्रु दूजा लोभ है।
इसके आश्रित जीव रहे नित क्षोभ में॥ सब...॥31॥

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानावरण लोभकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्याख्यानी जीव देशव्रत को धरे।
क्रोधोदय में पूर्ण व्रतों को ना धरे॥ सब...॥32॥

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरण क्रोधकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान तीसरी की जिसमें अभिव्यक्ति है।
महाव्रतों की उसमें न अभिव्यक्ति है॥ सब...॥33॥

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरण मानकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्याख्यानी मायाचारी हो जहाँ।
महाव्रतों की चर्या कैसे हो वहाँ॥ सब...॥34॥

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरण माया कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देशव्रतों संग जहाँ लोभ का वास है।
वहाँ श्रमण चर्या का नहीं विकास है।।
सब कर्मों के नाशक सिद्ध जिनेश हैं।
हम उनको भज जायें मोक्ष प्रदेश में।।35।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरण लोभ कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध, संज्वलन से झुलसे जब आत्मा।
यथाख्यात चारित्र न पाये आत्मा।। सब...।।36।।

ॐ ह्रीं संज्वलन क्रोध कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान संज्वलन का जब तक रहता उदय।
यथाख्यात संयम तब तक ना हो उदय।। सब...।।37।।

ॐ ह्रीं संज्वलन मान कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिव्रत के संग अल्प कपट भी हो जहाँ।
वीतराग चारित्र रँच ना हो वहाँ।। सब...।।38।।

ॐ ह्रीं संज्वलन माया कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभ संज्वलन का क्षय करते जो श्रमण।
वे काटें चऊ घाति कर्म के आवरण।। सब...।।39।।

ॐ ह्रीं संज्वलन लोभ कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हास्य कर्म से हंसे उडाये जो हँसी।
वह उड़वाये अपनी सब जग में हँसी।। सब...।।40।।

ॐ ह्रीं हास्य कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

योग्य अयोग्य प्रती प्रीति रति से बने।
रति कषाय का उदय आत्म शक्ति हने।। सब...।।41।।

ॐ ह्रीं रतिकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरति कर्म से अप्रसन्न हो ओर से।
उसको भी फिर अरति मिले चहुँ ओर से॥
सब कर्मों के नाशक सिद्ध जिनेश हैं।
हम उनको भज जायें मोक्ष प्रदेश में॥42॥

ॐ ह्रीं अरति कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इष्टानिष्ट वियोग योग से शोक हो।
इसके नाशक जिनवर आप अशोक हो॥ सब... ॥43॥

ॐ ह्रीं शोक कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो भय देता वो कैसे होगा अभय।
अभय दान दे सिद्ध बने निर्भय अभय॥ सब... ॥44॥

ॐ ह्रीं भय कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर अवगुण निज गुण का करे प्रचार जो।
कर्म जुगुप्सा बांधे नित दुःखकार वो॥ सब... ॥45॥

ॐ ह्रीं जुगुप्सा कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उभय लिंग में रमण नपुसंक ही करे।
सिद्ध नपुंसक वेद कर्म का क्षय करें॥ सब... ॥46॥

ॐ ह्रीं नपुंसक वेद कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज पत्नी संग रमण औषधि रूप हो।
पुरुष वेद वो त्याग वरे निज रूप को॥ सब... ॥47॥

ॐ ह्रीं पुरुष वेद कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज भर्ता में रमें रूप श्रृंगार कर।
त्रिया वेद वह सिद्ध नशें शुचि ध्यान कर॥ सब... ॥48॥

ॐ ह्रीं स्त्रीवेद कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

आयु कर्म जग का दृढ़ बंधन, गति अनुसार कराता बन्धन।
आयु कर्म सब सिद्ध विनाशें, उन्हें अर्घ दें हम अघ नाशें॥49॥

ॐ ह्रीं आयु कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरक वास दुस्सह दुःखदायी, तैंतिस सागर अति दुःखदायी॥ आयु..॥50॥

ॐ ह्रीं नरकायु कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पशुगति में दुःख क्लेश भयानक, भोगे कष्ट अनेक अचानक॥ आयु..॥51॥

ॐ ह्रीं तिर्यचायु कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरभव जो बिन त्याग बितायें, वो चहुँ गति में खूब भ्रमाये॥ आयु..॥52॥

ॐ ह्रीं मनुष्यायु कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप सुकृत से सुर तन पाया, विषय चाह में उसे गँवाया॥ आयु..॥53॥

ॐ ह्रीं देवायु कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जीवों में भेद करे जो, चित्रकार सम नामकर्म वो।
नाम कर्म सब सिद्ध विनाशें, उन्हें अर्घ दे हम अघ नाशें॥54॥

ॐ ह्रीं नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरक गति उदयागत आवे, नारक देह जीव तब पावे॥ नाम..॥55॥

ॐ ह्रीं नरक गति कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिसमें पशु-पक्षी तन पावे, पशुगति जन्य घोर दुःख पावे॥ नाम..॥56॥

ॐ ह्रीं तिर्यंचगति कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिससे जीव मनुज तन पावे, ऊँच-नीच भेदों को पावे॥ नाम..॥57॥

ॐ ह्रीं मनुष्यगति कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिससे चउ विध सुरतन पावे, ईर्ष्या लोभ करे दुःख पावें॥ नाम..॥58॥

ॐ ह्रीं देवगति कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पद्धरि छंद)

एकेन्द्रिय थावर पंच भेद, उसमें साधारण वा प्रत्येक।
श्री सिद्ध करें वसुकर्म हान, उनका हम सब करते विधान॥59॥

ॐ ह्रीं एकेन्द्रिय जाति कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्पर्शन रसना कर्म दोय, दो इन्द्रिय जाति जीव सोय॥ श्री..॥60॥

ॐ ह्रीं द्वीन्द्रिय जाति कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संस्पर्शन रसना घ्राण तीन, त्रय इन्द्रिय जाति जीव दीन॥ श्री..॥61॥

ॐ ह्रीं त्रीन्द्रिय जाति कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संस्पर्शन रसना घ्राण कर्ण, चऊ इन्द्रिय जाति जीव वर्ण॥ श्री..॥62॥

ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रिय जाति कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचेन्द्रिय जाति गमक चार, मन बिन मनवाले दो प्रकार॥ श्री..॥63॥

ॐ ह्रीं पंचेन्द्रिय जाति कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

औदारिक तन धर नर तिर्यंच, सब सहते कर्मों का प्रपंच॥ श्री..॥64॥

ॐ ह्रीं औदारिक शरीर कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैक्रियिक तन धर देव चार, दुःख पाय नारकी बहु प्रकार॥ श्री..॥65॥

ॐ ह्रीं वैक्रियिक शरीर कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज संशय जग के दुःख निवार, मुनि श्रेष्ठ आहारक देह धार॥ श्री..॥66॥

ॐ ह्रीं आहारक शरीर कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तेजस तन धारे जगत् जीव, जग वास कष्ट पायें अतीव ॥ श्री..॥67॥

ॐ ह्रीं तेजस शरीर कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्माण काय जग जीव पाय, जग में रहते नहि छूट पाय॥ श्री..॥68॥

ॐ ह्रीं कार्माण शरीर कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

औदारिक परमाणु समाय, औदारिक तन बन्धन कराय।
श्री सिद्ध करें वसुकर्म हान, उनका हम सब करते विधान॥69॥

ॐ ह्रीं औदारिक देह बंधन कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैक्रियिक तन बन्धन समान, नारकी सुर गण कैदी सुजान॥ श्री..॥70॥

ॐ ह्रीं वैक्रियिक देह बंधन कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मुनि आहारक ऋद्धि पाय, बंधन आहारक देह पाय॥ श्री..॥71॥

ॐ ह्रीं आहारक देह बंधन कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तैजस बंधन जग जीव पाय, चऊ गति में तन का तेज पाय॥ श्री..॥72॥

ॐ ह्रीं तैजस देह बंधन कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्माण देह वसु कर्म पिण्ड, बंधन कारक शक्ति प्रचण्ड॥ श्री..॥73॥

ॐ ह्रीं कार्माण देह बंधन कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

औदारिक परमाणु संघात, जोड़े तन आतम एक साथ॥ श्री..॥74॥

ॐ ह्रीं औदारिक संघात कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैक्रियक परमाणु मिलाय, तन आतम का मिश्रण कराय॥ श्री..॥75॥

ॐ ह्रीं वैक्रियक संघात कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आहारक अणुओं का संघात, आहारक तन रचना करात॥ श्री..॥76॥

ॐ ह्रीं आहारक संघात कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तेजस अणु हो जब आत्म संग, आतम प्रदीप्त हो कर्म संग॥ श्री..॥77॥

ॐ ह्रीं तैजस संघात कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्माणु जनित कार्माण कर्म, आतम को दे बंधन अशर्म॥ श्री..॥78॥

ॐ ह्रीं कार्माण संघात कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संस्थान सुचौरस रुचिरकार, है नामकर्म का ही प्रकार॥ श्री..॥79॥

ॐ ह्रीं समचतुरस्त्र संस्थान कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊपर बढ़ाय नीचे घटाय, न्यग्रोध परिमंडल कहाय।
श्री सिद्ध करें वसुकर्म हान, उनका हम सब करते विधान॥80॥

ॐ ह्रीं न्यग्रोध परिमंडल संस्थान कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नीचे फैले ऊपर घटाय, स्वाति संस्थान वही कहाय॥ श्री..॥81॥

ॐ ह्रीं स्वाति संस्थान कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिससे कूबड़ विद्रूप होय, नहि शोभनीय तन रूप होय॥ श्री..॥82॥

ॐ ह्रीं कुब्जक संस्थान कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संस्थान बटुक वामन शरीर, उपहास पात्र चिंतित अधीर॥ श्री..॥83॥

ॐ ह्रीं वामन संस्थान कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हुंडक आकृति नहि इक समान, बेड़ोंल विरूप वियोग वान॥ श्री..॥84॥

ॐ ह्रीं हुंडक संस्थान कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिससे तन अंग उपांग पाय, औदारिक आदि कष्ट दाय॥ श्री..॥85॥

ॐ ह्रीं औदारिक शरीर अंगोपांग कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैक्रियक अंगोपांग कर्म, सुर नारकी आदि के अशर्म॥ श्री..॥86॥

ॐ ह्रीं वैक्रियक शरीर अंगोपांग कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आहारक तन कुछ श्रमण पाय, निज की शंका जग दुःख मिटाय॥ श्री..॥87॥

ॐ ह्रीं आहारक शरीर अंगोपांग कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो वज्रमयी सम्पूर्ण देह, जिसको पा हो सकते विदेह॥ श्री..॥88॥

ॐ ह्रीं वज्रवृषभ नाराच संहनन कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

दूजे संहनन में अस्थि वज्र, हो अतुल शक्ति मय कील वज्र॥ श्री..॥89॥

ॐ ह्रीं वज्रनाराच संहनन कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिससे कीलक सामान्य मान, पर हाड़ वज्र का शक्ति मान।
श्री सिद्ध करें वसुकर्म हान, उनका हम सब करते विधान॥90॥

ॐ ह्रीं नाराच संहनन कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अस्थि में कीलक मात्र जान, संहनन आधा नाराच मान॥ श्री..॥91॥

ॐ ह्रीं अर्द्धनाराच संहनन कर्म शातकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस कर्मोदय से सर्व हाड़, आपस में कीलित हो प्रगाढ़॥ श्री..॥92॥

ॐ ह्रीं कीलक संहनन कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं वज्र हाड़ कीलित संधि, अंतिम संहनन होता विसंधि॥ श्री..॥93॥

ॐ ह्रीं असंप्राप्त सृपाटिका संहनन कर्म छेदकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस कर्मोदय से मिले वर्ण, हो श्वेत धवल या अशुभ वर्ण॥ श्री..॥94॥

ॐ ह्रीं श्वेत वर्ण कर्म कृंतकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिसके कारण हो पीत देह, शुभ अशुभ पाय प्राणि सदेह॥ श्री..॥95॥

ॐ ह्रीं पीत वर्ण कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिससे तन का हो हरा रंग, शुभ अशुभ रूप हो कर्म संग॥ श्री..॥96॥

ॐ ह्रीं हरित वर्ण कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिससे मिलता काला शरीर, शुभ अशुभ उभय विधि की लकीर॥ श्री..॥97॥

ॐ ह्रीं कृष्ण वर्ण कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मोदय से तन वर्ण लाल, शुभ अशुभ रूप विधि का कमाल॥ श्री..॥98॥

ॐ ह्रीं रक्तवर्ण कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधि प्रेरित तन में हो सुगंध, जिसको पाने जड़ जीव अंध॥ श्री..॥99॥

ॐ ह्रीं सुगंध कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुर्गंधित हो जिससे शरीर, हो त्रस्त दुःखित प्राणी अधीर॥ श्री..॥100॥

ॐ ह्रीं दुर्गंध कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सखी छंद)

कर्मों की विविध कलायें, तन में रस तिक्त समाये।
सब कर्म सिद्ध विनशायें, हम उनको अर्घ चढ़ायें।।101।।

ॐ ह्रीं तिक्त रस कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कड़वा रस तन में आये, रोगी के रोग मिटाये।। सब कर्म..।।102।।

ॐ ह्रीं कटुक रस कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन हो कषायला जिससे, कई रोग मिटे उस रस से।। सब कर्म..।।103।।

ॐ ह्रीं कषाय रस कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मोदय वश तन खट्टा, तिर्यंच आदि को मिलता।। सब कर्म..।।104।।

ॐ ह्रीं आम्ल रस कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुछ मधुर देह को पाते, पुनि-पुनि जन्में मर जाते।। सब कर्म..।।105।।

ॐ ह्रीं मधुर रस कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की माया है सब, तन में मृदु स्पर्श रहे जब।। सब कर्म..।।106।।

ॐ ह्रीं मृदुत्व स्पर्श कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्कश संस्पर्श समाये, तन में कठोरता लाये।। सब कर्म..।।107।।

ॐ ह्रीं कर्कश स्पर्श कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब कर्म खेल दिखलाता, तन में गुरुत्व पन आता।। सब कर्म..।।108।।

ॐ ह्रीं गुरु स्पर्श कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणी जब लघुतन धारें, दुःख पाये बिना विचारे।। सब कर्म..।।109।।

ॐ ह्रीं लघुस्पर्श कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जल आदिक जीव अपारा, संस्पर्श शीत को धारा।। सब कर्म..।।110।।

ॐ ह्रीं शीत स्पर्श कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो उष्ण अग्नि जीवादि, पाये दुःख घोर अनादी।। सब कर्म..।।111।।

ॐ ह्रीं उष्ण स्पर्श कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन में चिकनापन पाया, मोहित हो कर्म बढ़ाया।
सब कर्म सिद्ध विनशायें, हम उनको अर्घ चढ़ायें॥112॥

ॐ ह्रीं स्निग्ध स्पर्श कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन रूखा हो दुःखदायी, गत देह सिद्ध सुखदायी॥ सब कर्म..॥113॥

ॐ ह्रीं रुक्ष स्पर्श कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नर पशु बहु पाप करें जब, पूर्वाकृति नरक गये तब॥ सब कर्म..॥114॥

ॐ ह्रीं नरक गत्यानुपूर्वी कर्म दाहकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चऊ गति से पशु गति पाये, तन पूर्वाकृति में जाये॥ सब कर्म..॥115॥

ॐ ह्रीं तिर्यंच गत्यानुपूर्वी कर्म दाहकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चहुँ गति से मनुज बने जब, पूर्वाकृति तन आये सब॥ सब कर्म..॥116॥

ॐ ह्रीं मनुष्य गत्यानुपूर्वी कर्म दाहकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नर पशु सुर गति को पायें, पूर्वाकृति में वे जायें॥ सब कर्म..॥117॥

ॐ ह्रीं देवगत्यानुपूर्वी कर्म दाहकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति गुरु लघु तन नहि धारें, श्री जिनवर कर्म निवारें॥ सब कर्म..॥118॥

ॐ ह्रीं अगुरुलघुत्व कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज अंगोपांग हों घातक, जिनवर तत्कर्म विघातक॥ सब कर्म..॥119॥

ॐ ह्रीं उपघात कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परघात कर्म के कारण, होता पर देह विदारण॥ सब कर्म..॥120॥

ॐ ह्रीं परघात कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रवि अग्नि आदि में आतप, देते सब जग को आतप॥ सब कर्म..॥121॥

ॐ ह्रीं आतप कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उद्योत शशि आदिक में, खद्योत मीन आदिक में॥ सब कर्म..॥122॥

ॐ ह्रीं उद्योत कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग जीव श्वास ले जीता, निश्वास क्रिया से जीता।
सब कर्म सिद्ध विनशायें, हम उनको अर्घ चढ़ायें॥123॥

ॐ ह्रीं उच्छ्वास निश्वास कर्म निर्नाशकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रशस्त विहायो गति से, हो गमन मनोरम गति से॥ सब कर्म..॥124॥

ॐ ह्रीं प्रशस्त विहायोगति नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अप्रशस्त विहाय गति से, नहि गमन लुभावन गति से॥ सब कर्म..॥125॥

ॐ ह्रीं अप्रशस्त विहायोगति नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दो इन्द्रिय से पंचेन्द्रिय, त्रस कहलाते सब इन्द्रिय॥ सब कर्म..॥126॥

ॐ ह्रीं त्रसकाय नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भू-जल वायु-तरू-अग्नि, स्थावर काय निमग्नि॥ सब कर्म..॥127॥

ॐ ह्रीं स्थावर नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बादर सब बाधित होते, या बाधायें दे सकते॥ सब कर्म..॥128॥

ॐ ह्रीं बादर नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहिं रोके सूक्ष्म न रुकते, निर्बाध जगत् में फिरते॥ सब कर्म..॥129॥

ॐ ह्रीं सूक्ष्म नामकर्म शोषकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर्याप्ति पूर्ण करे जो, पर्याप्तक नाम धरे वो॥ सब कर्म..॥130॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तक नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर्याप्ति अधूरी जिसके, कर्मोदय वैसा उसके॥ सब कर्म..॥131॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तक नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस तरु का एक ही स्वामी, प्रत्येक वही जगनामी॥ सब कर्म..॥132॥

ॐ ह्रीं प्रत्येक शरीर नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस तन में जीव अनंता, साधारण वह जियवंता॥ सब कर्म..॥133॥

ॐ ह्रीं साधारण शरीर नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब धातु रहे स्थिर तब, वैसा कर्मोदय हो जब।
सब कर्म सिद्ध विनशायें, हम उनको अर्घ चढ़ायें ॥134॥

ॐ ह्रीं स्थिर नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अस्थिर धातु होती सब, अस्थिर कर्मोदय हो जब॥ सब कर्म.. ॥135॥

ॐ ह्रीं अस्थिर नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ कर्मोदय से सत्वर, हो अंगोपांग मनोहर॥ सब कर्म.. ॥136॥

ॐ ह्रीं शुभ नामकर्म शोषकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन अशुभ अमंगलकारी, अघ वश अनेक बीमारी॥ सब कर्म.. ॥137॥

ॐ ह्रीं अशुभ नामकर्म निर्नाशकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जनप्रिय जीवन वो पावे, जो सुभग कर्म उपजावे॥ सब कर्म.. ॥138॥

ॐ ह्रीं सुभग नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुर्भग अघ होवे जिसका, अप्रिय जीवन हो उसका॥ सब कर्म.. ॥139॥

ॐ ह्रीं दुर्भग नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुस्वर कर्मोदय जिसके, कोयल सम स्वर हो उसके॥ सब कर्म.. ॥140॥

ॐ ह्रीं सुस्वर नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कौआ सम दुस्वर जिसके, दुस्वर कर्मोदय उसके॥ सब कर्म.. ॥141॥

ॐ ह्रीं दुस्वर नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आदेय उदय जब होता, तन दिव्य लोकप्रिय होता॥ सब कर्म.. ॥142॥

ॐ ह्रीं आदेय नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन रुक्ष दीन दुःख कारण, हो अनादेय के कारण॥ सब कर्म.. ॥143॥

ॐ ह्रीं अनादेय नामकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवगुणी–गुणी यश पावे, यशकर्म उदय जब आवे॥ सब कर्म.. ॥144॥

ॐ ह्रीं यशकीर्ति नामकर्म शोषकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब अयश उदय में आवे, सज्जन भी अपयश पावे।
सब कर्म सिद्ध विनशायें, हम उनको अर्घ चढ़ायें ।।145।।

ॐ ह्रीं अयशकीर्ति नामकर्म नाशकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्माण कर्म के कारण, तन बने शुभाशुभ कारण।। सब कर्म..।।146।।

ॐ ह्रीं निर्माण नामकर्म घातकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब पुण्य महोदय आवे, नर तीर्थंकर पद पावे।। सब कर्म..।।147।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर महापुण्य प्रकृति रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वय गोत्र कर्म के कारण, चर्या हो सुख दुःख कारण।। सब कर्म..।।148।।

ॐ ह्रीं गोत्रकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज निन्दा गुणी प्रशंसा, दे उच्च गोत्र अनुशंसा।। सब कर्म..।।149।।

ॐ ह्रीं उच्च गोत्रकर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर निन्दा आत्म प्रशंसा, दे नीच गोत्र अनुशंसा।। सब कर्म..।।150।।

ॐ ह्रीं नीच गोत्रकर्म नाशकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब मिले विघ्न बाधायें, वह अंतराय कहलाये।। सब कर्म..।।151।।

ॐ ह्रीं अंतराय कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब विघ्न दान में आये, दानान्तराय कहलाये।। सब कर्म..।।152।।

ॐ ह्रीं दानांतराय कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनवांछित लाभ न पाये, लाभान्तराय कहलाये।। सब कर्म..।।153।।

ॐ ह्रीं लाभान्तराय कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब इच्छित भोग न पाये, भोगान्तराय कहलाये।। सब कर्म..।।154।।

ॐ ह्रीं भोगान्तराय कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपभोग भोग नहीं पाये, तद्रूप कर्म कहलाये।। सब कर्म..।।155।।

ॐ ह्रीं उपभोगान्तराय कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इच्छित तप आदि न होवे, निज शक्ति प्रगट नहिं होवे।। सब कर्म..।।156।।

ॐ ह्रीं वीर्यांतराय कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(मोतियादाम छंद)

जयो-जय आठों कर्म निवार, आत्म गुण किये सभी साकार।
जयो-जय सर्व सिद्ध भगवान, आज हम करते सिद्ध विधान॥157॥

ॐ ह्रीं कर्माष्टक दहनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म कुल इक सौ अड़तालीस, नाशते उन्हें सिद्ध जिन ईश॥ जयो.॥158॥

ॐ ह्रीं शताष्टचत्वारिंशत कर्म प्रकृति विमुक्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म आठों संख्यात प्रकार, सिद्ध नाशें सब कर्म विकार॥ जयो.॥159॥

ॐ ह्रीं संख्यात कर्म नाशकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म के असंख्यात भी भेद, सिद्ध बनते कर उनका भेद॥ जयो.॥160॥

ॐ ह्रीं असंख्यात कर्म रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म के उत्तर भेद अनंत, सिद्ध जिन करते उनका अंत॥ जयो.॥161॥

ॐ ह्रीं अनंत कर्म दाहकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म के भेद अनंतानंत, जलाते उनको सिद्ध भदंत॥ जयो.॥162॥

ॐ ह्रीं अनंतानंत कर्म दाहकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध जिन काट कर्म के बन्ध, स्वयं में पाते नित्यानंद॥ जयो.॥163॥

ॐ ह्रीं नित्यानंद स्वभावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध का गुण है धर्मानन्द, भक्त को देते नित आनन्द॥ जयो.॥164॥

ॐ ह्रीं आनंद धर्माय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध जिन पाते परमानन्द, भक्ति से मिलता परमानन्द॥ जयो.॥165॥

ॐ ह्रीं परमानन्दाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेश्वर पाते साम्य स्वभाव, नाशकर रागादिक् पर भाव॥ जयो.॥166॥

ॐ ह्रीं साम्य स्वभावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ने पाया साम्य स्वरूप, त्यागकर क्रोधादी विद्रूप॥ जयो.॥167॥

ॐ ह्रीं साम्य स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध सब गुण अनंत के धाम, लुटाते गुण अनंत अविराम।
जयो–जय सर्व सिद्ध भगवान, आज हम करते सिद्ध विधान॥168॥
ॐ ह्रीं अनंत गुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध जिन हैं अनंत गुण रूप, दिखाते निज परमात्म स्वरूप॥ जयो.॥169॥
ॐ ह्रीं अनंत गुण स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध जिन पाया धर्म अनंत, क्षीण कर पाप अधर्म अनंत॥ जयो.॥170॥
ॐ ह्रीं अनंत धर्माय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाशकर कर्म अनंत कुरूप, जगाया धर्म अनंत स्वरूप॥ जयो.॥171॥
ॐ ह्रीं अनंत धर्म स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीण कर अशम अशांत विभाव, सिद्ध जिन पाते हैं सम भाव॥ जयो.॥172॥
ॐ ह्रीं सम स्वभावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध जिन सुखी शांत शम तुष्ट, भक्त भक्ति से हो संतुष्ट॥ जयो.॥173॥
ॐ ह्रीं शम तुष्टाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध में आत्मिक शम संतोष, जगत् में मिले नहीं संतोष॥ जयो.॥174॥
ॐ ह्रीं शम संतोषाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धकर सप्त परम स्थान, सिद्ध जिन पाते साम्य स्थान॥ जयो.॥175॥
ॐ ह्रीं साम्य स्थानाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विषमता नशकर जिन भगवान, साम्य गुण पाते सिद्ध महान्॥ जयो.॥176॥
ॐ ह्रीं साम्यगुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेश्वर बने साम्य कृत्त कृत्य, नाश निज निश्चय कर्म कुकृत्य॥ जयो.॥177॥
ॐ ह्रीं साम्य कृत कृत्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष बिन शरण नहीं है अन्य, सिद्ध ही बनते शरण अनन्य॥ जयो.॥178॥
ॐ ह्रीं अनन्य शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप सम गुणाधीश नहीं और, नमन हो अनन्य गुण कर जोड़॥ जयो.॥179॥
ॐ ह्रीं अनन्य गुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध सम नहीं असिद्ध में ज्ञान, ज्ञान हित नमन अनन्य प्रमाण।
जयो–जय सर्व सिद्ध भगवान, आज हम करते सिद्ध विधान॥180॥

ॐ ह्रीं अनन्य प्रमाणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध सब हैं प्रमाण से मुक्त, सुखी हैं सर्व दुःखों से मुक्त॥ जयो.॥181॥

ॐ ह्रीं प्रमाण मुक्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाशकर कर्मज् सर्व कुरूप, सिद्ध जिन बनते ब्रह्म स्वरूप॥ जयो.॥182॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मस्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगाते निजपर भेद विज्ञान, ब्रह्मगुण पाकर सिद्ध महान्॥ जयो.॥183॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मगुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचेतन कर्मों की कर हान, ब्रह्म चैतन्य बनें भगवान॥ जयो.॥184॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मचैतन्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध पारिणामिक निज भाव, मिले करके निज कर्म अभाव॥ जयो.॥185॥

ॐ ह्रीं शुद्ध पारिणामिक स्वभावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध जिन पाते शुद्ध स्वभाव, नाश कर पूर्ण अशुद्ध स्वभाव॥ जयो.॥186॥

ॐ ह्रीं शुद्ध स्वभावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुद्धि रहित आप परमेश, हमेशा रहते मोक्ष प्रदेश॥ जयो.॥187॥

ॐ ह्रीं अशुद्धि रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुद्धि शुद्धि रहित जिन आप, मिटा दो भेदभाव संताप॥ जयो.॥188॥

ॐ ह्रीं अशुद्धि शुद्धि रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध के होता दर्श अनंत, विलोके द्रव्य अनंतानंत॥ जयो.॥189॥

ॐ ह्रीं अनंतदृशे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध जिन हैं अनन्त दृग रूप, देखते द्रव्य अनन्त स्वरूप॥ जयो.॥190॥

ॐ ह्रीं अनंतदृग स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध अनंत दृगानंद भाव, विलोकें ज्ञेय अनंत स्वभाव॥ जयो.॥191॥

ॐ ह्रीं अनंतदृगानंद स्वभावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध हैं दृगानंत उत्पाद, मिटा दो जग के सर्व विषाद।
जयो–जय सर्व सिद्ध भगवान, आज हम करते सिद्ध विधान॥192॥

ॐ ह्रीं अनंत दृगुत्पादकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध में है अनंत ध्रुव भाव, द्रव्य का होता नहीं अभाव॥ जयो.॥193॥

ॐ ह्रीं अनंत ध्रुवाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध के अनंत अव्यय भाव, पाये वो जिसके कर्म अभाव॥ जयो.॥194॥

ॐ ह्रीं अनन्ताव्यय भावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निलय हो जिन अनंत गुणधाम, हमें भी दो जिनगुण अविराम॥ जयो.॥195॥

ॐ ह्रीं अनंत निलयाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मृत्युंजय तुम्हीं नाथ त्रयकाल, मोक्ष में वास अनंतों काल॥ जयो.॥196॥

ॐ ह्रीं अनंतकालाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप में भाव अनंत जिनेश, हमें भी निज गुण दो परमेश॥ जयो.॥197॥

ॐ ह्रीं अनंतभावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध हैं चिन्मय ज्योति स्वरूप, विनाशें कर्म कलंक कुरूप॥ जयो.॥198॥

ॐ ह्रीं चिन्मय स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध का है स्वरूप चिद्रूप, सिद्ध हैं तीन जगत् के भूप॥ जयो.॥199॥

ॐ ह्रीं चिद्रूप स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध हैं चिंतामणि चिद्रूप, मिटाते चिंता चिता स्वरूप॥ जयो.॥200॥

ॐ ह्रीं चिद्रुपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध स्वात्मोपलब्धि में लीन, निजानंद पाते नित्य नवीन॥ जयो.॥201॥

ॐ ह्रीं स्वात्मोपलब्धये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेश्वर स्वानुभूतिरत आप, करा दो निज अनुभूति आप॥ जयो.॥202॥

ॐ ह्रीं स्वानुभूति रतये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध जिन परमामृत रत होय, भक्त हम तुम सम अमृत होय॥ जयो.॥203॥

ॐ ह्रीं परमामृत रताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध परमामृत से संतुष्ट, बनें हम भी जिन सम संतुष्ट।
जयो–जय सर्व सिद्ध भगवान, आज हम करते सिद्ध विधान॥204॥

ॐ ह्रीं परमामृत तुष्टाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयं में परम प्रीति परमेश, सिद्ध निज में परिपुष्ट हमेश॥ जयो.॥205॥

ॐ ह्रीं परम प्रीतये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध में परम सुवल्लभ भाव, मोक्ष में सुख का नहीं अभाव॥ जयो.॥206॥

ॐ ह्रीं परम वल्लभ भावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञ प्रति तुम अव्यक्त स्वभाव, भव्य जन पूजें सिद्ध स्वभाव॥ जयो.॥207॥

ॐ ह्रीं अव्यक्त भावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध में निज एकत्व स्वरूप, रंच नहि अपना है पर रूप॥ जयो.॥208॥

ॐ ह्रीं एकत्व स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ में गुण एकत्व महान्, उसी से मिलता केवलज्ञान॥ जयो.॥209॥

ॐ ह्रीं एकत्वगुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भाव एकत्व जगाकर नाथ, बनें सब सिद्ध त्रिलोकी नाथ॥ जयो.॥210॥

ॐ ह्रीं एकत्व भावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेश्वर द्वित्व भाव को नाश, करें एकात्म स्वरूप विकास॥ जयो.॥211॥

ॐ ह्रीं द्वित्वविनाशाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध सब हैं शाश्वत सुख धाम, जगत् में आने का नहिं काम॥ जयो.॥212॥

ॐ ह्रीं शाश्वताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध हैं शाश्वत दिव्य प्रकाश, करें भक्तों का आत्म विकास॥ जयो.॥213॥

ॐ ह्रीं शाश्वत प्रकाशाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध जिन हैं शाश्वत उद्योत, जगाते निश्चय आतम ज्योत॥ जयो.॥214॥

ॐ ह्रीं शाश्वत उद्योताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेश्वर शाश्वत अमृत चन्द्र, पूजते जिनको सौ–सौ इन्द्र॥ जयो.॥215॥

ॐ ह्रीं शाश्वतामृत चन्द्राय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मूर्ति शाश्वत हैं अमृत सिद्ध, जिनागम में यह बात प्रसिद्ध।
जयो-जय सर्व सिद्ध भगवान, आज हम करते सिद्ध विधान॥216॥

ॐ ह्रीं शाश्वत अमृत मूर्तये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध हैं परम सूक्ष्म भगवान, मिटा दो आठों कर्म प्रधान॥ जयो.॥217॥

ॐ ह्रीं परम सूक्ष्माय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध में सिद्ध अनंत निवास, कहाते सर्व सूक्ष्म अवकाश॥ जयो.॥218॥

ॐ ह्रीं सूक्ष्मावकाशाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध जिन सूक्ष्म गुणों की खान, समायें सिद्ध अनंत महान्॥ जयो.॥219॥

ॐ ह्रीं सूक्ष्म गुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध हैं गुप्ति परम स्वरूप, गुप्त है जग में आत्म स्वरूप॥ जयो.॥220॥

ॐ ह्रीं परम स्वरूप गुप्तये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध में सुख असीम अनमोल, जगत् में उसका कोई न मोल॥ जयो.॥221॥

ॐ ह्रीं निरवधि सुखाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध में गुण हैं अपरम्पार, जिनेश्वर हैं गुण के भंडार॥ जयो.॥222॥

ॐ ह्रीं निरवधि गुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध का है असीम निज रूप, कहे श्रुत जिसे अनंत स्वरूप॥ जयो.॥223॥

ॐ ह्रीं निरवधि स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध में अतुल ज्ञान विज्ञान, करो जिन हमको विद्यादान॥ जयो.॥224॥

ॐ ह्रीं अतुल ज्ञानाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध में सुख अतुल्य अविराम, उसे पाने हित कोटि प्रणाम॥ जयो.॥225॥

ॐ ह्रीं अतुल सुखाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध में भाव अतुल आदर्श, नाथ सम हम भी हों आदर्श॥ जयो.॥226॥

ॐ ह्रीं अतुल भावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध सब अतुल गुणों की खान, बनो दो हमें अतुल गुणखान॥ जयो.॥227॥

ॐ ह्रीं अतुल गुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध में शाश्वत अतुल प्रकाश, करें हम उन सम आत्म विकास।
जयो-जय सर्व सिद्ध भगवान, आज हम करते सिद्ध विधान॥228॥

ॐ ह्रीं अतुल प्रकाशाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेश्वर शाश्वत अचल प्रसिद्ध, भक्ति कर बन जायें हम सिद्ध॥ जयो.॥229॥

ॐ ह्रीं अचलाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध में गुण हैं अचल अपार, भक्त को पहुँचाते भवपार॥ जयो.॥230॥

ॐ ह्रीं अचल गुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विनाशा चंचल कर्म विभाव, सिद्ध ने पाया अचल स्वभाव॥ जयो.॥231॥

ॐ ह्रीं अचल स्वभावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाशकर जग के चंचल रूप, सिद्ध ने पाया अचल स्वरूप॥ जयो.॥232॥

ॐ ह्रीं अचल स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष में निरालम्ब सब सिद्ध, भव्य को अवलम्बन हैं सिद्ध॥ जयो.॥233॥

ॐ ह्रीं निरालम्बाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बिना आलम्ब रहें भगवान, भक्त के हो आलम्ब प्रधान॥ जयो.॥234॥

ॐ ह्रीं आलम्ब रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ पर नहीं कर्म का लेप, बना दो हमको देव अलेप॥ जयो.॥235॥

ॐ ह्रीं निर्लेपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जलाकर आठों कर्म प्रधान, बनें जिन निष्कलंक भगवान॥ जयो.॥236॥

ॐ ह्रीं निष्कलंकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिटाकर पर परिणति परमेश, आत्मरत होते सिद्ध जिनेश॥ जयो.॥237॥

ॐ ह्रीं आत्मरतये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छोड़ सब वैभाविक पररूप, सिद्ध जिन पाते गुप्ति स्वरूप॥ जयो.॥238॥

ॐ ह्रीं स्वरूप गुप्तये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यान से कर वसु कर्म अभाव, बनें जिन शुद्ध द्रव्य समभाव॥ जयो.॥239॥

ॐ ह्रीं शुद्ध द्रव्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तैरकर भवसागर के पार, बने प्रभु असंसार अविचार।
जयो-जय सर्व सिद्ध भगवान, आज हम करते सिद्ध विधान॥240॥
ॐ ह्रीं असंसाराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध जिन उपजाते स्वानंद, काटकर सब कर्मों के बन्ध॥ जयो.॥241॥
ॐ ह्रीं स्वानंद रतये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध में स्वानंद भाव महान्, हमें दो शिव साम्राज्य महान्॥ जयो.॥242॥
ॐ ह्रीं स्वानंद भावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध का है स्वानंद स्वरूप, मिटाते वैभाविक पर रूप॥ जयो.॥243॥
ॐ ह्रीं स्वानंद रूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध में गुण स्वानंद अपार, करे जो पूजक का उद्धार॥ जयो.॥244॥
ॐ ह्रीं स्वानंद गुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध में है स्वानंद संतोष, दिलाये भक्तों को संतोष॥ जयो.॥245॥
ॐ ह्रीं स्वानंद संतोषाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध में शुद्ध भाव पर्याय, विनाशें वैभाविक पर्याय॥ जयो.॥246॥
ॐ ह्रीं शुद्ध भाव पर्यायाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध ने पाया धर्म स्वतंत्र, भक्त को निश्चय करें स्वतंत्र॥ जयो.॥247॥
ॐ ह्रीं स्वतंत्र धर्माय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध ने पाया आत्म स्वभाव, तजा जब वैभाविक परभाव॥ जयो.॥248॥
ॐ ह्रीं आत्म स्वभावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाशकर वैभाविक परिणाम, जगाया परम चित्त परिणाम॥ जयो.॥249॥
ॐ ह्रीं परम चित्परिणामाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध पाते चिद्रूप स्वरूप, नष्टकर कर्म जनित विद्रूप॥ जयो.॥250॥
ॐ ह्रीं चिद्रूपस्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध में गुण चिद्रूप अमोल, कर्म पर जय ही इसका मोल॥ जयो.॥251॥
ॐ ह्रीं चिद्रूपगुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम स्नातक सिद्ध जिनेश, करें भक्तों का भला विशेष।
जयो-जय सर्व सिद्ध भगवान, आज हम करते सिद्ध विधान॥252॥

ॐ ह्रीं परम स्नातकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धरें स्नात धर्म भगवान, करें शरणागत का कल्याण॥ जयो.॥253॥

ॐ ह्रीं स्नातधर्माय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध में झलके लोकालोक, करादो हमको निज अवलोक॥ जयो.॥254॥

ॐ ह्रीं सर्वविलोकनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेश्वर रहते नित लोकाग्र, भक्ति कर जायें हम लोकाग्र॥ जयो.॥255॥

ॐ ह्रीं लोकाग्र स्थिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध हैं व्यापक लोकालोक, ज्ञान से व्यापक लोकालोक॥ जयो.॥256॥

ॐ ह्रीं लोकालोक व्यापकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं (गीता छंद)

सम्पूर्ण कर्म विनाश कर, लोकाग्र में शाश्वत बसे।
श्री सिद्ध जिन शाश्वत सुखी, सब भक्त के कलिमल नशें॥
श्री सिद्धचक्र विधान में, हम सिद्ध की अर्चा करें।
ध्वज फल सहित पूर्णार्घ्यं ले, उनकी महा अर्चा करें॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं षट्पंचाशदधिक द्विशत गुण समन्वितेभ्यो श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- सिद्ध चरण में सिद्धि हित, करते हम त्रय धार।
सिद्ध लोक में वास हित, अर्पें पुष्प अपार॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः। (9, 27 या 108 बार मंत्र जाप करें।)

जयमाला

दोहा- दो सौं छप्पन गुण सहित, सिद्धों की गुणमाल।
सिद्धों की जयमाल यह, करती मालामाल॥

(शेर छन्द)

जय-जय अनंत सिद्ध सर्व सिद्धी के धनी।
जय-जय अनंत सिद्ध कर्म शक्तियाँ हनीं।।
पहली कषाय दर्श मोह तीन क्षय किया।
क्षायिक रुचि महान् तत्त्व ज्ञान पा लिया।।1।।
श्रावक से श्रमण धर्म भव्य दिव्य धारते।
त्रय रत्न तीन गुप्ति पाँच व्रत को धारते।।
शुभ योग से शुद्धोपयोग धारते मुनी।
श्रेणी क्षपक चढ़ें निजात्म ध्यान के धुनी।।2।।
छत्तीस कर्म नवमें गुणस्थान नशायें।
दशवे में सूक्ष्म लोभ कर्म पूर्ण नशायें।।
नर आयु छोड़ तीन आयु कर्म विनाशें।।
गुणथान बारवें में सोलह कर्म विनाशें।।3।।
ज्ञानावरण के पाँच कर्म भेद नशाये।
औ दर्शनावरण के नौ ही भेद मिटाये।।
संग मोहनीय कर्म अट्ठाईस ही नशे।
त्रय आयु नाम कर्म तेरह भेद भी नशे।।4।।
तेरहवें गुणस्थान तीन साठ अघ टले।
अरिहंत देव गंधकुटी राजते भले।।
तीर्थंकरों के समोशरण धनद रचाये।
जिसमें असंख्य भव्य धर्म देशना पाये।।5।।
उपांत चौदहवें में कर्म बहत्तर हने।
फिर अंत में दश तीन शेष कर्म भी हने।।
गुणथान से अतीत सिद्ध बुद्ध हो गये।
सम्पूर्ण कर्म नाश सिद्ध शुद्ध हो गये।।6।।

कार्माण कर्म द्रव्य भाव उभय रूप है।
वो चार-आठ एकसौ अडताल[1] रूप है।।
अघ संख्य व असंख्य औ अनंत रूप है।
शक्ति अनंतानंत है विनाश रूप है।।7।।
ऐसे समस्त कर्म सिद्ध ईश विनाशें।
क्रम क्रम से सिद्ध भक्त भी सब कर्म विनाशे।।
प्रभु के समान रत्नत्रय को पूर्ण वो वरें।
निज आत्म बल से कर्म शत्रु चूर्ण वो करे।।8।।
स्वामी समंतभद्र ने जब भक्ति से ध्याया।
विग्रह फटा चन्दाप्रभु का दर्श है पाया।।
श्री कुन्दकुन्द मानतुंग वादिराज ने।
जिन भक्ति से प्रसिद्ध मान्य संत वो बने।।9।।
सती श्रेष्ठ मैना सुन्दरी ने कुष्ठ मिटाया।
सीता ने शील से अनल को नीर बनाया।।
हम भी सदैव सिद्ध की आराधना करें।
गणि ''गुप्तिनंदी'' सिद्ध योग्य साधना करें।।10।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं षट्पंचाशत् अधिक द्विशत गुण समन्वितेभ्यो श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

त्रय रत्नयुत सब सिद्ध का जो नित्य आराधन करें।
श्री सिद्धचक्र विधान से वो मोक्ष सुख साधन वरें।।
तीर्थेश आदि श्रेष्ठ पद, श्री सिद्ध पूजक पायेंगे।
'गुप्ति' सकल दुःख नाश वो, गुण गण अनंतों पायेंगे।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

1. अड़तालिस।

512 गुण सहित सप्तम पूजा

स्थापना (नरेन्द्र छंद)

जय–जय श्री पाँचों परमेष्ठी, जय–जय सिद्ध जिनेश्वर।
साधु शिक्षक सूरी अर्हत्, बनें सिद्ध परमेश्वर।।
उनका नित आह्वान करें हम, पुष्पांजलि चढ़ायें।
नृत्य गीत जयघोष ध्वजा संग, मंडल श्रेष्ठ बनायें।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपते अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपते अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपते अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टक (नरेन्द्र छंद)

श्रीफल पान फूलमाला से, सज्जित स्वर्णिम कलशे।
रत्नजड़ित स्वर्णिम कलशों की, धारा प्रभु पर बरसें।।
सिद्धचक्र मंडल विधान में, सिद्धचक्र हम ध्यायें।
वसुविध उत्तम द्रव्य चढ़ा हम, वसुविध कर्म नशायें।।1।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर गंध कपूर मिला हम, करें सिद्ध पद चर्चन।
जिनपद में चन्दन लेपन से, मिटे ताप भव बन्धन।। सिद्धचक्र..।।2।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत पुञ्ज रत्न गज मुक्ता, भर–भर पुञ्ज चढ़ायें।
अक्षय पद दाता सिद्धों की, अक्षय भक्ति रचायें।। सिद्धचक्र..।।3।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कमल मोगरा जूही चम्पा, ले गुलाब की माला।
फुल्लारोहण श्रेष्ठ भक्ति से, मिले सुखों की माला।। सिद्धचक्र..।।4।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

बर्फी लड्डू सेव इमरती, व्यंजन सरस चढ़ायें।
सिद्ध शरण में रोग नशें सब, आत्म सौख्य हम पायें।।
सिद्धचक्र मंडल विधान में, सिद्धचक्र हम ध्यायें।
वसुविध उत्तम द्रव्य चढ़ा हम, वसुविध कर्म नशायें।।5।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धार्चा में जलते दीपक, अर्पण कर हर्षायें।
मोह तिमिर अज्ञान नशा हम, केवल ज्ञान जगायें।। सिद्धचक्र..।।6।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि पात्र में धूप चढ़ा हम, सिद्धालय महकायें।
यथाख्यात चारित्र लाभ ले, आठों कर्म नशायें।। सिद्धचक्र..।।7।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल केला आम संतरा, सब ऋतु के फल लाये।
सिद्धालय अभिराम सजायें, सिद्ध सफल गुण पायें।। सिद्धचक्र..।।8।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ द्रव्य ले अर्घ सजा हम, बहु विध नृत्य रचायें।
सिद्ध भक्ति कर सिद्ध मंत्र जप, सिद्ध रूप हम पायें।। सिद्धचक्र..।।9।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

512 गुण प्रत्येक अर्घ

दोहा– पाँच शतक बारह अधिक, गुण धारें सब सिद्ध।
उनका यहाँ विधान कर, बन जायें हम सिद्ध।।

अथ मंडलस्योपरि सप्तम वलये पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

अर्घ (नरेन्द्र छंद)

अर्हत् बन उद्योत किया जिन, लोकालोक प्रकाशे।
अर्हद्द्योत नाथ को भज हम, निज अज्ञान विनाशें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हद् द्योताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हज्जात बने जो जिनवर, पुनर्जन्म नहिं पावें।
अर्हत् से बन सिद्ध जिनेश्वर, जग में फिर नहिं आवें॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हज्जाताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अर्हत् चिद्रूप गुणेश्वर, यथानाम गुणधारी।
ऐसे सब सिद्धों को नितप्रति, ढोक त्रिकाल हमारी॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हत् चिद्रूप गुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् जिन चिद्गुण के स्वामी, शुद्ध चेतना पायें।
चिद्गुण में वे चिंतामणि हैं, उनको अर्घ चढ़ायें॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हत् चिद्गुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् ज्ञान महान् जगत् में, लोकालोक प्रकाशी।
उनको अर्घ चढ़ायें हम सब, बने मोक्ष के वासी॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हत् ज्ञानाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब ज्ञेयों का युगपत् दर्शन, अर्हत् जिनवर करते।
सिद्ध बनें वे निज पर दर्शक, हम उनके गुण वरते॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हत् दर्शनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबसे उत्तम वीर्यवान जिन, अर्हत् वीर्य कहाते।
उस गुण से वे सिद्ध बनें हम, उनकी भक्ति रचाते॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हत् वीर्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् दर्शन गुण अति उत्तम, उसे पूर्ण प्रगटाया।
अर्हत् सिद्ध साध्य परमेष्ठि, हमने उनको ध्याया॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हत् दर्शन गुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान अनंत गुणों में उत्तम, निज गुण स्वपर प्रकाशी।
सर्व गुणों का यह उद्योतक, हम उनके अभिलाषी॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हत् ज्ञान गुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् वीर्य सिद्ध गुण उत्तम, सिद्ध शक्ति प्रगटाये।
उन सम वीर्य अनंत जगाने, हम उनको नित ध्यायें॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हद् वीर्य गुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् समकित गुण परमोज्ज्वल, मोक्ष मार्ग आधारा।
सिद्धालय सोपान प्रथम यह, उनको नमन हमारा॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हत् सम्यक्त्व गुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म मैल नशकर निज आतम, अर्हत् स्वच्छ बनाये।
उन सम स्वच्छ सिद्ध गुण पाने, हम जिन भक्ति रचायें॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हत् स्वच्छ गुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशांग के दाता अर्हत्, श्रुत बीजाक्षर देते।
शाश्वत श्रुत कल्पद्रुम पाने, हम जिन शरणा लेते॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हत् द्वादशांगाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आभिनिबोधक शुद्ध ज्ञान से, पूर्ण ज्ञान को पाया।
प्रज्ञा दाता परम नाथ को, हमने अर्घ चढ़ाया॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हत् अभिनिबोधकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् श्रुतावधी सर्वोत्तम, अंग पूर्व से आवे।
श्रुत बीजाक्षर सिद्धी प्रदाता, उनको अर्घ चढ़ावें॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हत् श्रुतावधि गुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवधि ज्ञान सम्पूर्ण जगा जिन, केवल रवि प्रगटाया।
पूज्य ज्ञान गुण पाने हमने, प्रभु को अर्घ चढ़ाया॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हत् अवधि गुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनःपर्यय से पूर्ण ज्ञान पा, मुनि अर्हत् पद पायें।
ऐसे जिन गुण सम्पत् पाने, हम जिन भक्ति रचायें॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मनःपर्यय भावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वज्ञान निरपेक्ष नाथ का, निरालम्ब असहायी।
अर्हत् सिद्ध ज्ञान हम पूजें, वो है भव्य सहायी॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हत् केवलगुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् केवल रूप जिनेश्वर, सिद्ध सार सुख पायें।
उन सम पूर्ण ज्ञान पाने हम, उत्तम भक्ति रचायें॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हत् केवलस्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् केवल दर्शन उत्तम, निश्चय निज को देखें।
जिन की भक्ति कर्म विनाशें, जिनवाणी उल्लेखे॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हत् केवल दर्शनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् केवल ज्ञान दिवाकर, लोकालोक प्रकाशें।
उनको हम नित अर्घ चढ़ायें, निज अज्ञान विनाशें॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हत् केवलज्ञानाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् केवल वीर्य लाभ पा, शक्ति अनंती पायी।
कर्म अनंतानंत विनाशें, हम पूजें जिनरायी॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हत् केवल वीर्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हन्मंगलकर्ता जग में, त्रिभुवन पति सुखदायी।
कर्म नाशकर सिद्ध बनें जिन, हम पूजें जिनरायी॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हन्मंगल दर्शन जग में, हम नित दर्शन पायें।
जिन से निज दर्शन पाने हम, निशदिन अर्घ चढ़ायें॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगल दर्शनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हन्मंगल ज्ञान भानु हैं, तम अज्ञान नशायें।
निज अज्ञान तिमिर विनशाने, हम नित अर्घ चढ़ायें॥ 25॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगल ज्ञानाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हन्मंगल वीर्य महाना, शाश्वत सिद्धि दिलाये।
उत्तम ब्रह्मचर्य से प्रगटे, उनको अर्घ चढ़ायें॥26॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगल वीर्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हन्मंगल द्वादशांग से, प्रगटे व प्रगटायें।
उसका भव्य विधान रचा हम, उत्तम जिन गुण पायें॥27॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगल द्वादशांगाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हन्मंगल आभिनिबोधक, मतिज्ञान के दाता।
उनको अर्घ चढ़ा हर भविजन, निज अज्ञान नशाता॥28॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलाभिनिबोधकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हन्मंगल श्रुत के दाता, सारस्वत जिनदेवा।
जिनकी पूजा ध्यान जाप से, मिलता है श्रुतमेवा॥29॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगल श्रुताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हन्मंगल अवधि ज्ञान का, लब्धिसूत्र जिन देवें।
सर्व कर्म नाशे जिन भक्ति, हम जिन शरणा लेवें॥30॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलावधि ज्ञानाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हन्मंगल मनःपर्यय भी, केवलज्ञान दिलावे।
निज सब पाप नशाने भगवन्, हम नित अर्घ चढ़ावें॥31॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगल मनःपर्यय ज्ञानाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हन्मंगल केवल ईश्वर, सर्व चराचर जानें।
जिन सम ईश्वर बनने हम भी, आये अर्घ्य चढ़ाने॥32॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगल केवलेश्वराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हन्मंगल केवलज्ञानी, बनते सिद्ध जिनेश्वर।
जिनगुण सम्पत् पाने हम भी, पूजें नित परमेश्वर॥33॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगल केवलज्ञानाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हन्मंगल केवल दर्शन, प्रभु का गुण अभिरामी।
पानें श्री जिनवर के दर्शन, हम पूजें नित स्वामी॥34॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगल केवल दर्शनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हन्मंगल केवल प्रज्ञा, कर्म नाश से होवे।
प्रभु की उत्तम पूजा अर्चा, कर्म विनाशक होवे॥35॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगल केवलाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हन्मंगल केवलरूपी, बनते सिद्ध स्वरूपी।
उनका भव्य विधान करें हम, बनने सिद्ध स्वरूपी॥36॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगल केवल रूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हन्मंगल धर्म पूज्य है, त्रिभुवन पूज्य बनाता।
इनका भवि आराधक इक दिन, जगत् पूज्य बन जाता॥37॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगल धर्माय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हन्मंगल धर्म स्वरूपी, बनें सिद्ध चिद्रूपी।
अर्घ चढ़ा नित भक्ति करें हम, बनने धर्म स्वरूपी॥38॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगल धर्म स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हज्जिन मंगल उत्तम हैं, सर्व सिद्धि के दाता।
जिन पूजा से मिलें सिद्धियाँ, अद्भुत आनंद आता॥39॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलोत्तमाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हद्देव लोक में उत्तम, उत्तम सुख प्रगटायें।
जिन पूजा गुण ध्यान मनन से, हम उत्तम सुख पायें॥40॥

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् लोकोत्तम गुणधारी, सिद्धोत्तम गुण पायें।
जिन सम लोकोत्तम गुण पाने, हम नित भक्ति रचायें॥41॥

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तम गुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् लोकोत्तम वैज्ञानिक, जिन्हें लोक ने माना।
प्रभु सम उत्तम प्रज्ञा पाने, उत्तम अर्घ चढ़ाना॥42॥

ॐ ह्रीं अर्हत् लोकोत्तम ज्ञानाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकालोक विलोकें अर्हत्, लोकोत्तम दर्शन से।
लोकोत्तम नवसिद्धी मिले नित, जिनवर के दर्शन से॥43॥

ॐ ह्रीं अर्हत् लोकोत्तम दर्शनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् वीर्य सिद्ध लोकोत्तम, गुण अनंत प्रगटाये।
सिद्ध सार गुण को पूजें हम, श्रेष्ठ शक्तियाँ पायें॥44॥

ॐ ह्रीं अर्हत् लोकोत्तम वीर्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् नाथ परम लोकोत्तम, सुमति ज्ञान के दाता।
इनकी पूजा सुमति जगाये, मिले धर्म सुख साता॥45॥

ॐ ह्रीं अर्हत् लोकोत्तम अभिनिबोधकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् अवधि बोध लोकोत्तम, अर्हत् पद प्रगटाये।
अर्हत् सिद्ध बनें फिर निश्चय, हम जिन भक्ति रचायें॥46॥

ॐ ह्रीं अर्हत् लोकोत्तम अवधि बोधाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् लोकोत्तम मनःपर्यय, जिन गुण निधी दिलाये।
अर्हत् सिद्धचक्र पूजें हम, जिन गुण वैभव पायें॥47॥

ॐ ह्रीं अर्हत् लोकोत्तम मनःपर्ययाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् केवल गुण लोकोत्तम, श्रेष्ठ सिद्ध पद दानी।
हम त्रैकालिक भक्ति रचायें, बनने केवलज्ञानी॥48॥

ॐ ह्रीं अर्हत् लोकोत्तम केवलज्ञानाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकोत्तम जिन केवलरूपी, बनते सिद्ध स्वरूपी।
ध्वज फल ले हम अर्घ चढ़ायें, बनने सिद्ध स्वरूपी॥49॥

ॐ ह्रीं अर्हत् लोकोत्तम केवल स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन केवल पर्याय जगोत्तम, उत्तम द्रव्य बनायें।
उनको उत्तम द्रव्य चढ़ा हम, सिद्ध द्रव्य बन जायें॥50॥
ॐ ह्रीं अर्हत् लोकोत्तम केवल पर्यायाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् केवल द्रव्य पूज्यतम, सिद्ध सिद्धियाँ दाता।
जिन पूजा से सिद्ध बनें हम, मिले श्रेष्ठ सुख साता॥51॥
ॐ ह्रीं अर्हत् केवल द्रव्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् केवल द्रव्य जगोत्तम, द्रव्य शुद्धि सिखलाये।
जिनभक्ति से आत्म हमारा, शुद्ध द्रव्य बन जाये॥52॥
ॐ ह्रीं अर्हत् लोकोत्तम केवल द्रव्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकोत्तम अर्हंत देव हैं, केवल द्रव्य स्वरूपी।
सिद्ध बनें वे नित्य यजें हम, बनने सिद्ध स्वरूपी॥53॥
ॐ ह्रीं अर्हत् लोकोत्तम केवल द्रव्यरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् लोकोत्तम ध्रुवरूपी, शाश्वत सिद्धि दिलायें।
उन्हें पूज ध्रुव ध्यान धरें हम, ध्रौव्य सिद्ध पद पायें॥54॥
ॐ ह्रीं अर्हत् लोकोत्तम ध्रौव्य भावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् भाव दिव्य लोकोत्तम, मुक्ति रमा के ईश्वर।
जिन की भाव पूर्ण पूजा से, भव्य बनें परमेश्वर॥55॥
ॐ ह्रीं अर्हत् लोकोत्तम भावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकोत्तम स्थिर भावों के, स्वामी अर्हत् सिद्धम्।
ऐसे भाव उन्हें मिलते जो, ध्यान करें सर्वोत्तम॥56॥
ॐ ह्रीं अर्हत् लोकोत्तम स्थिर भावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् सिद्ध शरण सर्वोत्तम, हम शरणागत आये।
उनका करें विधान अनुपम, जो भव से तिरवायें॥57॥
ॐ ह्रीं अर्हत् शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् शरण रूप है जग में, सिद्ध रमा के स्वामी।
उनकी अर्चा रचा रचा हम, बनें सिद्ध जगनामी।।58।।

ॐ ह्रीं अर्हत् शरण रूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् गुण सर्वोच्च शरण है, शरण न जग में कोई।
अर्हत् सिद्ध बनेंगे निश्चय, मिले शरण नित सोई।।59।।

ॐ ह्रीं अर्हत् गुण शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् ज्ञान शरण इक जग में, सिद्धि रमा दिलवायें।
उनकी शरणा पाने हम नित, सिद्ध विधान रचायें।।60।।

ॐ ह्रीं अर्हत् ज्ञान शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् दर्शन शरण वरें हम, वसुविध अर्घ्य चढ़ायें।
सब सिद्धों के दर्शन पाने, सिद्ध रूप हो जायें।।61।।

ॐ ह्रीं अर्हत् दर्शन शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् वीर्य शरण त्रैकालिक, सिद्ध रूप दिलवाये।
गुण अनंत पायें इससे ही, हम नित अर्घ चढ़ायें।।62।।

ॐ ह्रीं अर्हत् वीर्य शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् द्वादशांग के दाता, शरण भूत अभिरामी।
द्वादशांग श्रुत वारिधि पाने, हम पूजें नित स्वामी।।63।।

ॐ ह्रीं अर्हत् द्वादशांग शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमतिज्ञान के दाता जग में, शरण भूत अरिहंता।
कर्म नाश श्री सिद्ध बने वे, हम पूजें भगवंता।।64।।

ॐ ह्रीं अर्हत् अभिनिबोध शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्यभाव श्रुत शरण पूर्ण पा, बनें शरण अर्हंता।
सिद्ध बनें निशदिन हम पूजें, त्रैकालिक भगवंता।।65।।

ॐ ह्रीं अर्हत् श्रुत शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवधिज्ञान के स्रोत जगत् में, अर्हत् सिद्ध महंता।
सम्यक् अवधिज्ञान पाने हम, पूजें नाथ अनंता॥66॥

ॐ ह्रीं अर्हत् अवधि बोध शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनःपर्यय प्रगटाने वाले, अर्हत् सिद्ध जिनेश्वर।
शरण स्वरूप उन्हें हम पूजें, बनें नाथ सम ईश्वर॥67॥

ॐ ह्रीं अर्हत् मनःपर्यय शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् केवलज्ञान शरण हैं, सर्व चराचर जानें।
सिद्ध बनें उनकी शरणा में, आये हम गुण गाने॥68॥

ॐ ह्रीं अर्हत् केवलज्ञान शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् केवल शरण स्वरूपी, शरण न जग में दूजा।
सिद्ध बनें नव सिद्धी पाने, हमने उनको पूजा॥69॥

ॐ ह्रीं अर्हत् केवल शरण स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् केवल धर्म शरण हैं, भव से पार उतारें।
सिद्ध बनें सिद्धि के दाता, हमको अवश उबारें॥70॥

ॐ ह्रीं अर्हत् केवल धर्म शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् केवल मंगल शरणा, गुण अनंत भंडारी।
सिद्ध बनें गुण संपत् पाने, ढोक त्रिकाल हमारी॥71॥

ॐ ह्रीं अर्हत् केवल मंगल गुण शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शरणभूत अर्हन्मंगल गुण, सिद्ध बनें जिन स्वामी।
शरणागत का करते मंगल, हम पूजें नित स्वामी॥72॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगल गुण शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हन्मंगल ज्ञान शरण हैं, सिद्ध शरण दिलवाये।
तारण तरण जिनेश्वर जग में, यम से मुक्ति दिलाये॥73॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगल ज्ञान शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हन्मंगल दृष्टि शरण हैं, दर्शन भव अघ नाशे।
जिन दर्शन पूजन विधान कर, हम सब पाप विनाशें॥74॥
ॐ ह्रीं अर्हन्मंगल दृष्टि शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हन्मंगल बोध शरण ही, सम्यज्ञान प्रदानी।
अर्हत् सिद्ध महा पूजा से, हम हो केवलज्ञानी॥75॥
ॐ ह्रीं अर्हन्मंगल बोध शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हन्मंगल केवल शरणा, मोक्ष महल ले जाये।
सिद्धचक्र पूजा विधान यह, आत्म सिद्धी दिलवाये॥76॥
ॐ ह्रीं अर्हन्मंगल केवल शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकोत्तम शरणा इस जग में, श्री अर्हत हमारे।
अर्हत् सिद्ध शरण पाने हम, आये शरण तुम्हारे॥77॥
ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तम शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हन् लोकोत्तम गुण शरणा, गुणागार गुण दानी।
सिद्धचक्र उत्तम पूजें हम, पायें शिव रजधानी॥78॥
ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तम गुण शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् वीर्य शरण लोकोत्तम, सिद्ध लोक पहुँचाये।
जिन पूजा से आत्म वीर्य पा, हम निज कर्म नशायें॥79॥
ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तम वीर्य शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् वीर्य शरण गुण उत्तम, सिद्ध स्वगुण प्रगटाये।
अर्हत् सिद्धचक्र पूजें हम, स्वात्म सिद्धियाँ पायें॥80॥
ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तम वीर्य गुण शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् द्वादशांग लोकोत्तम, शरण श्रेष्ठ सर्वोत्तम।
द्वादशांग पाने हम पूजें, अर्हत् सिद्ध जिनोत्तम॥81॥
ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तम द्वादशांग शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुमति कुनय से रहित श्रेष्ठतम, सुमति ज्ञान को पाया।
इससे अर्हत् सिद्ध बनें जिन, हमने उनको ध्याया॥82॥

ॐ ह्रीं अर्हत् लोकोत्तम अभिनिबोध शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन लोकोत्तम अवधि शरण ही, अवधि ज्ञान प्रगटाये।
इससे अर्हत् सिद्ध बनें जिन, हम जिन शरणा पायें॥83॥

ॐ ह्रीं अर्हत् लोकोत्तम अवधि शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकोत्तम जिनदेव शरण ही, मनःपर्यय दिलवाये।
इससे अर्हत् सिद्ध बनें जिन, हम नित अर्घ चढ़ायें॥84॥

ॐ ह्रीं अर्हत् लोकोत्तम मनःपर्यय शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निरावरण केवल जिन शरणा, लोकोत्तम विज्ञानी।
अर्हत् सिद्धों की पूजा से, हम हो केवलज्ञानी॥85॥

ॐ ह्रीं अर्हत् लोकोत्तम केवलज्ञान शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकोत्तम जिन धर्म विभूति, शरण श्रेष्ठ अतिशायी।
आतम वैभव देने वाली, हमने भक्ति रचायी॥86॥

ॐ ह्रीं अर्हत् लोकोत्तम विभूति प्रधान शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समोशरण से ऊपर जिनवर, रत्नत्रय वर देवें।
आत्म सुवैभव पाने हम नित, श्री जिन शरणा लेवें॥87॥

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तम विभूतिधर्म शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य अनंत चतुष्टय पायें, घाति कर्म विनशायें।
जिन लोकोत्तम शरण भूत हैं, हम नित उनको ध्यायें॥88॥

ॐ ह्रीं अर्हत् लोकोत्तम अनंत चतुष्टय शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्श ज्ञान सुख वीर्य अनंता, पायें श्री भगवंता।
उनका श्रेष्ठ विधान करें हम, बनने सिद्ध महंता॥89॥

ॐ ह्रीं अर्हत् अनंत गुण चतुष्ट्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिनवर निज आत्मज्ञान से, सिद्ध स्वयंभू बनते।
जो जिन का नित ध्यान लगायें, वो भी जिनवर बनते॥90॥

ॐ ह्रीं अर्हत् निजज्ञान स्वयंभुवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री तीर्थंकर जन्म समय से, दश अतिशय के धारी।
आप तिरें औरों को तारें, स्वयं वरें शिवनारी॥91॥

ॐ ह्रीं अर्हत् दश जन्मातिशयाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घाति चतुष्टय के क्षय से ही, दश अतिशय जिन पायें।
धर्म बीज जग में फैलायें, हम नित अर्घ चढ़ायें॥92॥

ॐ ह्रीं अर्हत् घातिक्षय दशातिशयाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरगण चौदह अतिशय करते, अपने पाप नशाते।
इसे छोड़कर सिद्ध बने वें, हम नित भक्ति रचाते॥93॥

ॐ ह्रीं अर्हत् देवकृत चतुर्दशातिशयाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौंतिस अतिशय धर तीर्थंकर, कहती है जिनवाणी।
श्री जिन सिद्धों की पूजा से, हम हो केवलज्ञानी॥94॥

ॐ ह्रीं अर्हत् चतुस्त्रिंशत् अतिशय विराजमानाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानानंद गुणों के धारी, अर्हत् सिद्ध जिनेश्वर।
जिनगुण सम्पत् पाने हम भी, पूजें नित परमेश्वर॥95॥

ॐ ह्रीं अर्हज्ज्ञानानंत गुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौरासी लख उत्तर गुण को, तप से पाते जिनवर।
तप से सिद्ध सभी जिनवर को, पूजें भव्य निरंतर॥96॥

ॐ ह्रीं अर्हत् तपोऽनंत गुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्येय अनंतानंत ध्यान में, झलके अर्हंतों के।
दिव्यशक्ति पाने हम करते, दर्शन भगवंतों के॥97॥

ॐ ह्रीं अर्हत् ध्यानानंतध्येयाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अनंतधारी अविकारी, परमहंस परमेश्वर।
जिन सम गुण पानें हम पूजें, अर्हत् सिद्ध जिनेश्वर॥98॥

ॐ ह्रीं अर्हत् अनंत गुणात्मने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक वा शत इन्द्रों से, पूजित श्री परमेश्वर।
अर्हत् सिद्ध महापूजा से, बन जायें हम ईश्वर॥99॥

ॐ ह्रीं अर्हत् परमात्मने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन गुप्ति से निज स्वरूप को, पाते अर्हत् जिनवर।
सिद्ध बनें वसु कर्म नाश के, हम पूजें नित जिनवर॥100॥

ॐ ह्रीं अर्हत् स्वरूप गुप्तये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

सर्व सिद्धी दातार हैं, सिद्ध अनंतानंत।
सिद्धचक्र को पूज हम, होवें सिद्ध भदंत॥101॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म कुरूप विनाशकर, पाया सिद्ध स्वरूप।
सिद्धचक्र को पूज हम, पायें सिद्ध स्वरूप॥102॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध स्वरूपेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धों के गुण गण अगण, निजानन्द दातार।
सिद्धार्चा से सिद्ध गुण, पायें हम अविकार॥103॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध गुणेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानावरण विनाश सब, पाया ज्ञान अनंत।
सिद्ध ज्ञान को पूज हम, पायें ज्ञान अनंत॥104॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध ज्ञानेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म दर्शनावरण को, क्षय कर सिद्ध जिनेश।
दर्शन सिद्ध प्रसिद्ध हो, हम पूजें परमेश॥105॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध दर्शनेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन मोह विनाश जिन, पाते शुचि सम्यक्त्व।
उन पर श्रद्धा धार हम, पायें शुचि सम्यक्त्व॥106॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध सम्यक्त्वेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धवीर्य पायें प्रभो, अंतराय अघ नाश।
सिद्ध भक्ति से हम वरें, अष्टम वसुधा वास॥107॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध वीर्येभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध अचल पद पा लिया, कर्मज् पद सब त्याग।
सिद्ध अचल पद हम वरें, कर उनसे अनुराग॥108॥

ॐ ह्रीं श्री अचल पद प्राप्त सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संख्यातीत प्रसिद्ध हैं, सर्व सिद्ध भगवान।
उनका सिद्ध विधान कर, हम हो सिद्ध समान॥109॥

ॐ ह्रीं श्री संख्यातीत सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धों की गुण राशि भी, असंख्यात के पार।
सिद्धार्चा से अवश हो, पूजक का उद्धार॥110॥

ॐ ह्रीं श्री असंख्यात सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म अनंतानंत को, नाशें सिद्ध अनंत।
उनको पूजें नित्य हम, बनने सिद्ध महंत॥111॥

ॐ ह्रीं श्री अनंत सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ढाई द्वीप जलथान से, बनें अनेकों सिद्ध।
जल आदिक वसु द्रव्य से, पूजें हम जल सिद्ध॥112॥

ॐ ह्रीं श्री जल सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कण-कण ढाई द्वीप का, सिद्ध स्थल अभिराम।
सिद्धार्चा से सिद्ध पद, पायें हम अविराम॥113॥

ॐ ह्रीं श्री स्थल सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर खेचर उपसर्ग जय, गगन सिद्ध भगवान।
मगन स्वयं में हो बने, हम पूजें धर ध्यान॥114॥

ॐ ह्रीं श्री गगन सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम गोत्र वा वेदनी, आयू सम कर नाथ।
समुद्घात कर केवली, सिद्ध बनें जग नाथ॥115॥

ॐ ह्रीं श्री समुद्घात सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुद्घात बिन अन्य जिन, कर अघातिया नाश।
सिद्ध बनें हम नित भजें, करने कर्म विनाश॥116॥

ॐ ह्रीं श्री असमुद्घात सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक प्रसिद्धि बिन बनें, बहु साधारण सिद्ध।
उनको हम प्रतिपल भजें, करें कर्म को विद्ध॥117॥

ॐ ह्रीं श्री साधारण सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भरत राम आदिक कई, बनकर सिद्ध प्रसिद्ध।
उनकी सिद्धार्चा रचा, बन जायें हम सिद्ध॥118॥

ॐ ह्रीं श्री असाधारण सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भायी सोलह भावना, बनें तीर्थंकर सिद्ध।
सिद्ध भक्ति उनकी रचा, बन जायें हम सिद्ध॥119॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर पद के बिना, हुये अनन्तों सिद्ध।
अचल भक्ति उनकी रचा, पद पायें हम सिद्ध॥120॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरेतर सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सवा पाँच सौ धनुष की, सबसे ऊँची देह।
बाहुबली भगवान सम, बनते सिद्ध विदेह॥121॥

ॐ ह्रीं श्री उत्कृष्ट अवगाहन सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बड़ी नहीं छोटी नहीं, पायी मध्यम देह।
सिद्ध बने हम नित भजें, बनने सिद्ध विदेह॥122॥

ॐ ह्रीं श्री मध्यम अवगाहन सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जघन्य साढ़े तीन कर, अल्प उम्र में सिद्ध।
उनको हम नित पूजते, बनने लघुतम् सिद्ध॥123॥

ॐ ह्रीं श्री जघन्य अवगाहन सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिर्यक् लोक विशेष में, करके कर्म विनाश।
सिद्ध बने जिन भक्ति से, हमें मिले शिववास॥124॥

ॐ ह्रीं श्री तिर्यक् लोक सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्में चौथे काल पर, सुर लाये षट्काल।
सिद्ध बनें जगवंद्य वें, हम पूजें त्रयकाल॥125॥

ॐ ह्रीं श्री षड्विध काल सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर चउविध उपसर्ग जय, बनें सिद्ध भगवान।
पाण्डव आदिक् जिन बनें, हम पूजें धर ध्यान॥126॥

ॐ ह्रीं श्री उपसर्ग सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बिना कष्ट उपसर्ग के, बनें सिद्ध भगवान।
उनका महा विधान कर, हम हों सिद्ध समान॥127॥

ॐ ह्रीं श्री निरुपसर्ग सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कण-कण ढाई द्वीप का, पावन सिद्ध स्थान।
सिद्ध बनें इन द्वीप से, उनका करें विधान॥128॥

ॐ ह्रीं श्री द्वीप सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ले गये देव समुद्र में, वहीं बनें जिन सिद्ध।
उनकी उत्तम भक्ति से, हम हों सुख समृद्ध॥129॥

ॐ ह्रीं श्री उदधि सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

खड़गासन में अघ नशे, पाया शिवपुर वास।
उन सिद्धों को पूज हम, पायें मोक्ष निवास॥130॥

ॐ ह्रीं श्री स्थित्यासन सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर्यंकासन से बनें, सिद्ध अनेक महान्।
उनकी हम अर्चा करें, होवें मोक्ष प्रयाण॥131॥

ॐ ह्रीं श्री पर्यंकासन सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य भाव से पुरुष बन, आठों कर्म विनाश।
सिद्ध बनें हम पूजते, करने आत्म विकास॥132॥

ॐ ह्रीं श्री पुंवेद सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्त्री वेदी भाव से, किया कर्म का घात।
सिद्ध बनें हम नित भजें, करने कर्म विघात॥133॥

ॐ ह्रीं श्री स्त्रीवेद सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भाव नपुंसक वेद से, कर डाले अघ छेद।
सिद्ध बने हम ध्या उन्हें, करें कर्म विच्छेद॥134॥

ॐ ह्रीं श्री क्लींव वेद सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षपक श्रेणी चढ़कर श्रमण, करते कर्म विनाश।
सिद्ध बनें हम नित जजें, पाने मोक्ष निवास॥135॥

ॐ ह्रीं श्री क्षपक श्रेणी सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक समय में सिद्ध बन, पा लोकाग्र निवास।
उनकी पूजा से हमें, मिले शीघ्र शिववास॥136॥

ॐ ह्रीं श्री एक समय सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रैकालिक सब सिद्ध का, उत्तम रचा विधान।
कर हम जिन सम साधना, मेटें कर्म विधान॥137॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिकाल सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक त्रय काल के, सिद्ध अनंतानंत।
सिद्धेज्या हम नित करें, होवें सिद्ध भदंत॥138॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोक सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगल हैं सब सिद्ध जिन, करते मंगल कार्य।
मंगल कार्यों में प्रथम, सिद्ध भजें अनिवार्य॥139॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध मंगलेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध सुमंगल रूप हैं, देते सिद्ध स्वरूप।
सिद्ध रूप नित पूज हम, पायें रूप अनूप॥140॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध मंगल स्वरूपेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध ज्ञान मंगल सुखद, हरते तम अज्ञान।
ज्ञान भानू को हम भजें, पाने सम्यग्ज्ञान॥141॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध मंगल ज्ञानेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगल दर्शन सिद्ध के, सुखदाता दुःखहार।
दर्शन पाने हम करें, सिद्धार्चा हितकार॥142॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध मंगल दर्शनेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धों की शक्ति प्रबल, हितकारी अविकार।
सिद्ध वीर्य पाने भजें, करते हम जयकार॥143॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध मंगल वीर्येभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समकित मंगल सिद्ध का, देता सम्यक् दर्श।
श्रद्धा युत उनको भजें, जो सबके आदर्श॥144॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध मंगल सम्यक्त्वेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध परम सूक्ष्मत्व गुण, भव्यों को सुखकार।
मंगल गुण को पूज हम, होवें भव से पार॥145॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध मंगल सूक्ष्मत्वेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगल अवगाहन गुणी, सर्व सिद्ध भगवान।
उनकी पूजा से नशें, आठों कर्म विधान॥146॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध मंगल अवगाहनेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गोत्र कर्म क्षय कर वरा, अगुरुलघु गुण श्रेष्ठ।
मंगल गुण सब सिद्ध के, हम पूजें नित ज्येष्ठ॥147॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध मंगल अगुरुलघुभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वेदनीय को नाशकर, गुण पा अव्याबाध।
सिद्ध बनें मंगल करें, हम पूजें निर्बाध॥148॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध मंगल अव्याबाधेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु मंगल गुण सिद्ध के, त्रिभुवन मंगलकार।
विघ्न हरें दुःख क्षय करें, सर्व सौख्य दातार॥149॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध मंगल अष्ट गुणेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ कर्म क्षय कर वरा, मंगल सिद्ध स्वरूप।
भविजन भव्य विधान कर, पाते मंगल रूप॥150॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध मंगल अष्ट स्वरूपेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगल अष्ट प्रकाशकर, सर्व सिद्ध भगवन्त।
निश्चल प्रतिपल पूज हम, होवें सिद्ध महंत॥151॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध मंगल अष्ट प्रकाशकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म सुमंगल सिद्ध का, करे पाप की हान।
भवदधि तिरने हम करें, मंगल सिद्ध विधान॥152॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध मंगल धर्मेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकोत्तम सब सिद्ध हैं, करें सिद्ध सब कार्य।
सिद्धि हेत तीर्थेश भी, नमें प्रथम अनिवार्य॥153॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध लोकोत्तमेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक में एक ही, उत्तम सिद्ध स्वरूप।
आराधक उनके बनें, निश्चय त्रिभुवन भूप॥154॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध लोकोत्तम स्वरूपेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकोत्तम गुण सिद्ध के, देते उत्तम थान।
वे गुण पाने हम करें, उत्तम सिद्ध विधान॥155॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध लोकोत्तम गुणेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध ज्ञान लोकोत्तमं, हरता तम अज्ञान।
उसे पूज दिन रात हम, पायें केवलज्ञान॥156॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध लोकोत्तम ज्ञानेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुर्लभ दर्शन सिद्ध के, लोकोत्तम जगमान्य।
सम्यग्दर्शन भक्ति से, मिले सिद्ध सम्मान्य॥157॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध लोकोत्तम दर्शनेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब सिद्धों का वीर्य गुण, लोकोत्तम अविकार।
उन्हें पूज हम सिद्ध हों, निराकार अविकार॥158॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध लोकोत्तम वीर्येभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकोत्तम शरणा सुखद, सर्व सिद्ध भगवान।
सिद्ध शरण का लाभ ले, भक्त बने भगवान॥159॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध लोकोत्तम शरणेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शरण स्वरूपी सिद्ध सब, त्रिभुवन में त्रयकाल।
सब अशरण को छोड़ हम, जपें सिद्ध की माल॥160॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध स्वरूप शरणेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धों का दर्शन शरण, तारण तरण जहाज।
उनकी हम अर्चा रचा, पायें मोक्ष स्वराज॥161॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध दर्शन शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब सिद्धों का ज्ञान गुण, शरण भूत सर्वोच्च।
उन्हें पूज हम भी वरें, ज्ञान निधि सर्वोच्च॥162॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध ज्ञान शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब सिद्धों का वीर्य गुण, शरणभूत जगवंद्य।
उत्तम वीर्य हमें मिलें, पूज सिद्ध जगवंद्य॥163॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध वीर्य शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यग्दर्शन सिद्ध का, शरणभूत हितकार।
पाने सम्यग्दर्श हम, अर्चा करें अपार॥164॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध सम्यक्त्व शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध अनंत शरण वरण, तिर जायें भव पार।
सिद्धार्चा हम नित करें, कर दो जिन उद्धार॥165॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध अनंत शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शरण अनंतानंत सब, सिद्ध जगत् सुखकार।
सिद्ध शरण पाने करें, सिद्धार्चा त्रय बार॥166॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध अनंतानन्त शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध शरण त्रयकाल में, करती मालामाल।
सिद्ध शरण हित हम करें, प्रभु की भक्ति विशाल॥167॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध त्रिकाल शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रय लोकों में शरण इक, सर्व सिद्ध भगवान।
शरणागत हम आपके, मेटो कर्म विधान॥168॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध त्रिलोक शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक भले संख्यात हो, शरण सिद्ध हैं एक।
सिद्ध गुणों के लाभ हित, नमते हम सिर टेक॥169॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध संख्यात लोक शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध ध्रौव्य गुण शरण हैं, करें ध्रौव्य सुख दान।
सिद्ध ध्रौव्य गुण लाभ हित, करते सिद्ध विधान॥170॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध ध्रौव्य गुण शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध शुद्ध उत्पाद गुण, करें शुद्ध उत्पाद।
करके सिद्ध विधान हम, नाशें कर्म विषाद॥171॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध उत्पाद गुण शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध साम्य गुण शरण हैं, नाशें कर्म कलंक।
सिद्धार्चा से तुरत ही, छूटे भव का पंक॥172॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध साम्य गुण शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म मैल धोकर बनें, स्वच्छ सिद्ध भगवान।
स्वच्छ बनें हम आप सम, इस हित करें विधान॥173॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध स्वच्छ गुण शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध स्वात्म स्वस्थित हुये, कर्मज् पद सब छोड़।
सिद्ध गुणों में लीन हम, भक्ति करें बेजोड़॥174॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध स्वस्थित गुण शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध समाधि गुण शरण, पंडित-पंडित मर्ण।
हमें मिले जिन भक्ति से, उत्तम सिद्धम् शर्ण॥175॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध समाधि गुण शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध व्यक्त गुण शरण हैं, केवल ज्ञान प्रत्यक्ष।
उनको पूजें नित्य हम, करने आत्म प्रत्यक्ष॥176॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध व्यक्त गुण शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्ण ज्ञान में व्यक्त गुण, अज्ञों को अव्यक्त।
सिद्ध सुगुण पा जायें हम, होकर पूर्ण विरक्त॥177॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध व्यक्ताव्यक्त गुण शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण स्वरूप हैं सिद्ध जिन, निर्गुण अगुण अतीत।
सिद्धचक्र हम नित भजें, कर सिद्धों से प्रीत॥178॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध गुण स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण स्वरूप परमात्मा, निश्चय से सब सिद्ध।
सिद्धार्चा से जगत् में, सर्व कार्य हों सिद्ध॥179॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध परमात्म स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म खंड करके बनें, सिद्ध अखंड स्वरूप।
उनका ध्यान अखंड कर, हम हों सिद्ध स्वरूप॥180॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध अखंड स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध चेतना से बनें, सिद्ध चिदानंद रूप।
भव्य सिद्ध भक्ति रचा, बने चिदानंद रूप॥181॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध चिदानंद स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सहजानंद स्वरूप हैं, सर्व सिद्ध भगवान।
सहजानंद हमें मिले, करके सिद्ध विधान॥182॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध सहजानन्दाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब कर्मों को छेदकर, सिद्ध बनें अच्छेद्य।
कर्म जयी जिन भक्ति से, हम हों जिन अच्छेद्य॥183॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध अच्छेद्य रूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भेदक अघ सब भेदकर, जिनवर बनें अभेद्य।
गुण अभेद्य पाने करें, हम जिन भक्ति अभेद्य॥184॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध अभेद्य गुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अनंत अनुपम धरें, सिद्ध अनुपम नाथ।
प्रभु की अनुपम भक्ति से, भक्त बने जग नाथ॥185॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध अनौपम्य गुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध जिनामृत तत्त्व हैं, परमामृत दातार।
प्रभु सम अमृत गुण वरें, कर जिन भक्ति अपार॥186॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध अमृत तत्त्वाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दाद्वशांग श्रुतज्ञान पा, सिद्ध बनें जिनराज।
द्रव्य भाव श्रुत लाभ हित, हम पूजें जिनराज॥187॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध श्रुत प्राप्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानावरण विनाश जिन, पाया केवलज्ञान।
सिद्धों के गुण लाभ हित, हम पूजें धर ध्यान॥188॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध केवलज्ञान प्राप्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निराकर सब सिद्ध हैं, गुण अनंत साकार।
निराकार साकार को, हम पूजें बहुबार॥189॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध साकार निराकाराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निरालम्ब सब सिद्ध हैं, परालम्ब को छोड़।
उनको ध्या हम सिद्ध हों, छोड़ें जग की दौड़॥190॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध निरालम्बाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निष्कलंक सब सिद्ध जिन, नाशें कर्म कलंक।
सिद्धार्चा हम नित रचा, धोयें कर्मज पंक॥191॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध निष्कलंकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध आत्म सम्पन्न हैं, पायें गुण सम्पूर्ण।
भक्तों को संपन्न कर, करें कर्म को चूर्ण॥192॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध आत्म संपन्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तेज सिद्ध भगवान का, हरता तम अज्ञान।
आत्म तेज हित हम करें, उत्तम सिद्ध विधान।॥193॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध तेजसाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गर्भवास तज जगत् का, पा लोकाग्र निवास।
सिद्ध बनें हम नित जजें, छूटे गर्भ निवास॥194॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध गर्भवासाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ति ज्ञान लक्ष्मी वरें, चंचल लक्ष्मी त्याग।
शिवलक्ष्मी हम भी वरें, कर प्रभु से अनुराग॥195॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध लक्ष्मी संतर्पकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतरंग में सिद्ध के, गुण अनंत का तेज।
हम नित सिद्धार्चा करें, पाने शिवपुर सेज॥196॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध अंतरंगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रसिक स्वात्म गुण सार के, सर्व सिद्ध परमेश।
सिद्ध सार गुण पूज हम, पायें सिद्ध प्रदेश॥197॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध सार रसिकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध शिखर मंडन किया, वसु कर्मों को नाश।
हमें मिले जिन भक्ति से, लोक शिखर में वास॥198॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध शिखर मंडनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिलोकाग्र संस्थित रहें, सर्व सिद्ध भगवंत।
सिद्धार्चा से हम वरें, लोकशिखर का अंत॥199॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध त्रिलोकाग्रस्थिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रय गुप्ति से पा लिया, उत्तम सिद्ध स्वरूप।
भव्य महा पूजा रचा, पायें सिद्ध स्वरूप॥200॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध स्वरूप गुप्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

जय-जय सिद्ध सूरि भगवंता, सिद्ध बनें वसु कर्मन् हन्ता।
सूरि सिद्ध की भक्ति रचायें, हम सिद्धों का वैभव पायें॥201॥

ॐ ह्रीं सूरिभ्यो श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जय-जय सूरि गुणों के धारी, अर्हत् सिद्ध बनें अविकारी।
सूरि सिद्ध की भक्ति रचायें, हम सिद्धों का वैभव पायें॥202॥

ॐ ह्रीं सूरिगुणेभ्यो श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि तीन गुप्ति के धारी, सिद्ध स्वरूप वरें सुखकारी॥ सूरि.॥203॥

ॐ ह्रीं सूरिस्वरूप गुप्तिभ्यो श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यग्दर्शन धरें मुनीशा, निश्चय बनें सिद्ध परमेशा॥ सूरि.॥204॥

ॐ ह्रीं सूरि सम्यक्त्व गुणेभ्यो श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यज्ञान पाँच विध धारें, चार संघ को सूरि सम्हारें॥ सूरि.॥205॥

ॐ ह्रीं सूरि ज्ञान गुणेभ्यो श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चउविध दर्शन गुण के धारी, अवलोकन करते अविकारी॥ सूरि.॥206॥

ॐ ह्रीं सूरि दर्शन गुणेभ्यो श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप से उत्तम वीर्य बढ़ाते, अंतराय अघ को विनशाते॥ सूरि.॥207॥

ॐ ह्रीं सूरि वीर्य गुणेभ्यो श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छत्तीस गुण को धरते सूरी, सब की आशा करते पूरी॥ सूरि.॥208॥

ॐ ह्रीं सूरि षट् त्रिंशत गुणेभ्यो श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचाचार धरें करवाते, सूरि शिष्य का जोश बढ़ाते॥ सूरि.॥209॥

ॐ ह्रीं सूरि पंचाचार गुणेभ्यो श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्म द्रव्य गुण उत्तम वरते, सूरि शिष्य की शंका हरते॥ सूरि.॥210॥

ॐ ह्रीं सूरि द्रव्य गुणेभ्यो श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान-ध्यान लवलीन रहें जो, सूरि शुद्ध पर्याय वरें वो॥ सूरि.॥211॥

ॐ ह्रीं सूरि पर्याय गुणेभ्यो श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगल रूप अमंगल हरते, सूरि विश्व का मंगल करते॥ सूरि.॥212॥

ॐ ह्रीं सूरि मंगलेभ्यो श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि मंगल ज्ञान प्रदाता, मातपिता वे सच्चे त्राता॥ सूरि.॥213॥

ॐ ह्रीं सूरि मंगल ज्ञानेभ्यो श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि श्रेष्ठ लोकोत्तम होते, बीज धर्म के वे नित बोते।
सूरि सिद्ध की भक्ति रचायें, हम सिद्धों का वैभव पायें॥214॥

ॐ ह्रीं सूरि लोकोत्तमेभ्यो श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरिज्ञान लोकोत्तम भाई, भव्य जनों को सदा सहायी॥ सूरि. ॥215॥

ॐ ह्रीं सूरिज्ञान लोकोत्तमेभ्यो श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकोत्तम सूरी का दर्शन, पाप कर्म का करता भंजन॥ सूरि. ॥216॥

ॐ ह्रीं सूरि दर्शन लोकोत्तमेभ्यो श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि वीर्य लोकोत्तम जग में, आगे अर्हत् सिद्ध बनें वे॥ सूरि. ॥217॥

ॐ ह्रीं सूरिवीर्य लोकोत्तमेभ्यो श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवल धर्म सूरि बतलाते, तारण तरण जहाज कहाते॥ सूरि. ॥218॥

ॐ ह्रीं सूरि केवल धर्मेभ्यो श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरी तप कर कर्म जलाते, तप्त तपो जिन शिवपुर पाते॥ सूरि. ॥219॥

ॐ ह्रीं सूरि तप्त तपेभ्यो श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि परम तपोबल धारी, सिद्ध मोक्ष लक्ष्मी अधिकारी॥ सूरि. ॥220॥

ॐ ह्रीं सूरि परम तपेभ्यो श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि घोर तपो गुण धरते, निश्चय श्रेष्ठ सिद्ध पद वरते॥ सूरि. ॥221॥

ॐ ह्रीं सूरि तपो घोर गुणेभ्यो श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घोर पराक्रम तप गुण धारें, सूरि सिद्ध भगवंत हमारे॥ सूरि. ॥222॥

ॐ ह्रीं सूरि घोरगुण पराक्रमेभ्यो श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि सिद्धी सूरीश्वर पाते, सबको त्याग सिद्धपद पाते॥ सूरि. ॥223॥

ॐ ह्रीं सूरि ऋद्धि ऋषिभ्यो श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि सुयोग्य योग नित धरते, जिनकी पूजा भविजन करते॥ सूरि. ॥224॥

ॐ ह्रीं सूरि सुयोगेभ्यो श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरी धर्म शुक्ल द्वय ध्याते, दुर्ध्यानों से हमे बचाते॥ सूरि. ॥225॥

ॐ ह्रीं सूरि सुध्यानेभ्यो श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि ज्येष्ठ श्रेष्ठ दातारी, ज्ञान ध्यान अमृत भंडारी।
सूरि सिद्ध की भक्ति रचायें, हम सिद्धों का वैभव पायें॥226॥

ॐ ह्रीं सूरि दातृभ्यो श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम पात्र सूरि भगवंता, दानी को दें सौख्य अनंता॥ सूरि.॥227॥

ॐ ह्रीं सूरि पात्रेभ्यो श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमःः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि शरण जग में सुखकारी, उत्तम रत्नत्रय दातारी॥ सूरि.॥228॥

ॐ ह्रीं सूरि शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण गण शरण सूरि के जग में, सदा सहायी वे शिवमग में॥ सूरि.॥229॥

ॐ ह्रीं सूरि गुण शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरी धर्म गुण शरण हमेशा, उनके भक्त बने परमेशा॥ सूरि.॥230॥

ॐ ह्रीं सूरि धर्मगुण शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि स्वरूप शरण दुःखहारी, आश्रित जन के विघ्न निवारी॥ सूरि.॥231॥

ॐ ह्रीं सूरि स्वरूप शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि धर्म स्वरूप शरण हैं, हमको उनके चरण शरण हैं॥ सूरि.॥232॥

ॐ ह्रीं सूरि धर्म स्वरूप शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान स्वरूप धर्म के सूरज, हमें मिले नित उनकी पगरज॥ सूरि.॥233॥

ॐ ह्रीं सूरि ज्ञान स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि दर्श आदर्श स्वरूपी, आगे हों वे सिद्ध अरूपी॥ सूरि.॥234॥

ॐ ह्रीं सूरि दर्शन स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीर्य स्वरूप सूरि परमेश्वर, आत्म शक्ति पा बनते ईश्वर॥ सूरि.॥235॥

ॐ ह्रीं सूरि वीर्य स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री आचार्य शरण मंगल हैं, तारें हमें कर्म जंगल से॥ सूरि.॥236॥

ॐ ह्रीं सूरि मंगल शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि का तप शरण कहाया, हमने महापुण्य से पाया॥ सूरि.॥237॥

ॐ ह्रीं सूरि तप शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि धर्म शरण उपकारी, उभय लोक में मंगलकारी।
सूरि सिद्ध की भक्ति रचायें, हम सिद्धों का वैभव पायें॥238॥

ॐ ह्रीं सूरि धर्म शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि ध्यान शरण जो पाये, वो भव्यात्मा शिव सुख पाये॥ सूरि. ॥239॥

ॐ ह्रीं सूरि ध्यान शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि ऋद्धि सिद्धि के धारी, अशरण शरण जगत् उपकारी॥ सूरि. ॥240॥

ॐ ह्रीं सूरि ऋद्धि शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक में शरण सूर्यवर, मोक्षमार्ग दिखलाते सत्वर॥ सूरि. ॥241॥

ॐ ह्रीं सूरि त्रिलोक शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि त्रिकाल शरण सुखदाता, भव्यों के श्री भाग्य विधाता॥ सूरि. ॥242॥

ॐ ह्रीं सूरि त्रिकाल शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि त्रय जग मंगलकर्त्ता, भक्तों के सब संकट हर्त्ता॥ सूरि. ॥243॥

ॐ ह्रीं सूरि त्रिजगन्मंगलाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि त्रिभुवन मंगल शरणा, परम पिता भव भय दुःख हरणा॥ सूरि. ॥244॥

ॐ ह्रीं सूरि त्रिलोक मंगल शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि जगत् मंगल लोकोत्तम, वे ही धर्म सूर्य सर्वोत्तम॥ सूरि. ॥246॥

ॐ ह्रीं सूरि त्रिजगन् मंगल लोकोत्तमाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगलशरण सूरि त्रय जग में, नित्य चलाते वे शिव मग में॥ सूरि. ॥246॥

ॐ ह्रीं सूरि त्रिजगन्मंगल शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन मंडल शरण गणेश्वर, तुम शरणागत बनते ईश्वर॥ सूरि. ॥247॥

ॐ ह्रीं सूरि त्रिलोक मंडल शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व ऋद्धि युत मंडल शरणा, सूरि सिद्ध बने भव तरणा॥ सूरि. ॥248॥

ॐ ह्रीं सूरि ऋद्धि मंडल शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यान जाप व्रत त्याग तपस्वी, सूरि यंत्र स्वरूप मनस्वी॥ सूरि. ॥249॥

ॐ ह्रीं सूरि यंत्र स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि वचन गुण मंत्र स्वरूपी, भक्ति बनाये सिद्ध अरूपी।
सूरि सिद्ध की भक्ति रचायें, हम सिद्धों का वैभव पायें॥250॥

ॐ ह्रीं सूरि मंत्र गुण स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि धर्म नित मंत्र स्वरूपी, भक्त बने भगवान स्वरूपी॥ सूरि.॥251॥

ॐ ह्रीं सूरि धर्म मंत्र स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नित चैतन्य गुणी गणनायक, सदा भक्त के भाग्य विधायक॥ सूरि.॥252॥

ॐ ह्रीं सूरि चैतन्य गुण स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिदानंद सूरीश धरे हैं, आनंदित दिन रात करे हैं॥ सूरि.॥253॥

ॐ ह्रीं सूरि चिदानंदाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सहजानन्द सूरि नित पातें, सिद्धि रमा को सदा लुभाते॥ सूरि.॥254॥

ॐ ह्रीं सूरि सहजानन्दाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानानंद निरन्तर पाते, सूरि ज्ञानानन्द लुटाते॥ सूरि.॥255॥

ॐ ह्रीं सूरि ज्ञानानन्दाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि तपस्या सानंद करते, वे ही सिद्ध जिनोत्तम बनते॥ सूरि.॥256॥

ॐ ह्रीं सूरि तपसानंद सहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि तपो गुण आनंद धारें, जिससे कर्म शत्रु परिहारें॥ सूरि.॥257॥

ॐ ह्रीं सूरि तपो गुणानन्दाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि तपोबल गुण स्वरूप हैं, पाते अर्हत् सिद्ध रूप वे॥ सूरि.॥258॥

ॐ ह्रीं सूरि तपो गुण स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरी हंस भेद विज्ञानी, ले जाते वे शिव रजधानी॥ सूरि.॥259॥

ॐ ह्रीं सूरि हंसाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री आचार्य हंस गुण वाले, भक्त सदा उनके मतवाले॥ सूरि.॥260॥

ॐ ह्रीं सूरि हंस गुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि मंत्र गुणानंद देते, शिष्यों के दुर्गुण हर लेते॥ सूरि.॥261॥

ॐ ह्रीं सूरि मंत्र गुणानन्दाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यानानंद धरें सूरीश्वर, बनते अर्हत् सिद्ध जिनेश्वर।
सूरि सिद्ध की भक्ति रचायें, हम सिद्धों का वैभव पायें॥262॥

ॐ ह्रीं सूरि ध्यानानन्दाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि अमृत चन्द्र कहाते, ज्ञानामृत वे नित्य पिलाते॥ सूरि.॥263॥

ॐ ह्रीं सूरि अमृत चन्द्राय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि सुधाचन्द्र मन भायें, सिद्ध स्वरूप सहज दिलवायें॥ सूरि.॥264॥

ॐ ह्रीं सूरि सुधाचन्द्र स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरि सुधा गुण भविजन कहते, आत्म सुधा गुण गुरुवर देते॥ सूरि.॥265॥

ॐ ह्रीं सूरि सुधागुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सौख्य सुधा घन रूप गुरुवर, अर्हत् सिद्ध बने मुक्तीश्वर॥ सूरि.॥266॥

ॐ ह्रीं सूरि सुधा घनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि अमृत घन स्वरूप हैं, पाते निश्चय सिद्ध रूप हैं॥ सूरि.॥267॥

ॐ ह्रीं सूरि अमृत घन स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि द्रव्य छह द्रव्य बतायें, जीव द्रव्य की सिद्धी सिखायें॥ सूरि.॥268॥

ॐ ह्रीं सूरि द्रव्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुगुण द्रव्य सूरीश हमारे, भव जल तारण यान हमारे॥ सूरि.॥269॥

ॐ ह्रीं सूरि गुण द्रव्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि गुण पर्याय गुणोत्तम, वरें सिद्ध पर्याय जिनोत्तम॥ सूरि.॥270॥

ॐ ह्रीं सूरि गुण पर्यायाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि द्रव्य द्रव्योत्तम जानो, मध्य दीप परमेष्ठि मानो॥ सूरि.॥271॥

ॐ ह्रीं सूरि द्रव्य स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौरासी लख गुण को धारें, गुण स्वरूप आचार्य हमारे॥ सूरि.॥272॥

ॐ ह्रीं सूरि गुण स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग प्रसिद्ध पर्याय धरे हैं, सूरि सुगुण की आय धरे हैं॥ सूरि.॥273॥

ॐ ह्रीं सूरि पर्याय स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि गुणोत्पादन करवाते, कर्मज् सर्व विषाद मिटाते।
सूरि सिद्ध की भक्ति रचायें, हम सिद्धों का वैभव पायें॥274॥

ॐ ह्रीं सूरि गुणोत्पादाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्रौव्य गुणोत्पादक गुरुदेवा, देते श्रेष्ठ गुणों का मेवा॥ सूरि.॥275॥

ॐ ह्रीं सूरि गुणोत्पादाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि व्यय गुण के उत्पादक, दुर्गुण नाश सुगुण उत्पादक॥ सूरि.॥276॥

ॐ ह्रीं सूरि व्यय गुणोत्पादाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि जीव तत्त्व सर्वोत्तम, शुक्ल ध्यान धर हों सिद्धोतम॥ सूरि.॥277॥

ॐ ह्रीं सूरि जीव तत्त्वाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि जीव तत्त्व गुणज्ञानी, आगे बनते केवल ज्ञानी॥ सूरि.॥278॥

ॐ ह्रीं सूरि जीव तत्त्व गुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीव तत्त्व विद मुनि गण नायक, बनते मुक्ति रमा के नायक॥ सूरि.॥279॥

ॐ ह्रीं सूरि जीव विदे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि आश्रव तत्त्व विनाशक, सिद्ध बनें सब ज्ञेय प्रकाशक॥ सूरि.॥280॥

ॐ ह्रीं सूरि आश्रव तत्त्व विनाशकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बंध तत्व नाशक सूरीश्वर, कर्म नाश बनते सिद्धेश्वर॥ सूरि.॥281॥

ॐ ह्रीं सूरि बन्धतत्त्व विनाशकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि संवर तत्त्व सहित हैं, जिसमें जग कल्याण निहित है॥ सूरि.॥282॥

ॐ ह्रीं सूरि संवर तत्त्व सहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि संवर तत्त्व स्वरूपी, बनते अर्हत् सिद्ध स्वरूपी॥ सूरि.॥283॥

ॐ ह्रीं सूरि संवर तत्त्व स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि संवर गुण के ज्ञाता, जग को संवर ज्ञान प्रदाता॥ सूरि.॥284॥

ॐ ह्रीं सूरि संवर गुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संवर धर्म सूरि अपनाये, सब को संवर धर्म सिखाये॥ सूरि.॥285॥

ॐ ह्रीं सूरि संवर धर्माय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि तत्त्व निर्जरा जानें, ज्ञान सूर्य उनको हम मानें।
सूरि सिद्ध की भक्ति रचायें, हम सिद्धों का वैभव पायें॥286॥

ॐ ह्रीं सूरि निर्जरा तत्त्वाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि निर्जरा तत्त्व स्वरूपी, कर्म नाश हों सिद्ध अरूपी॥ सूरि.॥287॥

ॐ ह्रीं सूरि निर्जरा तत्त्व स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि निर्जरा गुण के धारी, सिद्ध स्वरूप वरें अविकारी॥ सूरि.॥288॥

ॐ ह्रीं सूरि निर्जरा गुण स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तत्त्व निर्जरा धर्म जगाये, सूरीश्वर वसु कर्म नशायें॥ सूरि.॥289॥

ॐ ह्रीं सूरि निर्जरा धर्म तत्त्वाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि निर्जरा का अनुबंधन, नाशें वसु कर्मों का बन्धन॥ सूरि.॥290॥

ॐ ह्रीं सूरि निर्जरानुबंधाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि निर्जरा रूप कहाये, कर्म नशें शिवलक्ष्मी पाये॥ सूरि.॥291॥

ॐ ह्रीं सूरि निर्जरा रूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि निर्जरा के उत्पादक, निश्चय मोक्ष सिद्धी संपादक॥ सूरि.॥292॥

ॐ ह्रीं सूरि निर्जरा उत्पादाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म विजय के सूत्र सिखायें, सूरि मोक्ष पाकर सुख पायें॥ सूरि.॥293॥

ॐ ह्रीं सूरि मोक्षाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि बन्ध से मोक्ष दिलाते, कर्म बन्ध से मुक्ति दिलाते॥ सूरि.॥294॥

ॐ ह्रीं सूरि बन्ध मोक्षाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म नशें बनकर त्रिपुरारी, सूरि मोक्ष गुण के अधिकारी॥ सूरि.॥295॥

ॐ ह्रीं सूरि मोक्ष गुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि मोक्ष स्वरूप प्रदाता, भव्यों को मोक्षानन्द दाता॥ सूरि.॥296॥

ॐ ह्रीं सूरि मोक्ष स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्षानुबन्ध सूरि करवाते, मोक्षमार्ग की राह दिखाते॥ सूरि.॥297॥

ॐ ह्रीं सूरि मोक्षानुबंधाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि अनुक्रम मोक्ष प्रकाशी, सिद्ध बनें मुक्तिस्थल वासी।
सूरि सिद्ध की भक्ति रचायें, हम सिद्धों का वैभव पायें॥298॥

ॐ ह्रीं सूरि मोक्षानुप्रकाशाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि तीन गुप्ति के धारी, सिद्ध स्वरूप वरें अविकारी॥ सूरि.॥299॥

ॐ ह्रीं सूरि स्वरूप गुप्तये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि जगत् से पूर्ण विरत हो, निज परमात्म स्वरूप निरत हो॥ सूरि.॥300॥

ॐ ह्रीं सूरि परमात्म स्वरूप रतये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सखी छंद)

पाठक मुनिवर विज्ञानी, पाते हैं शिव रजधानी।
हम उनको अर्घ चढ़ायें, निज सिद्ध परम पद पायें॥301॥

ॐ ह्रीं पाठकेभ्यः श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक करते शिव मण्डन, काटें कर्मों के बन्धन॥ हम..॥302॥

ॐ ह्रीं पाठक मोक्ष मंडनेभ्यः श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक गुरु गुण भंडारी, पाते हैं मोक्ष अटारी॥ हम..॥303॥

ॐ ह्रीं पाठक गुणेभ्यः श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सद्गुण स्वरूप हैं पाठक, शुचि रत्नत्रय आराधक॥ हम..॥304॥

ॐ ह्रीं पाठक गुण स्वरूपेभ्यः श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक हैं गुण पर्यायी, गुण निधियाँ उत्तम पायीं॥ हम..॥305॥

ॐ ह्रीं पाठक गुण पर्ययेभ्यः श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक शुचि द्रव्य स्वरूपी, बनते हैं सिद्ध स्वरूपी॥ हम..॥306॥

ॐ ह्रीं पाठक द्रव्य रूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक गुण द्रव्य कहायें, निज शुद्ध द्रव्य को पायें॥ हम..॥307॥

ॐ ह्रीं पाठक गुणद्रव्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक निज द्रव्य स्वरूपं, पद पातें सिद्ध अरूपं॥ हम..॥308॥

ॐ ह्रीं पाठक द्रव्य रूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण द्रव्य और पर्यायें, पाठक ऋषिराज बतायें।
हम उनको अर्घ चढ़ायें, निज सिद्ध परम पद पायें॥309॥

ॐ ह्रीं पाठक द्रव्य पर्यायाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक पर्याय स्वरूपम्, प्रज्ञामय श्रेष्ठ अनुपम॥ हम..॥310॥

ॐ ह्रीं पाठक पर्याय स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक जग मंगल करते, नित सर्व अमंगल हरते॥ हम..॥311॥

ॐ ह्रीं पाठक मंगलाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक मंगल गुणधारी, शरणागत के उद्धारी॥ हम..॥312॥

ॐ ह्रीं पाठक मंगल गुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक मंगल गुणरूपी, पायें पद सिद्ध अरूपी॥ हम..॥313॥

ॐ ह्रीं पाठक मंगल गुण स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक गुरु द्रव्य सुमंगल, भक्तों का करते मंगल॥ हम..॥314॥

ॐ ह्रीं पाठक द्रव्य मंगलाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक पर्याय भी मंगल, स्वाध्याय तपस्वी उज्ज्वल॥ हम..॥315॥

ॐ ह्रीं पाठक पर्याय मंगलाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(रोला छंद)

द्रव्य सहित पर्याय सुमंगल पाठक पायें।
भवसागर से तिरें शिष्य को सहज तिरायें॥
पाठक वसु विध कर्म नाश सिद्धेश कहायें।
सिद्धचक्र पूजा में हम नित उनको ध्यायें॥316॥

ॐ ह्रीं पाठक द्रव्य पर्याय मंगलाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य सुगुण पर्याय सुमंगल पाठक धारें।
शुद्ध जिनागम सार भव्य को दें उद्धारें॥ पाठक..॥317॥

ॐ ह्रीं पाठक द्रव्य गुण पर्याय मंगलाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक मंगल रूप बनाते सिद्ध स्वरूपी।
नशें अमंगल विघ्न मुनीश्वर मंगल रूपी।।
पाठक वसु विध कर्म नाश सिद्धेश कहायें।
सिद्धचक्र पूजा में हम नित उनको ध्यायें।।318।।

ॐ ह्रीं पाठक मंगल स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक मंगल उत्तम पाठक शरण सहायी।
शिष्य गणों में जिनने श्रुत गंगा प्रगटायी।। पाठक..।।319।।

ॐ ह्रीं पाठक मंगलोत्तमाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक गुण लोकोत्तम देते ज्ञाना खजाना।
श्रुत निधि पाने गुरु की भक्ति नित्य रचाना।। पाठक..।।320।।

ॐ ह्रीं पाठक गुण लोकोत्तमाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक द्रव्य जगोत्तम आतम द्रव्य बनाते।
द्रव्य शुद्धि के सूत्र भव्य को नित्य सिखाते।। पाठक..।।321।।

ॐ ह्रीं पाठक द्रव्य लोकोत्तमाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक ज्ञान निधान ज्ञान रवि को प्रगटायें।
हरकर तम अज्ञान शिष्य को सिद्ध बनायें।। पाठक..।।322।।

ॐ ह्रीं पाठक ज्ञानाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक ज्ञान जगोत्तम तम अज्ञान हरे हैं।
उत्तम ज्ञान प्रदान सदा गुरुदेव करें हैं।। पाठक..।।323।।

ॐ ह्रीं पाठक ज्ञान लोकोत्तमाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक दर्शन श्रेष्ठ भाग्य से दर्शन होता।
आतम अनुभव श्रेष्ठ गुरु दर्शन से होता।। पाठक..।।324।।

ॐ ह्रीं पाठक दर्शन मंगलाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक दर्शन लोकोत्तम निज दर्श करायें।
जिन दर्शन से निज दर्शन के सूत्र सिखाये।। पाठक..।।325।।

ॐ ह्रीं पाठक दर्शन लोकोत्तमाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक दर्श स्वरूप रूप निज का दर्शाते।
सरस्वती सुत नित्य ज्ञान अमृत बरसाते।।
पाठक वसु विध कर्म नाश सिद्धेश कहायें।
सिद्धचक्र पूजा में हम नित उनको ध्यायें।।326।।

ॐ ह्रीं पाठक दर्शन स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुचि सम्यक्त्व हमें पाठक गुरुदेव दिलाते।
सम्यग्दर्शन दे जग का मिथ्यात्व भगाते।। पाठक..।।327।।

ॐ ह्रीं पाठक सम्यक्त्वाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक समकित् गुण स्वरूप सम्यक्त्व जगाओ।
पंथवाद को चूर महा मिथ्यात्व भगाओ।। पाठक..।।328।।

ॐ ह्रीं पाठक सम्यक्त्व गुण स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक धारें वीर्य महाव्रत तप को पालें।
घाति अघाति नाश सिद्ध शक्ति प्रगटालें।। पाठक..।।329।।

ॐ ह्रीं पाठक वीर्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक वीर्य महागुण पा वसु कर्म विनाशें।
सिद्ध बनें निज गुण अनंत अविराम विकासें।। पाठक..।।330।।

ॐ ह्रीं पाठक वीर्य गुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नश्वर तन में ध्रौव्य वीर्य पर्याय जगाते।
पाठक बहुविध तप से निज को खूब तपाते।। पाठक..।।331।।

ॐ ह्रीं पाठक वीर्य पर्यायाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीर्य द्रव्य पाठक पा आतम शक्ति बढ़ाते।
वीर्य द्रव्य लब्धि के जग को सूत्र सिखाते।। पाठक..।।332।।

ॐ ह्रीं पाठक वीर्य द्रव्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीरज गुण पर्याय सुशिक्षक गुरुवर पायें।
जिससे नाशें कर्म मोक्ष सुख लक्ष्मी पायें।। पाठक..।।333।।

ॐ ह्रीं पाठक वीर्य गुण पर्यायाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन दर्शन से निज दर्शन शिव सिद्धी पायें।
कर्म दर्शनावरण नशें शिक्षक शिव जायें।।
पाठक वसु विध कर्म नाश सिद्धेश कहायें।
सिद्धचक्र पूजा में हम नित उनको ध्यायें।।334।।

ॐ ह्रीं पाठक दर्शन पर्यायाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज दर्शन पर्याय स्वरूप सुपाठक पायें।
आत्म तत्त्व दर्शन की उत्तम विधी सिखायें।। पाठक..।।335।।

ॐ ह्रीं पाठक दर्शन पर्याय स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान द्रव्य निज आत्म बताते पाठक ज्ञानी।
श्रुत बीजांकुर देय बनाते केवलज्ञानी।। पाठक..।।336।।

ॐ ह्रीं पाठक ज्ञान द्रव्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक शरण प्रधान दिलाये ज्ञान खजाना।
पाने मोक्ष महान् भव्य गुरु शरणा आना।। पाठक..।।337।।

ॐ ह्रीं पाठक शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक श्री गुरुराज श्रेष्ठ सद्गुण के धारी।
उत्तम शरण जहाज आय हम शरण तिहारी।। पाठक..।।338।।

ॐ ह्रीं पाठक गुण शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक ज्ञान शरण है सम्यग्ज्ञान जगाता।
देता केवलज्ञान मोह अज्ञान भगाता।। पाठक..।।339।।

ॐ ह्रीं पाठक ज्ञान शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक दर्शन शरण तरणतारण ही जानों।
ज्ञान मोक्ष के वरण हेतु गुरु को श्रद्धानों।। पाठक..।।340।।

ॐ ह्रीं पाठक दर्शन शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज स्वरूप दर्शन पाठक ऋषिराज करायें।
मिथ्या दर्शन नशें श्रमण सरताज कहायें।। पाठक..।।341।।

ॐ ह्रीं पाठक दर्शन स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक का सम्यक्त्व शरण जो भविजन पायें।
गुरु दर्शन से मोह हरें शुचि दर्शन पायें।।
पाठक वसु विध कर्म नाश सिद्धेश कहायें।
सिद्धचक्र पूजा में हम नित उनको ध्यायें।।342।।

ॐ ह्रीं पाठक सम्यक्त्व शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु सम्यक्त्व स्वरूप शरण सम्यक्त्व दिलाये।
पाठक श्री की कृपा पूर्ण सम्यक्त्व खिलाये।। पाठक..।।343।।

ॐ ह्रीं पाठक सम्यक्त्व स्वरूप शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक वीर्य शरण है आतम वीर्य जगायें।
आत्म शक्ति से शिक्षक आठों कर्म भगायें।। पाठक..।।344।।

ॐ ह्रीं पाठक वीर्य शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक वीर्य स्वरूप रूप निज का प्रगटायें।
शिष्यों में जिनरूप जगाने गुरुवर आयें।। पाठक..।।345।।

ॐ ह्रीं पाठक वीर्य स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु शक्ति परमात्म शरण दिलवाती हमको।
बना सिद्ध परमात्म नाशती निश्चय यम को।। पाठक..।।346।।

ॐ ह्रीं पाठक वीर्य परमात्म शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपाध्याय गुरु एक द्वादशांग मय शरण प्रदाता।
ज्ञान बीज से बोधि वृक्ष निश्चय फल जाता।। पाठक..।।347।।

ॐ ह्रीं पाठक द्वादशांग शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दश पूरब धर हों गुरु लोभ न किंचित लाते।
पूर्ण ज्ञान लक्ष्मी ऐसे पाठक ही पाते।। पाठक..।।348।।

ॐ ह्रीं पाठक दश पूर्व धराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिक्षक श्रुत केवली बन चौदह पूरब धारें।
सिद्ध केवली बनकर लोकालोक निहारें।। पाठक..।।349।।

ॐ ह्रीं पाठक चतुर्दश पूर्व धराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अध्यापक गुरु हमको आचारांग पढ़ायें।
श्रमणाचार सिखाकर अर्हत् सिद्ध बनायें।।
पाठक वसु विध कर्म नाश सिद्धेश कहायें।
सिद्धचक्र पूजा में हम नित उनको ध्यायें।।350।।

ॐ ह्रीं पाठक आचारांगाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

ज्ञानाचार सिखाते शिक्षक ध्यान से।
केवलज्ञान जगाते उत्तम ध्यान से।।
पाठक आठों कर्म नशें सिद्धेश बन।
सिद्धार्चा से बन जायें परमेश हम।।351।।

ॐ ह्रीं पाठक ज्ञानाचाराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तपाचार आचरण करें शिक्षक श्रमण।
उनसे शिक्षा पाकर तप तपते श्रमण।। पाठक..।।352।।

ॐ ह्रीं पाठक तपाचाराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समकित का आचार आठ अंगों सहित।
उपाध्याय आचरण करें माया रहित।। पाठक..।।353।।

ॐ ह्रीं पाठक सम्यक्त्वाचाराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वरें चरित्राचार आचरण के धनी।
कर्म शक्तियाँ क्षीण करें पाठक मुनी।। पाठक..।।354।।

ॐ ह्रीं पाठक चारित्राचाराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँच भेद युत पालें वीर्याचार वे।
उपाध्याय से बनें सिद्ध भगवान वे।। पाठक..।।355।।

ॐ ह्रीं पाठक वीर्याचाराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक द्वय रत्नत्रय निधी को पालते।
सिद्ध बनें वसु कर्म शत्रु को टालते।। पाठक..।।356।।

ॐ ह्रीं पाठक रत्नत्रयाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नव पदार्थ में एक शुद्ध है आत्मा।
गुण एकत्व धरें पाठक परमात्मा।।
पाठक आठों कर्म नशें सिद्धेश बन।
सिद्धार्चा से बन जायें परमेश हम।।357।।

ॐ ह्रीं पाठक एकत्व गुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपाध्याय एकत्व धार जिनवर बनें।
गुरु पूजा से हम भी उन जैसे बनें।। पाठक..।।358।।

ॐ ह्रीं पाठक एकत्व परमात्मने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक मुनि एकत्व धर्म को धारते।
शिक्षा दे शिष्यों का मोह निवारते।। पाठक..।।359।।

ॐ ह्रीं पाठक एकत्व धर्माय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकाकी चैतन्य स्वरूपी आत्मा।
पाठक चिंतन करें बनें परमात्मा।। पाठक..।।360।।

ॐ ह्रीं पाठक एकत्व चैतन्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चित् चैतन्य स्वरूप चिदानंद ध्यान कर।
शिक्षक बनते सिद्ध जगत् उत्थान कर।। पाठक..।।361।।

ॐ ह्रीं पाठक चैतन्य स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक निज एकत्व द्रव्य चिंतन करें।
सिद्धि स्वराज लाभ ले अघ भंजन करें।। पाठक..।।362।।

ॐ ह्रीं पाठक एकत्व द्रव्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिदानंद का आनंद पाठक पा रहें।
शिष्य गणों में चिन्मय लगन जगा रहे।। पाठक..।।363।।

ॐ ह्रीं पाठक चिदानन्दाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व सिद्धि के साधक शिक्षक देव हैं।
शिष्यों को सिखलाते सिद्धि सदैव हैं।। पाठक..।।364।।

ॐ ह्रीं पाठक सिद्धि साधकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपाध्याय जिन सर्व ऋद्धि से पूर्ण हैं।
स्वात्म सिद्धि पा देते सुख सम्पूर्ण हैं।।
पाठक आठों कर्म नशें सिद्धेश बन।
सिद्धार्चा से बन जायें परमेश हम।।365।।

ॐ ह्रीं पाठक ऋद्धि पूर्णाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक परिग्रह रहित बनें निर्ग्रंथ हैं।
कर्म विजेता बनते सिद्ध भदंत वे।। पाठक..।।366।।

ॐ ह्रीं पाठक निर्ग्रंथाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धन धान्यादि प्रदाता अर्थ निधान हैं।
पाठक बनते पूर्ण सिद्ध भगवान हैं।। पाठक..।।367।।

ॐ ह्रीं पाठक अर्थ निधानाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपाध्याय चहुँगति बंधन को काटते।
पंचम गति के सूत्र जगत् को बांटते।। पाठक..।।368।।

ॐ ह्रीं पाठक संसार निबंधनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज पर का कल्याण करें शिक्षक सदा।
श्रेष्ठ शुभंकर सब दुःख हरते सर्वदा।। पाठक..।।369।।

ॐ ह्रीं पाठक कल्याणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग कल्याणक गुण से शिक्षक शोभते।
सिद्ध रूप धर मुक्ति रमा को लोभते।। पाठक..।।370।।

ॐ ह्रीं पाठक कल्याण गुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक पद कल्याण स्वरूपी मानिये।
सिद्धि रमा के दाता गुरु हैं जानिये।। पाठक..।।371।।

ॐ ह्रीं पाठक कल्याण स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपाध्याय कल्याण द्रव्य नित शुद्ध हैं।
देकर शिक्षासूत्र बनाते सिद्ध हैं।। पाठक..।।372।।

ॐ ह्रीं पाठक कल्याण द्रव्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिक्षक तत्त्व गुणालय लोक प्रसिद्ध हैं।
बनते उत्तम तत्त्व स्वरूपी सिद्ध हैं॥ पाठक..॥373॥

ॐ ह्रीं पाठक तत्त्व गुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक ध्या चिद्रूप अरूपी सिद्ध हों।
गुण आराधक निश्चय जगत् प्रसिद्ध हों॥ पाठक..॥374॥

ॐ ह्रीं पाठक चिद्रूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक गुरु चैतन्य चिदानंद दे हमें।
पाकर चित् चैतन्य सिद्ध सुख में रमें॥ पाठक..॥375॥

ॐ ह्रीं पाठक चैतन्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(कुसुमलता छंद)

पाठक मुनि चैतन्य गुणी हैं आत्माश्रम करते अविराम।
धर्म चेतना भर शिष्यों में पाते सिद्ध शिखर अभिराम॥
सिद्धचक्र मंडल विधान में पाठक मुनि का कर हम ध्यान।
जिन पूजा से कर्म नाश कर हम भी बनें सिद्ध भगवान॥376॥

ॐ ह्रीं पाठक चैतन्य गुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक ज्योति प्रकाश स्वरूपी निशदिन देते ज्ञान प्रकाश।
ज्ञान ध्यान तप त्याग ज्योति वे सिद्ध बनेंगे कर्म विनाश॥ सिद्धचक्र..॥377॥

ॐ ह्रीं पाठक ज्योति प्रकाशाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु दर्शन से जगे चेतना शिक्षक गुरु चैतन्य स्वरूप।
संतों को वे सिद्ध बनाते शिष्यों को दें सिद्ध स्वरूप॥ सिद्धचक्र..॥378॥

ॐ ह्रीं पाठक दर्शन चैतन्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक ज्ञान चेतना धारें श्रुत चैतन्य धरें अविराम।
अज्ञानी में ज्ञान चेतना प्रकट करें वे आठों याम॥ सिद्धचक्र..॥379॥

ॐ ह्रीं पाठक ज्ञान चैतन्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिक्षक ज्ञान दान में तत्पर कभी नहीं लेते विश्राम।
कभी न थकते कभी न रुकते आत्म वीर्य चेतन अभिराम॥
सिद्धचक्र मंडल विधान में पाठक मुनि का कर हम ध्यान।
जिन पूजा से कर्म नाश कर हम भी बनें सिद्ध भगवान॥380॥

ॐ ह्रीं पाठक वीर्य चैतन्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवतत्त्व वेत्ता अध्यापक जाने पूर्ण जीव विज्ञान।
शुद्ध जीव की सिद्ध साधना उनका देते सम्यग्ज्ञान॥ सिद्धचक्र..॥381॥

ॐ ह्रीं पाठक जीव विदे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल जीव को शरण प्रदाता जग में इक शिक्षक भगवान।
शरणागत के संकट हरते बनें बनायें सिद्ध महान्॥ सिद्धचक्र..॥382॥

ॐ ह्रीं पाठक सकल शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक को शरण भूत हैं ज्ञान प्रदाता पाठक जान।
अशरण शरण अकारण बन्धु बनें सिद्ध शिक्षक भगवान॥ सिद्धचक्र..॥383॥

ॐ ह्रीं पाठक त्रिलोक शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपाध्याय ही तीन काल में शाश्वत शरण प्रदायक मान।
शिक्षा दें अज्ञान हरें वे करते सम्यग्ज्ञान प्रदान॥ सिद्धचक्र..॥384॥

ॐ ह्रीं पाठक त्रिकाल शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिक्षक मंगल शरण स्वरूपी करते पाप अमंगल चूर।
सर्व रोग दुःख दूर करे वे सुख सम्पत् देते भरपूर॥ सिद्धचक्र..॥385॥

ॐ ह्रीं पाठक मंगल शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक लोक शरण हितकारी तीर्थंकर पद करें प्रदान।
पंचकल्याणक दायक शिक्षक चलते फिरते सिद्ध समान॥ सिद्धचक्र..॥386॥

ॐ ह्रीं पाठक लोक शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य भाव आश्रव के ज्ञाता बंद करें कर्माश्रव द्वार।
आश्रव विद पाठक परमेष्ठी भव्य करें नित जय-जयकार॥ सिद्धचक्र..॥387॥

ॐ ह्रीं पाठक आश्रव विदे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समिति गुप्ति व्रत तप आदिक से करते आश्रव तत्त्व विनाश।
शिक्षक गुरु निज–पर शिष्यों में करें निरन्तर आत्म विकास॥
सिद्धचक्र मंडल विधान में पाठक मुनि का कर हम ध्यान।
जिन पूजा से कर्म नाश कर हम भी बनें सिद्ध भगवान॥388॥

ॐ ह्रीं पाठक आश्रव विनाशाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आश्रव रहस्य प्रगट करते हैं पूर्ण करें आश्रव उच्छेद।
उपाध्याय आश्रव उच्छेदक सिखलाते आश्रव के भेद॥ सिद्धचक्र..॥389॥

ॐ ह्रीं पाठक आश्रवोपदेश छेदकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य भाव नो कर्म बन्ध का अन्त करें पाठक ऋषिराज।
बन्धातंक मिटा शिष्यों का देते स्वात्म सिद्धि साम्राज॥ सिद्धचक्र..॥390॥

ॐ ह्रीं पाठक बन्धान्तकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बन्ध मुक्त हो मुक्ति दिलाते निश्चय से शिक्षक भगवान।
बन्ध तत्त्व के ज्ञाता पाठक क्रम से बनें सिद्ध भगवान॥ सिद्धचक्र..॥391॥

ॐ ह्रीं पाठक बंध मुक्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक संवर तत्त्व विज्ञ हैं हितकर संवर सूत्र बताय।
परिषह जय पाँचों चरित्र से शिष्य गणों को सिद्ध बनाय॥ सिद्धचक्र..॥392॥

ॐ ह्रीं पाठक संवराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य भाव दोनों आश्रव पर पाठक पूर्ण विराम लगाय।
संवर करें करायें सबसे पाठक संवर रूप कहाय॥ सिद्धचक्र..॥393॥

ॐ ह्रीं पाठक संवर रूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठक संवर कारण बतला कर्म बंध से मुक्त कराय।
कर्म जाल का नाश करें वे मोक्षसिद्धि का मार्ग बताय॥ सिद्धचक्र..॥394॥

ॐ ह्रीं पाठक संवर कारणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कामदेव का नाश करें जिन आत्म ब्रह्म को नित चमकाय।
ब्रह्म तेज से चमके पाठक मुक्ति रमा को नित्य लुभाय॥ सिद्धचक्र..॥395॥

ॐ ह्रीं पाठक कंदर्पच्छेदकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म शैल विस्फोटन करते ध्यान वज्र से पाठक आप।
घाति अघाति कर्म विनाशें सिद्ध बनें होकर निष्पाप।।
सिद्धचक्र मंडल विधान में पाठक मुनि का कर हम ध्यान।
जिन पूजा से कर्म नाश कर हम भी बनें सिद्ध भगवान।।396।।

ॐ ह्रीं पाठक कर्म विस्फोटकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म निर्जरा करते शिक्षक द्वादश तप तपते अतिघोर।
सिद्ध रूप सर्वोत्तम पायें पहुँचाते भवसागर छोर।। सिद्धचक्र..।।397।।

ॐ ह्रीं पाठक निर्जरादि स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य-भाव नो कर्म नाशकर पाठक पाते चउविध मोक्ष।
गुरु सम चर्या जो करता है वो भी पाता निश्चय मोक्ष।। सिद्धचक्र..।।398।।

ॐ ह्रीं पाठक मोक्षाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहादिक् वसु कर्म नाशकर बनते शिक्षक मोक्ष स्वरूप।
शिष्यों को सन्मार्ग बताकर देते शाश्वत सिद्ध स्वरूप।। सिद्धचक्र..।।399।।

ॐ ह्रीं पाठक निर्जरादि स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपाध्याय गुरु आतम रत हो करें करायें नित स्वाध्याय।
मुनि आदिक पाँचों पद पाकर पूर्ण करें अपना अध्याय।। सिद्धचक्र..।।400।।

ॐ ह्रीं पाठक आत्मरताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- रत्नत्रय को साधके, सर्व साधु भगवंत।
रत्नत्रय को पूर्ण कर, बनते सिद्ध अनंत।।
सिद्धचक्र मंडल रचा, पूजें हम मुनिराज।
उत्तम द्रव्य चढ़ा उन्हें, मिले सिद्ध साम्राज्य।।401।।

ॐ ह्रीं सर्व साधुभ्यः श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँच महाव्रत समिति पंच, इन्द्रिय पंच निरोध।
छह आवश्यक सात गुण, पालें मुनि अविरोध।। सिद्धचक्र..।।402।।

ॐ ह्रीं सर्व साधु गुणेभ्यः श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु श्रमण चर्या करें, मुनि गुण के अनुरूप।
आठों कर्म विनाश कर, पायें सिद्ध स्वरूप॥
सिद्धचक्र मंडल रचा, पूजें हम मुनिराज।
उत्तम द्रव्य चढ़ा उन्हें, मिले सिद्ध साम्राज्य॥403॥

ॐ ह्रीं साधुगुण स्वरूपेभ्यः श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु द्रव्य षट् द्रव्य में, प्रथम मोक्ष का द्वार।
साधु द्रव्य को पूज हम, भरें द्रव्य भंडार॥ सिद्धचक्र..॥404॥

ॐ ह्रीं साधु द्रव्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोचादिक् गुण पालते, बनने मुनि शुचि द्रव्य।
मुनियों के गुण द्रव्य भज, हम हों सिद्ध सुनव्य[1]॥ सिद्धचक्र..॥405॥

ॐ ह्रीं साधु गुण द्रव्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान ध्यान तप लीन हों, देते सम्यग्ज्ञान।
साधु ज्ञान का दान कर, पाते केवलज्ञान॥ सिद्धचक्र..॥406॥

ॐ ह्रीं साधु ज्ञानाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि दर्शन हो पुण्य से, मुनि का दर्शन श्रेष्ठ।
सिद्ध बने मुनि भक्ति से, भरतादिक् नृप ज्येष्ठ॥ सिद्धचक्र..॥407॥

ॐ ह्रीं साधु दर्शनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु महातप को करें, पायें वीर्य अनंत।
कर्म अनंतानंत नश, होते सिद्ध भदंत॥ सिद्धचक्र..॥408॥

ॐ ह्रीं साधु वीर्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्यभाव से शुद्धि की, करें साधना संत।
बने शुद्ध परमात्मा, करते भव का अंत॥ सिद्धचक्र..॥409॥

ॐ ह्रीं साधु द्रव्य भावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु द्रव्य स्वरूप हैं, परमेश्वर का रूप।
मुनियों के हर भक्त भी, बनते त्रिभुवन भूप॥ सिद्धचक्र..॥410॥

ॐ ह्रीं साधु द्रव्य स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. नया

साधु–द्रव्य पर्याय से, बनकर सिद्ध विशुद्ध।
उत्तम गुरु भक्ति रचा, हम भी बनें प्रबुद्ध॥
सिद्धचक्र मंडल रचा, पूजें हम मुनिराज।
उत्तम द्रव्य चढ़ा उन्हें, मिले सिद्ध साम्राज्य॥411॥

ॐ ह्रीं साधु द्रव्य पर्यायाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्यादिक् पर्याय गुण, सबका कर मुनि शोध।
पूर्ण ज्ञान रवि को जगा, देते सम्यक् बोध॥ सिद्धचक्र..॥412॥

ॐ ह्रीं साधु द्रव्यादि गुण पर्यायाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रमण रूप मंगल सुखद, हरे अमंगल सर्व।
मुनिवर जहाँ विराजते, होय वहाँ नित पर्व॥ सिद्धचक्र..॥413॥

ॐ ह्रीं साधु मंगलाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ शुभंकर श्रमण सब, मंगल साधु स्वरूप।
कर्म नशें शिवकंत हों, पायें सिद्ध स्वरूप॥ सिद्धचक्र..॥414॥

ॐ ह्रीं साधु मंगल स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षपणक मंगल शरण हैं, अशरण शरण जहाज।
उनके भक्त प्रसिद्ध हों, पायें मोक्ष स्वराज॥ सिद्धचक्र..॥415॥

ॐ ह्रीं साधु मंगल शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगल दर्शन साधु के, सिद्ध करें सब कार्य।
मोक्ष और जग सिद्धि हित, मुनिदर्शन अनिवार्य॥ सिद्धचक्र..॥416॥

ॐ ह्रीं साधु दर्शन मंगलाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगल ज्ञानी श्रमण सब, देते मंगल ज्ञान।
पाकर केवलज्ञान वे, हरें मोह अज्ञान॥ सिद्धचक्र..॥417॥

ॐ ह्रीं साधु ज्ञान मंगलाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगल मुनि का ज्ञान गुण, देता सम्यग्ज्ञान।
हर्ता जग अज्ञान तम, दाता केवलज्ञान॥ सिद्धचक्र..॥418॥

ॐ ह्रीं साधु ज्ञानगुण मंगलाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु वीर्य मंगल विशद, करें पाप सब शांत।
कर दुस्सह तप साधना, बनें मुक्ति के कांत॥
सिद्धचक्र मंडल रचा, पूजें हम मुनिराज।
उत्तम द्रव्य चढ़ा उन्हें, मिले सिद्ध साम्राज्य॥419॥

ॐ ह्रीं साधु वीर्य मंगलाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्म वीर्य शक्ति बढ़ा, मंगल श्रमण स्वरूप।
भव आसक्ति को मिटा, पातें जिनवर रूप॥ सिद्धचक्र..॥420॥

ॐ ह्रीं साधु वीर्य मंगल स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगल गुण मुनि शक्ति हैं, करे अमंगल चूर।
मुनि की भक्ति प्रसाद से, मिले सौख्य भरपूर॥ सिद्धचक्र..॥421॥

ॐ ह्रीं साधु वीर्य मंगल गुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ वीर्य पा श्रमण सब, आत्म द्रव्य को ध्याय।
कर्म शक्ति का नाशकर, सिद्ध द्रव्य बन जाय॥ सिद्धचक्र..॥422॥

ॐ ह्रीं साधु वीर्य द्रव्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकोत्तम मुनिराज सब, करते व्रत तप ध्यान।
रत्नत्रय को पूर्ण कर, पाते मोक्ष महान्॥ सिद्धचक्र..॥423॥

ॐ ह्रीं साधु लोकोत्तमाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि गुण लोकोत्तम धरें, कर लोकोत्तम कार्य।
लौकिक वैभव छोड़कर, सिद्ध बनें अनिवार्य॥ सिद्धचक्र..॥424॥

ॐ ह्रीं साधु लोकोत्तम गुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकोत्तम गुण साधु के, भावि सिद्ध स्वरूप।
शरणागत हर भव्य भी, बनता त्रिभुवन भूप॥ सिद्धचक्र..॥425॥

ॐ ह्रीं साधु लोकोत्तम गुण स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(मोतियादाम छंद)

साधु लोकोत्तम द्रव्य महान्, करें निज पर का आत्मोत्थान।
करें हम शाश्वत सिद्ध विधान, भजें हम सिद्ध साधु भगवान॥426॥

ॐ ह्रीं साधु लोकोत्तम द्रव्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु लोकोत्तम द्रव्य स्वरूप, बनें सर्वोत्तम सिद्ध स्वरूप॥ करें.॥427॥

ॐ ह्रीं साधु लोकोत्तम द्रव्य स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रमण लोकोत्तम ज्ञान निधान, जगायें द्रव्य भाव श्रुत ज्ञान॥ करें.॥428॥

ॐ ह्रीं साधु लोकोत्तम ज्ञानाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षपक लोकोत्तम ज्ञान स्वरूप, वरें शिवलक्ष्मी जिनवर रूप॥ करें.॥429॥

ॐ ह्रीं साधु लोकोत्तम ज्ञान स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु दर्शन लोकोत्तम जान, बनायें भव्यों को भगवान॥ करें.॥430॥

ॐ ह्रीं साधु लोकोत्तम दर्शनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रमण करते लोकोत्तम ध्यान, बनें वे अर्हत् सिद्ध महान्॥ करें.॥431॥

ॐ ह्रीं साधु लोकोत्तम ध्यानाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दयामय लोकोत्तम मुनि धर्म, देय जिनगुण सम्पत् शिवशर्म॥ करें.॥432॥

ॐ ह्रीं साधु लोकोत्तम धर्माय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु लोकोत्तम धर्म स्वरूप, बनें तीर्थंकर सिद्ध स्वरूप॥ करें.॥433॥

ॐ ह्रीं साधु लोकोत्तम धर्म स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि लोकोत्तम शक्ति धरंत, बनें जिन मोक्षलक्ष्मी के कन्त॥ करें.॥434॥

ॐ ह्रीं साधु लोकोत्तम वीर्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षपक लोकोत्तम वीर्य स्वरूप, आत्म बल पा बनते शिव भूप॥ करें.॥435॥

ॐ ह्रीं साधु लोकोत्तम वीर्य स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रमण लोकोत्तम अतिशय धार, करें नित चमत्कार उद्धार॥ करें.॥436॥

ॐ ह्रीं साधु लोकोत्तम अतिशय संपन्नाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु का ब्रह्मज्ञान जग श्रेष्ठ, बनाता सिद्ध अलौकिक ज्येष्ठ।
करें हम शाश्वत सिद्ध विधान, भजें हम सिद्ध साधु भगवान॥437॥

ॐ ह्रीं साधु लोकोत्तम ब्रह्मज्ञानाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनी लोकोत्तम ब्रह्म स्वरूप, बनें परमेश्वर त्रिभुवन भूप॥ करें.॥438॥

ॐ ह्रीं साधु लोकोत्तम ब्रह्मज्ञान स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यती का लोकोत्तम विज्ञान, हरें मिथ्यात्व मोह अज्ञान॥ करें.॥439॥

ॐ ह्रीं साधु लोकोत्तम ज्ञानाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रमण लोकोत्तम गुण संपन्न, करें भक्तों को सुख संपन्न॥ करें.॥440॥

ॐ ह्रीं साधु लोकोत्तम गुण संपन्नाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु लोकोत्तम पुरुष महान्, मोक्ष पुरुषार्थी श्री भगवान॥ करें.॥441॥

ॐ ह्रीं साधु लोकोत्तम पुरुषाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगत् में सिद्ध शरण अनगार, मुनीश्वर करें स्वपर उद्धार॥ करें.॥442॥

ॐ ह्रीं साधु शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु गुण शरण चुरासी[1] लाख, त्रिलोकी त्रैकालिक मुनि साख॥ करें.॥443॥

ॐ ह्रीं साधु गुण शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षपक के दर्शन शरण महान्, दर्श कर भव्य बनें भगवान॥ करें.॥444॥

ॐ ह्रीं साधु दर्शन शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु गुण द्रव्य शरण सुखकार, मूल उत्तर गुण अपरम्पार॥ करें.॥445॥

ॐ ह्रीं साधु गुण द्रव्य शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच विध सम्यग्ज्ञान प्रधान, शरण है ऋषि का सम्यग्ज्ञान॥ करें.॥446॥

ॐ ह्रीं साधु ज्ञान शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु के दर्शन शरण स्वरूप, मुमुक्षु दिखते सिद्ध स्वरूप॥ करें.॥447॥

ॐ ह्रीं साधु दर्शन स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्म शरणा जग में मुनिराज, दिलाये धर्म सिद्ध साम्राज॥ करें.॥448॥

ॐ ह्रीं साधु आत्म शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. 84

यति परमात्म शरण अघहार, बनाये परमात्मा सुखकार।
करें हम शाश्वत सिद्ध विधान, भजें हम सिद्ध साधु भगवान॥449॥

ॐ ह्रीं साधु परमात्म शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्म इन्द्रिय जय साधु जितात्म, शरण आ भव्य बने परमात्म॥ करें.॥450॥

ॐ ह्रीं साधु जितात्म शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौपाई

अगणित वीर्य शरण मुनिरायी, परम सिद्ध शक्ति विकसायी।
सिद्धार्चा हम भव्य रचायें, सिद्ध श्रमण की भक्ति रचायें॥451॥

ॐ ह्रीं साधु वीर्य शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु आत्म वीर्य के धारी, सिद्ध शरण दाता सुखकारी॥ सिद्धार्चा..॥452॥

ॐ ह्रीं साधु आत्म वीर्य शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षपक मूल उत्तर गुणधारी, दुर्गुण नशें सुगुण भंडारी॥ सिद्धार्चा..॥453॥

ॐ ह्रीं साधु गुण स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लक्ष्मी शोभित श्रमण शुभंकर, व्रत गुण तप लक्ष्मीधर शंकर॥ सिद्धार्चा..॥454॥

ॐ ह्रीं साधु लक्ष्म्यालंकृताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप लक्ष्मी परिणत मुनि सारे, उभय लक्ष्मी मुनि सेवक धारें॥ सिद्धार्चा..॥455॥

ॐ ह्रीं साधु लक्ष्मी परिणताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिमुद्रा सर्वोत्तम लक्ष्मी, इनसे मिले त्रिलोकी लक्ष्मी॥ सिद्धार्चा..॥456॥

ॐ ह्रीं साधु लक्ष्मी रूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यति अनगारी ध्रुव सुखधारी, ध्रुव सुख-शांति सुधन दातारी॥ सिद्धार्चा..॥457॥

ॐ ह्रीं साधु ध्रुवाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रमण अनंतों गुण ध्रुव ध्याते, गुण अनंत धर कर्म नशाते॥ सिद्धार्चा..॥458॥

ॐ ह्रीं साधु गुण ध्रुवाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु द्रव्य ध्रुव पद को पायें, ध्रौव्य सिद्ध पद मुनिवर पायें॥ सिद्धार्चा..॥459॥

ॐ ह्रीं साधु द्रव्य ध्रुवाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध द्रव्य उत्पादक ऋषिवर, कर्म नशें वे दुर्धर तपकर।
सिद्धार्चा हम भव्य रचायें, सिद्ध श्रमण की भक्ति रचायें।।460।।

ॐ ह्रीं साधु द्रव्योत्पादाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि विभाव का व्यय करते हैं, द्रव्य कर्म का क्षय करते हैं।। सिद्धार्चा.. ।।461।।

ॐ ह्रीं साधु द्रव्य व्ययाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु जीव जीवन के ज्ञाता, जीव मात्र रक्षक सुखदाता।। सिद्धार्चा.. ।।462।।

ॐ ह्रीं साधु जीवाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रमण जीव गुण को नित ध्यायें, सिद्ध जीव का मार्ग दिखायें।। सिद्धार्चा.. ।।463।।

ॐ ह्रीं साधु जीव गुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि चैतन्य चिदानन्द पायें, शुचि चैतन्य सिद्ध पद पायें।। सिद्धार्चा.. ।।464।।

ॐ ह्रीं साधु चैतन्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षपक साधु चैतन्य स्वरूपी, सिद्धि रमा को वरें अरूपी।। सिद्धार्चा.. ।।465।।

ॐ ह्रीं साधु चैतन्य स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि चैतन्य गुणों को पायें, भक्तों को चैतन्य बनायें।। सिद्धार्चा.. ।।466।।

ॐ ह्रीं साधु चैतन्य गुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि परमात्म प्रकाश पुंज हैं, त्रिभुवन को आनंद कुंज हैं।। सिद्धार्चा.. ।।467।।

ॐ ह्रीं साधु परमात्म प्रकाशाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्योति स्वरूप मुनिश्वर सारे, ज्ञान ज्योति दे भव से तारें।। सिद्धार्चा.. ।।468।।

ॐ ह्रीं साधु ज्योति स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्योति प्रदीप तपस्वी मुनिवर, सब दुःख संकट हरते ऋषिवर।। सिद्धार्चा.. ।।469।।

ॐ ह्रीं साधु ज्योति प्रदीपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन दीप श्रमण का दर्शन, देता है शुचि सम्यग्दर्शन।। सिद्धार्चा.. ।।470।।

ॐ ह्रीं साधु दर्शन दीपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानदीप निर्ग्रन्थ यतीश्वर, सम्यग्ज्ञान प्रदाता ऋषिवर।। सिद्धार्चा.. ।।471।।

ॐ ह्रीं साधु ज्ञान दीपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु सर्व को शरण प्रदाता, मोक्षमार्ग दर्शक सुखदाता।
सिद्धार्चा हम भव्य रचायें, सिद्ध श्रमण की भक्ति रचायें॥472॥

ॐ ह्रीं साधु सर्व शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अखिल विश्व में शरण मुनीश्वर, चलते-फिरते सिद्ध जिनेश्वर॥ सिद्धार्चा..॥473॥

ॐ ह्रीं साधु लोक शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक में क्षपक शरण हैं, मुनि अशरण को परम शरण हैं॥ सिद्धार्चा..॥474॥

ॐ ह्रीं साधु त्रिलोक शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव छेदक मुनिराज तरण हैं, धरतीके भगवान श्रमण हैं॥ सिद्धार्चा..॥475॥

ॐ ह्रीं साधु भव छेदकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सखी छंद)

ऋषिवर त्रयकाल शरण हैं, सुख दाता श्रेष्ठ शरण हैं।
हम सिद्धचक्र को ध्यायें, जिन पूजा सिद्ध बनाये॥476॥

ॐ ह्रीं साधु त्रिकाल शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि शरणा भव दुःख हरणा, जगनायक तारण तरणा॥ हम..॥477॥

ॐ ह्रीं साधु शरणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकत्व भाव मुनि भायें, एकांकी कर्म नशायें॥ हम..॥478॥

ॐ ह्रीं साधु एकत्वाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु एकत्व गुणी हैं, दुर्गुण हर सिद्ध गुणी हैं॥ हम..॥479॥

ॐ ह्रीं साधु एकत्व गुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकत्व द्रव्य यति ध्याते, सर्वोच्च सिद्ध पद पाते॥ हम..॥480॥

ॐ ह्रीं साधु एकत्व द्रव्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि बन एकत्व स्वरूपी, पद पाते सिद्ध अरूपी॥ हम..॥481॥

ॐ ह्रीं साधु एकत्व स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि द्वादशांग श्रुत ज्ञानी, बनते जिन केवलज्ञानी॥ हम..॥482॥

ॐ ह्रीं साधु द्वादशांगाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यति शब्द ब्रह्म को ध्यातें, निज सिद्ध ब्रह्म को पाते।
हम सिद्धचक्र को ध्यायें, जिन पूजा सिद्ध बनाये॥483॥

ॐ ह्रीं साधु शब्द ब्रह्मणे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि परम ब्रह्म में तन्मय, होते अरूप जिन चिन्मय॥ हम..॥484॥

ॐ ह्रीं साधु परम ब्रह्मणे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिवर परमागम ज्ञाता, हो सिद्ध चराचर ज्ञाता॥ हम..॥485॥

ॐ ह्रीं साधु परमागमाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जैनागम ज्ञानी मुनिवर, बनते अरूप परमेश्वर॥ हम..॥486॥

ॐ ह्रीं साधु जिनागमाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि अनेकार्थ को ध्याते, आत्मार्थ सिद्धपद पाते॥ हम..॥487॥

ॐ ह्रीं साधु अनेकार्थाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यति रत्नत्रय शुचि धारें, अशुचि त्रियोग परिहारें॥ हम..॥488॥

ॐ ह्रीं साधु शुचित्वाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुचि रत्नत्रय गुण पायें, ऋषि अशुचि कर्म विनशायें॥ हम..॥489॥

ॐ ह्रीं साधु शुचि गुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद परम पवित्र श्रमण का, हेतु शिव लक्ष्मी वरण का॥ हम..॥490॥

ॐ ह्रीं साधु परम पवित्राय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अघ बंध विमुक्त यतीश्वर, बनते हैं सिद्ध जिनेश्वर॥ हम..॥491॥

ॐ ह्रीं साधु बंध विमुक्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि कर्म बंध प्रतिबंधक, त्रय लोकों के हितचिंतक॥ हम..॥492॥

ॐ ह्रीं साधु बंध प्रतिबंधकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संवर कारण श्रमणेश्वर, बनते शिव रमणी ईश्वर॥ हम..॥493॥

ॐ ह्रीं साधु संवर कारणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि द्रव्य निर्जरा करते, तप से कर्मों को हरते॥ हम..॥494॥

ॐ ह्रीं साधु निर्जरा द्रव्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि कर्म निर्जरा गुणधर, श्री सिद्ध बनें वे सत्वर।
हम सिद्धचक्र को ध्यायें, जिन पूजा सिद्ध बनाये॥495॥

ॐ ह्रीं साधु निर्जरा गुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यति कर्म निर्जरा हेतु, भव सागर तारक सेतू॥ हम..॥496॥

ॐ ह्रीं साधु निर्जरा निमित्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि भव निमित्त मुक्तीश्वर, पद सिद्ध प्रदाता ईश्वर॥ हम..॥497॥

ॐ ह्रीं साधु संसार निमित्त मुक्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि स्वयं बुद्ध धर्मी हैं, शिवमग दर्शक शर्मी हैं॥ हम..॥498॥

ॐ ह्रीं साधु बुद्ध धर्माय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बन सिद्ध बुद्ध गुणधारी, मुनिवर अज्ञान निवारी॥ हम..॥499॥

ॐ ह्रीं साधु बुद्ध गुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि सुगत मोक्ष गति पायें, भक्तों को सुगति दिलायें॥ हम..॥500॥

ॐ ह्रीं साधु सुगत भावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

साधु परगत भाव समझकर, सबसे ममता छोड़े।
सिद्ध बने सिद्धी लक्ष्मी से, शाश्वत नाता जोड़ें॥
सिद्धचक्र पूजा में हम नित, ध्वज फल अर्घ चढ़ायें।
सिद्ध श्रमण की भक्ति रचा हम, सिद्ध परम पद पायें॥501॥

ॐ ह्रीं साधु परगत भावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रागादिक् नश्वर विभाव से, रहित मुनीश्वर ज्ञानी।
सिद्ध रूप शाश्वत वैभव को, पाते केवलज्ञानी॥ सिद्धचक्र..॥502॥

ॐ ह्रीं साधु विभाव रहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज स्वभाव से महित यतीश्वर, सिद्ध लक्ष्मी पायें।
शुचि स्वभाव की महिमा जग को, सहज सरल समझाये॥ सिद्धचक्र..॥503॥

ॐ ह्रीं साधु स्वभाव महिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहक्षीण कर श्रमण मुमुक्षु, मोक्ष सम्पदा पाये।
मोक्ष स्वरूप सिद्ध पद पाकर, मोक्ष मार्ग दर्शायें।।
सिद्धचक्र पूजा में हम नित, ध्वज फल अर्घ चढ़ायें।
सिद्ध श्रमण की भक्ति रचा हम, सिद्ध परम पद पायें।।504।।

ॐ ह्रीं साधु मोक्ष स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रामाणिक रत्नत्रय धारी, मुनि प्रमाण कहलाते।
प्रामाणिक मुनि चर्या करके, मोक्ष लक्ष्मी पाते।। सिद्धचक्र..।।505।।

ॐ ह्रीं साधु प्रमाणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि पायें अर्हत् स्वरूप को, घाति कर्म क्षय करके।
जिन गुण संपत् आत्म संपदा, पाते अघ क्षय करके।। सिद्धचक्र..।।506।।

ॐ ह्रीं साधु अर्हत्स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु सिद्ध परमेष्ठि बनते, आठ कर्म विनशायें।
सिद्ध श्रमण पूजा से हम भी, सिद्ध संपदा पायें।। सिद्धचक्र..।।507।।

ॐ ह्रीं साधु श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रागद्वेष संक्लेश विजेता, निस्पृह क्षपक मुनीश्वर।
निस्पृह श्रमणों की पूजा से, भक्त बने परमेश्वर।। सिद्धचक्र..।।508।।

ॐ ह्रीं साधु निस्पृहाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म ताप संताप शांत कर, श्रमण शांत कहलाये।
आत्म शांति का मार्ग शांति से, शांत श्रमण दिखलाये।। सिद्धचक्र..।।509।।

ॐ ह्रीं साधु शांताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब जीवों पर करुणा धारें, करुणा निधी श्रमण वर।
तारण तरण श्रमण चर्या से, सिद्ध बनेंगे सत्वर।। सिद्धचक्र..।।510।।

ॐ ह्रीं साधु कारुणिकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देह जगत् भोगों से मुनिवर, बनकर पूर्ण विरागी।
कर्म नाशकर सिद्ध बनें अब, लगन उन्हीं से लागी॥
सिद्धचक्र पूजा में हम नित, ध्वज फल अर्घ चढ़ायें।
सिद्ध श्रमण की भक्ति रचा हम, सिद्ध परम पद पायें॥511॥

ॐ ह्रीं साधु निर्विण्णाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रमण उभय रत्नत्रय निधि से, निज आतम चमकाये।
सिद्ध बने वे रत्नत्रय से, मोक्ष महल को पायें॥ सिद्धचक्र..॥512॥

ॐ ह्रीं साधु रत्नत्रययुताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (शंभु छंद)

वैरागी श्रावक श्रमण बने, रत्नत्रय का वैभव पायें।
यति शिक्षक बन शिक्षा देते, आचार्य रूप व्रत गुण पायें॥
चऊ घाति नाश अर्हंत् बनें, फिर सिद्ध बनें शिव सुख पायें।
हम पण शत द्वादश अर्घों का, पूर्णार्घ चढ़ा अघ विनशायें॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं द्वादशोत्तर पंच शतक गुण सहितेभ्यो श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- सब सिद्धों को पूज हम, करते शांतिधार।
सिद्ध सौख्य के लाभ हित, पुष्पाञ्जलि मनहार॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा नमः। (9, 27 या108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा- सिद्धचक्र आराधना, करती मालामाल।
पण शत द्वादश अर्घ की, चढ़ा रहे जयमाल॥

(चामर चंद)

सिद्ध को प्रणाम सिद्धचक्र को प्रणाम हो।
पाँच सौ युग्म दशक नाम को प्रणाम हो।।
सिद्धचक्र अर्चना महान् शक्तिमान है।
जो इसे करे सदा वरे वो सर्वज्ञान हैं।।1।।

घाति वा अघाति आठ कर्म को विनाशते।
सिद्ध रूप सिद्धनाथ सिद्ध लोक वासते।।
ऋद्धि सिद्धियाँ अशेष भव्य को सुदान दे।
दिव्य आत्म शक्तियाँ सुलब्धियाँ विकास लें।।2।।

चार घाति कर्म को विनाशते जिनेश हैं।
तीन लोक के सुभव्य पूजते अशेष हैं।।
आठ प्रतिहार्य नौ सुलब्धियाँ महान् हैं।।
वीतराग तीर्थ रूप सर्व सौख्यवान हैं।।3।।

सूरि धर्मसूर्य सिद्ध पुत्र ज्ञानवान हैं।
दक्ष मोक्षमार्ग में जिनेश के समान हैं।।
धर्म मोक्ष मार्ग में चलें लगाय शिष्य को।
सिद्ध रूप हो बनाय सिद्ध भव्य शिष्य को।।4।।

ज्ञान का विशेष दान हर्ष से करें सदा।
मोह रागद्वेष आदि पाप को हरें सदा।।
मात के समान ज्ञान घुट्टी जो पिला रहे।
शारदा सुपुत्र मोक्ष सिद्धियाँ दिला रहे।।5।।

तीन रत्न धार भव्य मोक्ष मार्ग में लगे।
अव्रती अणुव्रती महाव्रती यती पगे।।
धर्म ध्यान से महान् ऋद्धि सिद्धियाँ वरें।
भक्त के अशेष कष्ट रोग साधु ही हरें।।6।।

पाँच भेद श्रेष्ठ इष्ट दिव्य आत्म शक्तियाँ।
श्री जिनेश सिद्ध सूरि आदि पाँच शक्तियाँ।।
सर्व रोग शोक पाप ताप को विनाशते।
भव्य जीव की निजात्म शक्तियाँ विकासते।।7।।

सिद्धचक्र अर्चना महान पुण्य से मिले।
भक्त के अशेष कर्म सिद्ध भक्ति से गले।।
सिद्ध रूप लाभ आत्म शक्ति का विकास हो।
''गुप्तिनंदी'' का सदैव सिद्ध लोक वास हो।।8।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं द्वादशोत्तर पंच शतक गुण समन्वितेभ्यो श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

त्रय रत्नयुत सब सिद्ध का जो नित्य आराधन करें।
श्री सिद्धचक्र विधान से वो मोक्ष सुख साधन वरे।।
तीर्थेश आदि श्रेष्ठ पद श्री सिद्ध पूजक पायेंगे।
'गुप्ति' सकल दुःख नाश वो गुण गण अनंतों पायेंगे।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

1024 गुण सहित अष्टम पूजा

स्थापना (मत्तगयंद छंद)

सर्व हितंकर सिद्ध जिनेश्वर, नाम सहस्र अनेक लुभायें।
सार्थक सुखकर सुन्दर दुःखहर, भविजन भव्य विधान रचायें।।
अंजुलि में बहु पुष्प लिये हम, स्वागत गीत निरन्तर गायें।
माल लिये बहु नृत्य करें हम, पूजन में बहु वाद्य बजायें।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपते अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपते अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपते अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टक (शेर छंद)

हम इक हजार आठ श्रेष्ठ कुम्भ सजायें।
प्रभु पाद धुला सर्व रोग शोक नशायें।।
चौबीस अधिक इक हजार अर्घ चढ़ायें।
पूजा श्री सिद्धचक्र की शिव सौख्य दिलाये।।1।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर कपूर गन्ध चन्दनादि शुद्ध ले।
प्रभु के पदाग्र में लगाय सिद्धपद मिले।। चौबीस..।।2।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अखंड शालि मोती रत्न पुंज लें।
प्रभु को चढ़ाने वाले जायें शिव निकुंज में।। चौबीस..।।3।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हम पद्म जूही मोगरा कचनार कुन्द लें।
प्रभु को चढ़ायें छूँट जायें काम बन्ध से।। चौबीस..।।4।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

बरफी इमरती मालपुआ पूरी कचौरी।
जिनदेव को चढ़ायें भरें पुण्य तिजोरी॥
चौबीस अधिक इक हजार अर्घ चढ़ायें।
पूजा श्री सिद्धचक्र की शिव सौख्य दिलाये॥5॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत रत्न व कपूर के हम दीप जलायें।
प्रभु की उतारें आरती निज मोह नशायें॥ चौबीस..॥6॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित मनोज्ञ धूप अग्निपात्र में चढ़ा।
अर्चा करें प्रभु की फोड़ें कर्म का घड़ा॥ चौबीस..॥7॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर आम संतरा श्रीफल के थाल लें।
हम अर्चते प्रभु को वे हमें सम्हाल लें॥ चौबीस..॥8॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु द्रव्य ध्वजा माल सहित अर्घ चढ़ायें।
हम नित अनर्घ सौख्य हित विधान रचायें॥ चौबीस..॥9॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धाधिपतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1024 गुणसहित अष्टम् पूजा

दोहा– अंतरंग बहिरंग द्वय, लक्ष्मी युत श्रीमान्।
आत्म सिद्धी हित हम करें, सिद्ध सहस्र विधान॥
नमन स्वयंभू आपको, स्वयं बनें भगवान।
श्रेष्ठ धर्म से शोभते, सर्व सिद्ध भगवान॥

अथ मण्डलस्योपरि अष्टम वलये पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(दोहा)

अंतरंग श्रीरूप में, बन अनंत गुणवान।
समोशरण आदिक् महा, लक्ष्मी धर 'श्रीमान्'॥1॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्रीमते श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमःअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमन 'स्वयंभू' आपको, स्वयं किया उत्थान।
सकल साधना स्वयंकर, स्वयं बने भगवान॥2॥
ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंभुवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ धर्म को धारते, आप 'वृषभ' भगवान।
बनें आप सम हम वृषभ, धरें वृषभ का ध्यान॥3॥
ॐ ह्रीं अर्हं वृषभाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुख अनंत पाया स्वयं, जग को दे सुख दान।
सिद्ध किया हर नाम को, जय 'शंभव' भगवान॥4॥
ॐ ह्रीं अर्हं शंभवाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमानंद विशेष सुख, दाता आप महान्।
तुमको पूजें हम यहाँ, जय 'शंभु' भगवान॥5॥
ॐ ह्रीं अर्हं शंभवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धन्य श्रेष्ठ परमात्मा, करते योगी ध्यान।
आप 'आत्मभू' श्रेष्ठ हो, होवे मम उत्थान॥6॥
ॐ ह्रीं अर्हं आत्मभुवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयं स्वयं में लीन हो, प्रगटा आत्म प्रकाश।
स्वयं प्रकाशित 'स्वयंप्रभ', करते पाप विनाश॥7॥
ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंप्रभाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबके स्वामी आप हो, पूर्ण समर्थ महान्।
तीन लोक त्रयकाल में, तुम हो 'प्रभु' महान्॥ 8॥
ॐ ह्रीं अर्हं प्रभवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नश्वर जग सुख छोड़कर, करें आत्मसुख पान।
आत्म गुणों को भोगते, जय 'भोक्ता' भगवान॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं भोक्त्रे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विश्व व्यापी तुम ज्ञान है, विश्व करे तुम ध्यान।
आप 'विश्वभू' नाथ हो, करो विश्व उत्थान॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वभुवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुनः जन्म लेते नहीं, आप 'अपुनर्भव' नाथ।
जन्म व्याधि मेरी हरो, जय नाथों के नाथ॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं अपुनर्भवाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विश्व व्याप्त तुम आत्मा, विश्व व्यापि तुम ज्ञान।
विश्व भ्रमण मेरा हरो, 'विश्वात्मा' भगवान॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वात्मने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी हो तुम विश्व के, आप 'विश्वलोकेश'।
आत्म विश्व को जानने, पूजें भक्त हमेश॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वलोकेशाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वचक्षु !' जिन आपने, जाना लोक अलोक।
जो अर्चें नित आपको, वो जाने सब लोक॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वतश्चक्षुषे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षरण कभी नहिं आपका, जिन 'अक्षर' हो आप।
अक्षर बनने आप सम, करते हम नित जाप॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं अक्षराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता सर्व पदार्थ के, नाम 'विश्वविद' आप।
वेदन करने आत्म का, करते हम नित जाप॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वविदे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब विद्या के ईश हो, आप 'विश्वविद्येश'।
विद्या का वर दो हमें, पूजें तुम्हें हमेश ॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वविद्येशाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वयोनि' जिन आप से, प्रगटे सर्व पदार्थ।
योनि भ्रमण विनाशकर, पायें हम परमार्थ ॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वयोनये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नश्वर जग सुख छोड़कर, बनें 'अनश्वर' नाथ।
अविनश्वर हम भी बनें, मिले प्रभु का साथ ॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनश्वराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व विश्व को जानते, 'विश्वदृश्व' परमेश।
सर्व विश्व पूजे तुम्हें, पूजें श्रमण गणेश ॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वदृश्वने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ विभूति धारते, आप 'विभू' जिनदेव।
पाने वैभव आप सम, पूजें भक्त सदैव ॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं विभवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जीवों के दुःख हरें, धरें मोक्ष में आप।
सृष्टा मुक्ति मार्ग के, 'धाता' हो जिन आप ॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं धात्रे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ईश्वर हो सब लोक के, आप श्रेष्ठ 'विश्वेश'।
मेरी इच्छा मोक्ष की, पूरी करो जिनेश ॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वेशाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वविलोचन' आप जिन, बतलाया सन्मार्ग।
दर्शन कर हम आपका, त्यागें सब उन्मार्ग ॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वलोचनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वव्यापी' जिन आप हो, विश्वव्यापी तुम ज्ञान।
अर्चा कर हम आपकी, पायें केवलज्ञान॥25॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वव्यापिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्षविधि दर्शा प्रभो, 'विधि' कहलाये आप।
विधि विधान कर आपका, मिटे कर्म का ताप॥26॥

ॐ ह्रीं अर्हं विधये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मविधि के सृजक हो, वैद्य आप जिननाथ।
वेधन कर दो कर्म का, हे 'वेधा' जिननाथ॥27॥

ॐ ह्रीं अर्हं वेधसे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यमान रहते सदा, 'शाश्वत' हो तुम नाथ।
शाश्वत हो हम आप सम, सदा झुकायें माथ॥28॥

ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण में आपका, मुख दिखता चहुँ ओर।
अतः 'विश्वतोमुख' कहे, भव्य जीव सब ओर॥29॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वतोमुखाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

असि आदि आजीविका, सूत्र दिये जिननाथ।
आप 'विश्वकर्त्ता' प्रभो, जय युग सृष्टा नाथ॥30॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वकर्मणे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप जगत् में ज्येष्ठ हो, 'जगज्ज्येष्ठ' जिनदेव।
बने आप सम ज्येष्ठ हम, पूजें तुम्हें सदैव॥31॥

ॐ ह्रीं अर्हं जगज्ज्येष्ठाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब द्रव्यों की आकृति, झलके प्रभु तुम ज्ञान।
धन्य विश्व तुमको कहे, 'विश्वमूर्ति' भगवान॥32॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वमूर्तये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मजयी जिन जगत् के, उनके ईश्वर नाथ।
कर्म शत्रु को जीतकर, बनें 'जिनेश्वर' नाथ॥33॥

ॐ ह्रीं अर्हं जिनेश्वराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब पदार्थ को देखते, देव 'विश्वदृग' आप।
तुम सम दर्शन विश्व का, हमें करा दो आप॥34॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वदृशे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब प्राणी के ईश हो, आप 'विश्वभूतेश'।
सब प्राणी संग आपको, पूजें सर्व सुरेश॥35॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वभूतेशाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान ज्योति जिन आपकी, अखिल विश्व में व्याप्त।
'विश्वज्योति' तव ध्यान कर, ध्यानी बनते आप्त॥36॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वज्योतिषे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोई न स्वामी आपका, सबके स्वामी आप।
धन्य 'अनीश्वर' देव तुम, हरो सकल संताप॥37॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनीश्वराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घातिकर्म शत्रु बड़े, उनके जेता आप।
तुमको त्रिभुवन 'जिन' कहे, जिन तुम हो निष्पाप॥38॥

ॐ ह्रीं अर्हं जिनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शील आपका कर्मजय, वो ही आत्म स्वभाव।
आप 'जिष्णु' भगवान हो, जीते सब परभाव॥39॥

ॐ ह्रीं अर्हं जिष्णवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अनंत हैं आपके, जग जिनसे अनजान।
'अमेयात्म' जिन आप हो, हमको दो वह ज्ञान॥40॥

ॐ ह्रीं अर्हं अमेयात्मने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ईश्वर हो तुम विश्व के, 'विश्वरीश' भगवान।
आत्म विजेता ही बने, जग में ईश महान्।।41।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वरीशाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी तीनों लोक के, 'जगत्पति' जिनदेव।
जग जगमग है आपसे, जय-जय-जय जिनदेव।।42।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगत्पतये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस अनंत संसार के, जेता आप महान्।
भव्यों ने पूजा तुम्हें, 'अनंतजित' भगवान।।43।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतजिते श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम आतम का चिंतवन, मन से भी ना होय।
'अचिन्त्य आत्मा' आप हो, पार लगा दो मोय।।44।।

ॐ ह्रीं अर्हं अचिन्त्यात्मने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप हितैषी भव्य के, 'भव्य बंधु' भगवान।
भव्यों का नित आप ही, कर देते कल्याण।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हं भव्यबांधवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'अबंधन' हो प्रभो, कांटे कर्मन् बंध।
कर्म श्रृंखला मम कटे, ऐसा करो प्रबंध।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं अबंधनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'युगादिपुरुष' हो, युग के तारणहार।
जन्मे युग के आदि में, वंदन बारम्बार।।47।।

ॐ ह्रीं अर्हं युगादिपुरुषाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अनंत नित आपके, वृद्धिंगत हो देव।
सच्चे 'ब्रह्मा' आप हो, पूजें त्रिभुवन देव।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मणे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पंच ब्रह्ममय' आप हो, पंच परम पद रूप।
पंचम गति हमको मिले, पायें ब्रह्म स्वरूप॥49॥

ॐ ह्रीं अर्हं पंचब्रह्ममयाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिव ही सुन्दर सत्य है, शिव ही आनंद रूप।
तुम ही 'शिव' भगवान हो, परमानंद स्वरूप॥50॥

ॐ ह्रीं अर्हं शिवाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्ण किये सम्पूर्ण गुण, सबके पालनहार।
'पर' हो हे भगवान ! तुम, कर दो मम उद्धार॥51॥

ॐ ह्रीं अर्हं पराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में सबसे श्रेष्ठ हो, 'परतर' तुम भगवान।
बने आप सम श्रेष्ठ हम, कर दो जिनकल्याण॥52॥

ॐ ह्रीं अर्हं परतराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम कर्म क्षय कर प्रभो, पाया है गुण 'सूक्ष्म'।
चर्म चक्षु गोचर नहीं, अतः आप हो सूक्ष्म॥53॥

ॐ ह्रीं अर्हं सूक्ष्माय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप परम पद में रहे, 'परमेष्ठी' भगवान।
जो तुम पद में लीन हो, वो बनता भगवान॥54॥

ॐ ह्रीं अर्हं परमेष्ठिने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'सनातन' हो प्रभो, शाश्वत एक समान।
जो ध्याये नित आपको, बनता आप समान॥55॥

ॐ ह्रीं अर्हं सनातनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयं प्रकाशित आप हो, 'स्वयंज्योति' जिनदेव।
पाने स्वयं प्रकाश हित, पूजें तुम्हें सदैव॥56॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंज्योतिषे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में फिर नहीं जन्म हो, 'अज' हो आप जिनेश।
जन्म व्याधि को नाशने, पूजें तुम्हें हमेश॥57॥

ॐ ह्रीं अर्हं अजाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म श्रृंखला तोड़कर, बनें 'अजन्मा' देव।
जन्म श्रृंखला तोड़ने, अर्चें भक्त सदैव॥58॥

ॐ ह्रीं अर्हं अजन्मने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशांग के बीज तुम, 'ब्रह्मयोनि' भगवान।
आत्म ब्रह्म को जानने, करें तुम्हारा ध्यान॥59॥

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मयोनये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौरासी लख योनि की, जन्म श्रृंखला काट।
आप 'अयोनिज' बन गये, त्रिभुवन के सम्राट॥60॥

ॐ ह्रीं अर्हं अयोनिजाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मोहारिविजयी' बने, मोह अरि को जीत।
जग को दिखलाई प्रभो, मोह विजय की रीत॥61॥

ॐ ह्रीं अर्हं मोहारिविजयिने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मशत्रु को जीतकर, 'जेता' जिन कहलाय।
भक्त तुम्हें ध्याकर प्रभो, जग जेता बन जाय॥62॥

ॐ ह्रीं अर्हं जेत्रे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मचक्र तुमसे चला, 'धर्मचक्री' तीर्थेश।
धर्मचक्र चलता रहे, मिटे पाप संक्लेश॥63॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मचक्रिणे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दया आपकी है ध्वजा, आप 'दयाध्वज' नाम।
दया जगत् में हो सदा, मिटे पाप का नाम॥64॥

ॐ ह्रीं अर्हं दयाध्वजाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रशान्तारि' तुम हो प्रभो, कर्म वैरी कर शांत।
तुम सम कर्म विनाशकर, पहुँचे हम लोकांत॥65॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रशान्तारये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'अनंतात्मा' प्रभो, पा न सके तुम अंत।
जाप करें हम आपका, पायें ज्ञान अनंत॥66॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतात्मने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन योग को सिद्ध कर, 'योगी' आप कहाय।
तुममें बस उपयोग हो, योग सिद्ध हो जाय॥67॥

ॐ ह्रीं अर्हं योगिने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'योगिश्वरार्चित' तुम प्रभो, योगीश्वर से पूज्य।
योग धरे जो आपका, बने जगत् में पूज्य॥68॥

ॐ ह्रीं अर्हं योगीश्वरार्चिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'ब्रह्मविद्' हो प्रभो, कर शुद्धातम ज्ञान।
आत्मब्रह्म हम जान लें, करके आप विधान॥69॥

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मविदे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव 'ब्रह्मतत्त्वज्ञ' तुम, आत्म तत्त्व मर्मज्ञ।
घाति कर्म को नाशकर, बने आप सर्वज्ञ॥70॥

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मतत्त्वज्ञाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्ण ज्ञानधर तुम विभो, 'ब्रह्मोद्यावित्' आप।
आत्म ब्रह्म विद्या जगा, बने आप निष्पाप॥71॥

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मोद्याविदे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यतियों के ईश्वर तुम्हीं, धन्य 'यतीश्वर' देव।
यतिपति गणधर सूरि सब, पूजें तुम्हें सदैव॥72॥

ॐ ह्रीं अर्हं यतीश्वराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म कलंक विनाशकर, हुये 'शुद्ध' जिनदेव।
तुम सम तप को धार हम, बने शुद्ध स्वयमेव॥73॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलबुद्धि के धनी, 'बुद्ध' आप तीर्थेश।
तुम सम बुद्धि लाभ हित, पूजें तुम्हें जिनेश॥74॥

ॐ ह्रीं अर्हं बुद्धाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धन्य 'प्रबुद्धात्मा' प्रभो, जग को किया प्रबुद्ध।
मंत्राराधन आपका, करता पूर्ण प्रबुद्ध॥75॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रबुद्धात्मने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध हुए सब अर्थ में, धन्य-धन्य 'सिद्धार्थ'।
सिद्ध होय सब अर्थ मम, कृपा करो सिद्धार्थ॥76॥

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धार्थाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'सिद्धशासन' प्रभो, शासन आप प्रसिद्ध।
जो-जो तुम पथ पर चले, वो भी बनें प्रसिद्ध॥77॥

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धशासनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब कर्मों का नाशकर, 'सिद्ध' बनें जिनदेव।
अपनाये तुम सूत्र जो, सिद्ध बनें स्वयमेव॥78॥

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर तुम 'सिद्धांतविद्', जाने सब सिद्धांत।
अनपढ़ भी तुम भक्ति से, जाने सब सिद्धांत॥79॥

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धांतविदे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन ध्याये आपको, 'ध्येय' जगत् में आप।
ध्येय तुम्हारे ध्यान में, मिटते सब संताप॥80॥

ॐ ह्रीं अर्हं ध्येयाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सिद्धसाध्य' तीर्थेश तुम, सिद्ध किये सब साध्य।
आप भक्ति से भक्त के, सिद्ध होय सब साध्य॥81॥

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्ध साध्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग का हित करने प्रभो, बने 'जगद्धित' देव।
मेरा भी हित तुम करो, मेटो पाप कुटेव॥82॥

ॐ ह्रीं अर्हं जगद्धिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सहनशील गुण क्षमाधर, आप 'सहिष्णु' नाथ।
पूर्ण सहिष्णु हम बने, तुम सम हे जिननाथ !॥83॥

ॐ ह्रीं अर्हं सहिष्णवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण से च्युत ना हो कभी, तुम हो 'अच्युत' नाथ।
अच्युत पद हित हम करें, भक्ति तुम्हारी नाथ॥84॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अच्युताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप गुणों का अन्त ना, जिन हो आप 'अनंत'।
पूजें तुमको रात दिन, पाने सुगुण अनंत॥85॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनंताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम प्रभावशाली प्रभो, 'प्रभविष्णु' भगवान।
रत्नत्रय के तेज से, किया स्वपर उत्थान॥86॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रभविष्णवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म सर्व उत्कृष्ट तुम, आप 'भवोद्भव' देव।
भव-भव के जंजाल से, पार करो जिनदेव॥87॥

ॐ ह्रीं अर्हं भवोद्भवाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप शक्तिशाली प्रभो, धन्य 'प्रभूष्णु' देव।
आप नाम की शक्ति से, मिलती शक्ति सदैव॥88॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रभूष्णवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं बुढ़ापा आपके, आप 'अजर' भगवान।
जरा व्याधि मेरी मिटे, कर दो जिनकल्याण ॥89॥

ॐ ह्रीं अर्हं अजराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीर्ण कभी होते नहीं, तुम 'अजर्य' भगवान।
हरो हमारी जीर्णता, करो नाथ उत्थान ॥90॥

ॐ ह्रीं अर्हं अजर्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अनंत से दीप्य हो, 'भ्राजिष्णु' भगवान।
तुम सम गुण के लाभ हित, हमने रचा विधान ॥91॥

ॐ ह्रीं अर्हं भ्राजिष्णवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ईश्वर केवल बुद्धि के, 'धीश्वर' तुम तीर्थेश।
पूर्ण बुद्धि के लाभ हित, पूजें तुम्हें हमेश ॥92॥

ॐ ह्रीं अर्हं धीश्वराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाश नहीं जिन आपका, 'अव्यय' हो भगवान।
अव्यय सुख हमको मिले, ऐसा दो वरदान ॥93॥

ॐ ह्रीं अर्हं अव्ययाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मेन्धन को अग्नि तुम, मोह-तिमिर क्षयकार।
धन्य 'विभावसु' नाथ तुम, कर दो मम उद्धार ॥94॥

ॐ ह्रीं अर्हं विभावसे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुनर्जन्म नहीं आपका, 'असम्भूष्णु' भगवान।
जन्म व्याधि मेरी हरो, कर दो आप समान ॥95॥

ॐ ह्रीं अर्हं असम्भूष्णवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयं बने भगवान तुम, 'स्वयंभूष्णु' भगवान।
स्वयं बने भगवान हम, दो वह सूत्र महान् ॥96॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंभूष्णवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप अनादि सिद्ध हो, दिव्य 'पुरातन' नाथ।
हरो पुरातन कर्म सब, हे नाथों के नाथ !॥97॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुरातनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति उत्कृष्ट स्वरूप तुम, 'परमात्मा' जिनराज।
करो ध्यान परमात्म का, कहते सब जिनराज॥98॥

ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमज्योति उत्कृष्ट तुम, 'परंज्योति' परब्रह्म।
परंज्योति के ध्यान से, पायें हम चिद्ब्रह्म॥99॥

ॐ ह्रीं अर्हं परमज्योतिषे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप त्रिजग 'परमेश' हो, तीन लोक के ईश।
तीन लोक तुमको भजे, सदा नमावें शीश॥100॥

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिजगत्परमेश्वराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

आप 'दिव्यभाषापति', दिव्य ध्वनि के ईश।
दिव्यध्वनि श्रुत लाभ हित, तुम्हें नमावें शीश॥101॥

ॐ ह्रीं अर्हं दिव्यभाषापतये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य भाव तन रूप तुम, दिव्य आपका नाम।
हर शचि को सम्यक्त्वप्रद, तुमको कोटि प्रणाम॥102॥

ॐ ह्रीं अर्हं दिव्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिपवित्र वाणी धनी, 'पूतवाक्' तुम नाम।
तुम सम वाणी लाभ हित, तुमको करें प्रणाम॥103॥

ॐ ह्रीं अर्हं पूतवाचे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'पूतशासन' विभो, शासन पूत पवित्र।
पूत करो भव्यात्म को, हे निष्कारण मित्र !॥104॥

ॐ ह्रीं अर्हं पूतशासनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पवित्र है तुम आत्मा, 'पूतात्मा' भगवान।
पावन हो मम आत्मा, ऐसा हो उत्थान॥105॥

ॐ ह्रीं अर्हं पूतात्मने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम ज्योति स्वरूप तुम, 'परमज्योति' जिनदेव।
आतम ज्योति प्रकाश हित, ज्योत लगायें सदैव॥106॥

ॐ ह्रीं अर्हं परमज्योतिषे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मतीर्थ अध्यक्ष तुम, 'धर्माध्यक्ष' जिनेश।
तीन काल पूजें तुम्हें, ब्रह्मा विष्णु महेश॥107॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्माध्यक्षाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रियजय में अग्रणी, आप 'दमीश्वर' देव।
तुम सम इन्द्रिय दमन की, कला सिखा दो देव !॥108॥

ॐ ह्रीं अर्हं दमीश्वराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्षलक्ष्मी के नाथ तुम, 'श्रीपति' हो भगवान।
जाप करे जो आपका, बनता वो श्रीमान्॥109॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीपते श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रातिहार्य वसुद्रव्य से, पूजित जिन 'भगवान'।
प्रातिहार्य अर्पण करें, करते हम गुणगान॥110॥

ॐ ह्रीं अर्हं भगवते श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक से पूज्य हैं, श्री 'अर्हन्' परमेश।
जो पूजे नित आपको, अर्हत् बने विशेष॥111॥

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म धूलि से रहित हो, 'अरजा' तुम भगवान।
कर्मधूलि मेरी हटे, होवे मम कल्याण॥112॥

ॐ ह्रीं अर्हं अरजसे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव्यों के कलिमल हरें, करके अघ रज नाश।
देव 'विरज' तुमसे हुआ, जग में धर्म प्रकाश॥113॥

ॐ ह्रीं अर्हं विरजसे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति पवित्र जिनदेव तुम, जग प्रसिद्ध 'शुचि' नाम।
भव्यातम शुचि हो प्रभो, इस हित करें प्रणाम॥114॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुचये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मतीर्थ कर्त्ता तुम्हीं, धन्य 'तीर्थकृत्' देव।
तिरे हमारी आतमा, तुमको नमन सदैव॥115॥

ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थकृते श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'केवली' हो प्रभो, पाया केवलज्ञान।
ध्यान करें हम आपका, पायें केवलज्ञान॥116॥

ॐ ह्रीं अर्हं केवलिने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अनंत सामर्थ्य युत, जिन हो तुम 'ईशान'।
पायें गुण ऐश्वर्य हम, करके श्रेष्ठ विधान॥117॥

ॐ ह्रीं अर्हं ईशानाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर तुम 'पूजार्ह' हो, तुम पूजा के योग्य।
पूजा कर हम आपकी, तुम सम बनें सुयोग्य॥118॥

ॐ ह्रीं अर्हं पूजार्हाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घातिकर्म क्षय कर प्रभो, पाया ज्ञान अनंत।
जिन 'स्नातक' तुम बने, जय-जय ज्ञान भदंत॥119॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्नातकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम तन मल से रहित हो, राग–द्वेष परिहीन।
धन्य–धन्य जिन 'अमल' तुम, भाव द्रव्य मल हीन॥120॥

ॐ ह्रीं अर्हं अमलाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'अनंतदीप्ति' तुम्ही, दिव्य अनंत प्रकाश।
पूजें हम नित आपको, पाने ज्ञान प्रकाश॥121॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतदीप्तये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्ञानात्मा' तुम हो प्रभो, आत्मा ज्ञान स्वरूप।
ज्ञानवान बनने विभो, पूजें हम जिन रूप॥122॥

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानात्मने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग से स्वयं विरक्त हो, पाया पद निर्वाण।
बिन गुरु पाते सर्व जय, 'स्वयंबुद्ध' भगवान॥123॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंबुद्धाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम जग के प्रतिपाल हो, आप 'प्रजापति' नाथ।
आये हम तुम चरण में, शरण दीजिये नाथ॥124॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रजापतये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मजाल से मुक्त हो, 'मुक्त' सिद्ध है नाम।
मुक्ति पाने हम जपें, सदा तुम्हारा नाम॥125॥

ॐ ह्रीं अर्हं मुक्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बल अनन्त सम्पन्न हो, 'शक्त' नाम तीर्थेश।
हतबल भी बलवंत हो, तुमको पूज हमेश॥126॥

ॐ ह्रीं अर्हं शक्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाधा ना उपसर्ग हो, 'निराबाध' भगवान।
तुमको ध्या निर्बाध हो, भक्तों का कल्याण॥127॥

ॐ ह्रीं अर्हं निराबाधाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छल बल माया छोड़कर, 'निष्कल' हुए जिनेश।
तुम सम निष्कल हम बने, ध्या निष्कल परमेश॥128॥

ॐ ह्रीं अर्हं निष्कलाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक भुवनेश तुम, 'भुवनेश्वर' भूदेव।
हृदय भुवन मेरे बसो, दो मुक्ति भूदेव॥129॥

ॐ ह्रीं अर्हं भुवनेश्वराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मरूप अंजन रहित, आप निरंजन देव।
कर्मांजन मेरा हरो, जय-जय-जय जिनदेव॥130॥

ॐ ह्रीं अर्हं निरंजनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किया प्रकाशित जगत् को, 'जगज्ज्योति' बन आप।
आत्मज्योति मम प्रगट हो, तुम सम बन निष्पाप॥131॥

ॐ ह्रीं अर्हं जगज्ज्योतिषे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचन सिद्ध सार्थक प्रभो, पूर्वापर अविरोध।
'निरुक्तोक्ति' तुम ध्यान से, हो आतम सम्बोध॥132॥

ॐ ह्रीं अर्हं निरुक्तोक्तये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वरोग विरहित तुम्हीं, रोग विनाशक देव।
नाम 'निरामय' सिद्ध है, करो अनामय देव॥133॥

ॐ ह्रीं अर्हं निरामयाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्थिति 'अचल' जिनेश तुम, अचल द्रव्य गुण आप।
अर्चा कर हम आपकी, बनें अचल निष्पाप॥134॥

ॐ ह्रीं अर्हं अचल स्थितये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर तुम अक्षोभ्य हो, कभी न करते क्षोभ।
तुम अर्चा से हे प्रभो !, मिट जाये मम क्षोभ॥135॥

ॐ ह्रीं अर्हं अक्षोभ्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर तुम गुण नित्य हैं, बने आप 'कूटस्थ'।
तुम पथ का अनुशरण कर, बन जायें हम स्वस्थ॥136॥

ॐ ह्रीं अर्हं कूटस्थाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर तुम 'स्थाणु' हो, गमनागमन विहीन।
पंच परावर्तन हरो, करो हमें स्वाधीन॥137॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्थाणवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कभी तुम्हारा क्षय नहीं, 'अक्षय' हो भगवान।
अक्षय अर्चा हम करें, दो अक्षय सुखदान॥138॥

ॐ ह्रीं अर्हं अक्षयाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबसे श्रेष्ठ त्रिलोक में, आप 'अग्रणी' देव।
तुमको ध्या नासाग्र हम, बनें अग्र जिनदेव॥139॥

ॐ ह्रीं अर्हं अग्रण्यै श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव्यों को शिवसुख दिला, बनें 'ग्रामणी' देव।
तुमको ध्या हम पायेंगे, मोक्षधाम स्वयंमेव॥140॥

ॐ ह्रीं अर्हं ग्रामण्यै श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सच्चे 'नेता' आप हो, ले जाते शिवधाम।
अतः नित्य तुमको भजे, तीन लोक अविराम॥141॥

ॐ ह्रीं अर्हं नेत्रे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशांग तुमने रचा, बनें 'प्रणेता' नाथ।
प्रणय किया शिव रमा से, हमको भी दो साथ॥142॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रणेत्रे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

न्याय शास्त्र सिखला बने, 'न्यायशास्त्रकृत्' देव।
कर्मों का अन्याय सब, नाशो हे जिनदेव !॥143॥

ॐ ह्रीं अर्हं न्यायशास्त्रकृते श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शास्ता' बन प्रभु ने दिया, जग को हित उपदेश।
हम हृदयंगम कर उसे, पायें मोक्ष प्रदेश॥144॥

ॐ ह्रीं अर्हं शास्त्रे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धर्मपति' तीर्थेश तुम, दश धर्मों के ईश।
अपनायें दस धर्म हम, तुम्हें नमावें शीश॥145॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मपतये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मसहित धर्मात्मा, आप 'धर्म्य' हो नाथ।
पाने आतम धर्म को, तुम्हें नमावें माथ॥146॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्म्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्ममयी तुम आतमा, 'धर्मात्मा' जगसिद्ध।
धर्मधार तुम सम प्रभो, बन जायें हम सिद्ध॥147॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मात्मने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मतीर्थकर्त्ता प्रभो, 'धर्मतीर्थकृत' नाम।
धर्मतीर्थ शाश्वत रहे, रहे धर्म का नाम॥148॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मतीर्थकृते श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्वज में वृष है आपके, लांछन वृषभ महान्।
'वृषध्वज' नाम प्रसिद्ध तुम, जैन धर्म की शान॥149॥

ॐ ह्रीं अर्हं वृषध्वजाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वृषाधीश' हो नाथ तुम, पहले धर्माधीश।
तुमने जग वृषमय किया, जय-जय जिन आदीश॥150॥

ॐ ह्रीं अर्हं वृषाधीशाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म पताका आप हो, 'वृषकेतु' है नाम।
धर्मध्वजा हम भी धरें, करें धर्म का नाम॥151॥

ॐ ह्रीं अर्हं वृषकेतवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मशस्त्र लेकर किया, कर्म शत्रु का नाश।
आप 'वृषायुध' हो प्रभो, कर दो मम दुःख नाश॥152॥

ॐ ह्रीं अर्हं वृषायुधाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मरूप तुम आत्मा, तुम हो 'वृष' भगवान।
हम पायें निजधर्म को, कर सम्यक् श्रद्धान॥153॥

ॐ ह्रीं अर्हं वृषाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी हो तुम धर्म के, पाया 'वृषपति' नाम।
निज वृष पाने हम करें, तुमको नित्य प्रणाम॥154॥

ॐ ह्रीं अर्हं वृषपतये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करते पोषण भरण तुम, तिहुँ जग का जिनदेव।
सच्चे 'भर्त्ता' आप हो, जय भर्त्ता जिनदेव॥155॥

ॐ ह्रीं अर्हं भर्त्रे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धन्य नाम 'वृषभांक' तुम, वृषभ चिन्ह जगसिद्ध।
धर्म धरें हम आप सम, बनें निरामय सिद्ध॥156॥

ॐ ह्रीं अर्हं वृषभांकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पात्रदान आदिक् धरम, भव-भव में कर आप।
वृषभोदय करते सदा, धन्य 'वृषोद्भव' आप॥157॥

ॐ ह्रीं अर्हं वृषोद्भवाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'हिरण्यनाभि' प्रभो !, नाभि हिरण्य समान।
जैसे तीनों लोक में, मेरु नाभि प्रमाण॥158॥

ॐ ह्रीं अर्हं हिरण्यनाभये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करके सत्य प्रत्यक्ष जिन, 'भूतात्मा' कहलाय।
नाथ तिहारे जाप से, भूत-प्रेत भग जाय॥159॥

ॐ ह्रीं अर्हं भूतात्मने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन के सब जीव के, रक्षक तुम भगवान।
आप 'भूतभृत्' हो प्रभो, कहते सब विद्वान॥160॥

ॐ ह्रीं अर्हं भूतभृते श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमन 'भूतभावन' तुम्हें, करी भावना श्रेष्ठ।
करके तुम सम भावना, बन जायें हम श्रेष्ठ॥161॥

ॐ ह्रीं अर्हं भूतभावनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म समय में ही पड़ा, प्रभु तुम अमिट प्रभाव।
'प्रभव' नाम सार्थक किया, हरकर सब दुर्भाव॥162॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रभवाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस असार संसार से, रहित 'विभव' जिन आप।
पाया वैभव आत्म का, धन्य विभव निष्पाप॥163॥

ॐ ह्रीं अर्हं विभवाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय के तेज से, दीप्यमान भगवान।
तुम्हीं हो 'भास्वान' जिन, बसो हृदय भगवान॥164॥

ॐ ह्रीं अर्हं भास्वते श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रतिपल नव उत्पाद व्यय, ध्रौव्य रूप 'भव' आप।
मेरा भव-भव का भ्रमण, हरलो जिन भव आप॥165॥

ॐ ह्रीं अर्हं भवाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज चैतन्य स्वरूप में, लीन आप परमेश।
'भाव' तुम्हारी भक्ति से, मिले स्वभाव विशेष॥166॥

ॐ ह्रीं अर्हं भावाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगत् भ्रमण का अंत तुम, करते देव सदैव।
सिद्ध 'भवान्तक' नाम तुम, हरलो कर्म कुदैव॥167॥

ॐ ह्रीं अर्हं भवान्तकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गर्भवास से बन गई, धरती स्वर्ण समान।
श्री 'हिरण्यगर्भाय' तुम, बसो हृदय मम आन॥168॥

ॐ ह्रीं अर्हं हिरण्यगर्भाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंत चतुष्टय लक्ष्मी तुम, अंतरंग श्रीमान्।
तुमको ध्या 'श्रीगर्भजिन', हम भी हो श्रीमान्॥169॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीगर्भाय नमः श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमःनिर्वपामीति स्वाहा।

महापुण्य से आपको, वैभव मिला अपार।
'प्रभूत विभव' शुभ नाम पा, बाटा सौख्य अपार॥170॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रभूतविभवाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म श्रृंखला तोड़कर, 'अभव' बने जिन नाथ।
जन्म मरण निज नाशने, तुम्हें झुकायें माथ॥171॥

ॐ ह्रीं अर्हं अभवाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होकर स्वयं समर्थ तुम, कर युग नव निर्माण।
'स्वयंप्रभु' बन आपने, किया आत्म कल्याण॥172॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंप्रभाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वव्यापि तुम आत्मा, व्यापक केवलज्ञान।
इस कारण तुम्हीं प्रभो, 'प्रभूतात्म' भगवान॥173॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रभूतात्मने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी तुम सब जीव के, 'भूतनाथ' भगवान।
हम भी आये तुम शरण, कर दो जिन कल्याण॥174॥

ॐ ह्रीं अर्हं भूतनाथाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग के पालनहार हो, 'जगत्प्रभू' जिनदेव।
जगत् भ्रमण मेरा हरो, जय-जय जिनदेव॥175॥

ॐ ह्रीं अर्हं जगत्प्रभवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम ही सबसे मुख्य हो, 'सर्वादि' जिनराज।
हम पूजें नित आपको, पाने मोक्ष स्वराज॥176॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वादये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'सर्वदृक' हो प्रभो !, देखा लोक अलोक।
तुम सम चर्या पाल हम, करें आत्म अवलोक॥177॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वदृशे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुमने सबका हित किया, 'सार्व' कहें सब इन्द्र।
मेरा भी अब हित करो, हे मुनियों के इन्द्र॥178॥

ॐ ह्रीं अर्हं सार्वाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वज्ञेय' ज्ञाता तुम्हीं, जगत् कहें सर्वज्ञ।
हम पूजें नित आपको, बनने जिन सर्वज्ञ॥179॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वज्ञाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवल दर्शन पूर्ण तुम, सम्यक्दर्शन पूर्ण।
अतः 'सर्वदर्शन' करो, मोह हमारा चूर्ण॥180॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वदर्शनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबके हित चिन्तक तुम्हीं, करते आप समान।
हम ध्यायें नित आपको, 'सर्वात्मा' भगवान॥181॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वात्मने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी तीनों लोक के, आप 'सर्व लोकेश'।
हम भी आये तुम शरण, पूजें तुम्हें हमेश॥182॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वलोकेशाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'सर्वविद' हो प्रभो !, जाने सर्व पदार्थ।
हम जाने बस आपको, पायें निज परमार्थ॥183॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वविदे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वलोकजित' तुम बने, सर्वलोक को जीत।
सबसे सुन्दर रूप तुम, जग के सच्चे मीत॥184॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वलोकजिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्षगति तुम श्रेष्ठतम, सबसे उत्तम ज्ञान।
आप 'सुगति' संज्ञा बनी, दो जिन सम्यक्ज्ञान॥185॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुगतये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुश्रुत' नाम प्रसिद्ध तुम, धरते उत्तम शास्त्र।
तुम सम मोह विनाश हित, पायें श्रुत ब्रह्मास्त्र॥186॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुश्रुताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुनते सबकी प्रार्थना, रखते सबका ध्यान।
मेरी भी अर्जी सुनो, हे 'सुश्रुत' ! भगवान॥187॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुश्रुते श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबसे उत्तम वचन तुम, हितकर शास्त्र प्रमाण।
मम वच तुम सम श्रेष्ठ हो, हे 'सुवाक्' भगवान॥188॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुवाचे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप गुरु त्रैलोक्य के, सब विद्या के ईश।
हमको विद्या दान दो, हे 'सूरि' जगदीश॥189॥

ॐ ह्रीं अर्हं सूरये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पारगामी सब शास्त्र के, तुम 'बहुश्रुत' भगवान।
प्रभु तुम अर्चा से मिले, हमको बहुश्रुत ज्ञान॥190॥

ॐ ह्रीं अर्हं बहुश्रुताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रसिद्ध केवलज्ञान में, विलय हुआ श्रुतज्ञान।
हमको भी वह ज्ञान हो, हे 'विश्रुत' भगवान॥191॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्रुताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनकेवल रवि रश्मियाँ, फैली लोक अलोक।
प्रभो 'विश्वतःपाद' तुम, हरो जगत् का शोक॥192॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वतःपादाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक शिखर पर राजते, पाकर मोक्ष महान्।
पायें तुम सम मोक्ष हम, 'विश्वशीर्ष' भगवान॥193॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वशीर्षाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रवण ज्ञान शुचितम धरें, 'शुचिश्रवा' भगवान।
तुम अर्चा कर हम वरें, शुचितम केवलज्ञान॥194॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुचिश्रवसे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुख अनंत पाकर वरी, संज्ञा 'सहस्रशीर्ष'।
दुःखहर सौख्य अनंत दो, पहुँचाओ जग शीर्ष॥195॥

ॐ ह्रीं अर्हं सहस्रशीर्षाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता आतम क्षेत्र के, सर्व क्षेत्र के नाथ।
श्री 'क्षेत्रज्ञ' जिनेश तुम, हमें दीजिये साथ॥196॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्षेत्रज्ञाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञायक द्रव्य अनंत के, 'सहस्राक्ष' जिनदेव।
करने आत्म प्रत्यक्ष हम, पूजें तुम्हें सदैव॥197॥

ॐ ह्रीं अर्हं सहस्राक्षाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बल अनंत पाकर बने, 'सहस्रपाद' जिनदेव।
सेवा से निजबल मिले, तुम सम हे जिनदेव !॥198॥

ॐ ह्रीं अर्हं सहस्रपादे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी तुम त्रयकाल के, त्रिभुवन के भर्तार।
तुम ही दुःखहर्त्ता प्रभो, सुख अनंत कर्त्तार॥199॥

ॐ ह्रीं अर्हं भूतभव्यभवद्भर्त्रे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप महेश्वर विश्व के, सब विद्या के ईश।
मोक्ष महाविद्या वरें, तुम सम हम जगदीश॥200॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वविद्या महेश्वराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौपाई

गुण से अति स्थूल कहाये, 'स्थविष्ठ' प्रभु नाम धराये।
प्रभु के सिद्धनाम हम ध्यायें, ध्वजा फलादिक् अर्घ चढ़ायें॥201॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्थविष्ठाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान गुणों से आप वृद्ध हो, आप 'स्थविर' परम शुद्ध हो॥ प्रभु..॥202॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्थविराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन में अतिशय प्रशस्त हो, 'ज्येष्ठ' नाम जप आत्म स्वस्थ हो॥ प्रभु..॥203॥

ॐ ह्रीं अर्हं ज्येष्ठाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप अग्रगामी हो सबके, 'पृष्ठ' नाम दुनियाँ में चमके॥ प्रभु..॥204॥

ॐ ह्रीं अर्हं पृष्ठाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबको अतिशय प्रिय जिनरायी, अतः 'प्रेष्ठ' जिन संज्ञा पाई॥ प्रभु..॥205॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रेष्ठाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बुद्धि अतिशय श्रेष्ठ आपकी, प्रभु कहलाते हो 'वरिष्ठधी'॥ प्रभु..॥206॥

ॐ ह्रीं अर्हं वरिष्ठधिये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज स्वभाव से पूर्ण नित्य हो, तीर्थंकर 'स्थेष्ठ' सिद्ध हो॥ प्रभु..॥207॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्थेष्ठाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण से भारी जिन 'गरिष्ठ' हो, इस चौबीसी में वरिष्ठ हो॥ प्रभु..॥208॥

ॐ ह्रीं अर्हं गरिष्ठाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण से रूप अनेक तुम्हारे, तीर्थंकर 'बंहिष्ठ' हमारे॥ प्रभु..॥209॥

ॐ ह्रीं अर्हं बंहिष्ठाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे जिन ! तुम अतिशय प्रशस्त हो, 'श्रेष्ठ' नाम से जग प्रसिद्ध हो।
प्रभु के सिद्धनाम हम ध्यायें, ध्वजा फलादिक् अर्घ चढ़ायें॥210॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रेष्ठाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय सूक्ष्म आप जिनदेवा, अतः 'अणिष्ठ' कहे श्रुतदेवा॥ प्रभु..॥211॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अणिष्ठाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति गौरव युत वचन मनोहर, तुम 'गरिष्ठगी' हो तीर्थंकर॥ प्रभु..॥212॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री गरिष्ठगिरे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चहुँगति जग का भ्रमण मिटाया, आप 'विश्वभृत्' नाम कहाया॥ प्रभु..॥213॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वभृते श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करते तुम सब जगत् व्यवस्था, आप 'विश्वसृट' हो भगवंता॥ प्रभु..॥214॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वसृजे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वलोक ईश्वर पद पाये, इसीलिए 'विश्वेट' कहाये॥ प्रभु..॥215॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वेटाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वजगत् की करते रक्षा, करो 'विश्वभुक्' मेरी रक्षा॥ प्रभु..॥216॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विश्वभुजे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमःअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'विश्वनायक' जगनामी, अखिल लोक के तुम हो स्वामी॥ प्रभु..॥217॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वनायकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानापेक्षा सब जग वासी, जिन तुम कहलाते 'विश्वासी'॥ प्रभु..॥218॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वासिसे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर आप 'विश्वरूपात्मा', तुम अनेकरूपी ज्ञानात्मा॥ प्रभु..॥219॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वरूपात्मने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर तुम हो सबके जेता, नाम 'विश्वजित्' विश्वविजेता॥ प्रभु..॥220॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वजिते श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम अन्तक मृत्यु के जेता, 'विजितान्तक' हो कर्म विजेता॥ प्रभु..॥221॥

ॐ ह्रीं अर्हं विजितान्तकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु संसार भ्रमण विनशाया, 'विभव' नाम का वैभव पाया।
प्रभु के सिद्धनाम हम ध्यायें, ध्वजा फलादिक् अर्घ चढ़ायें॥222॥

ॐ ह्रीं अर्हं विभवाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'विभय' सब भय विनशायें, तुम सम हम जिन भय विनशायें॥ प्रभु..॥223॥

ॐ ह्रीं अर्हं विभयाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वीर' अनंतवीर्य बलशाली, तुम पूजक बनता बलशाली॥ प्रभु..॥224॥

ॐ ह्रीं अर्हं वीराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'विशोक' सब शोक नशायें, सब भक्तों के शोक नशायें॥ प्रभु..॥225॥

ॐ ह्रीं अर्हं विशोकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप बुढ़ापा रहित जिनेशा, 'विजर' नाम पाया परमेशा॥ प्रभु..॥226॥

ॐ ह्रीं अर्हं विजराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में अतिप्राचीन तुम्हीं हो, अतः 'जरन्' जिननाथ तुम्हीं हो॥ प्रभु..॥227॥

ॐ ह्रीं अर्हं जरते श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'विराग' जिन राग रहित हो, तुम सम हम वैराग्य सहित हो॥ प्रभु..॥228॥

ॐ ह्रीं अर्हं विरागाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाप 'विरत' हो विरत बने जिन, हमें पाप से विरत करो जिन॥ प्रभु..॥229॥

ॐ ह्रीं अर्हं विरताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिग्रह रहित 'असंग' कहायें, मेरा कर्म कुसंग भगायें॥ प्रभु..॥230॥

ॐ ह्रीं अर्हं असंगाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति पवित्र जिन तुम 'विविक्त' हो, तुमको ध्या हम भी विविक्त हो॥ प्रभु..॥231॥

ॐ ह्रीं अर्हं विविक्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छोड़ा मत्सर पाप नशाया, बने 'वीतमत्सर' जिनराया॥ प्रभु..॥232॥

ॐ ह्रीं अर्हं वीतमत्सराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिष्य जनों के हित चिन्तक हो, तुम 'विनेयजनताबांधव' हो।
प्रभु के सिद्धनाम हम ध्यायें, ध्वजा फलादिक् अर्घ चढ़ायें॥233॥

ॐ ह्रीं अर्हं विनेयजनताबांधवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'विलीनाशेषकल्मषं', नाशे कर्म कषाय कल्मषं॥ प्रभु..॥234॥

ॐ ह्रीं अर्हं विलीनाशेषकल्मषाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'वियोग' त्रियोग रहित हो, तुम सम हम त्रययोग रहित हो॥ प्रभु..॥235॥

ॐ ह्रीं अर्हं वियोगाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

योग ध्यान मर्मज्ञ जिनेश्वर, आप 'योगविद्' हो तीर्थेश्वर॥ प्रभु..॥236॥

ॐ ह्रीं अर्हं योगविदे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'विद्वान्' द्रव्य के ज्ञानी, मम अज्ञान हरो हे स्वामी !॥ प्रभु..॥237॥

ॐ ह्रीं अर्हं विदुषे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मसृष्टि के आप 'विधाता', धर्मतीर्थ के तुम ही दाता॥ प्रभु..॥238॥

ॐ ह्रीं अर्हं विधात्रे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुम कार्य जगत् में उत्तम, 'सुविधि' नाम पाया पुरुषोत्तम॥ प्रभु..॥239॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुविधये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम सर्वोत्तम बुद्धि पायी, 'सुधी' नाम पाया जिनरायी॥ प्रभु..॥240॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुधिये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'क्षाँतिभाक्' जिनवर कहलाये, उत्तम क्षमा धर्म फैलाये॥ प्रभु..॥241॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्षांतिभाजे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सहनशीलता इतनी पाई, 'पृथ्वीमूर्ति' जिन संज्ञा पायी॥ प्रभु..॥242॥

ॐ ह्रीं अर्हं पृथ्वीमूर्तये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शांतिभाक्' जिन शांति उपासक, हम सब हैं उनके आराधक॥ प्रभु..॥243॥

ॐ ह्रीं अर्हं शांतिभाजे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जल सम शीतलता तुम देते, इन्द्र तुम्हें 'सलिलात्मक' कहते।
प्रभु के सिद्धनाम हम ध्यायें, ध्वजा फलादिक् अर्घ चढ़ायें॥244॥

ॐ ह्रीं अर्हं सलिलात्मकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप वायु सम संग रहित हो, 'वायुमूर्ति' तीर्थेश तुम्हीं हो॥ प्रभु..॥245॥

ॐ ह्रीं अर्हं वायुमूर्तये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिग्रह रहित 'असंग' आत्मा हो, मेरा मूर्छाभाव दूर हो॥ प्रभु..॥246॥

ॐ ह्रीं अर्हं असंगात्मने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्याग्नि में कर्म जलाये, 'वन्हिमूर्ति' जिनदेव कहाये॥ प्रभु..॥247॥

ॐ ह्रीं अर्हं वह्निमूर्त्तये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुमने पाप अधर्म जलाया, श्री 'अधर्मधक्' नाम कहाया॥ प्रभु..॥248॥

ॐ ह्रीं अर्हं अधर्मधके श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म काष्ठ को होम दिया है, नाम 'सुयज्वा' प्राप्त किया है॥ प्रभु..॥249॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुयज्वने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'यजमानात्मा' तुम हो दादा, तुमने निज आतम को साधा॥ प्रभु..॥250॥

ॐ ह्रीं अर्हं यजमानात्मने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर तुम 'सुत्वा' कहलाते, आत्म सुखोदधि में नहलाते॥ प्रभु..॥251॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुत्वने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शत इन्द्रों से पूजे जाते, श्री 'सुत्रामपूज्य' कहलाते॥ प्रभु..॥252॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुत्राम पूजिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान यज्ञ सबको सिखलाया, जय 'ऋत्विक' इन्द्रों ने गाया॥ प्रभु..॥253॥

ॐ ह्रीं अर्हं ऋत्विजे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप यज्ञ अग्रिम अधिकारी, 'यज्ञपति' तुम हो अविकारी॥ प्रभु..॥254॥

ॐ ह्रीं अर्हं यज्ञपतये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम पूजा के योग्य जिनेश्वर, 'याज्य' नाम पाया परमेश्वर।
प्रभु के सिद्धनाम हम ध्यायें, ध्वजा फलादिक् अर्घ चढ़ायें॥255॥

ॐ ह्रीं अर्हं याज्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप यज्ञ के अंग जिनेश्वर, श्री 'यज्ञांग' नाम परमेश्वर॥ प्रभु..॥256॥

ॐ ह्रीं अर्हं यज्ञांगाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नश्वर जग सुख नष्ट किया है, 'अमृत' नाम प्रसिद्ध किया है॥ प्रभु..॥257॥

ॐ ह्रीं अर्हं अमृताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज कर्मों को होम दिया है, 'हवि' जिनवर तुम नाम हुआ है॥ प्रभु..॥258॥

ॐ ह्रीं अर्हं हविषे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकालोक व्याप्त तुम ज्ञानी, 'व्योममूर्ति' कहते श्रुतज्ञानी॥ प्रभु..॥259॥

ॐ ह्रीं अर्हं व्योममूर्तये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रूप चतुष्टय नहीं तुम्हारे, तुम 'अमूर्त' आत्मा मनहारे॥ प्रभु..॥260॥

ॐ ह्रीं अर्हं अमूर्तात्मने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म लेप से रहित जिनेश्वर, हो 'निर्लेप' आप तीर्थेश्वर॥ प्रभु..॥261॥

ॐ ह्रीं अर्हं निर्लेपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मल से रहित आप 'निर्मल' हो, हमको भी प्रभु निर्मल कर दो॥ प्रभु..॥262॥

ॐ ह्रीं अर्हं निर्मलाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्म गुणों से एक रूप हो, आप 'अचल' जिन सिद्ध रूप हो॥ प्रभु..॥263॥

ॐ ह्रीं अर्हं अचलाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदा सम शीतल उज्ज्वल हो, सौम्यमूर्ति जिन परमोज्ज्वल हो॥ प्रभु..॥264॥

ॐ ह्रीं अर्हं सौम्यमूर्तये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय सौम्य 'सुसौम्यात्मा' हो, तुम सम सौम्य भव्यात्मा हो॥ प्रभु..॥265॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुसौम्यात्मने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रवि सम तप तेजस्वी स्वामी, 'सूर्यमूर्ति' जिन अन्तर्यामी।
प्रभु के सिद्धनाम हम ध्यायें, ध्वजा फलादिक् अर्घ चढ़ायें॥266॥

ॐ ह्रीं अर्हं सूर्यमूर्तये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय प्रभा आपकी स्वामी, 'महाप्रभा' जिन त्रिभुवनगामी॥ प्रभु..॥267॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाप्रभाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'मंत्रविद्' मंत्र सिखाओ, मोक्ष प्राप्ति का मंत्र बताओ॥ प्रभु..॥268॥

ॐ ह्रीं अर्हं मंत्रविदे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र शास्त्रकर्त्ता जिनरायी, नाम 'मंत्रकृत' बने सहायी॥ प्रभु..॥269॥

ॐ ह्रीं अर्हं मंत्रकृते श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वमंत्र से युत 'मंत्री' हो, मोक्ष सिद्धि में महामंत्रि हो॥ प्रभु..॥270॥

ॐ ह्रीं अर्हं मंत्रिणे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मंत्रमूर्ति' जिन मंत्र रूप हो, मंत्र गुरु तुम शिव स्वरूप हो॥ प्रभु..॥271॥

ॐ ह्रीं अर्हं मंत्रमूर्तये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप अनंत द्रव्य के ज्ञाता, नाम 'अनन्तक' हमें सुहाता॥ प्रभु..॥272॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तगाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म बंध से रहित जिनेश्वर, नाम 'स्वतंत्र' सिद्ध परमेश्वर॥ प्रभु..॥273॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्वतंत्राय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध तंत्र के जिनकर्ता हो, आप 'तंत्रकृत' जगभर्त्ता हो॥ प्रभु..॥274॥

ॐ ह्रीं अर्हं तंत्रकृते श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतःकरण श्रेष्ठ मनहारा, 'स्वांतः' नाम जगत दुःखहारा॥ प्रभु..॥275॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्वांताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन कृतांत का अंत किया है, 'कृतांतांत' शुभ नाम किया है॥ प्रभु..॥276॥

ॐ ह्रीं अर्हं कृतांतांताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आगम रचना करने वाले, जिन 'कृतांतकृत्' जग रखवाले।
प्रभु के सिद्धनाम हम ध्यायें, ध्वजा फलादिक् अर्घ चढ़ायें॥277॥

ॐ ह्रीं अर्हं कृतांतकृते श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ कुशल जिन पुण्यवान हो, 'कृती' नाम जिन पुण्य दान दो॥ प्रभु..॥278॥

ॐ ह्रीं अर्हं कृतिने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्म योग्य पुरुषार्थ किया है, जिन 'कृतार्थ' सर्वार्थ दिया है॥ प्रभु..॥279॥

ॐ ह्रीं अर्हं कृतार्थाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन पूजा योग्य आप हो, जिन 'सत्कृत्य' प्रसिद्ध आप हो॥ प्रभु..॥280॥

ॐ ह्रीं अर्हं सत्कृत्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'कृतकृत्य' नाम जिन धारें, सर्व कार्य हो चुके तुम्हारे॥ प्रभु..॥281॥

ॐ ह्रीं अर्हं कृतकृत्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान ध्यान तप यज्ञ किया है, नाम 'कृतक्रतु' सिद्ध किया है॥ प्रभु..॥282॥

ॐ ह्रीं अर्हं कृतकृते श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप सदा हैं सदा रहेंगे, 'नित्य' नाम को भक्त भजेंगे॥ प्रभु..॥283॥

ॐ ह्रीं अर्हं नित्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'मृत्युंजय' मृत्यु विजेता, हमें बनाओ मृत्यु विजेता॥ प्रभु..॥284॥

ॐ ह्रीं अर्हं मृत्युंजयाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'अमृत्यु' मृत्यु विनाशी, यम को जीत बने शिववासी॥ प्रभु..॥285॥

ॐ ह्रीं अर्हं अमृत्यवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप शांति अमृत पिलवाते, 'अमृतात्म' जिन ! आप कहाते॥ प्रभु..॥286॥

ॐ ह्रीं अर्हं अमृतात्मने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अमृतोद्भव' हो तुम देवा, मिला मोक्ष अमृत का मेवा॥ प्रभु..॥287॥

ॐ ह्रीं अर्हं अमृतोद्भवाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप लीन शुद्धात्म स्वरूपी, 'ब्रह्मरूप' परमात्म स्वरूपी।
प्रभु के सिद्धनाम हम ध्यायें, ध्वजा फलादिक् अर्घ चढ़ायें॥288॥

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मनिष्ठाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'परब्रह्म' ब्रह्म को जाना, तुमने पाया मोक्ष खजाना॥ प्रभु..॥289॥

ॐ ह्रीं अर्हं परब्रह्मणे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ब्रह्मात्मा' तुम ज्ञान स्वरूपी, ज्ञानात्मा चिद् ब्रह्मस्वरूपी॥ प्रभु..॥290॥

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मात्मने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ब्रह्मसंभवाय' जो ध्यायें, वो खुद ब्रह्म रूप हो जाये॥ प्रभु..॥291॥

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मसंभवाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप महाब्रह्माधिपति हो, सर्व पूज्य 'महाब्रह्मपति' हो॥ प्रभु..॥292॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाब्रह्मपतये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'ब्रह्मेट्' ज्ञान के दाता, हो सर्वज्ञ जगत् के त्राता॥ प्रभु..॥293॥

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मेटे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम अरहंत सिद्ध पद पाते, 'महाब्रह्मपद ईश' कहाते॥ प्रभु..॥294॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाब्रह्मपदेश्वराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'सुप्रसन्न' प्रसन्न सदा हो, भक्तों पर सुप्रसन्न सदा हो॥ प्रभु..॥295॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुप्रसन्नाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'प्रसन्नात्मा' कहलाते, सबको सदा प्रसन्न कराते॥ प्रभु..॥296॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रसन्नात्मने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्ञानधर्मदम प्रभु' तुम्हीं हो, ज्ञानी इन्द्रिय जयी प्रभु हो॥ प्रभु..॥297॥

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानधर्मदमप्रभवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम शांतियुत तुम 'प्रशमात्मा', परम शांति दो हे परमात्मा !॥ प्रभु..॥298॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रशमात्मने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निष्कषाय अति शांत आत्मा, तुम शांतिप्रद 'प्रशांतात्मा'॥ प्रभु..॥299॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रशांतात्मने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'पुराण पुरुषोत्तम' स्वामी, आदिपुरुष हम सबके स्वामी।
प्रभु के सिद्धनाम हम ध्यायें, ध्वजा फलादिक् अर्घ चढ़ायें॥300॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुराण पुरुषोत्तमाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अर्द्ध कुसुमलता छंद)

तरु अशोक है चिन्ह मनोहर, 'महाशोकध्वज' नाम महान्।
उनको ध्यायें शोक मिटायें, बन जायें हम भी भगवान॥301॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाशोकध्वजाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शोक रहित जिनदेव आप हो, शरणागत को करें 'अशोक'।
उनकी पूजा करते हम नित, प्रभु सम हम भी बनें अशोक॥302॥

ॐ ह्रीं अर्हं अशोकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबको सुख देने वाले हो, तुम कहलाते 'कः' भगवान।
सुख अनंत दाता जिनवर का, हम सब करते महाविधान॥303॥

ॐ ह्रीं अर्हं काय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ग मोक्षपथ के सृष्टा हो, 'सृष्टा' कहता है संसार।
अर्घ चढ़ायें वाद्य बजायें, हम सबका कर दो उद्धार॥304॥

ॐ ह्रीं अर्हं सृष्टे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'पद्म विष्टर' कहलाते, कमलासन पर हो आसीन।
ऐसा दो वरदान हमें जिन, हम तव पद में हो तल्लीन॥305॥

ॐ ह्रीं अर्हं पद्म विष्टराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्मा लक्ष्मी के ईश्वर तुम, जग कहता तुमको 'पद्मेश'।
जो तुमको ध्याये नित मन में, वह भी बनता है परमेश॥306॥

ॐ ह्रीं अर्हं पद्मेशाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ण कमल रचते सुर पद में, जब तीर्थंकर करें विहार।
नाम 'पद्मसम्भूति' को ध्या, पाते सब सुख-शांति अपार॥307॥

ॐ ह्रीं अर्हं पद्मसम्भूतये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाभि कमल समान आपकी, 'पद्मनाभि' तुम हो तीर्थेश।
हृदय कमल में आन विराजो, हरो हमारे सब संक्लेश॥308॥
ॐ ह्रीं अर्हं पद्मनाभये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम सम श्रेष्ठ अन्य नहीं कोई, आप 'अनुत्तर' हो परमेश।
बिन बोले सब उत्तर देते, समाधान करते तीर्थेश॥309॥
ॐ ह्रीं अर्हं अनुत्तराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्माकार गर्भ से जन्मे, 'पद्मयोनि' तुम हो भगवान।
जग का योनिभ्रमण छुड़वाते, करते हम उनका गुणगान॥310॥
ॐ ह्रीं अर्हं पद्मयोनये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म रूप जग के उत्पादक, 'जगद्योनि' तुम हो जिननाथ।
धर्म जगत् में वास करा दो, तुम्हें झुकायें हम नित माथ॥311॥
ॐ ह्रीं अर्हं जगद्योनये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी तपस्वी तप के द्वारा, करते हैं तुम पद की चाह।
आप 'इत्य' तीर्थंकर पावन, हमें दिखाओ शिवपद राह॥312॥
ॐ ह्रीं अर्हं इत्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रादिक देवों के द्वारा, तुम हो स्तुति करने योग्य।
हे 'स्तुत्य' तुम्हारा संस्तव, हमें बनाये सिद्धी योग्य॥313॥
ॐ ह्रीं अर्हं स्तुत्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्तुतियों के स्वामी तुम ही, 'स्तुतीश्वर' हो जिनदेव।
प्रभु का संस्तव करें रात-दिन, उनकी अर्चा करें सदैव॥314॥
ॐ ह्रीं अर्हं स्तुतीश्वराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्तवनार्ह' तुम्हीं परमेश्वर, तव संस्तुति करते दिन-रात।
तव संस्तव से मिले भक्त को, जग सुख व शिव सुख सौगात॥315॥
ॐ ह्रीं अर्हं स्तवनार्हाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हृषीकेश' जिनदेव आप हो, सभी इन्द्रियाँ तुम आधीन।
हे इन्द्रियवश कर्त्ता ! जिनवर, हम भी तुम सम हो स्वाधीन ॥316॥

ॐ ह्रीं अर्हं हृषीकेशाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मशत्रु को जीत जिनेश्वर, तुम कहलाते हो 'जितजेय'।
मोह शत्रु को जीत आप सम, हम भी बन जायें जितजेय ॥317॥

ॐ ह्रीं अर्हं जितजेयाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव 'कृतक्रिय' ने कर डाले, करने योग्य सभी सत्कार्य।
तुम भक्ति सब कार्य सिद्धप्रद, उसे करें हम सब अनिवार्य ॥318॥

ॐ ह्रीं अर्हं कृतक्रियाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशगण के अधिपति तुम ही, आप 'गणाधिप' हो भगवान।
उस गण में हम भी शामिल हो, करें सदैव तुम्हारा ध्यान ॥319॥

ॐ ह्रीं अर्हं गणाधिपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वगणों में आप श्रेष्ठ हो, कहलाते तुम ही 'गणज्येष्ठ'।
जो निशदिन तुमको ही ध्यायें, वह बनता जग में अतिश्रेष्ठ ॥320॥

ॐ ह्रीं अर्हं गणज्येष्ठाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम गणना के योग्य 'गण्य' जिन, गुण अगण्य अनुपम अविराम।
हम भी तुम सम गुण अगण्य पा, पायें आतम सुख अविराम ॥321॥

ॐ ह्रीं अर्हं गण्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन पूत पवित्र आप ही, तुम्हीं 'पुण्य' हो हे जिनदेव !।
तुम सम मम आतम पवित्र हो, ऐसा पुण्य जगे स्वयमेव ॥322॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम कल्याण मार्ग दिखलाते, आगे ले जाते हो नाथ।
'गुणाग्रणी' जिन तुमको पाकर, हम अनाथ हो गये सनाथ ॥323॥

ॐ ह्रीं अर्हं गुणाग्रण्ये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'गुणाकर' गुण की राशि, गुणनिधि जिन हो तुम गुणखान।
तुमको ध्या तुम भक्ति रचाकर, हम भी हो तुम सम गुणखान॥324॥

ॐ ह्रीं अर्हं गुणाकराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुणसागर तुम गुण रत्नाकर, 'गुणांभोधि' तुम हो जिनदेव।
गुणसमुद्र हम तुम सम पायें, गुणांभोधि हम बनें सदैव॥325॥

ॐ ह्रीं अर्हं गुणांभोधये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व गुणों के तुम ज्ञाता हो, तुम 'गुणज्ञ' हो हे भगवान ! ।
तुम सम हम गुणवान बनें जिन, इन भावों से करें विधान॥326॥

ॐ ह्रीं अर्हं गुणज्ञाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वगुणों के तुम स्वामी हो, तुम 'गुणनायक' जिन परब्रह्म।
तव गुणपूजक हो गणनायक, पा जायें निज आतमब्रह्म॥327॥

ॐ ह्रीं अर्हं गुणनायकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम गुण का आदर हम करते, 'गुणादरी' तुम हो जिनराज।
तुम सम गुणसागर पायें हम, बन जायें हम भी जिनराज॥328॥

ॐ ह्रीं अर्हं गुणादरिणे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधादिक् दुर्गुण के छेदक, 'गुणोच्छेदी' तुम हो तीर्थेश।
मेरे सब दुर्गुण को छेदों, कृपा करो अब हे परमेश !॥329॥

ॐ ह्रीं अर्हं गुणोच्छेदिने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज वैभाविक गुण विनशाकर, आप बनें निर्गुण भगवान।
मेरे सब दुर्गुण विनशाओं, हमें करो निर्गुण भगवान॥330॥

ॐ ह्रीं अर्हं निर्गुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति पवित्र वाणी के धारक, आप 'पुण्यगी' हो भगवान।
तुम सम मम वाणी पवित्र हो, मिटे समस्त वैर अभिमान॥331॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यगिरे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वश्रेष्ठ गुण से शोभित तुम, 'गुण' कहलाते हो भगवान।
हे गुणदाता ! दुर्गुणहंता, बनें आप सम हम गुणवान॥332॥

ॐ ह्रीं अर्हं गुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शरणागत जीवों के रक्षक, तुम 'शरण्य' कहलाय जिनेश।
आप शरण में हम भी आयें, हमें शरण में रखो जिनेश॥333॥

ॐ ह्रीं अर्हं शरण्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति पवित्र वचनों के धारक, 'पुण्यवाक्' जिन तुम कहलाय।
जो श्रद्धा से तुमको पूजें, उनके वचन दोष विनशाय॥334॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यवाचे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप स्वयं अतिशय पवित्र हो, 'पूत' नाम से जग विख्यात।
भक्तों को करते पवित्र तुम, ऐसी महिमा जग विख्यात॥335॥

ॐ ह्रीं अर्हं पूताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ आप जगज्येष्ठ आप हो, तुम 'वरेण्य' हो हे भगवान !।
तुम सम हम भी श्रेष्ठ बनें जिन, ऐसा हमको दो वरदान॥336॥

ॐ ह्रीं अर्हं वरेण्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व पुण्य के अधिपति हो तुम, धन्य 'पुण्यनायक' जिनदेव।
जो पूजें दिन-रात आपको, बने 'पुण्यनायक' स्वयमेव॥337॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यनायकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणनातीत गुणों के धारी, तुम 'अगण्य' हो हे भगवान !।
अर्घ चढ़ायें जाप करें हम, तुम सम बन जायें गुणवान॥338॥

ॐ ह्रीं अर्हं अगण्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति पवित्र बुद्धि के धारक, आप 'पुण्यधी' हो भगवान।
तुम सम सद्बुद्धि पायें हम, हे जिनदेव ! करो कल्याण॥339॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यधिये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सहज अनंत गुणों के धारी, आप 'गुण्य' हो हे तीर्थेश !।
आप गुणों का ध्यान करें हम, बनें सुगुण धारी ब्रह्मेश॥340॥

ॐ ह्रीं अर्हं गुण्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किया कराया पुण्य आपने, नाम 'पुण्यकृत्' पाया नाथ।
आप जाप से पुण्य मिले नित, सिद्ध होय सारे पुरुषार्थ॥341॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यकृते श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम 'पुण्यशासन' जिनवर का, पुण्य मार्ग शासन बतलाय।
पाप छोड़कर पुण्य करें जो, वही पुण्य शासन बन जाय॥342॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यशासनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप धर्म के आभूषण हो, 'धर्माराम' सिद्ध तुम नाम।
तुम सम धर्मात्मा बनने हम, निशदिन जपते धर्माराम॥343॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मारामाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण समूह के तुम हो आश्रय, तुम 'गुणग्राम' गुणों के धाम।
आप गुणों का कर विधान हम, तुम सम बन जायें गुण ग्राम॥344॥

ॐ ह्रीं अर्हं गुणग्रामाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुण्यापुण्यनिरोधक' जिनवर, पुण्य पाप का किया निरोध।
शुक्ल ध्यान शुद्धोपयोग से, सब कर्मों का किया निरोध॥345॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यापुण्यनिरोधकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हिंसादिक् सब पाप रहित हो, 'पापापेत' धन्य तुम नाम।
तुम सम पाप रहित होने हम, भजें निरन्तर इक तुम नाम॥346॥

ॐ ह्रीं अर्हं पापापेताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'विपापात्मा' हो भगवन्, किये पाप आतम से दूर।
तुम भक्ति के दलन यंत्र से, हम भी कर्म करें चकचूर॥347॥

ॐ ह्रीं अर्हं विपापात्मने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाप कर्म को नष्ट किया है, आप 'विपाप्मा' हो भगवान।
पाप रहित हमको भी कर दो, इस हेतु हम करें विधान॥348॥

ॐ ह्रीं अर्हं विपाप्मने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राग-द्वेष वसु कर्म क्लेश का, जिनवर तुमने किया अभाव।
बनें 'वीतकल्मष' जिनवर तुम, तुम्हें भजें हम धरें उछाव[1]॥349॥

ॐ ह्रीं अर्हं वीतकल्मषाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिग्रह का सब द्वन्द छोड़कर, तुम 'निर्द्वन्द' बनें भगवान।
तुमको ध्या तुम सम व्रत पाकर, हम निर्द्वन्द बनें गुणवान॥350॥

ॐ ह्रीं अर्हं निर्द्वन्दाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मद को नाश बनें 'निर्मद' जिन, छोड़ी अहंकार की कार।
उनका महाविधान करें नित, त्यागें मद हम आठ प्रकार॥351॥

ॐ ह्रीं अर्हं निर्मदाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व कषायों की ज्वाला को, जिनवर तुमने करके 'शांत'।
शांति सुधामृत दाता जिनवर, तुमको पूज बनें हम शांत॥352॥

ॐ ह्रीं अर्हं शांताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुर्जय शत्रु मोह भट्ट को, जीता आप बनें 'निर्मोह'।
मोहजयी जिनवर को भजकर, हम भी हो जायें निर्मोह॥353॥

ॐ ह्रीं अर्हं निर्मोहाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब उपसर्ग उपद्रव नाशें, तीर्थंकर निरुपद्रव आप।
तुम्हें भजें हम ध्यान लगायें, सर्व उपद्रव हरलो आप॥354॥

ॐ ह्रीं अर्हं निरुपद्रवाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पलकें झपकें कभी न प्रभु की, 'निर्निमेष' जिनवर हो आप।
उनको भज हम निर्निमेष हो, नाशें हम अपने वसु पाप॥355॥

ॐ ह्रीं अर्हं निर्निमेषाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. उत्साह।

कवलाहार कभी नहीं करते, 'निराहार' तुम हो जिनदेव।
हम भी तुमको पूजें जिनवर, निराहार बनने स्वयमेव॥356॥

ॐ ह्रीं अर्हं निराहाराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग की सर्व क्रियायें छोड़ी, 'निष्क्रिय' आप बनें स्वयमेव।
धर्मक्रिया में सक्रिय हो हम, जग में निष्क्रिय हो जिनदेव॥357॥

ॐ ह्रीं अर्हं निष्क्रियाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाधा रहित आप तीर्थंकर, 'निरुपप्लव' तुम प्यारा नाम।
सब बाधायें हरो हमारी, इस हित तुम्हें अनंत प्रणाम॥358॥

ॐ ह्रीं अर्हं निरुपप्लवाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्ण कलंक रहित जिनवर तुम, 'निष्कलंक' तुम हो तीर्थेश।
आप गुणों की पूजा करके, निष्कलंक हम हो परमेश॥359॥

ॐ ह्रीं अर्हं निष्कलंकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब पापों को दूर हटाया, आप 'निरस्तैना' भगवान।
हमको भी निष्पाप बनादो, हे जिनवर ! कर दो कल्याण॥360॥

ॐ ह्रीं अर्हं निरस्तैनसे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपराधों को दूर किया है, 'निर्द्धूतागस्' हो जिनदेव।
सब अपराध मिटाओ जिनवर, अर्घ चढ़ायें तुम्हें सदैव॥361॥

ॐ ह्रीं अर्हं निर्धूतागसे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मास्रव से रहित आप हो, धन्य 'निरास्रव' तुम तीर्थेश।
अर्घ चढ़ायें ध्यान लगायें, आस्रवरहित बनें परमेश॥362॥

ॐ ह्रीं अर्हं निरास्रवाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वश्रेष्ठ जग में 'विशाल' तुम, शरणागत को करो निहाल।
आप नाम को जो नित पूजें, वे होते हैं मालामाल॥363॥

ॐ ह्रीं अर्हं विशालाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान ज्योति के धारक, 'विपुलज्योति' तुम हो भगवान।
मोह तिमिर हरलो हम सबका, हम भी पायें केवलज्ञान॥364॥

ॐ ह्रीं अर्हं विपुलज्योतिषे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब उपमाओं से ऊपर तुम, उपमा रहित 'अतुल' भगवान।
प्रभु सम अनुपम सुख पाने हम, करते प्रभु का भव्य विधान॥365॥

ॐ ह्रीं अर्हं अतुलाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम अचिन्त्य वैभव के धारी, हो 'अचिन्त्य वैभव' सुख धाम।
निज अचिन्त्य वैभव को पाने, हम पूजें प्रभु को अविराम॥366॥

ॐ ह्रीं अर्हं अचिन्त्य वैभवाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नव कर्मों का संवर करके, बनें 'सुसंवृत' तुम भगवान।
हमें सुसंवृत कर दो भगवन्, करते हम प्रभु तव गुणगान॥367॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुसंवृताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रय गुप्ति से रक्षित हो तुम, बनें 'सुगुप्तात्मा' भगवान।
हम भी होय सुगुप्तात्मा जिन, तीन गुप्तियाँ वरें महान्॥368॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुगुप्तात्मने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वज्ञेय के उत्तम ज्ञाता, आप 'सुभृत्' हो हे भगवान !।
हम भी सुभृतज्ञानी बनने, पूज रहे तुमको भगवान॥369॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुभृते श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुनयतत्त्वविद' तुम तीर्थंकर, नय रहस्य ज्ञाता जिनराज।
तुमको ध्यायें भक्ति रचायें, पाने हम प्रज्ञा साम्राज्य॥370॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुनयतत्त्वविदे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय केवल ज्ञान दिवाकर, आप 'एकविद्या' धर नाथ।
केवलज्ञान एकविद्या को, पाने हम पूजें जिननाथ॥371॥

ॐ ह्रीं अर्हं एकविद्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बढ़ी–बढ़ी विद्या के स्वामी, 'महाविद्य' तुम हो तीर्थेश।
रत्नत्रय विद्या प्रगटाने, हम तुमको पूजें परमेश।।372।।
ॐ ह्रीं अर्हं महाविद्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल प्रत्यक्ष ज्ञान के ज्ञानी, तुम हो 'मुनि' उत्तम गुणखान।
मन से तुम सम मुनि बनकर हम, मदन बाण नाशें भगवान।।373।।
ॐ ह्रीं अर्हं मुनये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो जिनवर सबके स्वामी, अन्तर्यामी 'परिवृढ़' देव।
मेरे मन मन्दिर में आओ, हृदय विराजो हे जिनदेव !।।374।।
ॐ ह्रीं अर्हं परिवृढ़ाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग जीवों की रक्षा करते, तुम सबके 'पति' हो परब्रह्म।
निशदिन रक्षा करो हमारी, पा जायें हम भी चिद्ब्रह्म।।375।।
ॐ ह्रीं अर्हं पतये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'धीश' बुद्धि के स्वामी, बुद्धि का दे दो वरदान।
दुर्बुद्धि सब हरो हमारी, हमको दो प्रभु सम्यक्ज्ञान।।376।।
ॐ ह्रीं अर्हं धीशाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब विद्याओं के अधीश तुम, 'विद्यानिधि' हो श्री जिनराज।
हम पूजें त्रयकाल आपको, दे दो श्री विद्या साम्राज्य।।377।।
ॐ ह्रीं अर्हं विद्यानिधये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व द्रव्य प्रत्यक्ष आपके, 'साक्षी' हो तुम श्री जिनदेव।
हो साक्षात् सत्य का दर्शन, तुम सम हमको हे जिनदेव !।।378।।
ॐ ह्रीं अर्हं साक्षिणे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्षमार्ग के दिग्दर्शक हो, आप 'विनेता' श्री भगवान।
चलें सदा हम मोक्षमार्ग पर, कर दो प्रभु सबका कल्याण।।379।।
ॐ ह्रीं अर्हं विनेत्रे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यम को जीत बनें 'विहतान्तक',पाया जिन शासन निर्वाण।
तुमको ध्या हम भी यम जीतें, इस हित करते महा विधान।।380।।

ॐ ह्रीं अर्हं विहतान्तकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुर्गतियों से रक्षा करते, जगत् 'पिता' तुम हो जिनदेव।
दुर्गतियों से हमें बचाओ, हम पूजें जिन तुम्हें सदैव।।381।।

ॐ ह्रीं अर्हं पित्रे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जीवों के श्रेष्ठ गुरु हो, आप 'पितामह' श्री जिनराज।
करें विधान आपका हम सब, पा जायें शिवपुर साम्राज्य।।382।।

ॐ ह्रीं अर्हं पितामहाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव्य जनों का पालन करते, 'पाता' हो तुम श्री भगवान।
हमको पता बताओ निज का, कर दो हे जिनवर ! कल्याण।।383।।

ॐ ह्रीं अर्हं पात्रे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम पवित्र करते हो उसको, जो भी तुम शरणा में आय।
नाम 'पवित्र' आपका ध्याकर, सर्व जीव पावन हो जाय।।384।।

ॐ ह्रीं अर्हं पवित्राय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबको शुद्ध पवित्र बनाते, सार्थक है 'पावन' तुम नाम।
तुमको ध्या हम पावन होवें, जपें निरन्तर पावन नाम।।385।।

ॐ ह्रीं अर्हं पावनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व जीव तुम सम 'गति' चाहें, आप अगति हो श्री जिनदेव।
अगति गति से रहित बने हम, पंचम गति पायें स्वयमेव।।386।।

ॐ ह्रीं अर्हं गतये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व जीव के तुम ही रक्षक, 'त्राता' तीर्थंकर भगवान।
त्रिभुवन से तिर जायें हम भी, करके प्रभु का श्रेष्ठ विधान।।387।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रात्रे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म-जरा-मृत्यु रोगों के, तुम ही हो हर्त्ता भगवान।
श्रेष्ठ 'भिषग्वर' वैद्य आप ही, करो धर्म की औषधिदान॥388॥

ॐ ह्रीं अर्हं भिषग्वराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वश्रेष्ठ जिनदेव 'वर्य' तुम, हमें श्रेष्ठता करो प्रदान।
तुमको ध्याय विधान रचायें, पायें जिन गुण ज्ञान निधान॥389॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबको इच्छित सुख देते हो, देते हो अतिशय वरदान।
'वरद' नाम सार्थक हे प्रभु ! का, दे देकर जग को वरदान॥390॥

ॐ ह्रीं अर्हं वरदाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ तुम्हारे गुण अति उत्तम, अतः 'परम' तुम हो भगवान।
परम पुण्य जागा हम सबका, रचा आज यह परम विधान॥391॥

ॐ ह्रीं अर्हं परमाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज पर को करते पवित्रतम, अतः आप कहलाय 'पुमान्'।
तुमको ध्याकर हम पवित्र हो, इस हित करते पूत विधान॥392॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुंसे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशांग का वर्णन करते, तुम उत्तम 'कवि' हो भगवान।
हम जिनवर का काव्य सृजन कर, बन जायें कवि भक्त प्रधान॥393॥

ॐ ह्रीं अर्हं कवये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'पुराण पुरुष' हो जिनवर, लिखा आप पर महापुराण।
जिस पुराण को पढ़कर सुनकर, मिट जाता है सर्व गुमान॥394॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुराण पुरुषाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप वृद्ध हो आत्म गुणों से, कहलाते तुम 'वर्षीयान'।
हम भी करते ध्यान आपका, पाने सिद्धशिला का यान॥395॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्षीयसे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जीवों में आप श्रेष्ठ हो, सार्थक नाम 'ऋषभ' भगवान।
तुम्हें पूज बन जायें श्रेष्ठ हम, इस हेतू करते गुणगान॥396॥

ॐ ह्रीं अर्हं ऋषभाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर में आदि पुरुष हो, अतः कहाये 'पुरु' भगवान।
तुमको ध्या शिवपुर प्रवेश हो, कर दो पुरु परम उत्थान॥397॥
ॐ ह्रीं अर्हं पुरवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'प्रतिष्ठा-प्रसव' नाथ हो, पायी प्रतिष्ठा व सम्मान।
मोक्ष प्रतिष्ठा होय हमारी, इस हित करते महा विधान॥398॥
ॐ ह्रीं अर्हं प्रतिष्ठा-प्रसवाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब उत्तम कार्यों के कारण, तुम पवित्र 'हेतु' हो नाथ।
कर दो हित जिनदेव हमारा, पहुँचे हम त्रिभुवन के माथ॥399॥
ॐ ह्रीं अर्हं हेतवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो जिन 'भुवनैक पितामह', हम सब है तेरी संतान।
जग के एकमात्र गुरु तुम हो, कर दो बच्चों का उत्थान॥400॥
ॐ ह्रीं अर्हं भुवनैक पितामहाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

'श्रीवृक्षलक्षण' प्रभो, हृदय रहे श्रीवृक्ष।
जिसको पूजे रात-दिन, जग सारा प्रत्यक्ष॥401॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवृक्षलक्षणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूक्ष्म रूप हो आप जिन, धन्य 'श्लक्षण' देव।
मिटे कुलक्षण जगत् के, इस हित भजें सदैव॥402॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्लक्षणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ लक्षण हैं आप में, हो 'लक्षण्य' महान्।
लक्षण अशुभ विनाशकर, बनें आप भगवान॥403॥
ॐ ह्रीं अर्हं लक्षण्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ लक्षण प्रभु आपके, तन में रहे अनेक।
अशुभ कुलक्षण मिट गये, जिनवर तुमको देख॥404॥
ॐ ह्रीं अर्हं शुभलक्षणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेत्र बिना निज आत्म से, देखें लोक अलोक।
नाम 'निरक्ष' प्रसिद्ध है, हरे सभी दुःख शोक॥405॥

ॐ ह्रीं अर्हं निरक्षाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर 'पुण्डरीकाक्ष' तुम, नेत्र कमल सम रम्य।
जो पूजें नित आपको, बन जाये अभिरम्य॥406॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्डरीकाक्षाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज गुण से परिपुष्ट हो, 'पुष्कल' तुम भगवान।
जिनगुण सम्पत् हित करें, हम नित पुष्कल ध्यान॥407॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुष्कलाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'पुष्करेक्षण' प्रभो, पुष्कर सम तुम नेत्र।
तुमको पूज हमें मिले, श्री सिद्धों का क्षेत्र॥408॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुष्करेक्षणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धी के दाता तुम्हीं, श्री 'सिद्धिद्' तीर्थेश।
आत्मसिद्धी हमको मिलें, तुमको ध्या परमेश॥409॥

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धिदाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'सिद्धसंकल्प''हो, किये सिद्ध संकल्प।
सिद्ध करो संकल्प सब, नाशों सभी विकल्प॥410॥

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धसंकल्पाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध आपकी आत्मा, हो 'सिद्धात्मा' नाथ।
तुम सम होंवे सिद्ध हम, इस हित नमते माथ॥411॥

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धात्मने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धन्य 'सिद्धसाधन' बनें, करके साधन सिद्ध।
तुम्हें साध सिद्धी मिले, जीवन बने प्रसिद्ध॥412॥

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धसाधनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'बुद्धबोध्य' जिन आप हो, करके बोधित बोध।
बुद्ध बोध्य को पूजकर, हमको मिले प्रबोध॥413॥

ॐ ह्रीं अर्हं बुद्धबोध्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धन्य 'महाबोधि' जिनम्, त्रिभुवन पूजित बोध।
महाबोधि हमको मिले, ऐसा दो प्रभु बोध॥414॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाबोधये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वर्द्धमान' जिन आपके, गुण नित वृद्धिमान।
सद्गुण वृद्धि के लिए, हम नित करें विधान॥415॥

ॐ ह्रीं अर्हं वर्धमानाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ 'महर्द्धिक्' देव तुम, ऋद्धि-सिद्धि के ईश।
तुम सम तप जो भी करे, बने श्रेष्ठ ऋद्धीश॥416॥

ॐ ह्रीं अर्हं महर्द्धिकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुयोग मय वेद के, कारण तुम 'वेदांग'।
जाप करें हम आपका, जाने श्रुत सर्वांग॥417॥

ॐ ह्रीं अर्हं वेदांगाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता हो चऊवेद के, धन्य 'वेदविद्' नाम।
अनुयोग विद् हम बनें, इस हित करें प्रणाम॥418॥

ॐ ह्रीं अर्हं वेदविदे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि मुनि तुमको जानते, 'वेद्य' नाम अभिराम।
तुम गुण वेदन से मिले, निश्चय मोक्ष मुकाम॥419॥

ॐ ह्रीं अर्हं वेद्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप दिगम्बर रूप हैं, 'जातरूप' शुभ नाम।
जातरूप हमको मिले, मिटे अधम खल काम॥420॥

ॐ ह्रीं अर्हं जातरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाताओं में श्रेष्ठ हो, धन्य 'विदांवर' नाम।
बने विदांवर वह अवश, जो जपता तुम नाम॥421॥

ॐ ह्रीं अर्हं विदांवराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुत या केवलज्ञान के, जिनवर तुम हो ज्ञेय।
'वेदवेद्य' शुभ नाम को, पूज मिले श्रुत श्रेय ॥422॥
ॐ ह्रीं अर्हं वेदवेद्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम अनुभव गम्य हो, जिनवर 'स्वसंवेद्य'।
कर्मरोग हर्त्ता तुम्हीं, हो निस्वार्थी वैद्य ॥423॥
ॐ ह्रीं अर्हं स्वसंवेद्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन वेद से रहित हो, जिनवर आप 'विवेद।
अर्चा कर हम आपकी, निश्चय बनें विवेद ॥424॥
ॐ ह्रीं अर्हं विवेदाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वदतांवर' तुम हो प्रभो, वक्ताओं में श्रेष्ठ।
वचन मंत्र जप आपका, बन जायें हम श्रेष्ठ ॥425॥
ॐ ह्रीं अर्हं वदतांवराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'अनादिनिधन ' हो, आदि अंत से हीन।
जन्म-मरण को जीतने, हम जिनगुण लवलीन ॥426॥
ॐ ह्रीं अर्हं अनादिनिधनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रज्ञा से स्पष्ट तुम, 'व्यक्त' आपका नाम।
निजगुण निधि अब व्यक्त हो, इस हित जपतें नाम ॥427॥
ॐ ह्रीं अर्हं व्यक्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवच अति स्पष्ट तुम, 'व्यक्तवाक्' शुभ नाम।
मम वाणी अति शुद्ध हो, इस हित करें प्रणाम ॥428॥
ॐ ह्रीं अर्हं व्यक्तवाचे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'व्यक्त शासन' प्रभो !, शासन अति स्पष्ट।
जिनशासन में जो चले, करे कर्म को नष्ट ॥429॥
ॐ ह्रीं अर्हं व्यक्तशासनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

युगारंभ तुमसे हुआ, 'युगादिकृत्' प्रभु आप।
युगल कर्म परिहार कर, हरा भोग संताप ॥430॥

ॐ ह्रीं अर्हं युगादिकृते श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

युग व्यवस्थापक प्रभो, 'युगाधार' आधार।
युग-युग में तुमने किया, इस युग का उद्धार ॥431॥

ॐ ह्रीं अर्हं युगाधाराये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

युगारंभ तुमने किया, धन्य 'युगादि' देव।
युग-युग से यश गा रहे, युगनायक गणदेव ॥432॥

ॐ ह्रीं अर्हं युगादये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्मे जग के आदि में, 'जगदादिज' जिननाथ।
जगदादिज के चरण में, नतमस्तक मम माथ ॥433॥

ॐ ह्रीं अर्हं जगदादिजाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज प्रभाव से कर प्रभु, इन्द्रों को अतिक्रांत।
बने 'अतीन्द्र' जिनेश तुम, करो लोक अतिक्रांत ॥434॥

ॐ ह्रीं अर्हं अतीन्द्राय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रियगोचर हो नहीं, आप 'अतीन्द्रिय' देव।
सुख अतीन्द्र पाने प्रभु, पूजें तुम्हें सदैव ॥435॥

ॐ ह्रीं अर्हं अतीन्द्रियाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बुद्धि के स्वामी तुम्हीं, धन्य 'धीन्द्र' जिन नाम।
कर विधान जिन आपका, मिले बुद्धि निष्काम ॥436॥

ॐ ह्रीं अर्हं धीन्द्राय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप परम ऐश्वर्य का, अनुभव करते नाथ।
सार्थक नाम 'महेन्द्र' है, पहुँचाते जगमाथ ॥437॥

ॐ ह्रीं अर्हं महेन्द्राय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप अतीन्द्रिय अर्थ के, दृष्टा हो जिनदेव।
'अतीन्द्रियार्थदृक्' हो प्रभो, दो सद्ज्ञान सदैव ॥438॥

ॐ ह्रीं अर्हं अतीन्द्रियार्थ दृशे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय रहित जिनेश तुम, सिद्ध 'अनीन्द्रिय' नाम।
हम भी तुम सम हो प्रभो, इस हित करें प्रणाम ॥439॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनीन्द्रियाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अहमिन्द्रों से पूज्य तुम, 'अहमिन्द्रार्च्य' जिनेश।
अहम् हरें हम आप सम, तुम सम बनें जिनेश ॥440॥

ॐ ह्रीं अर्हं अहमिंद्रार्च्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माहेन्द्रों से पूज्य हो, 'महेन्द्रमहित' भगवान।
हम भी महाविधान कर, तुम सम हो भगवान ॥441॥

ॐ ह्रीं अर्हं महेन्द्रमहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में आप 'महान्' हो, जैन धर्म की शान।
हम पूजें नित आपको, तुम सम बनें महान् ॥442॥

ॐ ह्रीं अर्हं महते श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में अति उत्कृष्ट हो, श्री 'उद्भव' भगवान।
उद्भव हो मम आत्म का, करके श्रेष्ठ विधान ॥443॥

ॐ ह्रीं अर्हं उद्भवाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कारण हो तुम मोक्ष के, 'कारण' नाम प्रसिद्ध।
इस कारण हम पूजते, बनें आप सम सिद्ध ॥444॥

ॐ ह्रीं अर्हं कारणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध भाव कर्तार तुम, 'कर्त्ता' उत्तम नाम।
कर्त्ता बुद्धि छोड़ हम, पूजें आठों याम ॥445॥

ॐ ह्रीं अर्हं कर्त्रे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवसागर को पारकर, पाया 'पारग' नाम।
भव से पार करो हमे, इस हित करें प्रणाम॥446॥

ॐ ह्रीं अर्हं पारगाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव समुद्र से तारते, 'भवतारक' हो आप।
भवदधि से तर जाय हम, सूत्र बताओ आप॥447॥

ॐ ह्रीं अर्हं भवतारकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम गुण अगम अपार हैं, हो 'अगाह्य' तीर्थेश।
आप गुणों का ध्यान कर, भक्त बनें परमेश॥448॥

ॐ ह्रीं अर्हं अगाह्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिगंभीर स्वरूप तुम, गुण अति गहन अपार।
'गहन' नामधारी प्रभु, करते भव से पार॥449॥

ॐ ह्रीं अर्हं गहनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुप्त रूप है आपका, 'गुह्य' आपका नाम।
गुप्त ज्ञान पाये वही, जो पूजे तुम नाम॥450॥

ॐ ह्रीं अर्हं गुह्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में अति उत्कृष्ट हो, तुम 'परार्ध्य' परमेश।
परम धैर्य पा जायें हम, तुमको ध्या धरमेश॥451॥

ॐ ह्रीं अर्हं परार्ध्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति समर्थ है आप में, 'परमेश्वर' हो आप।
पंच परम पद पाय वो, जो करता तुम जाप॥452॥

ॐ ह्रीं अर्हं परमेश्वराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनंतर्द्धि' जिनवर तुम्ही, ऋद्धि अचिन्त्य अनंत।
तुम विधान से हे प्रभो !, कर्मों का हो अंत॥453॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतर्द्धये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अमेयर्द्धि' जिनदेव तुम, ऋद्धि अगम्य अमेय।
सहज मिले उस भक्त को, जिसके आप विधेय॥454॥
ॐ ह्रीं अर्हं अमेयर्द्धये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अचिन्त्यर्द्धि' तीर्थेश तुम, ऋद्धि अपार अचिंत्य।
भक्तों की चिंता हरे, महिमा अगम अचिंत्य॥455॥
ॐ ह्रीं अर्हं अचिंत्यर्द्धये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवल बुद्धि पूर्ण तुम, 'समग्रधी' भगवान।
समग्रधी हो आप सम, तुम सम हो गुणवान॥456॥
ॐ ह्रीं अर्हं समग्रधिये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबमें मुख्य जिनेश तुम, धन्य 'प्राग्र' तुम नाम।
हम पूजें नित आपको, निश्चय आठों याम॥457॥
ॐ ह्रीं अर्हं प्राग्राय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी मांगलिक कार्य में, प्रथम भजें तुम नाम।
अतः 'प्राग्रहर' आप हो, तुमको करें प्रणाम॥458॥
ॐ ह्रीं अर्हं प्राग्रहराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु लोकाग्र विराजते, नाम आप 'अभ्यग्र'।
सभी व्यग्रता छोड़ हम, बैठें जिनपद अग्र॥459॥
ॐ ह्रीं अर्हं अभ्यग्राय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप विलक्षण जगत् से, कहलाते 'प्रत्यग्र'।
तुम दर्शन को नाथ अब, नैन हुए हैं व्यग्र॥460॥
ॐ ह्रीं अर्हं प्रत्यग्राय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्त प्रभु हम आपके, सबके स्वामी आप।
इसीलिए तुम 'अग्र्य' हो, हरते दुःख संताप॥461॥
ॐ ह्रीं अर्हं अग्रयाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्रेसर जग धर्म के, 'अग्रिम' नाम पवित्र।
तुमको पूजें हम सदा, जीवन बने पवित्र ।।462।।

ॐ ह्रीं अर्हं अग्रिमाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में सबसे ज्येष्ठ तुम, 'अग्रज' हो जिननाथ।
श्रमण अनेकों मोक्ष में, गये आपके साथ ।।463।।

ॐ ह्रीं अर्हं अग्रजाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किया महातप आपने, 'महातपा' जिनदेव।
महातपस्वी हम बनें, तुम सम हे जिनदेव !।।464।।

ॐ ह्रीं अर्हं महातपसे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर का तप तेज नित, फैल रहा चहुँ ओर।
'महातेज' हो आप जिन, करें धर्म की भोर ।।465।।

ॐ ह्रीं अर्हं महातेजसे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप का फल अतिश्रेष्ठ तुम, पहुँचाये शिवधाम।
'महोदर्क' जिन आपको, कोटि अनंत प्रणाम ।।466।।

ॐ ह्रीं अर्हं महोदर्काय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन में ऐश्वर्य तुम, फैला है जिनदेव।
धन्य 'महोदय' आपको, पूजें विश्व सदैव ।।467।।

ॐ ह्रीं अर्हं महोदयाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अद्भुत यश जिन आपका, फैल रहा चहुँ ओर।
जाप 'महायश' नाम का, देता यश चहुँ ओर ।।468।।

ॐ ह्रीं अर्हं महायशसे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यश तप तेज विशाल तुम, केवलज्ञान विशाल।
'महाधाम' ने धर्म से, जग को किया निहाल ।।469।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाधाम्ने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महासत्त्व' में आत्म बल, शक्ति अपरम्पार।
तुमको ध्या जिनदेव हम, पायें शक्ति अपार ॥470॥

ॐ ह्रीं अर्हं महासत्त्वाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाधृति' जिनदेव तुम, धीरज धरें महान्।
तुम सम धीरज हम धरें, इस हित करें विधान ॥471॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाधृतये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कभी अधीर होते नहीं, 'महाधैर्य' जिनदेव।
महाधैर्य हमको मिले, तुमको पूज सदैव ॥472॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाधैर्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धारें वीर्य अनंत को, 'महावीर्य' भगवान।
तुम गुण पाने के लिए, करते भव्य विधान ॥473॥

ॐ ह्रीं अर्हं महावीर्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'महासम्पत्' प्रभो, महा सम्पदावान।
अनंत चतुष्टय के धनी, समवशरण श्रीवान ॥474॥

ॐ ह्रीं अर्हं महासम्पदे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम बल प्रगटा प्रभो, बनें 'महाबल' आप।
निर्बल को बल दो प्रभो, करो महाबल आप ॥475॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाबलाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शक्ति अनंतों के धनी, 'महाशक्ति' जिनदेव।
जिनगुरु सेवा से मिले, वह शक्ति स्वयमेव ॥476॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाशक्तये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवल ज्योति के धनी, 'महाज्योति' भगवान।
मंत्र जाप से आपके, मिलता पूरा ज्ञान ॥477॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाज्योतिषे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैभव आप अपार है, 'महाभूति' जिनराज।
मंगल द्रव्य चढ़ा तुम्हें, मिलता शिव साम्राज्य॥478॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाभूतये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाद्युति तुम देह में, 'महाद्युति' तुम नाथ।
द्युति बढ़े हर भक्त में, तुमको ध्या हे नाथ !॥479॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाद्युतये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'महामति' हो प्रभो !, अतिशय बुद्धिमान।
नाम जपें हम आपका, बनें महामतिवान॥480॥

ॐ ह्रीं अर्हं महामतये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

न्यायवान अतिशय तुम्हीं, 'महानीति' भगवान।
न्याय नीति से सब चलें, इतना दो वरदान॥481॥

ॐ ह्रीं अर्हं महानीतये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षमावान अतिशय अहा, 'महाक्षांति' भगवंत।
हम भी तुम सम धर क्षमा, करें क्रोध का अंत॥482॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाक्षान्तये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दयावान अतिशय अहो, धन्य 'महादय' नाम।
जीव दयामय हो प्रभो !, इस हित करें प्रणाम॥483॥

ॐ ह्रीं अर्हं महादयाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाप्राज्ञ' परमेश तुम, प्रज्ञावान महान्।
करते महाविधान हम, दो प्रज्ञा का दान॥484॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाप्राज्ञाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाभाग्यशाली तुम्हीं, 'महाभाग' भाग्येश।
भक्ति करे जो भाव से, वही बने भाग्येश॥485॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाभागाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मानंद धनी बनें, 'महानंद' भगवान।
परमानंद हमें मिले, करके महाविधान ।।486।।
ॐ ह्रीं अर्हं महानंदाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वश्रेष्ठ कविराज तुम, 'महाकवि' काव्येश।
काव्यकला उसमें जगे, जो पूजे काव्येश ।।487।।
ॐ ह्रीं अर्हं महाकवये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय तेजस्वी प्रभो, आप 'महामह' नाथ।
पूजा हम करते प्रभो, देना भव-भव साथ ।।488।।
ॐ ह्रीं अर्हं महामहसे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति विशाल कीर्ति धरें, 'महाकीर्ति' भगवान।
तुम पूजक निश्चय बने, त्रिभुवन कीर्तिवान ।।489।।
ॐ ह्रीं अर्हं महाकीर्तये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अद्भुत कांतियुक्त तुम, 'महाकान्ति' जिनराज।
अक्षय कांति पाय हम, इस हित पूजें आज ।।490।।
ॐ ह्रीं अर्हं महाकांतये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति उत्तुंग शरीर तुम, 'महावपु' जिनदेव।
जिनगुरु पूजा से मिले, चरम काय जिनदेव ।।491।।
ॐ ह्रीं अर्हं महावपुषे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप महादानी प्रभो, 'महादान' शुभ नाम।
महादान की शक्ति हित, करते भक्ति प्रणाम ।।492।।
ॐ ह्रीं अर्हं महादानाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञानी आप हो, 'महाज्ञान' भगवान।
महाज्ञान पाने प्रभो !, हमने किया विधान ।।493।।
ॐ ह्रीं अर्हं महाज्ञानाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाध्यान जिनराज तुम, 'महायोग' योगीश।
करें ध्यान हम आपका, बनें महा योगीश ॥494॥

ॐ ह्रीं अर्हं महायोगाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ गुणों के तुम धनी, धन्य 'महागुण' नाम।
तुम पूजा अवगुण हरे, बनवाये गुणधाम ॥495॥

ॐ ह्रीं अर्हं महागुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'महामहपति' हो, सर्व महोत्सव ईश।
उत्सव हो उसके यहाँ, जो पूजें जगदीश ॥496॥

ॐ ह्रीं अर्हं महामहपतये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्राप्तमहाकल्याणपंच', पाये उत्सव पाँच।
तुम भक्तों पर पाप की, कभी न आये आँच ॥497॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्राप्तमहापंचकल्याणकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाप्रभु' जिन आपका, जग में महाप्रभाव।
तुम भक्तों पर पाप का, होता नहीं दबाव ॥498॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाप्रभवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रातिहार्य के ईश तुम, 'अष्टम् वसुधाधीश'।
प्रातिहार्य ले हम भजें, त्रैकालिक जगदीश ॥499॥

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टमहाप्रातिहार्याधीशाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबके तुम ईश्वर महा, धन्य 'महेश्वर' देव।
हमने भी माना तुम्हें, इस हित भजें सदैव ॥500॥

ॐ ह्रीं अर्हं महेश्वराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(काव्य छंद)

सब मुनियों में श्रेष्ठ, 'महामुनि' तुम जिनवर।
उनको भज हम श्रेष्ठ, पालें धर्म दिगम्बर ॥501॥

ॐ ह्रीं अर्हं महामुनये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनालाप विशेष, छोड़ें जिन 'महामौनी'।
तुम सम मौन विशेष, पालें मुनिवर ज्ञानी ॥502॥

ॐ ह्रीं अर्हं महामौनिने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाध्यान' भगवान, शुक्ल ध्यान को ध्याया।
करते उत्तम ध्यान, हमने तुमको ध्याया ॥503॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाध्यानिने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धन्य 'महादम' देव, अतिशय इन्द्रिय जेता।
जिनगुण भज हम देव, बनें जितेन्द्रिय नेता ॥504॥

ॐ ह्रीं अर्हं महादमाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति समर्थ वा शान्त, धन्य 'महाक्षम' स्वामी।
हरते सब दुःखक्लांत, श्री जिनवर जगनामी ॥505॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाक्षमाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाशील' जिन नाम, श्रेष्ठ शील के धारी।
जीतें कर्म तमाम, जिनमुद्रा दुःखहारी ॥506॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाशीलाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तपाग्नि में अघ होम, 'महायज्ञ' कहलाये।
भक्ति लीन भव्यात्म, श्री जिनयज्ञ रचायें ॥507॥

ॐ ह्रीं अर्हं महायज्ञाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'महामख' नाथ, अतिशय पूज्य कहायें।
पूज्य परम पद हेत, पूजा भव्य रचायें ॥508॥

ॐ ह्रीं अर्हं महामखाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाव्रतपति' जिनेश, महाव्रतों के स्वामी।
मुनिव्रत पाल अशेष, भव्य बनें शिवधामी ॥509॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाव्रतपतये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मह्य' आप भगवान, जगत्पूज्य जिनदेवा।
करके आप विधान, बनें भव्य जिनदेवा ॥510॥

ॐ ह्रीं अर्हं मह्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाकांतिधर' आप, महाकांति के धारी।
हरते सारे पाप, मिथ्या भ्रमतमहारी ॥511॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाकान्तिधराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'अधिप' तुम नाम, तुम हो सबके स्वामी।
पहुँचाते शिवधाम, त्रिभुवन अंतर्यामी ॥512॥

ॐ ह्रीं अर्हं अधिपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महामैत्रीमय' आप, सबको मित्र बनाया।
हरा क्रोध संताप, वैर भाव विनशाया ॥513॥

ॐ ह्रीं अर्हं महामैत्रीमयाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'अमेय' भगवान, अमित गुणों के धारी।
बनने हम गुणवान, भक्ति करें अघहारी ॥514॥

ॐ ह्रीं अर्हं अमेयाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महोपाय' जिनराज, मुक्ति उपाय बताया।
उन्हें पूज हम आज, उनका ध्यान लगाया ॥515॥

ॐ ह्रीं अर्हं महोपायाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन तुम तेज स्वरूप, नाम 'महोमय' आया।
प्रगटाने निज रूप, हमने उनको ध्याया ॥516॥

ॐ ह्रीं अर्हं महोमयाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाकारुणिक' नाथ, दया धर्म सिखलाया।
पाने करुणा नाथ, हमने पाठ रचाया ॥517॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाकारुण्यकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मन्त्र' रूप भगवान, सब पदार्थ के ज्ञाता।
पाने तुम सम ज्ञान, त्रिभुवन शीश झुकाता ॥518॥

ॐ ह्रीं अर्हं मंत्रे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महामंत्र' भगवंत, सब मंत्रों के स्वामी।
करने सब दुःख अंत, हम पूजें जिन स्वामी ॥519॥

ॐ ह्रीं अर्हं महामन्त्राय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यतियों में अति श्रेष्ठ, 'महायति' भगवंता।
कर हम भक्ति श्रेष्ठ, यति पद पायें महंता ॥520॥

ॐ ह्रीं अर्हं महायतये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महानाद' भगवान, दिव्यध्वनि के धारी।
तुमको भज भगवान, पायें सुख अविकारी ॥521॥

ॐ ह्रीं अर्हं महानादाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य ध्वनि का घोष, 'महाघोष' भगवंता।
त्रिभुवन में कर घोष, बनें दुःखों के हन्ता ॥522॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाघोषाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'महेज्य' जिनराज, मह ईज्या अधिकारी।
उनकी ईर्ज्या आज, करते हम सुखकारी ॥523॥

ॐ ह्रीं अर्हं महेज्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महसांपति' भगवान, तुममें तेज अनोखा।
तेज प्रताप महान्, पाया तप से चोखा ॥524॥

ॐ ह्रीं अर्हं महसांपतये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाध्वराधर' आप, प्रज्ञायज्ञ महाना।
पाने प्रज्ञा स्वाद, हमने किया विधाना ॥525॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाध्वरधराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मभूमि का भार, सर्वश्रेष्ठ जिन धरते।
'धुर्य' आप दुःखहार, सुरपति तुमको कहते ॥526॥

ॐ ह्रीं अर्हं धुर्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय नाथ उदार, 'महौदार्य' कहलाये।
बनने नाथ ! उदार, हम तुम शरणा आये ॥527॥

ॐ ह्रीं अर्हं महौदार्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महेष्ठवाक्' जिन आप, महा इष्ट वचधारी।
करके हम तुम जाप, बने दिव्यध्वनि धारी ॥528॥

ॐ ह्रीं अर्हं महेष्ठवाचे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति महान् तुम आत्म, अतः 'महात्मा' तुम हो।
भवतारक परमात्म, जिनश्रेष्ठात्मा तुम हो ॥529॥

ॐ ह्रीं अर्हं महात्मने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन तुम 'महसांधाम', आत्म तेज तप धामा।
ध्यायें हम तुम नाम, तेज वरें अभिरामा ॥530॥

ॐ ह्रीं अर्हं महसांधाम्ने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि प्रधान ऋषिराज, आप 'महर्षि' स्वामी।
हम तुम सम ऋषिराज, बन जायें हे स्वामी !॥531॥

ॐ ह्रीं अर्हं महर्षये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन तुम उदय महान्, जन्म प्रशस्त कहाया।
'महितोदय' भगवान, हमने तुमको ध्याया ॥532॥

ॐ ह्रीं अर्हं महितोदयाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाक्लेशांकुशनाथ', कर्मों पे तुम अंकुश।
तुमको ध्या भगवान, कांटें कर्म निरकुंश ॥533॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाक्लेशांकुशाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म शत्रु क्षय हेत, आप 'शूर' जिनदेवा।
दर्शाते शिव खेत, देते शिवसुख मेवा ॥534॥

ॐ ह्रीं अर्हं शूराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाभूतपति' नाथ, सब भूतों के स्वामी।
गणधरादि मुनिनाथ, तुमको पूजें नामी ॥535॥
ॐ ह्रीं अर्हं महाभूतपतये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रय लोकों में श्रेष्ठ, तुम सबके 'गुरु'राया।
पाने तुम पद श्रेष्ठ, भवि तुम शरणे आया ॥536॥
ॐ ह्रीं अर्हं गुरवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महापराक्रम' आप, श्रेष्ठ पराक्रम धारी।
कर्मविजेता आप, जिन शिवपथ दातारी ॥537॥
ॐ ह्रीं अर्हं महापराक्रमाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंत रहित भगवान, तुम 'अनंत' जिनदेवा।
दो अनंत गुणज्ञान, कर्म अन्त हो देवा ॥538॥
ॐ ह्रीं अर्हं अनंताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाक्रोधरिपु' आप, क्रोध रिपु के हंता।
क्रोध विजय के सूत्र, दे दो श्री भगवंता ॥539॥
ॐ ह्रीं अर्हं महाक्रोधरिपवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय वश कर आप, वशी किया जग सारा।
वशीकरण का मंत्र, 'वशी' जिन ! यही तुम्हारा ॥540॥
ॐ ह्रीं अर्हं वशिने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाभवाब्धिसंतारि', भव समुद्र तिरवाते।
भवदधि पार उतार, मुक्तिराज दिलवाते ॥541॥
ॐ ह्रीं अर्हं महाभवाब्धिसंतारिणे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सूदनमहामोहाद्रि', मोह महाचल भेदा।
भेद सर्व कर्माद्रि, पाया सौख्य अभेदा ॥542॥
ॐ ह्रीं अर्हं महामोहाद्रिसूदनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय गुणखान, नाम 'गुणाकर' पाया।
बनने सद्‌गुणवान, हमने तुमको ध्याया ॥543॥

ॐ ह्रीं अर्हं महागुणाकराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधादिक् अघ जीत, 'क्षांत' आप कहलाये।
यह गुण पाने हेत, हम तुम शरणा आये ॥544॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्षांताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि मुनियों के ईश, आप 'महायोगीश्वर'।
तुम्हें नमा हम शीश, योग धरें परमेश्वर ॥545॥

ॐ ह्रीं अर्हं महायोगीश्वराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शमी' नाथ ! हो आप, पूर्ण शांत परिणामी।
हमें शांति दो आप, शमदम दाता स्वामी ॥546॥

ॐ ह्रीं अर्हं शमिने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्ल ध्यान महाध्यान, 'महाध्यानपति' ध्याकर।
कर कर्मों की हान, बन गये गुण रत्नाकर ॥547॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाध्यानपतये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ध्यानमहाशुचिधर्म', महाधर्म के ध्याता।
पाने तुम सम धर्म, भक्त तुम्हें नित ध्याता ॥548॥

ॐ ह्रीं अर्हं ध्यानमहाधर्मणे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धन्य 'महाव्रत' नाम, महाव्रतों के धारी।
तुम सम हो परिणाम, हम नित शरण तुम्हारी ॥549॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाव्रताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाकर्मरिह' नाथ, कर्मशत्रु के हन्ता।
हम हो तुम सम नाथ ! ऊर्जा दो भगवंता ॥550॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाकर्मारिघ्ने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम जिनेश 'आत्मज्ञ', आत्म गुणों के ज्ञाता।
निज सम गुण मर्मज्ञ, हमें बनाओ दाता।।551।।

ॐ ह्रीं अर्हं आत्मज्ञाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महादेव' तुम नाथ, देव प्रमुख जिनदेवा।
करें सेव दिन-रात, भक्त मुक्ति हित देवा।।552।।

ॐ ह्रीं अर्हं महादेवाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम सामर्थ्य महान्, 'महेशिता' तुम ईश्वर।
सद्गुण यही प्रधान, दे दो हमें जिनेश्वर।।553।।

ॐ ह्रीं अर्हं महेशित्रे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब क्लेशों का नाश, करें 'सर्वक्लेशापह'।
करते सब दुःख नाश, जीते कर्म भयावह।।554।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वक्लेशापहाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध आत्मकल्याण, किया 'साधु' बन तुमने।
करने निज कल्याण, तुमको पूजा हमने।।555।।

ॐ ह्रीं अर्हं साधवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वदोषहर' आप, सब दोषों को हरते।
दोष मिटाते आप, हम तुम शरणा वरते।।556।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वदोषहराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हरते सब दुःख पाप, 'हर' तुम नाम सही है।
हरने सब संताप, हम तुम शरण लही है।।557।।

ॐ ह्रीं अर्हं हराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण असंख्य धर नाथ, 'असंख्येय' कहलाये।
तुम पद धर हम माथ, असंख्यात गुण पायें।।558।।

ॐ ह्रीं अर्हं असंख्येयाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शक्ति अपरिमित धार, 'अप्रमेयात्मा' तुम हो।
हो उसका उद्धार, जिस आत्मा में तुम हो ॥559॥

ॐ ह्रीं अर्हं अप्रमेयात्मने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्त स्वरूपी नाथ, सार्थक नाम 'शमात्मा'।
तुम्हें पूज हम नाथ, तुम सम बनें शमात्मा ॥560॥

ॐ ह्रीं अर्हं शमात्मने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्ति आदि गुणखान, 'प्रशमाकर' शान्तेशा।
भव्यों के उर आन, देते शांति हमेशा ॥561॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रशमाकराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब योगी के ईश, आप 'सर्वयोगीश्वर'।
तुम्हें झुका हम शीश, योग धरें परमेश्वर ॥562॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वयोगीश्वराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'अचिंत्य' जिनेश, चिंतन में नहीं आते।
सुरगुरु और गणेश, तुम गुण गा नहीं पाते ॥563॥

ॐ ह्रीं अर्हं अचिंत्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्ण भावश्रुत रूप, श्रुतमय आप 'श्रुतात्मा'।
पाने श्रुत सत्‌रूप, हम पूजें ज्ञानात्मा ॥564॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रुतात्मने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जानें त्रिजग पदार्थ, 'विष्टरश्रवा' तुम्हीं हो।
तुम सम बनने अर्थ, हम नित भजें तुम्हीं को ॥565॥

ॐ ह्रीं अर्हं विष्टरश्रवसे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय मन वश आप, 'दान्तात्मा' कहलाये।
नशने तुम सम पाप, हम नित तुमको ध्यायें ॥566॥

ॐ ह्रीं अर्हं दान्तात्मने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो 'दमतीर्थेश', संयम तीर्थ चलाया।
भोग तजें योगेश, कर्म समूह जलाया ॥567॥
ॐ ह्रीं अर्हं दमतीर्थेशाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप योगमय नाथ, 'योगात्मा' युगत्राता।
योग व्रतों के साथ, यथाख्यात सुखदाता ॥568॥
ॐ ह्रीं अर्हं योगात्मने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विश्वव्याप्त तुम ज्ञान, आप 'ज्ञानसर्वग' हो।
देते सम्यक् ज्ञान, आप ज्ञान मर्मग हो ॥569॥
ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानसर्वगाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर आतम का ध्यान, त्रिजग प्रमुख पद पाया।
बन त्रैलोक्य 'प्रधान', मोक्ष मार्ग दर्शाया ॥570॥
ॐ ह्रीं अर्हं प्रधानाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान स्वरूपी नाथ, 'आत्मा' नाम तुम्हारा।
दो प्रज्ञामय साथ, हमने तुम्हें पुकारा ॥571॥
ॐ ह्रीं अर्हं आत्मने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर प्रकृष्ट सत्कार्य, आप 'प्रकृति' कहाये।
आत्म विजय अनिवार्य, आप प्रथम बतलायें ॥572॥
ॐ ह्रीं अर्हं प्रकृतये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पा लक्ष्मी उत्कृष्ट, 'परम' नाम तुम पाया।
हरें कर्म निकृष्ट, हमने तुमको ध्याया ॥573॥
ॐ ह्रीं अर्हं परमाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदय पाय उत्कृष्ट, 'परमोदय' कहलाये।
वैभव सर्वोत्कृष्ट, भक्त तुम्हारे पायें ॥574॥
ॐ ह्रीं अर्हं परमोदयाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर अघ बन्धन क्षीण, 'प्रक्षिणबंध' कहाये।
कर दो मम अघ क्षीण, हम जिन भक्ति रचायें॥575॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रक्षीणबंधाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'कामारि' जिनेश, कामदेव के जेता।
जगविजयी कामेश, तुम हो कामविजेता॥576॥

ॐ ह्रीं अर्हं कामारये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करते जग कल्याण, आप 'क्षेमकृत्' स्वामी।
कर दो मम कल्याण, क्षेमंकर जिन स्वामी॥577॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमकृते श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगलमय उपदेश, दिया 'क्षेमशासन' ने।
उत्तम मोक्ष प्रदेश, पाया जिनशासन में॥578॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमशासनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम ओंकार स्वरूप, 'प्रणव' नाम तुम पावन।
पावें हम जिन रूप, ध्यान करें अति पावन॥579॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रणवाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिजग नमस्कृत आप, 'प्रणत' बनें जिनरायी।
नमन हरे सब पाप, हमने भक्ति रचायी॥580॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रणताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दे जीवन के सूत्र, 'प्राण' बने जिनरायी।
पाने हमने सूत्र, तुम गुण महिमा गायी॥581॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्राणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबके रक्षक आप, 'प्राणद' हो परमेश्वर।
करते हम तुम जाप, प्राणदान दो ईश्वर॥582॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्राणदाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रणत जनों के ईश, धन्य आप 'प्रणतेश्वर'।
प्रणमें हम जगदीश, कृपा करो परमेश्वर ॥583॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रणतेश्वराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'प्रमाण' हो नाथ, केवलज्ञान अपेक्षा।
प्रज्ञा में दो साथ, करना नहीं उपेक्षा ॥584॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रमाणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुख अनंत दृग ज्ञान, उत्तम निधी के स्वामी।
तुम 'प्रणिधि' भगवान, उत्तम निधी दो स्वामी ॥585॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रणिधये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दक्ष' आप भगवान, सर्व प्रवीण समर्था।
आत्म कला का ज्ञान, दे दो सर्व समर्था ॥586॥

ॐ ह्रीं अर्हं दक्षाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सहज सरल भगवंत, 'दक्षिण' संज्ञा पायी।
किया कपट का अंत, माया रिझा न पायी ॥587॥

ॐ ह्रीं अर्हं दक्षिणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करते प्रज्ञायज्ञ, तुम 'अध्वर्यू' देवा।
ज्ञानार्थी हम अज्ञ, करते तुम पदसेवा ॥588॥

ॐ ह्रीं अर्हं अध्वर्यवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्षमार्ग की राह, 'अध्वर' तुम्हीं दिखाते।
उसकी मन में चाह, रख हम भक्ति रचाते ॥589॥

ॐ ह्रीं अर्हं अध्वराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप सदा सुख रूप, 'आनंद' नाम कहाया।
पाने तुम समरूप, हमने तुमको ध्याया ॥590॥

ॐ ह्रीं अर्हं आनंदाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबको दे आनंद, 'नंदन' बनें जिनेश्वर।
पाने वह आनंद, हम पूजें परमेश्वर॥591॥

ॐ ह्रीं अर्हं नन्दनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सदा समृद्धिमान, 'नन्द' तुम्हीं जिनचंदा।
बनने आप समान, पूजें हम श्री नंदा॥592॥

ॐ ह्रीं अर्हं नन्दाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वंद्य' आप अभिवंद्य, इन्द्रादिक् के द्वारा।
हम पूजें जिन वंद्य, तिरने भवदधि खारा॥593॥

ॐ ह्रीं अर्हं वंद्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निंदा रहित 'अनिंद्य', पद अनिंद्य के दाता।
जिन ! तुम रूप अनिंद्य, जग को सदा लुभाता॥594॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनिंद्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अभिनन्दन' तुम नाम, प्रशंसनीय तप धारी।
तुम विधान सुख धाम, मोक्ष सौख्य दातारी॥595॥

ॐ ह्रीं अर्हं अभिनन्दनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कामदेव कर नष्ट, बने 'कामहा' देवा।
करने काम विनष्ट, हम करते तुम सेवा॥596॥

ॐ ह्रीं अर्हं कामघ्ने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दे अभीष्ट फल दान, 'कामद' बनें जिनेश्वर।
करने आत्मोत्थान, हम पूजें परमेश्वर॥597॥

ॐ ह्रीं अर्हं कामदाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक चहेता आप, तुम ही 'काम्य' मनोहर।
जगहित कर निष्पाप, आप सर्व मंगलकर॥598॥

ॐ ह्रीं अर्हं काम्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कामधेनु' जिनराज, सर्व मनोरथ पूरे।
तुम्हें भजें हम आज, कर दो काम अपूरे ॥599॥

ॐ ह्रीं अर्हं कामधेनवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मशत्रु को जीत, बनें 'अरिंजय' देवा।
हम भव्यों के मीत, पूजें भव्य सदैवा ॥600॥

ॐ ह्रीं अर्हं अरिंजयाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

आप असंस्कृत किन्तु जिन, 'सुसंस्कार' भगवान।
रत्नत्रय संस्कार दो, इस हित करें विधान ॥601॥

ॐ ह्रीं अर्हं असंस्कृत सुसंस्काराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वाभाविक तुम रूप है, 'प्राकृत' है तुम नाम।
पाने तुम सम रूप जिन, तुमको कोटि प्रणाम ॥602॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्राकृताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वैकृतांतकृत्' तुम बनें, नश रागादि विकार।
कर्मों का आतंक हर, हम भी हो अविकार ॥603॥

ॐ ह्रीं अर्हं वैकृतांतकृते श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब कर्मों का अंत कर, बनें 'अंतकृत्' नाथ।
निज कर्मों के नाशहित, हम सब हैं नत माथ ॥604॥

ॐ ह्रीं अर्हं अंतकृते श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय वच कांति सुभग, सिद्ध 'कांतगु' नाम।
दुर्भग हर पाने सुभग, तुम्हें अनंत प्रणाम ॥605॥

ॐ ह्रीं अर्हं कांतगवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम अति सुन्दर नाथ हो, जग प्रसिद्ध श्री 'कान्त'।
तुम पद पंकज पूजकर, सभी पाप हो शान्त ॥606॥

ॐ ह्रीं अर्हं कान्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिन्तित फलदाता तुम्हीं, 'चिन्तामणि' भगवान।
सब चिंता के नाश हित, हमने किया विधान॥607॥

ॐ ह्रीं अर्हं चिंतामणये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम 'अभीष्टद' पा लिया, दे अभीष्ट फल दान।
मोक्ष अभीष्ट हमें प्रभो, इस हित करें विधान॥608॥

ॐ ह्रीं अर्हं अभीष्टदाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोई न जीत सका तुम्हें, धन्य 'अजित' भगवान।
अजित शक्ति हमको मिलें, करके अजित विधान॥609॥

ॐ ह्रीं अर्हं अजिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जितकामारि' तुम बनें, काम अरि को जीत।
कामजयी बनने करें, हम तुम पद से प्रीत॥610॥

ॐ ह्रीं अर्हं जितकामारये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवधि रहित तुम रूप गुण, 'अमित' आप भगवान।
अमित शक्ति पाने प्रभो, हमने किया विधान॥611॥

ॐ ह्रीं अर्हं अमिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'अमितशासन' बनें, दे अनुपम उपदेश।
अनुपम भक्ति कर प्रभो, हमें मिले जिनवेष॥612॥

ॐ ह्रीं अर्हं अमितशासनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध जीत कहलाय तुम, 'जितक्रोध' भगवान।
क्रोध विजय हित हम करें, जिनवर नाम विधान॥613॥

ॐ ह्रीं अर्हं जितक्रोधाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीत अमित्रों को प्रभो, 'जितामित्र' कहलाय।
कर्मशत्रु को छोड़ जिन, सबके मित्र कहाय॥614॥

ॐ ह्रीं अर्हं जितामित्राय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब क्लेशों को जीत जिन, आप बनें 'जितक्लेश'।
प्रभु के नाम विधान से, मिटें सभी संक्लेश ॥615॥
ॐ ह्रीं अर्हं जितक्लेशाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीता जब यमराज को, पड़ा 'जितांतक' नाम।
यम पर जय पाने प्रभो, हम पूजें तुम नाम ॥616॥
ॐ ह्रीं अर्हं जितांतकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म शत्रुओं को हरा, पाया नाम 'जिनेन्द्र'।
उन पर जय पाने प्रभो, पूजें तुम्हें शतेन्द्र ॥617॥
ॐ ह्रीं अर्हं जिनेन्द्राय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाया परमानंद को, जिनवर 'परमानंद'।
हम पूजें नित आपको, पाने परमानंद ॥618॥
ॐ ह्रीं अर्हं परमानंदाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब मुनियों के नाथ हो, त्रिभुवन कहें 'मुनीन्द्र'।
मुनिव्रत साधन के लिये, हम पूजें बन इन्द्र ॥619॥
ॐ ह्रीं अर्हं मुनीन्द्राय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुन्दुभि सम गम्भीर ध्वनि, धरें 'दुन्दुभिस्वन' देव।
हम भी पाने वह ध्वनि, पूजा करें सदैव ॥620॥
ॐ ह्रीं अर्हं दुन्दुभिस्वनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वन्दनीय सब इन्द्र से, 'महेन्द्रवंद्य' भगवान।
हम भी नित वन्दन करें, करते महाविधान ॥621॥
ॐ ह्रीं अर्हं महेन्द्रवंद्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

योगीजन के इन्द्र तुम, योगीराज 'योगीन्द्र'।
तीन योग से हम जजें, योगार्थे योगीन्द्र ॥622॥
ॐ ह्रीं अर्हं योगीन्द्राय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यतियों के नायक तुम्हीं, यतिपति श्रेष्ठ 'यतीन्द्र'।
यतिपद हेतु प्रयत्न से, हम नित जपें यतीन्द्र ॥623॥
ॐ ह्रीं अर्हं यतीन्द्राय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'नाभिनन्दन' प्रभो, तुम्हें भजें हम आज।
त्रिभुवन अभिनन्दन करें, अर्चें भव्य समाज ॥624॥
ॐ ह्रीं अर्हं नाभिनन्दनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर तुम 'नाभेय' हो, त्रिभुवन नाभि समान।
शरणागत को दे अभय, करें पूर्ण उत्थान ॥625॥
ॐ ह्रीं अर्हं नाभेयाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाभि से उत्पन्न हो, श्री 'नाभिज' भगवान।
जोड़ जीव को धर्म से, कर देते गुणवान ॥626॥
ॐ ह्रीं अर्हं नाभिजाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म रहित हो आपने, पाया नाम 'अजात'।
जन्म श्रृंखला काटने, हम नित जपें अजात ॥627॥
ॐ ह्रीं अर्हं अजाताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम व्रत को धारकर, 'सुव्रत' बने जिनेन्द्र।
सुव्रत पाने आपको, पूजें सर्व सुरेन्द्र ॥628॥
ॐ ह्रीं अर्हं सुव्रताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मनु' बन मानव को दिया, जीवन यापन ज्ञान।
सिद्ध रूप पाने किया, हमने महाविधान ॥629॥
ॐ ह्रीं अर्हं मनवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में अति उत्कृष्ट जिन, सार्थक 'उत्तम' नाम।
उत्तम से उत्कृष्टतम, पद दाता तुम नाम ॥630॥
ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भेद रहित गुण धारते, जिनवर आप 'अभेद्य'।
भेद रहित गुण के लिए, हम नित जपें अभेद्य॥631॥

ॐ ह्रीं अर्हं अभेद्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाश रहित तुम हो प्रभो, नाम 'अनत्यय' सिद्ध।
पूजें हम तुमको विभो, बनने अव्यय सिद्ध॥632॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनत्ययाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तपश्चरण करके बनें, 'अनाश्वान' भगवान।
तुमको ध्या हम भी बनें, अनाशवान गुणवान॥633॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनाश्वसे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप वास्तविक हो सुखी, 'अधिक' नाम जगश्रेष्ठ।
अधिक भक्ति कर आपकी, बन जायें हम श्रेष्ठ॥634॥

ॐ ह्रीं अर्हं अधिकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुओं में अतिश्रेष्ठ हो, 'अधिगुरु' तुम गुरुराज।
गुरु पूजा कर श्रेष्ठ हो, निश्चय शिष्य समाज॥635॥

ॐ ह्रीं अर्हं अधिगुरवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ वचन जिन आपके, 'सुधी' तुम सुधा समान।
कर सुधार हर भव्य का, करते सिद्धी प्रदान॥636॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुधिये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम बुद्धि आपकी, आप 'सुमेधा' सिद्ध।
हम अर्चा कर आपकी, बनें सुमेधा सिद्ध॥637॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुमेधसे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किया पराक्रम कर्म से, 'विक्रमी' बन भगवान।
विक्रम पाने आप सम, हमने किया विधान॥638॥

ॐ ह्रीं अर्हं विक्रमिणे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबके अधिपति आप हो, 'स्वामी' सर्व समर्थ।
तुम सम साधें धर्म हम, कभी न हो असमर्थ॥639॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्वामिने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दुराधर्ष' जिन आपका, कोई न पाये पार।
जिसके मन में तुम बसे, वो बल वरें अपार॥640॥

ॐ ह्रीं अर्हं दुराधर्षाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग की अभिलाषा तजी, धन्य 'निरुत्सुक' नाथ।
उत्सुक हम तुम भक्ति में, अब हम नहीं अनाथ॥641॥

ॐ ह्रीं अर्हं निरुत्सुकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर विशेष तप साधना, जिनवर बनें 'विशिष्ट'।
जिनगुण पाने हम करें, अर्चा नित्य विशिष्ट॥642॥

ॐ ह्रीं अर्हं विशिष्टाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिष्ट पुरुष को इष्ट हो, आप 'शिष्टभुक्' शांत।
बनें शिष्ट हम आप सम, कभी न होय अशांत॥643॥

ॐ ह्रीं अर्हं शिष्टभुजे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सदाचार से पूर्ण हो, 'शिष्ट' आप भगवान।
शिष्टाचार सिखा हमें, करो नाथ उत्थान॥644॥

ॐ ह्रीं अर्हं शिष्टाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबके तुम विश्वास हो, 'प्रत्यय' ज्ञान स्वरूप।
तुम पर दृढ़ विश्वास रख, हम पूजें तुम रूप॥645॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रत्ययाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप मनोहर जगत् में, वरा 'कामना' नाम।
तुम पद की ले कामना, हम पूजें तुम नाम॥646॥

ॐ ह्रीं अर्हं कामनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व पाप से रहित हो, आप 'अनघ' जिनराज।
बनें अनघ हम आप सम, पूर्ण करो मम काज॥647॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनघाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करते जग कल्याण नित, तुम 'क्षेमी' भगवंत।
क्षेम हमारा भी करो, सब दुःख हरो भदंत॥648॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमिणे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षेमंकर जिन ! आपने, किया विश्व कल्याण।
भव्यों को कल्याणकर, करो नाथ कल्याण॥649॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमंकराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अक्षय' जिन क्षय रहित हो, देते अक्षय दान।
अक्षय जिन को हम भजें, पाने अक्षय ज्ञान॥650॥

ॐ ह्रीं अर्हं अक्षय्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'क्षेमधर्मपति' आप हो, क्षेम धर्म के ईश।
करने निज कल्याण हम, तुम्हें नमावें शीश॥651॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमधर्मपतये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्ण क्षमा से युक्त तुम, 'क्षमी' तुम्हारा नाम।
क्षमा हेतु हम नित भजें, तुमको आठों याम॥652॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्षमिणे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अल्पज्ञानियों के लिये, जिनवर तुम 'अग्राह्य'।
पर जो तुमको पूजता, उसको तुम सुग्राह्य॥653॥

ॐ ह्रीं अर्हं अग्राह्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यज्ञानी के लिए, आप 'ज्ञाननिग्राह्य'।
प्रज्ञा हित हम पूजते, हमको करो सहाय॥654॥

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानानिग्राह्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ध्यानगम्य' जिनवर तुम्हें, ध्यायें ध्यानी संत।
पूजें ध्यायें हम तुम्हें, करें कर्म का अंत॥655॥
ॐ ह्रीं अर्हं ध्यानगम्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में अतिउत्कृष्ट तुम, धन्य 'निरुत्तर' नाम।
वरें निरुत्तर आत्मबल, इस हित करें प्रणाम॥656॥
ॐ ह्रीं अर्हं निरुत्तराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'सुकृती' हो प्रभो, पुण्यवान गुणखान।
तुम पूजा से पुण्य हो, करते हम गुणगान॥657॥
ॐ ह्रीं अर्हं सुकृतिने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्पादक तुम शब्द के, 'धातु' सार्थक नाम।
शब्द ज्ञान पाने प्रभो, हम नित करें प्रणाम॥658॥
ॐ ह्रीं अर्हं धातवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर तुम 'इज्यार्ह' हो, नित पूजा के योग्य।
हम विधान कर आपका, बनें मुक्ति के योग्य॥659॥
ॐ ह्रीं अर्हं इज्यार्हाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व नयों का ज्ञान दे, बनें 'सुनय' भगवान।
हम त्रयकालिक भक्ति कर, पा जायें नय ज्ञान॥660॥
ॐ ह्रीं अर्हं सुनयाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण में आपके, दिखते आनन चार।
'चतुरानन' भगवान तुम, करते धर्म प्रचार॥661॥
ॐ ह्रीं अर्हं चतुराननाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम लक्ष्मी के वास हो, 'श्रीनिवास' भगवान।
जो पूजे नित आपको, वो बनता श्रीमान्॥662॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्रीनिवासाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'चतुर्वक्त्र' जिन आपके, मुख दिखते हैं चार।
समवशरण में चहुँमुखी, करते तीर्थ प्रचार ।।663।।
ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्वक्त्राय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर तुम 'चतुरास्य' हो, दिखते चारों ओर।
धर्म सभा में बैठते, भविजन भाव विभोर ।।664।।
ॐ ह्रीं अर्हं चतुरास्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चहुँमुख धर्म बढ़ा रहे, नाम 'चतुर्मुख' आप।
चहुँमुख हम बढ़ते रहे, चहुँमुख भज निष्पाप ।।665।।
ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्मुखाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर तुम 'सत्यात्मा', पाया सत्य स्वरूप।
तुम्हें पूज भव्यात्मा, पायें सत्य स्वरूप ।।666।।
ॐ ह्रीं अर्हं सत्यात्मने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सच्चे वैज्ञानिक तुम्हीं, नाम 'सत्यविज्ञान'।
जिन पूजा व ध्यान से, जगें भेदविज्ञान ।।667।।
ॐ ह्रीं अर्हं सत्यविज्ञानाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्यवचन जिन आपके, 'सत्यवाक्' है नाम।
सत्य वचन पाने प्रभो, तुम्हें अनंत प्रणाम ।।668।।
ॐ ह्रीं अर्हं सत्यवाचे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'सत्यशासन' विभो, सत्य धर्म उपदेश।
देकर पहुँचाते प्रभो, सबको मोक्ष प्रदेश ।।669।।
ॐ ह्रीं अर्हं सत्यशासनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्चित् आशीर्वाद दो, 'सत्याशी' भगवान।
पाने सत्य स्वरूप को, हमने किया विधान ।।670।।
ॐ ह्रीं अर्हं सत्याशिषे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्यप्रतिज्ञ जिनेश तुम, नाम 'सत्यसन्धान'।
तजने सर्व असत्य को, हमने किया विधान ॥671॥

ॐ ह्रीं अर्हं सत्यसन्धानाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्य रूप तीर्थेश तुम, सार्थक संज्ञा 'सत्य'।
कर पूजा हम आपकी, पायें उत्तम सत्य ॥672॥

ॐ ह्रीं अर्हं सत्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नितप्रति तत्पर सत्य में, 'सत्यपरायण' आप।
सत्यपरायण हम बनें, कर तव पूजन जाप ॥673॥

ॐ ह्रीं अर्हं सत्यपरायणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन अति स्थिर आप हो, तुम सम सब अरिहंत।
'स्थेयान्' भगवान तुम, करो दुःखों का अंत ॥674॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्थेयसे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विश्वव्यापी स्थूल हो, 'स्थवीयान्' भगवान।
त्रैकालिक सुख हम वरें, कर अर्चा गुणध्यान ॥675॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्थवीयसे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति समीप हो भक्त के, जिनवर 'नेदीयान्'।
आप हमारे मन बसो, हम नित करते ध्यान ॥676॥

ॐ ह्रीं अर्हं नेदीयसे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पापों से अतिदूर हो, 'दवीयान्' जिनदेव।
पाप मिटाने हम भजें, तुमको देव सदैव ॥677॥

ॐ ह्रीं अर्हं दवीयसे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'दूरदर्शन' प्रभो, दर्शन दे अतिदूर।
समोशरण में दूर से, कर देते अघ चूर ॥678॥

ॐ ह्रीं अर्हं दूरदर्शनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अणु से भी अति सूक्ष्म हो, नाथ 'अणोरणीयान्'।
हम विधान कर आपका, पायें मुक्ति स्थान॥679॥

ॐ ह्रीं अर्हं अणोरणीयसे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किन्तु न सदा अणुरूप हो, नाम 'अनणु' भगवान।
हम अति उत्तम द्रव्य से, करते नाम विधान॥680॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनणवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'गरीयसामाद्य गुरु', आदि गुरु जिनदेव।
हम अर्चा कर आपकी, काँटें कर्म कुदैव॥681॥

ॐ ह्रीं अर्हं गरीयसामाद्यगुरुवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सदायोग में लीन हो, 'सदायोग' भगवान।
हम अर्चा कर आपकी, करें योग वा ध्यान॥682॥

ॐ ह्रीं अर्हं सदायोगाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आत्मिक आनंद का, सदाभोग कर आप।
छोड़ दिये भव भोग सब, 'सदाभोग' निष्पाप॥683॥

ॐ ह्रीं अर्हं सदाभोगाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सदातृप्त' जिन ! आप हो, निज सुख में संतृप्त।
तुम सम कर व्रत ध्यान हम, हों निज में संतृप्त॥684॥

ॐ ह्रीं अर्हं सदातृप्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'सदाशिव' हो प्रभो, करें सदा कल्याण।
सदा पूजते हम तुम्हें, कर दो अब कल्याण॥685॥

ॐ ह्रीं अर्हं सदाशिवाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सदाज्ञानमय तुम विभो, 'सदागति' तीर्थेश।
हर लो अब अज्ञान तम, हम पूजें सर्वेश॥686॥

ॐ ह्रीं अर्हं सदागतये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सदासुखी जिन ! आप हो, 'सदासौख्य' सौख्येश।
वह सुख पाने हम सदा, भजें तुम्हें सिद्धेश ॥687॥
ॐ ह्रीं अर्हं सदासौख्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सदाविद्य' जिन ! आप में, विद्या केवलज्ञान।
भजें जपें तव मंत्र हम, दो जिन ! अक्षयज्ञान ॥688॥
ॐ ह्रीं अर्हं सदाविद्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सदा उदय जिन ! आपका, नाम 'सदोदय' सिद्ध।
उदय हमारा भी करो, काम करो सब सिद्ध ॥689॥
ॐ ह्रीं अर्हं सदोदयाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम ध्वनि जिन ! आपकी, उत्तम नाम 'सुघोष'।
वह ध्वनि पाने हम करें, प्रभु का नित जयघोष ॥690॥
ॐ ह्रीं अर्हं सुघोषाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति सुन्दर मुख आपका, 'सुमुख' मनोहर रूप।
दर्शन पा जिन ! आपका, मिले सुमुख जिन रूप ॥691॥
ॐ ह्रीं अर्हं सुमुखाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्त रूप जिनदेव तुम, 'सौम्य' सौम्यकर नाम।
हम हो तुम सम सौम्य अब, ध्यायें बस तुम नाम ॥692॥
ॐ ह्रीं अर्हं सौम्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुखदायक सब जीव को, 'सुखद' तुम्हारा नाम।
सुख मिलता उस भक्त को, सुखद भजे जो नाम ॥693॥
ॐ ह्रीं अर्हं सुखदाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबका हित करते 'सुहित', हितकर है तुम धर्म।
निज हित हम पूजें तुम्हें, पाने को शिव शर्म ॥694॥
ॐ ह्रीं अर्हं सुहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भगवन् तुम उत्तम हृदय, 'सुहृत्' सुकोमल भाव।
हम ना हो दुर्दय हृदय, पा तुम पद की छाँव ॥695॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुहृदे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'सुगुप्त' सुरक्षितं, तुम्हें न पायें मूढ़।
भव्यों के मन में बसे, मिथ्यात्वी को गूढ़ ॥696॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुगुप्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन गुप्तियों को धरा, 'गुप्तिभृत्' गुप्तेश।
मोक्ष गुप्ति से ही मिले, कहते तुम गुप्तेश ॥697॥

ॐ ह्रीं अर्हं गुप्तिभृते श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबके रक्षक देव हो, 'गोप्ता' तुम गुप्तीश।
गुप्त ज्ञान अघ विजय का, हमको दो गुप्तीश ॥698॥

ॐ ह्रीं अर्हं गोप्त्रे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन तुम 'लोकाध्यक्ष' हो, जाना लोक प्रत्यक्ष।
साक्षात्कार त्रिलोक का, करते प्रभु निष्पक्ष ॥699॥

ॐ ह्रीं अर्हं लोकाध्यक्षाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय दम कर सहज ही, बनें 'दमेश्वर' देव।
इन्द्रिय दमन बड़ी कला, सिखलाओ हे देव ! ॥700॥

ॐ ह्रीं अर्हं दमेश्वराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

'बृहत्वृहस्पति' तुम विभो, इन्द्रों के गुरुदेव।
वृहत्ज्ञान पाने सदा, हम पूजें जिनदेव ॥701॥

ॐ ह्रीं अर्हं बृहत्वृहस्पतये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रशस्त वचनों के धनी, 'वाग्मी' तुम भगवान।
वाक्सिद्धी पाने प्रभो, हमने किया विधान ॥702॥

ॐ ह्रीं अर्हं वाग्मिने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनों के तुम हो पति, 'वाचस्पति' भगवंत।
दिव्य वचन शक्ति मिले, तुमसे अवश भदंत ॥703॥

ॐ ह्रीं अर्हं वाचस्पतये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बुद्धि है उत्कृष्ट तुम, 'उदारधी' धीमान्।
वैसी बुद्धि दो हमें, हम करते तुम ध्यान ॥704॥

ॐ ह्रीं अर्हं उदारधिये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनन शक्ति से युक्त हो, श्री 'मनीषी' मुनिनाथ।
मननशील हम भी बनें, पूजें हम मुनिनाथ ॥705॥

ॐ ह्रीं अर्हं मनीषिणे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप बुद्धि चातुर्य हो 'धिषण' धन्य बुद्धीश।
करके प्रभु आराधना, होवें हम बुद्धीश ॥706॥

ॐ ह्रीं अर्हं धिषणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धारण बुद्धि तुम प्रबल, धीदाता 'धीमान्'।
ध्यान करें हम आपका, बन जायें धीमान् ॥707॥

ॐ ह्रीं अर्हं धीमते श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बुद्धि के स्वामी तुम्हीं, 'शेमुशीष' बुद्धीश।
कर विधान हम आपका, बुद्धिमान हो ईश ॥708॥

ॐ ह्रीं अर्हं शेमुशीषाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब वचनों के नाथ तुम, 'गिरांपति' भगवान।
शब्द ब्रह्म को जानने, हमने किया विधान ॥709॥

ॐ ह्रीं अर्हं गिरांपतये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन तुम रूप अनेक हैं, 'नैकरूप' हो आप।
आप रूप का ध्यान कर, होवें हम निष्पाप ॥710॥

ॐ ह्रीं अर्हं नैकरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नयोत्तुंग' ने पा लिया, नय का पार अपार।
तुमको भज नय कुशल हो, नाशें मोह अपार॥711॥

ॐ ह्रीं अर्हं नयोत्तुंगाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अनेक तुम धारते, 'नैकात्मा' जिनदेव।
निज गुण पाने के लिए, पूजें हम जिनदेव॥712॥

ॐ ह्रीं अर्हं नैकात्मने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनेकान्त मय द्रव्य सब, बतलाते जिन ! आप।
'नैकधर्मकृति' नाम का, करते हम नित जाप॥713॥

ॐ ह्रीं अर्हं नैकधर्मकृतये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकालोक त्रिकाल सब, नाथ आपके ज्ञेय।
'अविज्ञेय' छद्मस्थ को, आप हमारे ध्येय॥714॥

ॐ ह्रीं अर्हं अविज्ञेयाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अप्रतर्क्यात्मा' प्रभो, तर्क वितर्क विहीन।
तुमको पूजें हम सदा, करो हमें स्वाधीन॥715॥

ॐ ह्रीं अर्हं अप्रतर्क्यात्मने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता सब कर्त्तव्य के, तुम 'कृतज्ञ' भगवान।
तुम पूजा से हो हमें, कर्त्तव्यों का भान॥716॥

ॐ ह्रीं अर्हं कृतज्ञाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लक्षण सर्व पदार्थ के, जिनवर आप बताय।
'कृतलक्षण' जिन आपने, षट् कर्त्तव्य बताय॥717॥

ॐ ह्रीं अर्हं कृतलक्षणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्ञानगर्भ' जिन आपके, अंतरंग में ज्ञान।
ज्ञानगर्भ को पूजकर, हम भी पायें ज्ञान॥718॥

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानगर्भाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम दयालु आप हो, 'दयागर्भ' जिनदेव।
दया धर्म संसार को, देते आप सदैव ॥719॥
ॐ ह्रीं अर्हं दयागर्भाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गर्भोत्सव में आपके, बरसे रत्न अपार।
'रत्नगर्भ' जिन आपने, भरें जगत् भंडार ॥720॥
ॐ ह्रीं अर्हं रत्नगर्भाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप्यमान जिन आपका, सिद्ध 'प्रभास्वर' नाम।
आत्म प्रभा से हर लिया, जग का तिमिर तमाम ॥721॥
ॐ ह्रीं अर्हं प्रभास्वराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गर्भाशय तुम पद्म सम, 'पद्मगर्भ' है नाम।
पद्म चढ़ा तव पाद में, हम नित करें प्रणाम ॥722॥
ॐ ह्रीं अर्हं पद्मगर्भाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगद्गर्भ' के ज्ञान में, जग प्रतिबिम्बित होय।
जो आये तव शरण में, कभी नहीं वो रोय ॥723॥
ॐ ह्रीं अर्हं जगद्गर्भाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुम गर्भावास में, बना हेम मय लोक।
'हेमगर्भ' जिन आपने, जग को किया अशोक ॥724॥
ॐ ह्रीं अर्हं हेमगर्भाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुन्दर दर्शन आपके, सिद्ध 'सुदर्शन' नाम।
सुन्दर रूप उसे मिले, जो पूजे तुम नाम ॥725॥
ॐ ह्रीं अर्हं सुदर्शनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन तुम 'लक्ष्मीवान' हो, अंतरंग श्रीमान्।
समोशरण आदिक् बहि, लक्ष्मीधर भगवान ॥726॥
ॐ ह्रीं अर्हं लक्ष्मीवते श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'त्रिदशाध्यक्ष' जिनेश तुम, देवों के अध्यक्ष।
देव असंख्यों पूजते, तुमको आ प्रत्यक्ष ॥727॥
ॐ ह्रीं अर्हं त्रिदशाध्यक्षाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दृढ़ीयसे' जिनदेव तुम, दृढ़ रत्नत्रयवान।
दृढ़ता से शिवमार्ग को, प्रगटाया तुम आन ॥728॥
ॐ ह्रीं अर्हं दृढ़ीयसे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबके स्वामी आप 'इन', जिनवर सिद्ध महान्।
तुम्हें भजें हम रात-दिन, पाने मोक्ष महान् ॥729॥
ॐ ह्रीं अर्हं इनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'इशिता' बन गये, पा सामर्थ्य अनंत।
बन समर्थ हम आप सम, करें कर्म का अंत ॥730॥
ॐ ह्रीं अर्हं इशित्रे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव्यों के मन को हरें, आप 'मनोहर' नाम।
मनहारी जिनदेव का, हम जपते नित नाम ॥731॥
ॐ ह्रीं अर्हं मनोहराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मनोज्ञांग' जिन आप हो, अंग मनोज्ञ विशेष।
अंग मनोज्ञ मिले उन्हें, जो पूजें परमेश ॥732॥
ॐ ह्रीं अर्हं मनोज्ञांगाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धैर्यवान जिनदेव तुम, नाम आपका 'धीर'।
धर्मधीर जिन जगत् को, पहुँचाते भव तीर ॥733॥
ॐ ह्रीं अर्हं धीराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शासन तुम 'गंभीर' जिन, वही आपका नाम।
पाने गुण गंभीरता, हम नित करें प्रणाम ॥734॥
ॐ ह्रीं अर्हं गंभीरशासनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप धर्म स्तंभ हो, 'धर्मयूप' जिन नाम।
भवजल में वो ना गिरे, जो पूजे तुम नाम॥735॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मयूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दयायाग' भगवान तुम, दयायज्ञ कर्तार।
दयाभाव हममें जगे, हम आये तुम द्वार॥736॥

ॐ ह्रीं अर्हं दयायागाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मरूपी रथ की धुरी, 'धर्मनेमी' जिन आप।
धर्मराह सबको दिखा, करते जिन निष्पाप॥737॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मनेमये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनियों के स्वामी तुम्हीं, कहें 'मुनीश्वर' इन्द्र।
मुनियों का पालन करो, हे जिनदेव ! मुनीन्द्र॥738॥

ॐ ह्रीं अर्हं मुनीश्वराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धर्मचक्र आयुध' धरें, यथानाम जिनदेव।
पापों से रक्षा करो, हे जिनदेव ! सदैव॥739॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मचक्रायुधाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रमें आत्मगुण में सदा, कहलाते तुम 'देव'।
सब सुख देते जगत् को, नाम सिद्ध तुम देव॥740॥

ॐ ह्रीं अर्हं देवाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर तुम 'कर्मघ्न' हो, करते कर्म विनाश।
कर्म हमारे नाश हो, कर दो आत्म विकास॥741॥

ॐ ह्रीं अर्हं कर्मघ्ने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'धर्मघोषण' विभू, करें धर्म का घोष।
धर्ममार्ग सबको दिखा, हरें कर्म का दोष॥742॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मघोषणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अमोघवाक्' जिनदेव तुम, वचन व्यर्थ नहीं जाय।
मौनसाधना से बनें, सिद्ध आप जिनराय ।।743।।
ॐ ह्रीं अर्हं अमोघवाचे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अमोघाज्ञ' जिनदेव तुम, आज्ञा आप अमोघ।
तुम आज्ञा जो पालते, पाते सुख संयोग ।।744।।
ॐ ह्रीं अर्हं अमोघाज्ञाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मल से रहित जिनेश तुम, 'निर्मल' संज्ञा धार।
निर्मल कर दो अब हमें, करो नाथ उद्धार ।।745।।
ॐ ह्रीं अर्हं निर्मलाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'अमोघशासन' प्रभु, शासन सफल महान्।
कर्म प्रशासन नाशने, हमने किया विधान ।।746।।
ॐ ह्रीं अर्हं अमोघशासनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'स्वरूप' भगवान हो, अतिशय सुन्दर रूप।
हम ध्यायें उस रूप को, पाने आत्म स्वरूप ।।747।।
ॐ ह्रीं अर्हं स्वरूपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति उत्तम ऐश्वर्य तुम, 'सुभग' आप भगवान।
हम पाने उस पुण्य को, करते सुभग विधान ।।748।।
ॐ ह्रीं अर्हं सुभगाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर पदार्थ का त्याग कर, 'त्यागी' तुम कहलाय।
त्याग धर्म पाने विभो, हम तुम शरणाय आय ।।749।।
ॐ ह्रीं अर्हं त्यागिने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'समयज्ञ' जिनेश हो, दिया समय का ज्ञान।
जानें हम निज समय को, वरें भेद विज्ञान ।।750।।
ॐ ह्रीं अर्हं समयज्ञाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समाधान करते सदा, आप 'समाहित'' देव।
समा गये तुम शरण में, भव्य जीव स्वयमेव॥751॥

ॐ ह्रीं अर्हं समाहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुख देते सुख से रहे, 'सुस्थित' जिनवर आप।
सच्चा सुख पाने प्रभु, हम करते नित जाप॥752॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुस्थिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्वास्थ्यभाक्' जिन ने किया, जग को स्वास्थ्य प्रदान।
स्वस्थ रहें तुम भक्त नित, इस हित किया विधान॥753॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्वास्थ्यभाजे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुस्थित आत्म स्वरूप में, 'स्वस्थ' आप जिनदेव।
परभावों से दूर हो, हम ध्यायें जिनदेव॥754॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्वस्थाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मरूप रज से रहित, 'नीरजस्क' भगवान।
रज से रहित करो हमें, हमने किया विधान॥755॥

ॐ ह्रीं अर्हं नीरजस्काय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सांसारिक उत्सव रहित, आप 'निरुद्धव' नाथ।
पंच महोत्सव हो गये, इस कारण तुम नाथ॥756॥

ॐ ह्रीं अर्हं निरुद्धवाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मलेप से रहित हो, तुम 'अलेप' परमेश।
कर्म लेप धोने सदा, हम पूजें परमेश॥757॥

ॐ ह्रीं अर्हं अलेपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निष्कलंक' आत्मा प्रभो, कर्म कलंक विहीन।
कर्म कलंक विनाश हित, हम तव पद में लीन॥758॥

ॐ ह्रीं अर्हं निष्कलंकात्मने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राग–द्वेष से रहित हो, 'वीतराग' जिनदेव।
राग–द्वेष मेरा हरो, जय–जय–जय जिनदेव॥759॥

ॐ ह्रीं अर्हं वीतरागाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विषयों की इच्छा रहित, आप 'गतस्पृह' नाथ।
जग अभिलाषा मेटने, झुका रहे हम माथ॥760॥

ॐ ह्रीं अर्हं गतस्पृहाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वश में कर सब इन्द्रियाँ, पाया केवलज्ञान।
'वश्येन्द्रिय' भगवान का, हमने किया विधान॥761॥

ॐ ह्रीं अर्हं वश्येन्द्रियाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'विमुक्तात्मा' प्रभो, कर्म जाल से मुक्त।
तुम सम चर्या पालकर, बन जायें हम मुक्त॥762॥

ॐ ह्रीं अर्हं विमुक्तात्मने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शत्रु प्रतिद्वन्दी नहीं, 'निःसपत्न' जिन आप।
तुम सम छोड़ें शत्रुता, हम होवें निष्पाप॥763॥

ॐ ह्रीं अर्हं निःसपत्नाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व इन्द्रियाँ जीतकर, बनें 'जितेन्द्रिय' देव।
बनने तुम सम हे प्रभो !, तुमको भजें सदैव॥764॥

ॐ ह्रीं अर्हं जितेन्द्रियाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्त भाव अत्यंत पा, जिनवर बनें 'प्रशांत'।
तुमको पूजें हम सदा, बनने नाथ प्रशांत॥765॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रशान्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनंतधामर्षि' प्रभो, धर तप तेज अनंत।
तपस्तेज पाने भजें, हम भी जिन भगवंत॥766॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतधामर्षये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगल में अति श्रेष्ठतम, 'मंगल' तुम भगवान।
तुम सम मंगल पायें हम, कर मंगल का ध्यान॥767॥
ॐ ह्रीं अर्हं मंगलाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नष्ट करें मल दोष सब, श्री 'मलहा' भगवान।
हरो हमारे पाप मल, सर्वसिद्ध भगवान॥768॥
ॐ ह्रीं अर्हं मलघ्ने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यसन सभी दुःख से रहित, आप 'अनघ' जिनदेव।
इस कारण हम पूजतें, मेटो व्यसन कुटैव॥769॥
ॐ ह्रीं अर्हं अनघाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'अनीदृक्' हो प्रभो, तुम सम कोई ना ओर।
तुमसे इस युग में हुई, जैन धर्म की भोर॥770॥
ॐ ह्रीं अर्हं अनीदृशे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम उपमा योग्य तुम, 'उपमाभूत' भदंत।
हम पूजें नित आपको, करों दुःखों का अंत॥771॥
ॐ ह्रीं अर्हं उपमाभूताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भाग्य जगे सब जीव का, तुम दृष्टि से देव।
भाग्य जगाने हम जपें, 'दिष्टि' नाम सदैव॥772॥
ॐ ह्रीं अर्हं दिष्टये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ तुम्हारे भक्त का, जागे भाग्य सदैव।
इसीलिये हर भक्त जन, कहते तुमको 'दैव'॥773॥
ॐ ह्रीं अर्हं दैवाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम इन्द्रियगोचर नहीं, नभ गोचर भगवान।
अतः 'अगोचर' आपका, करते भव्य विधान॥774॥
ॐ ह्रीं अर्हं अगोचराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गंध वर्ण स्पर्श रस, इनसे रहित 'अमूर्त'।
हम पूजें नित आपको, पाने शिवसुख मूर्त ॥775॥

ॐ ह्रीं अर्हं अमूर्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में तुम सशरीर हो, 'मूर्तिमान' परमेश।
मूर्त्त करें शिव सिद्धियाँ, देते शिव संदेश ॥776॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूर्तिमते श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में अद्वितीय आप हो, 'एक' आपका नाम।
एक आत्म सुख के लिए, हम नित करें प्रणाम ॥777॥

ॐ ह्रीं अर्हं एकस्मै श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सद्गुण बहु जिन आपमें, 'नैक' नियत हो आप।
निस्वार्थी हो भक्त के, हरते सब संताप ॥778॥

ॐ ह्रीं अर्हं नैकस्मै श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परपदार्थ में रंच भी, आप न हो तल्लीन।
तुम 'नानैकसुतत्वदृक्', करो हमें स्वाधीन ॥779॥

ॐ ह्रीं अर्हं नानैकतत्त्वदृशे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आध्यात्मिक शास्त्रज्ञ तुम, दर्शाते अध्यात्म।
जिनवर तुम 'अध्यात्मगम्य', देते पद परमात्म ॥780॥

ॐ ह्रीं अर्हं अध्यात्मगम्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोही मिथ्यात्वी तुम्हें, जान न पाये नाथ।
उन्हें 'अगम्यात्मा' लगे, भव्यों के तुम नाथ ॥781॥

ॐ ह्रीं अर्हं अगम्यात्मने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

योग कला जग को सिखा, बनें 'योगविद्' आप।
शुद्ध योग पाने भजें, भक्त बनें निष्पाप ॥782॥

ॐ ह्रीं अर्हं योगविदे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धन्य 'योगिवन्दित' तुम्हीं, योगि जन से वन्द्य।
योगसिद्धी हित हम भजें, तुमको नाथ त्रिसंध्य ॥783॥
ॐ ह्रीं अर्हं योगिवन्दिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान विशेष से, 'सर्वत्रग' हो आप।
सर्वत्रग बनता वही, जो करता तुम जाप ॥784॥
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वत्रगाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यमान रहते सदा, 'सदाभावी' जिनदेव।
मन मन्दिर में धर तुम्हें, पूजें भक्त सदैव ॥785॥
ॐ ह्रीं अर्हं सदाभाविने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'त्रिकालविषयार्थदृक्', देखें अर्थ त्रिकाल।
जो पूजें नित आपको, जाने अर्थ त्रिकाल ॥786॥
ॐ ह्रीं अर्हं त्रिकालविषयार्थदृशे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबके सुखकर्त्ता परम, तुम 'शंकर' भगवान।
पाने सच्चा आत्मसुख, हमने किया विधान ॥787॥
ॐ ह्रीं अर्हं शंकराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग को सच्चा सुख बता, पाया 'शंवद' नाम।
शंवद सम गुण लाभ हित, हम नित करें प्रणाम ॥788॥
ॐ ह्रीं अर्हं शंवदाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज मन को वश में किया, बनें 'दान्त' तुम नाथ।
मन वश करने की कला, सिखला दो हे नाथ ! ॥789॥
ॐ ह्रीं अर्हं दांताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय मन का दमन कर, 'दमी' बनें जिनदेव।
वह गुण पाने हम भजें, तुमको नाथ सदैव ॥790॥
ॐ ह्रीं अर्हं दमिने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'क्षान्तिपरायण' आप हो, क्षमावान भगवान।
क्षमाभाव हममें जगे, ऐसा दो सद्ज्ञान ॥791॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्षान्तिपरायणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबके स्वामी तुम प्रभो, 'अधिप' कहें सौ इन्द्र।
उनको हम पूजें सदा, जिन्हें भजें गण इन्द्र ॥792॥

ॐ ह्रीं अर्हं अधिपाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम आनंद रूप तुम, जिनवर 'परमानन्द'।
तुम सम चर्या जो करें, पायें 'परमानन्द' ॥793॥

ॐ ह्रीं अर्हं परमानन्दाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता निज-पर आत्म के, 'परात्मज्ञ' परमेश।
परम ज्ञान पाने भजें, तुमको भक्त हमेश ॥794॥

ॐ ह्रीं अर्हं परात्मज्ञाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप श्रेष्ठ से श्रेष्ठतम, प्रगटाते गुण वृन्द।
कहे 'परात्पर' जग तुम्हें, ध्यायें नित मुनिवृन्द ॥795॥

ॐ ह्रीं अर्हं परात्पराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'तीनजगद्वल्लभ' तुम्हीं, त्रिभुवन प्रिय भगवान।
त्रिजग विजय का भव्य को, तुम ही देते ज्ञान ॥796॥

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिजगद्वल्लभाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर! तुम 'अभ्यर्च्य' हो, त्रिभुवन पूज्य विशेष।
जो पूजें नित आपको, वो सुख पाय विशेष ॥797॥

ॐ ह्रीं अर्हं अभ्यर्च्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'त्रिजगमंगलोदय' तुम्हीं, सबको मंगलकार।
मंगल करते जगत् का, देते सौख्य अपार ॥798॥

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिजगन्मंगलोदयाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चरण कमल द्वय आपके, पूजें नित शत इन्द्र।
'त्रिजगपतिपूजांघ्रि' तुम, अतः पूजतें इन्द्र ॥799॥

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिजगत्पतिपूजांघ्रये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिलोकाग्र में राजते, ज्ञान शिखामणि आप।
तीन लोक तव ज्ञान में, झलके आपोआप ॥800॥

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिलोकाग्रशिखामणये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

तुम त्रिकाल दृष्टा भगवंता, 'त्रिकालदर्शी' हो गुणवंता।
सिद्धचक्र को हम सब ध्यायें, उनको मंगल अर्घ चढ़ायें॥801॥

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिकालदर्शिने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'लोकेश' लोक के स्वामी, लोकपूज्य जिन अन्तर्यामी॥ सिद्ध.. ॥802॥

ॐ ह्रीं अर्हं लोकेशाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'लोकधाता' जगरक्षक, लोकहितैषी जग संरक्षक ॥ सिद्ध.. ॥803॥

ॐ ह्रीं अर्हं लोकधात्रे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दृढ़व्रत' ने दृढ़व्रत को धारा, उससे किया जगत् उद्धारा॥ सिद्ध.. ॥804॥

ॐ ह्रीं अर्हं दृढव्रताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब लोकों में श्रेष्ठ तुम्हीं हो, अतः 'सर्वलोकातिग' जिन हो॥ सिद्ध.. ॥805॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वलोकातिगाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम पूजा के योग्य पूज्य हो, त्रिभुवन वंदित 'जगत्पूज्य' हो॥ सिद्ध..॥806॥

ॐ ह्रीं अर्हं जगत्पूज्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वलोक' के एक सारथी, किन्तु जिन तुम नहीं स्वार्थी॥ सिद्ध..॥807॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वलोकैकसारथये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'पुराण' प्राचीन जिनेश्वर, संस्कृति रक्षक तुम जगदीश्वर॥ सिद्ध..॥808॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुराणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ आत्मगुण तुमने पाये, अतः 'पुरुष' जिन आप कहाये।
सिद्धचक्र को हम सब ध्यायें, उनको मंगल अर्घ चढ़ायें॥809॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुरुषाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबसे प्रथम नाथ तुम आये, अतः 'पूर्व' जिन आप कहाये॥ सिद्ध..॥810॥

ॐ ह्रीं अर्हं पूर्वाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कृतपूरब' का कर विस्तारा, पाया नाम वही मनहारा॥ सिद्ध..॥811॥

ॐ ह्रीं अर्हं कृत पूर्वांगविस्तराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब देवों में मुख्य तुम्हीं हो, 'सिद्धदेव' जिनदेव तुम्हीं हो॥ सिद्ध..॥812॥

ॐ ह्रीं अर्हं आदिदेवाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब पुराण में प्रथम पूज्य हो, 'पुराणाद्य' जिन जगत्पूज्य हो॥ सिद्ध..॥813॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुराणाद्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम महान् हो प्रथम अधीश्वर, 'पुरुदेव' को भजें पुरन्दर॥ सिद्ध..॥814॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुरुदेवाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम देवों के देव जिनेश्वर, 'अधिदेवता' तुम परमेश्वर॥ सिद्ध..॥815॥

ॐ ह्रीं अर्हं अधिदेवतायै श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस युग के तुम मुख्य पुरुष हो, तुम 'युगमुख्य' विशेष पुरुष हो॥ सिद्ध..॥816॥

ॐ ह्रीं अर्हं युगमुख्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'युगज्येष्ठ' बड़े इस युग के, युग निर्माता हो इस युग के॥ सिद्ध..॥817॥

ॐ ह्रीं अर्हं युगज्येष्ठाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'युगादिस्थितिदेशक' तुम दादा, तुमने दी है युग मर्यादा॥ सिद्ध..॥818॥

ॐ ह्रीं अर्हं युगादिस्थितिदेशकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'कल्याणवर्ण' जिनदेवा, तन सुवर्ण सम भजते देवा॥ सिद्ध..॥819॥

ॐ ह्रीं अर्हं कल्याणवर्णाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम आप 'कल्याण' जिनेश्वर, करते जग कल्याण जिनेश्वर॥ सिद्ध..॥820॥

ॐ ह्रीं अर्हं कल्याणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप निरामय 'कल्य' जिनेश्वर, मोक्षमार्ग में सज्ज मुनीश्वर।
सिद्धचक्र को हम सब ध्यायें, उनको मंगल अर्घ चढ़ायें॥821॥

ॐ ह्रीं अर्हं कल्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग 'कल्याणक' लक्षणधारी, तुम कल्याण सुलक्षण धारी॥ सिद्ध..॥822॥

ॐ ह्रीं अर्हं कल्याणलक्षणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'कल्याणप्रकृति' भगवंता, जग कल्याणमयी भगवंता॥ सिद्ध..॥823॥

ॐ ह्रीं अर्हं कल्याणप्रकृतये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'दीप्तकल्याणात्मा' हो, भवि कल्याणमयी आत्मा हो॥ सिद्ध..॥824॥

ॐ ह्रीं अर्हं दीप्तकल्याणात्मने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म कालिमा रहित जिनेशा, आप 'विकल्मष' हो परमेशा॥ सिद्ध..॥825॥

ॐ ह्रीं अर्हं विकल्मषाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मकलंक रहित तुम स्वामी, श्री 'विकलंक' आप शिवगामी॥ सिद्ध..॥826॥

ॐ ह्रीं अर्हं विकलंकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देह रहित तुम 'कलातीत' हो, लेकिन ना जग से अतीत हो॥ सिद्ध..॥827॥

ॐ ह्रीं अर्हं कलातीताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम पापों को नशने वाले, 'कलिलघ्न' मन बसने वाले॥ सिद्ध..॥828॥

ॐ ह्रीं अर्हं कलिलघ्नाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वकला के तुम हो ज्ञाता, नाम 'कलाधर' कला प्रदाता॥ सिद्ध..॥829॥

ॐ ह्रीं अर्हं कलाधराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'देवदेव' देवों के देवा, निशदिन देव करें तुम सेवा॥ सिद्ध..॥830॥

ॐ ह्रीं अर्हं देवदेवाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगन्नाथ' तुम जग के स्वामी, जग पालक हो सब जग स्वामी॥ सिद्ध..॥831॥

ॐ ह्रीं अर्हं जगन्नाथाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'जगत्बंधु' जिनराजा, तुम्हें चढ़ायें हम नित खाजा॥ सिद्ध..॥832॥

ॐ ह्रीं अर्हं जगत्बंधवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगद्‌विभु' जगवैभव दाता, तुम स्वामी उत्तम सुखदाता।
सिद्धचक्र को हम सब ध्यायें, उनको मंगल अर्घ चढ़ायें॥833॥

ॐ ह्रीं अर्हं जगद्‌विभवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगत्‌हितैषी' जगहितकर्त्ता, तुम जग के सच्चे हितकर्त्ता॥ सिद्ध..॥834॥

ॐ ह्रीं अर्हं जगद्धितैषिणे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'लोकज्ञ' लोक के ज्ञाता, दिव्य अलौकिक सिद्धि प्रदाता॥ सिद्ध..॥835॥

ॐ ह्रीं अर्हं लोकज्ञाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'सर्वग' सर्वत्र व्याप्त हो, वीतराग सर्वज्ञ आप्त हो॥ सिद्ध..॥836॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वगाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगदग्रज' तुम बड़े जगत् में, हमें बसाओ सिद्ध जगत् में॥ सिद्ध..॥837॥

ॐ ह्रीं अर्हं जगदग्रजाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुमने ज्ञान ध्यान सिखलाया, नाम 'चराचरगुरु' कहलाया॥ सिद्ध..॥838॥

ॐ ह्रीं अर्हं चराचरगुरुवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन मंदिर में वास तुम्हारा, 'गोप्य' नाम रक्षक दुःखहारा॥ सिद्ध..॥839॥

ॐ ह्रीं अर्हं गोप्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गूढ़ स्वरूपी तुम 'गूढ़ात्मा', गूढ़ ज्ञान दे दो परमात्मा॥ सिद्ध..॥840॥

ॐ ह्रीं अर्हं गूढ़ात्मने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप गूढ़ विद्या के दाता, नाम 'गूढ़गोचर' सुखदाता॥ सिद्ध..॥841॥

ॐ ह्रीं अर्हं गूढ़गोचराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्विकार मुद्रा के धारी, 'सद्योजात' नाम गुणधारी॥ सिद्ध..॥842॥

ॐ ह्रीं अर्हं सद्योजाताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'प्रकाशात्मा' परमेष्ठी, पूजें चक्री सुर नर श्रेष्ठी॥ सिद्ध..॥843॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रकाशात्मने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जलती अग्नि सम तुम काया, वैसा ही तुम नाम कहाया॥ सिद्ध..॥844॥

ॐ ह्रीं अर्हं ज्वलज्ज्वलनसप्रभाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'आदित्यवर्ण' जिनदेवा, रवि सम तेजस्वी तुम देवा।
सिद्धचक्र को हम सब ध्यायें, उनको मंगल अर्घ चढ़ायें॥845॥

ॐ ह्रीं अर्हं आदित्यवर्णाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'भर्माभ' जगत् भ्रमहारी, तन सुवर्ण सम कान्तिधारी॥ सिद्ध..॥846॥

ॐ ह्रीं अर्हं भर्माभाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम प्रभा धरें 'सुप्रभ' जिन, धर्मप्रभा फैलाते श्री जिन॥ सिद्ध..॥847॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुप्रभाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम सुवर्ण सम आभाधारी, नाम 'कनकप्रभ' है मनहारी॥ सिद्ध..॥848॥

ॐ ह्रीं अर्हं कनकप्रभाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'सुवर्णवर्ण' सुखकारी, तन सुवर्ण सम सुख दातारी॥ सिद्ध..॥849॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुवर्णवर्णाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'रुक्माभ' रुक्म सम आभा, कंचन वर्ण देह की आभा॥ सिद्ध..॥850॥

ॐ ह्रीं अर्हं रुक्माभाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सूर्यकोटिसमप्रभ' तुम देवा, कोटि सूर्य करते तुम सेवा॥ सिद्ध..॥851॥

ॐ ह्रीं अर्हं सूर्यकोटिसमप्रभाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तपे स्वर्ण सम भास्वर हो तुम, निभ 'तपनीय' नाम जिनवर तुम॥ सिद्ध..॥852॥

ॐ ह्रीं अर्हं तपनीयनिभाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबसे ऊँचा तन प्रभु पाया, नाम 'तुंग' आगम ने गाया॥ सिद्ध..॥853॥

ॐ ह्रीं अर्हं तुंगाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'बालार्काभ' नाम के धारी, बालसूर्यसम प्रभा तुम्हारी॥ सिद्ध..॥854॥

ॐ ह्रीं अर्हं बालार्काभाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि समान कांति के धारी, नाम 'अनलप्रभ' अति सुखकारी॥ सिद्ध..॥855॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनलप्रभाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'संध्याभ्रबभ्रु' जिनदेवा, हम करते तुम पद की सेवा॥ सिद्ध..॥856॥

ॐ ह्रीं अर्हं संध्याभ्रबभ्रवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णमयी आभा के धारी, श्री 'हेमाभ' हेम से भारी।
सिद्धचक्र को हम सब ध्यायें, उनको मंगल अर्घ चढ़ायें॥857॥

ॐ ह्रीं अर्हं हेमाभाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'तप्तचामीकरप्रभ' तुम स्वामी, हम तप कर तुम सम हो स्वामी॥ सिद्ध..॥858॥

ॐ ह्रीं अर्हं तप्तचामीकरच्छवये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'निष्टप्तकनकच्छाया' हो, तुम स्वर्णिम् तन की छाया हो॥ सिद्ध..॥859॥

ॐ ह्रीं अर्हं निष्टप्तकनकच्छायाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'कनत्कांचनसन्निभ' हो, दीप्त स्वर्ण सम उज्ज्वल तुम हो॥ सिद्ध..॥860॥

ॐ ह्रीं अर्हं कनत्कांचनसन्निभाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन सुवर्णमय है तुम ईशा, श्री 'हिरण्यवर्णाय' जिनेशा॥ सिद्ध..॥861॥

ॐ ह्रीं अर्हं हिरण्यवर्णाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'स्वर्णाभ' स्वर्ण आभा हो, केवलज्ञान सूर्य आभा हो॥ सिद्ध..॥862॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्वर्णाभाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शान्तकुम्भनिभप्रभ' तुम देवा, स्वर्णिम देह तुम्हारी देवा॥ सिद्ध..॥863॥

ॐ ह्रीं अर्हं शांतकुंभनिभप्रभाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'द्युम्नाभ' धर्म द्युतिधारी, शरण सदा हम रहें तुम्हारी॥ सिद्ध..॥864॥

ॐ ह्रीं अर्हं द्युम्नाभाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णमयी तुम देह जिनेश्वर, आप 'जातरूपाभ' जिनेश्वर॥ सिद्ध..॥865॥

ॐ ह्रीं अर्हं जातरूपाभाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'तप्तजाम्बूनदद्युति' आप हो, स्वर्णमयी द्युतिवान आप हो॥ सिद्ध..॥866॥

ॐ ह्रीं अर्हं तप्तजाम्बूनदद्युतये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'सुधौतकलधौतश्री' हो, स्वर्णिम देह भावधर श्री हो॥ सिद्ध..॥867॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुधौतकलधौतश्रियै श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'प्रदीप्त' दैदीप्यमान हो, रत्नत्रय से दीप्तमान हो॥ सिद्ध..॥868॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रदीप्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'हाटकद्युति' हो भगवंता, स्वर्णतेज बल वीर्य अनंता।
सिद्धचक्र को हम सब ध्यायें, उनको मंगल अर्घ चढ़ायें॥869॥

ॐ ह्रीं अर्हं हाटकद्युतये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिष्ट जनों के ईष्ट आप हो, अतः नाथ 'शिष्टेष्ट' आप हो॥ सिद्ध..॥870॥

ॐ ह्रीं अर्हं शिष्टेष्टाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुष्टि पुष्टि के तुम हो दाता, 'पुष्टिद' नाम परम सुखदाता॥ सिद्ध..॥871॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुष्टिदाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुष्ट' परम औदारिक देही, बल अनंत सुख वीर्य विदेही॥ सिद्ध..॥872॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुष्टाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ आप 'स्पष्ट' प्रकट हो, भव्य जनों के बहुत निकट हो॥ सिद्ध..॥873॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्पष्टाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्पष्टाक्षर' नाम तुम्हारा, उच्चारण स्पष्ट तुम्हारा॥ सिद्ध..॥874॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्पष्टाक्षराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्ण समर्थ आप 'क्षमदेवा' सक्षम हो हम कर तुम सेवा॥ सिद्ध..॥875॥

ॐ ह्रीं अर्हं क्षमाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मशत्रु के तुम हो हन्ता, नाम आप 'शत्रुघ्न' महंता॥ सिद्ध..॥876॥

ॐ ह्रीं अर्हं शत्रुघ्नाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शत्रु रहित 'अप्रतिघ' आप हो, सर्व विजय हित जपें आपको॥ सिद्ध..॥877॥

ॐ ह्रीं अर्हं अप्रतिघाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'अमोघ' जिन ! सफल सिद्ध हो, त्रिभुवन में तुम ही प्रसिद्ध हो॥ सिद्ध..॥878॥

ॐ ह्रीं अर्हं अमोघाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपदेशक जिन आप 'प्रशास्ता', त्रिभुवन के हो अग्रिम शास्ता॥ सिद्ध..॥879॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रशास्त्रे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'शासिता' सबके रक्षक, भव्यों के तुम ही संरक्षक॥ सिद्ध..॥880॥

ॐ ह्रीं अर्हं शासित्रे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'स्वयंभू' स्वयं हुए हो, स्वयं आप भगवान हुए हो।
सिद्धचक्र को हम सब ध्यायें, उनको मंगल अर्घ चढ़ायें॥881॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंभुवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शान्तिनिष्ठ' अत्यंत शांत हो, तुम्हें देख सब भव्य शांत हो॥ सिद्ध.. ॥882॥

ॐ ह्रीं अर्हं शांतिनिष्ठाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम मुनि 'मुनिज्येष्ठ' मुनीशा, मुनियों के तुम ही हो ईशा॥ सिद्ध..॥883॥

ॐ ह्रीं अर्हं मुनिज्येष्ठाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शिवताति' शिवसुख के दाता, आप परम कल्याण प्रदाता॥ सिद्ध..॥884॥

ॐ ह्रीं अर्हं शिवतातये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शिवप्रद' जिन शिवमार्ग प्रदाता, मोक्ष परम कल्याण प्रदाता॥ सिद्ध..885॥

ॐ ह्रीं अर्हं शिवप्रदाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शान्तिद' जिन शिवशांति प्रदाता, परम श्रेष्ठ सुख-शांति प्रदाता॥ सिद्ध..॥886॥

ॐ ह्रीं अर्हं शांतिदाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप जगत् सुख-शांति कर्ता, नाम 'शान्तिकृत' सब दुःखहर्त्ता॥ सिद्ध.. ॥887॥

ॐ ह्रीं अर्हं शान्तिकृते श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतस्वरूप शांति के दाता, नाम 'शांति' चित् शांति प्रदाता॥ सिद्ध..॥888॥

ॐ ह्रीं अर्हं शांतये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कांतियुक्त तुम 'कांतिमान' हो, धर्मक्रांति कर्ता महान् हो॥ सिद्ध..॥889॥

ॐ ह्रीं अर्हं कांतिमतये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप कामनापूर्ण कराते, 'कामितप्रद' जिनदेव कहाते॥ सिद्ध..॥890॥

ॐ ह्रीं अर्हं कामितप्रदाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रेयोनिधि' तुम श्रेय प्रदाता, तुम कल्याण कोष सुख दाता॥ सिद्ध..॥891॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रेयोनिधये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम आधार धर्म के स्वामी, 'अधिष्ठान' हो अन्तर्यामी॥ सिद्ध..॥892॥

ॐ ह्रीं अर्हं अधिष्ठानाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अप्रतिष्ठ' तुम स्व-प्रतिष्ठ हो, नहीं किसी से पर प्रतिष्ठ हो।
सिद्धचक्र को हम सब ध्यायें, उनको मंगल अर्घ चढ़ायें ॥893॥

ॐ ह्रीं अर्हं अप्रतिष्ठाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप प्रतिष्ठा त्रिभुवन व्यापी, नाम 'प्रतिष्ठित' जन-मन व्यापी॥ सिद्ध...॥894॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रतिष्ठिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय स्थिर मोक्ष धाम में, 'सुस्थिर' स्वामी आप नाम है॥ सिद्ध...॥895॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुस्थिराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गमनरहित 'स्थावर' तुम स्वामी, आत्मभुवन में सुस्थिर स्वामी॥ सहस्र..॥896॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्थावराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचल रहे 'स्थाणू' तुम स्वामी, आत्मतीर्थ में निश्चल स्वामी॥ सिद्ध...॥897॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्थाणवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग विस्तृत तुम 'पृथीयान्' हो, भव उद्धारक मोक्षयान हो॥ सिद्ध...॥898॥

ॐ ह्रीं अर्हं पृथीयसे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'प्रथित' जग में प्रसिद्ध हो, सिद्धिप्रदाता आप सिद्ध हो॥ सिद्ध...॥899॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रथिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानादिक् गुण से महान् हो, पृथु आप पुरुषार्थवान हो॥ सिद्ध...॥900॥

ॐ ह्रीं अर्हं पृथवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

दिशा रूप वस्त्रों के धारी, 'दिग्वासा' दिग्भ्रम परिहारी।
सिद्धचक्र को हम सब ध्यायें, श्रीफल ध्वज संग अर्घ चढ़ायें॥901॥

ॐ ह्रीं अर्हं दिग्वाससे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वायुरूप करधनी धरे हैं, 'वातरशन' गुरुदेव बनें हैं॥ सिद्ध... ॥902॥

ॐ ह्रीं अर्हं वातरशनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्ग्रंथों के तुम हो स्वामी, 'निर्ग्रंथेश' जगत् में नामी॥ सिद्ध... ॥903॥

ॐ ह्रीं अर्हं निर्ग्रंथेशाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वस्त्ररहित जिन आप 'निरम्बर', छोड़ा वस्त्रों का आडम्बर॥ सिद्ध... ॥904॥

ॐ ह्रीं अर्हं निरम्बराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिग्रह रहित आप 'निष्किंचन', बतलाया जिनधर्म अकिंचन।
सिद्धचक्र को हम सब ध्यायें, श्रीफल ध्वज संग अर्घ चढ़ायें॥905॥

ॐ ह्रीं अर्हं निष्किंचनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निराशंस' इच्छा बिन तुम हो, जग प्रशंस हित कर्त्ता तुम हो॥ सिद्ध...॥906॥

ॐ ह्रीं अर्हं निराशंसाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्ञानचक्षु' के चक्षु निराले, ज्ञानामृत बरसाने वाले॥ सिद्ध...॥907॥

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानचक्षुषे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'अमोमुह' मोहरहित हो, राग-द्वेष परभाव रहित हो॥ सिद्ध...॥908॥

ॐ ह्रीं अर्हं अमोमुहाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तेजपुंज तुम 'तेजोराशी', मिथ्या मोह तिमिर के नाशी॥ सिद्ध...॥909॥

ॐ ह्रीं अर्हं तेजोराशये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनंतौज' में तेज अनंता, पाप तिमिर के तुम हो हंता॥ सिद्ध...॥910॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतौजसे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान समुद्र आप 'ज्ञानाब्धि', पायी तुमने प्रज्ञालब्धी॥ सिद्ध...॥911॥

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानाब्धये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'शीलसागर' जिनदेवा, शील समुद्र शील के देवा॥ सिद्ध...॥912॥

ॐ ह्रीं अर्हं शीलसागराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तेज स्वरूप आप 'तेजोमय', आत्म तेजधारी तेजोमय॥ सिद्ध...॥913॥

ॐ ह्रीं अर्हं तेजोमयाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्योति अपरिमित के तुम धारी, 'अमितज्योति' तुम गुण भंडारी॥ सिद्ध...॥914॥

ॐ ह्रीं अर्हं अमितज्योतिषे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्योतिर्मूर्ति' की आभा न्यारी, दिव्य आत्मबल के तुम धारी॥ सिद्ध...॥915॥

ॐ ह्रीं अर्हं ज्योतिर्मूर्तये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम अज्ञान तिमिर विनशाते, नाम 'तमोपह' सुरगण गाते॥ सिद्ध...॥916॥

ॐ ह्रीं अर्हं तमोपहाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'जगच्चूड़ामणि' स्वामी, जग सिरमोर पूज्य जगनामी।
सिद्धचक्र को हम सब ध्यायें, श्रीफल ध्वज संग अर्घ चढ़ायें॥917॥

ॐ ह्रीं अर्हं जगच्चूड़ामणये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दीप्त' आप दैदीप्यमान हो, ज्ञानसूर्य जग भासमान हो॥ सिद्ध... ॥918॥

ॐ ह्रीं अर्हं दीप्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुखी शांत 'शंवान्' आप हो, सुखदाता भगवान आप हो॥ सिद्ध... ॥919॥

ॐ ह्रीं अर्हं शंवते श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विघ्न विनायक' विघ्न विनाशी, विघ्न हरो विघ्नों के नाशी॥ सिद्ध... ॥920॥

ॐ ह्रीं अर्हं विघ्न विनायकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हे कलिघ्न !' अतिशय दिखलाओ, मेरे कलह पाप विनशाओ॥ सिद्ध... ॥921॥

ॐ ह्रीं अर्हं कलिघ्नाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'कर्मशत्रुघ्न' जिनेश्वर, कर्मशत्रु घातक परमेश्वर॥ सिद्ध...॥922॥

ॐ ह्रीं अर्हं कर्मशत्रुघ्नाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'लोकालोकप्रकाशक' स्वामी, सर्वज्ञेय ज्ञाता जगनामी॥ सिद्ध... ॥923॥

ॐ ह्रीं अर्हं लोकालोकप्रकाशकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निद्रा को प्रभु तुमने जीता, बनें 'अनिद्रालु' जग नेता॥ सिद्ध... ॥924॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनिद्रालवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम आलस्य रहित भगवंता, नाम 'अतंद्रालु' जयवंता॥ सिद्ध... ॥925॥

ॐ ह्रीं अर्हं अंतद्रालवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जागरुक' जिन जागृत रहते, जग को जागृत करते रहते॥ सिद्ध... ॥926॥

ॐ ह्रीं अर्हं जागरुकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'प्रमामय' ज्ञानमयी हो, दिव्य अतीन्द्रिय ज्ञानमयी हो॥ सिद्ध... ॥927॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रमामयाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'लक्ष्मीपति' लक्ष्मी के स्वामी, चऊ अनंत गुण दो जगनामी॥ सिद्ध... ॥928॥

ॐ ह्रीं अर्हं लक्ष्मीपतये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगज्ज्योति' तुम जग उजियाले, जगत् प्रकाशित करने वाले।
सिद्धचक्र को हम सब ध्यायें, श्रीफल ध्वज संग अर्घ चढ़ायें॥929॥

ॐ ह्रीं अर्हं जगज्ज्योतिषे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धर्मराज' भव्यों के राजा, पार उतारों धर्म जिहाजा॥ सिद्ध...॥930॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मराजाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'प्रजाहित' प्रजाहितैषी, सत्य शान्ति समभाव गवेषी॥ सिद्ध... ॥931॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रजाहिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'मुमुक्षु' मोक्ष प्रदाता, मोक्ष प्रदर्शक मोह विधाता॥ सिद्ध...॥932॥

ॐ ह्रीं अर्हं मुमुक्षवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'बंधमोक्षज्ञ' जिनेशा, बंध मोक्ष ज्ञायक परमेशा॥ सिद्ध... ॥933॥

ॐ ह्रीं अर्हं बंधमोक्षज्ञाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'जिताक्ष' इन्द्रिय के जेता, इन्द्रिय विषय कषाय विजेता॥ सिद्ध... ॥934॥

ॐ ह्रीं अर्हं जिताक्षाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जित मन्मथ' तुम काम विजेता, मोक्षमार्ग के सच्चे नेता॥ सिद्ध... ॥935॥

ॐ ह्रीं अर्हं जितमन्मथाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप शांत रस सदा पिलाते, 'प्रशांतरसशैलूष' कहाते॥ सिद्ध... ॥936॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रशांत रस शैलुषाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'भव्यपैटकनायक' हो, भव्यों को शिवसुख दायक हो॥ सिद्ध...॥937॥

ॐ ह्रीं अर्हं भव्यपैटकनायकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म 'मूलकर्त्ता' तुम स्वामी, आद्य प्रवर्तक तुम जगनामी॥ सिद्ध... ॥938॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलकर्त्रे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अखिलज्योति' तुम अन्तर्यामी, जगत् प्रकाशक तुम जगनामी॥ सिद्ध...॥939॥

ॐ ह्रीं अर्हं अखिलज्योतिषे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'मलघ्न' मल विघ्न नशाते, सर्व पाप मल को विनशाते॥ सिद्ध... ॥940॥

ॐ ह्रीं अर्हं मलघ्नाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'मूलकारण' शिवपथ के, भवदधि तारण तुम भव जग के।
सिद्धचक्र को हम सब ध्यायें, श्रीफल ध्वज संग अर्घ चढ़ायें ॥941॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलकारणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम यथार्थ वक्ता जिनेश हो, 'आप्त' आप त्रिभुवन जिनेश हो॥ सिद्ध... ॥942॥

ॐ ह्रीं अर्हं आप्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनों के स्वामी 'वागीश्वर', वचनसिद्धी देते परमेश्वर॥ सिद्ध... ॥943॥

ॐ ह्रीं अर्हं वागीश्वराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम कल्याण स्वरूपी स्वामी, श्री 'श्रेयान्' आप जगनामी॥ सिद्ध... ॥944॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रेयसे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग कल्याण रूप तुम वाणी, 'श्रायसोक्ति' वाणी कल्याणी॥ सिद्ध... ॥945॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रायसोक्तये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सार्थक वचन तुम्हारे देवा, 'निरुक्तवाक्' तुम हो जिनदेवा॥ सिद्ध... ॥946॥

ॐ ह्रीं अर्हं निरुक्तवाचे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम वक्ता आप 'प्रवक्ता', भक्त तुम्हारे बनें प्रवक्ता॥ सिद्ध... ॥947॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रवक्त्रे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वचसामीश' वचन के स्वामी, वचन सिद्धी देते तुम स्वामी॥ सिद्ध... ॥948॥

ॐ ह्रीं अर्हं वचसामीशाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कामदेव को तुमने जीता, बनें 'मार्जित्' काम विजेता॥ सिद्ध... ॥949॥

ॐ ह्रीं अर्हं मार्जिते श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अखिल विश्व के तुम हो ज्ञाता, 'विश्वभाववित्' तुम जगत्राता॥ सिद्ध... ॥950॥

ॐ ह्रीं अर्हं विश्व भावविदे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम तन के हो तुम धारी, नाम 'सुतनु' जग मंगलकारी॥ सिद्ध... ॥951॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुतनवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन बंधन से रहित जिनेश्वर, 'तनुनिर्मुक्त' आप परमेश्वर॥ सिद्ध... ॥952॥

ॐ ह्रीं अर्हं तनुनिर्मुक्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मलीन उत्तम ज्ञानी हो, 'सुगत' आप ! प्रज्ञादानी हो।
सिद्धचक्र को हम सब ध्यायें, श्रीफल ध्वज संग अर्घ चढ़ायें॥953॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुगताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हतदुर्नय' मिथ्यानय हंता, मोह तिमिर नाशक भगवंता॥ सिद्ध... ॥954॥

ॐ ह्रीं अर्हं हतदुर्नयाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'श्रीश' श्री के ईश्वर हो, लक्ष्मी सुखदाता ईश्वर हो॥ सिद्ध... ॥955॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लक्ष्मी सेवा करें तुम्हारी, तुम 'श्रीश्रितपादाब्ज' बिहारी॥ सिद्ध... ॥956॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीश्रितपादाब्जाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम भय रहित 'वीतभी' स्वामी, हमें वीतभय कर दो स्वामी॥ सिद्ध... ॥957॥

ॐ ह्रीं अर्हं वीतभियै श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'अभयंकर' जग भय हर्त्ता, नष्ट करें सब भय भगवंता॥ सिद्ध... ॥958॥

ॐ ह्रीं अर्हं अभयंकराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'उत्सन्नदोष' जिनदेवा, नष्ट करें सब दोष सदैवा॥ सिद्ध... ॥959॥

ॐ ह्रीं अर्हं उत्सन्नदोषाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विघ्न रहित 'निर्विघ्न' तुम्हीं हो, विघ्न विनाशक नाथ तुम्हीं हो॥ सिद्ध... ॥960॥

ॐ ह्रीं अर्हं निर्विघ्नाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ आप निज गुण में स्थिर हो, इससे तुम 'निश्चल' जिनवर हो॥ सिद्ध... ॥961॥

ॐ ह्रीं अर्हं निश्चलाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'लोकवत्सल' हो स्वामी, स्नेहपात्र जन-जन के स्वामी॥ सिद्ध... ॥962॥

ॐ ह्रीं अर्हं लोकवत्सलाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'लोकोत्तर' उत्कृष्ट लोक में, आप श्रेष्ठ हो सर्वलोक में॥ सिद्ध... ॥963॥

ॐ ह्रीं अर्हं लोकोत्तराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक के तुम हो स्वामी, नाम 'लोकपति' सब जगनामी॥ सिद्ध... ॥964॥

ॐ ह्रीं अर्हं लोकपतये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वलोक के नैन सितारे, 'लोकचक्षु' जग पालनहारे।
सिद्धचक्र को हम सब ध्यायें, श्रीफल ध्वज संग अर्घ चढ़ायें॥965॥

ॐ ह्रीं अर्हं लोकचक्षुषे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप अपरिमित धी के धारी, श्री 'अपारधी' धी दातारी॥ सिद्ध... ॥966॥

ॐ ह्रीं अर्हं अपारधिये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'धीरधी' हो भगवंता, तुममें शाश्वत ज्ञान अनंता॥ सिद्ध... ॥967॥

ॐ ह्रीं अर्हं धीरधियै श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'बुद्धसन्मार्ग' प्रदाता, समीचीन पथ के तुम ज्ञाता॥ सिद्ध... ॥968॥

ॐ ह्रीं अर्हं बुद्धसन्मार्गाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप कर्ममल रहित जिनेश्वर, 'शुद्ध' सिद्ध हो हे परमेश्वर!॥ सिद्ध... ॥969॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सूनृतपूतवाक्' तुम ज्ञानी, सत्य पवित्र श्रेष्ठ तुम वाणी॥ सिद्ध... ॥970॥

ॐ ह्रीं अर्हं सूनृतपूतवाचे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान पराकाष्ठा को पाये, 'प्रज्ञापारमिता' कहलाये॥ सिद्ध... ॥971॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रज्ञापारमिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'प्राज्ञ' हो हे परमेशा!, अतिशय बुद्धिमान जिनेशा॥ सिद्ध... ॥972॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्राज्ञाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विषय कषाय विरत तुम देवा, 'यति' कहलाते हो जिनदेवा॥ सिद्ध... ॥973॥

ॐ ह्रीं अर्हं यतये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नियमितेन्द्रिय' तुम हो स्वामी, इन्द्रिय को वश करते स्वामी॥ सिद्ध... ॥974॥

ॐ ह्रीं अर्हं नियमितेन्द्रियाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगत्पूज्य जिन तुम 'भदंत' हो, तुम भक्ति से कर्म अंत हो॥ सिद्ध... ॥975॥

ॐ ह्रीं अर्हं भदंताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जीवों का भला किया है, नाम 'भद्रकृत' सिद्ध किया है॥ सिद्ध... ॥976॥

ॐ ह्रीं अर्हं भद्रकृते श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम कल्याणरूप हो देवा, 'भद्र' आप देते शिव मेवा।
सिद्धचक्र को हम सब ध्यायें, श्रीफल ध्वज संग अर्घ चढ़ायें॥977॥

ॐ ह्रीं अर्हं भद्राय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनवांछित वस्तु के दाता, 'कल्पवृक्ष' हो जग सुखदाता॥ सिद्ध...॥978॥

ॐ ह्रीं अर्हं कल्पवृक्षाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'वरप्रद' इच्छित वरदानी, शरणागत को सब सुखदानी॥ सिद्ध...॥979॥

ॐ ह्रीं अर्हं वरप्रदाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'समुन्मूलितकर्मारि' तुम हो, कर्मशत्रु परिहारी तुम हो॥ सिद्ध...॥980॥

ॐ ह्रीं अर्हं समुन्मूलितकर्मारये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कर्मकाष्ठाशुशुक्षणि' हो, कर्मेंधन दाहक अग्नि हो॥ सिद्ध...॥981॥

ॐ ह्रीं अर्हं कर्मकाष्ठाशुशुक्षण्यै श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व कार्य में निपुण जिनेश्वर, तुम 'कर्मण्य' सिद्ध परमेश्वर॥ सिद्ध...॥982॥

ॐ ह्रीं अर्हं कर्मण्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ समर्थ आप 'कर्मठ' हो, जीते आप कर्म कर्मठ को॥ सिद्ध...॥983॥

ॐ ह्रीं अर्हं कर्मठाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु का 'प्रांशु' नाम कहाया, प्रभु ने उन्नत भाग्य जगाया॥ सिद्ध...॥984॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रांशवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्रहण त्याग के ज्ञाता तुम हो, 'हेयादेयविचक्षण' तुम हो॥ सिद्ध...॥985॥

ॐ ह्रीं अर्हं हेयादेयविचक्षणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शक्ति अनंतों के तुम धारी, 'शक्तिअनंत' नाम सुखकारी॥ सिद्ध...॥986॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतशक्तये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छिन्न-भिन्न के योग्य नहीं हो, हे जिनवर 'अच्छेद्य' तुम्हीं हो॥ सिद्ध...॥987॥

ॐ ह्रीं अर्हं अच्छेद्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म-जरा-मृत रोग निवारि, सबके नाशक तुम 'त्रिपुरारि'॥ सिद्ध...॥988॥

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिपुरारये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रैकालिक द्रव्यों के ज्ञाता, नाम 'त्रिलोचन' लोचन दाता।
सिद्धचक्र को हम सब ध्यायें, श्रीफल ध्वज संग अर्घ चढ़ायें ॥989॥

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिलोचनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम त्रिकाल तत्त्वों के ज्ञानी, नाम 'त्रिनेत्र' नेत्र सुखदानी ॥ सिद्ध... ॥990॥

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिनेत्राय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'त्र्यम्बक' त्रैकालिक जग ज्ञाता, जग को प्रज्ञा नेत्र प्रदाता ॥ सिद्ध... ॥991॥

ॐ ह्रीं अर्हं त्र्यम्बकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'त्र्यक्ष' प्रत्यक्ष जगत् के ज्ञानी, सबको अक्षय ज्ञान प्रदानी ॥ सिद्ध... ॥992॥

ॐ ह्रीं अर्हं त्र्यक्षाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान नेत्र के धारी, 'केवलज्ञानवीक्ष्य' सुखकारी ॥ सिद्ध... ॥993॥

ॐ ह्रीं अर्हं केवलज्ञानवीक्षणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'समन्तभद्र' परमेश्वर, सबको मंगलरूप जिनेश्वर ॥ सिद्ध... ॥994॥

ॐ ह्रीं अर्हं समन्तभद्राय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्त किये तुमने कर्मारि, आप नाम सार्थक 'शान्तारि' ॥ सिद्ध... ॥995॥

ॐ ह्रीं अर्हं शान्तारये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धर्माचार्य' आप धर्मेश्वर, धर्म प्रबंधक धर्म धुरन्धर ॥ सिद्ध... ॥996॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्माचार्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दयाकोष तुम 'दयानिधि' हो, देते सबको दया विधि हो ॥ सिद्ध... ॥997॥

ॐ ह्रीं अर्हं दयानिधये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूक्ष्म पदार्थों को प्रभु जानें, 'सूक्ष्मदर्शी' जग उनको माने ॥ सिद्ध... ॥998॥

ॐ ह्रीं अर्हं सूक्ष्मदर्शिने श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुमने कामदेव को जीता, 'जितानंग' सत्पथ अभिनेता ॥ सिद्ध... ॥999॥

ॐ ह्रीं अर्हं जितानंगाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'कृपालु' कृपा युक्त हो, सब कर्मों से आप मुक्त हो।
सिद्धचक्र को हम सब ध्यायें, श्रीफल ध्वज संग अर्घ चढ़ायें॥1000॥

ॐ ह्रीं अर्हं कृपालवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'धर्मदेशक' हो स्वामी, धर्मदेशना देते स्वामी॥ सिद्ध...॥1001॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मदेशकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'शुभंयु' शुभ परिणामी, शुभ परिणाम जनक जगनामी॥ सिद्ध...॥1002॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुभंयवे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'सुखसाद्भूत' सुखदाता, सुखाधीन देते सुखसाता॥ सिद्ध... ॥1003॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुखसाद्भूताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'पुण्यराशि' भगवंता, पुण्यकला सिखलाय अनंता॥ सिद्ध...॥1004॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यराशये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'अनामय' रोग रहित हो, हम भक्ति से रोग रहित हो॥ सिद्ध...॥1005॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनामयाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मसुरक्षक 'धर्मपाल' हो, तुम पद में हम नम्र भाल हो॥ सिद्ध...॥1006॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मपालाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगत्पाल' तुम जग के रक्षक, हम भक्तों के तुम संरक्षक॥ सिद्ध...॥1007॥

ॐ ह्रीं अर्हं जगत्पालाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'धर्मसाम्राज्यनायका', भक्तों को जिनधर्म दायका॥ सिद्ध...॥1008॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मसाम्राज्य नायकाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'उदितोदित माहात्म्य' बढ़ाये, यथानाम गुण प्रभु ने पाये॥ सिद्ध...॥1009॥

ॐ ह्रीं अर्हं उदितोदित माहात्म्याय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग से सुप्त निजातम ध्याये, जिन 'व्यवहार सुषुप्त' कहाये॥ सिद्ध...॥1010॥

ॐ ह्रीं अर्हं व्यवहार सुषुप्ताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर गुण चौरासी लक्षं, सिद्धों ने पाये प्रत्यक्षम्॥ सिद्ध...॥1011॥

ॐ ह्रीं अर्हं चतुरशीतिलक्ष गुणाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धिपुरी के पथिक जिनेश्वर, सिद्ध राज्य दिलवाते सत्वर॥ सिद्ध...॥1012॥

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धपुरी पान्थाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वच तन योग अयोगी त्यागे, सिद्ध बने हम जिनपद लागे।।
सिद्धचक्र को हम सब ध्यायें, श्रीफल ध्वज संग अर्घ चढ़ायें।।1013।।

ॐ ह्रीं अर्हं संहत ध्वनये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

योगकिट्टि निर्लेपन उद्यत, सिद्ध बने हम पूजन उद्यत।। सिद्ध... ।।1014।।

ॐ ह्रीं अर्हं योगकिट्टि निर्लेपन उद्यताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मपाश सब तड़-तड़ टूटे, सिद्ध सभी बंधन से छूटें।। सिद्ध... ।।1015।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रुटत्कर्मपाशाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम निर्जरा करते जिनवर, कर्म कालिमा झड़ती झर-झर।। सिद्ध... ।।1016।।

ॐ ह्रीं अर्हं परम निर्जराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निष्पीतं पर्याय अनंता, कर्मज् भव नाशें भगवंता।। सिद्ध... ।।1017।।

ॐ ह्रीं अर्हं निष्पीतानंत पर्यायाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अठ दस सहस शील के धारी, सिद्ध बने चिद् ब्रह्म विहारी।। सिद्ध... ।।1018।।

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टादश सहस्र शीलेशाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच लघु स्वर का उच्चारण, गुणस्थान चउदश भव तारण।। सिद्ध...।।1019।।

ॐ ह्रीं अर्हं पंच लघु अक्षर श्रितये श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल कर्म का नाश किया है, सिद्ध द्रव्य को प्राप्त किया है।। सिद्ध... ।।1020।।

ॐ ह्रीं अर्हं द्रव्य स्थिताय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शंभु छंद

जिनवर अयोगि द्विचरम समय, निज कर्म बहत्तर नाश करें।
निज चिदानंद अमृत पीते, प्रतिपल निज शक्ति विकास करें।।
श्री सिद्धचक्र मंडल रचकर, हम सिद्धचक्र प्रतिपल ध्यायें।
मम शीघ्र सिद्ध हो कार्य सभी, हम सिद्ध रूप को प्रगटायें।।1021।।

ॐ ह्रीं अर्हं द्वा सप्तति प्रकृत्याशिषे श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर अयोग निज चरम समय, तेरह कर्मों का हनन करें।
कर्मों के बंधन कटते ही, प्रभु सिद्ध लोक में गमन करें।। श्री सिद्ध.. ।।1022।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रयोदश कर्म प्रकृति प्रणूते श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धों का केवलज्ञान श्रेष्ठ, सब लोकालोक प्रकाशक है।
गुणगण अनंत का बोधक यह, हम सब इसके आराधक हैं॥
श्री सिद्धचक्र मंडल रचकर, हम सिद्धचक्र प्रतिपल ध्यायें।
मम शीघ्र सिद्ध हो कार्य सभी, हम सिद्ध रूप को प्रगटायें॥1023॥

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञान निर्भराय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जीवों का लक्षण विशेष, इक ज्ञान चेतना कहलाये।
चिज्ज्ञान धनानन्द मयी सिद्ध, निज ज्ञान चेतना प्रगटाये॥ श्री सिद्ध..॥1024॥

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानैक चिज्जीवघनाय श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

इक हजार चौबीस थालों में, वसुविध अर्घ सजायें।
सिद्धचक्र मंडल विधान का, हम पूर्णार्घ चढ़ायें॥
यह विधान जो करें करायें, वो सब पाप नशायें।
जिन सम उत्तम गुण प्रगटाकर, सिद्ध परम पद पायें॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व रोग, शोक, पीड़ा, कुष्ठ रोग, आधि, व्याधि, उपद्रव, कर्म कष्ट, कोरोना महाव्याधि हराय, अपमृत्यु विनाशनाय, ऋद्धि-सिद्धि, सुख-शांति, आरोग्य, ऐश्वर्य, धन-धान्य, जिनगुणसंपत्ति प्रदायकाय चतुर्विंशति अधिक सहस्रगुण विभूषित श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- घट हजार से अधिक ले, प्रभु पर कर जलधार।
पायें हम जिन शरण में, परम शांति उद्धार॥

शांतये शांतिधारा।

दोहा- सब ऋतुओं के पुष्प ले, पुष्पाञ्जलि चढ़ाय।
स्वपर विश्व कल्याण हित, हम जिन भक्ति रचाय॥

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा नमः। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा- इक हजार चौबीस गुण, सब सिद्धों के जान।
उनकी जयमाला पढ़ें, कर हम सिद्ध विधान॥

(चौपाई)

जय-जय अर्हत् सिद्ध जिनेश्वर, युग-युग से होते तीर्थंकर।
निज-निज माता के सुत प्यारे, श्रेष्ठ पिता के राजदुलारे॥1॥

जिन उत्तम कुल धन्य किया था, आर्य खण्ड में जन्म लिया था।
सुरपति जन्म कल्याण मनायें, मेरुगिरि अभिषेक रचायें॥2॥

जिनकी वसु योजन गहराई, अन्दर चउ योजन चौड़ाई।
सुन्दर मुख इक योजन वाले, एक हजार आठ कलशा ले॥3॥

क्षीरोदधि से सुर-भर लायें, इन्द्र युगल सुर कलश ढुरायें।
शक्र सहित शचि धारा करती, जिनशिशु को श्रृंगारित करती॥4॥

प्रभु का नाम रखे सुरपति जब, कोटि असंख्यों वाद्य बजें तब।
फिर आनंद नाटक करता है, सिद्धचक्र संस्तव करता है॥5॥

जब प्रभु के कल्याणक आयें, सहस्र नाम संस्तव सुर गायें।
उससे भारी पुण्य कमायें, अंतराय अपना विनशायें॥6॥

सिद्धचक्र अर्चा सुखकारी, सर्वश्रेष्ठ मंगल दुःखहारी।
इसका महाविधान मनोहर, सर्वसिद्धी दाता मंगलकर॥7॥

इसका पाठ मात्र भी पावन, ध्यान जाप मंगल मनभावन।
हम श्रद्धा से पाठ करेंगे, सब दुःख संकट नाथ हरेंगे॥8॥

तिमिर भगे ज्यों रवि के आगे, नाम मंत्र से अघतम भागे।
गज सिंह सर्प शांत हो जाये, महायुद्ध जीते जय पाये॥9॥

मिटे प्राण घातक बीमारी, ईति भीति दुर्घटना भारी।
नाम जाप से जग प्रसिद्ध हो, सब विद्यायें सुगम सिद्ध हों॥10॥

घर परिवार बसे सुखकारी, बने सफल शासक व्यापारी।
सफल होय वैराग्य साधना, मिटे जीव की मोह वासना॥11॥

यही महामृत्युञ्जय दाता, अपमृत्यु पर विजय दिलाता।
मृत्यु महोत्सव का यह साधन, सफल करे चउविध आराधन॥12॥

इसका विधिवत व्रत धारे जो, लघुतम वसु उपवास करें जो।
या पूरे उपवास करे जो, आगे अर्हत् सिद्ध बने वो॥13॥

सिद्धचक्र को हम नित ध्यायें, ध्वजा अर्घ जयमाल चढ़ायें।
'गुप्तिनंदी' नामों को ध्याये, शाश्वत जिनगुण सम्पत् पाये॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व कुष्ठादि रोग–शोक–दुःख–संकट–कोरोना महामारी–अपमृत्यु–अंतराय विनाशक धन–धान्य–ऋद्धि–सिद्धि, सद्बुद्धि, ऐश्वर्य–सौभाग्य प्रदायक, महामृत्युंजय कारक, पंच पापहारक, पंच परम पद दायक चतुर्विंशति अधिक सहस्रनाम विभूषित श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

त्रय रत्नयुत सब सिद्ध का जो नित्य आराधन करें।
श्री सिद्धचक्र विधान से वो मोक्ष सुख साधन वरे॥
तीर्थेश आदि श्रेष्ठ पद, श्री सिद्ध पूजक पायेंगे।
'गुप्ति' सकल दुःख नाश वो, गुणगण अनंतों पायेंगे॥

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

बड़ी जयमाला

दोहा– तीर्थंकर भी नितप्रति, जपें सिद्ध का नाम।
उनकी जयमाला पढ़ें, बने सिद्ध सुख धाम।।

(शंभु छंद)

जय विश्व हितंकर शिवशंकर, जय त्रिभुवन ईश्वर सिद्ध प्रभो।
जय तीर्थंकर के ध्येय रूप, सर्वज्ञ सुखी जग सिद्ध विभो।।
तीर्थंकर जिनवर सिद्ध बने, गणधर गुरुवर भी सिद्ध बने।
ऋद्धि सिद्धिधर सिद्ध बने, आचार्य नरेश्वर सिद्ध बने।।1।।

श्री उपाध्याय भी सिद्ध बने, मुनिराज कर्म नश सिद्ध बने।
त्रयकाल अनंतों सिद्ध बने, भव्यात्म जीव ही सिद्ध बने।।
सब सिद्ध पूर्व संसारी थे, वसु कर्म भार से भारी थे।
निज कर्म कालिमा धोकर ही, सब सिद्ध बने अविकारी थे।।2।।

चारों गति वाले भव्य जीव, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक।
पाँचों लब्धि को पा करके, पहले पाते उपशम सम्यक्।।
फिर कर्मभूमिया मानव ही, केवलि श्रुतकेवलि के पद में।
निज मोह सप्त का क्षय करके, क्षायिक सम्यक्त्वी श्रेष्ठ बने।।3।।

केवलि द्वय के पद सन्निध ही, भवि सोलहकारण भाव वरें।
तीर्थंकर प्रकृति को बांधे, जग पंचकल्याणक श्रेष्ठ करें।।
देवेन्द्र सभी मेरुगिरी पर, ले जाकर जन्म कल्याण करें।
तीर्थंकर त्रिभुवन के नायक, अतिशय युत पंचकल्याण वरें।।4।।

तीर्थंकर व बहु भव्य जीव, मुनिदीक्षा अंगीकार करें।
सामायिक छेदोपस्थापन, गुणथान सहस्त्रों वार वरें।।

फिर क्षपक श्रेणि चढ़ते जाते, गुणथान दशम में मोह नशें।
निर्ग्रंथ तीन घाति क्षयकर, सब पाप कर्म प्रकृति विनशें॥5॥

भू से धनु पाँच सहस ऊपर, श्री समोशरण रचना होती।
जिसमें कमलासन से ऊपर, जिनवर की दिव्यध्वनि खिरती॥
सामान्य केवली जिनवर की, बस गंधकुटी रचना होती।
बारह कोठे में भव्य जीव, सुनते पाते जिनवच मोती॥6॥

तीर्थंकर जिन का श्री विहार, त्रिभुवन को मंगलकारी है।
अनगिन जीवों को भव तारक, निज आत्म सौख्यदातारी है॥
फिर योग निरोध करें भगवन्, निज कर्म पिण्ड क्षय करते हैं।
चऊ कर्म अघाति क्षय करके, तत्क्षण सिद्धालय वरते हैं॥7॥

पाँचों विदेह में कुछ भविजन, इक भव में तीर्थंकर बनते।
दो या त्रय कल्याणक पाकर, जग मंगलकर सब अघ हनते॥
तीर्थंकर पद बिन अन्य श्रमण, तप-तप कर चौंसठ ऋद्धि वरें।
निज आठ कर्म का क्षय करके, सब सिद्ध बने शिवसिद्धी वरें॥8॥

इस ढाई द्वीप में पाँच भरत, ऐरावत पाँच विदेह महा।
पैंतालिस लाख महायोजन, अति विस्तृत मानुष लोक कहा॥
कुल इक सौ सत्तर कर्म धरा, इनमें मुनि कर्म विनाश करें।
वे सिद्ध बने लोकाग्र बसे, भव्यों का आत्म विकास करें॥9॥

श्री सिद्ध अतीत अनंत हुए, हो रहे सम्प्रति वा होंगे।
उन सिद्ध अनंतानंतों में, आगे हम भी इक दिन होंगे॥
सब सिद्ध अनंतानंत गुणी, गणधर भी गिन नहीं सकते हैं।
उनके कुछ गुण की पूजा हम, इस सिद्धार्चा में करते हैं॥10॥

श्री सिद्धचक्र मंडल विधान, जो भव्य महोत्सव सहित करें।
व्रत एकाशन उपवास सहित, जप ध्यान नृत्य संगीत करें॥
वो सर्व पाप दुःख रोग नशे, यश सुख धन वैभव ज्ञान वरें।
श्रीपाल और मैना सती सम, क्रम-क्रम से मोक्ष महान् वरे॥11॥

इस व्रत विधान के अतिशय से, कोढ़ी नर कामदेव बनते।
रोगी निरोग जड़ ज्ञानवान, सब सुख पा सिद्ध देव बनते॥
सब कार्य पूर्व त्रय रत्न सहित, श्री सिद्धचक्र को हम ध्यायें।
'गुप्तिनंदी' सब कर्म नशे, निज सिद्ध रूप को पा जाये॥12॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं चत्वारिंशदधिक द्विसहस्त्र गुण समन्वितेभ्यः श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यों नमः जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

त्रय रत्नयुत सब सिद्ध का, जो नित्य आराधन करें।
श्री सिद्धचक्र विधान से वो मोक्ष सुख साधन वरें॥
तीर्थेश आदि श्रेष्ठ पद, श्री सिद्ध पूजक पायेंगे।
'गुप्ति' सकल दुःख नाश कर, गुण गण अनंतों पायेंगे॥

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री सिद्ध भगवान की पूजा करते हुए मैनासुन्दरी

आचार्यश्री को आहार देते हुए राजा श्रीपाल वा मैनासुन्दरी

प्रशस्ति

(चौपाई)

श्री सिद्धों को नमन हमारा, चौबीस जिन को नमन हमारा।
आदि शांति को नमन सदा हो, पार्श्व वीर को नमन सदा हो॥1॥

गणधर सूरी को हम ध्यायें, पाठक मुनि को शीश नवायें।
जिनवाणी माता को वन्दन, पूर्वाचार्यों को शत वन्दन॥2॥

वर्द्धमान शासन जयवंता, गुरु गौतम गणधर जयवंता॥
मूलसंघ शासन जयवंता, कुन्द कुन्द सूरी जयवंता॥3॥

सरस्वती श्री गच्छ कहाये, बलात्कार गण नाम कमाये।
श्रमणावली अविच्छिन्न कहायी, आदि सिन्धु ने ध्वज फहरायी॥4॥

उनके शिष्य महावीर कीर्ति, जग में फैलायें जिन कीर्ति।
उनके नन्दन कुन्थुसागर, जगद्गुरु विख्यात गुणाकर॥5॥

कुन्थु गुरू के शिष्य अनेकों, कनकनन्दी को अग्रिम देखो।
उनसे दीक्षित शिक्षित मैं हूँ, कुन्थु शिष्य गुप्तिनंदी हूँ॥6॥

गुरु ने मुझको श्रमण बनाया, मुनिवर से आचार्य बनाया।
आर्षमार्ग संरक्षक कहलाया, धर्म प्रवर्तक हमें बनाया॥7॥

देव-शास्त्र-गुरु कृपा मिली है, माँ जिनवाणी हृदय खिली है।
पहले मुक्तक भजन बनाये, पूजन कविता छन्द बनाये॥8॥

रत्नत्रय सुविधान बनाया, प्रथम ग्रन्थ में आनंद आया।
नवग्रह शान्ति विद्याप्राप्ति, विजय पताका चौंसठ ऋद्धि॥9॥

श्री मृत्युंजय तीस चौबीसी, पंचकल्याणक लक्ष्मी प्राप्ति।
भैरव पद्मावती की अर्चा, विद्वानों में जिसकी चर्चा॥10॥

इत्यादि कई ग्रन्थ सृजन कर, दीक्षायें दे संघ सृजन कर।
नासिक अंजनगिरी हम आये, उसका जीर्णोद्धार कराये॥11॥

चिंतामणि का अतिशय पाया, शांतिनाथ का अतिशय छाया।
इच्छापूरक आदि जिनेश्वर, करते अतिशय देते भर-भर॥12॥

धर्मतीर्थ नव सृजन कराया, नव जिन तीरथ भव्य बनाया।
भव्य पंचकल्याण कराया, जिसका गौरव जग ने गाया॥13॥

इत्यादिक् मंदिर बहुतेरे, संत भवन भी बने घनेरे।
दीक्षा शिक्षा शिविर समाधी, जिनगुरु अर्चा कर आराधी॥14॥

युग सहस्र चौदह दिल्ली में, संघ जिनालय शांति चरण में।
सिद्धार्चा नव सृजन किया था, धर्मतीर्थ आ पूर्ण किया था॥15॥

सिद्धचक्र जो करे कराये, सब दुःख संकट रोग नशाये।
मनवांछित सब सिद्धी पाये, विजय सफलता यश सुख पाये॥16॥

हम नित ध्यायें सिद्ध अनंता, नाशें कर्म अनंतानंता।
धर्म विजय कर हो जयवंता, 'गुप्तिनंदी' हो सिद्ध महंता॥17॥

दोहा

जब तक रवि शशि लोक में, होवे सिद्ध विधान।
'गुप्तिनंदी' की भूल को, शोध पढ़ें विद्वान॥
मोहादिक् सब कर्म को, नशने लिखा विधान।
सिद्धार्चा त्रय काल कर, बने सिद्ध भगवान॥

॥ इति सिद्धचक्र विधान सम्पूर्णम्॥

सिद्धचक्र चालीसा

दोहा– सिद्ध अनंतानंत को, कोटी अनंत प्रणाम।
चौबीसों भगवान का, करते हम गुणगान॥
परमेष्ठी गणधर प्रभु, जिनवाणी को ध्याय।
सिद्धचक्र श्रीयंत्र का, चालीसा नित गाय॥

(चौपाई)

सिद्धप्रभु सिद्धी के दाता, सर्वकार्य में सिद्धि प्रदाता।
सिद्धचक्र को शीश झुकायें, चालीसा हम इनका गायें॥1॥
सिद्ध प्रभु का ध्यान लगायें, सिद्धि विनायक सिद्ध कहाये।
ॐ णमो सिद्धाणं बोले, सिद्ध भक्ति में मनवा डोले॥2॥
तीर्थंकर सिद्धों को ध्यायें, नमः सिद्ध कह दीक्षा पायें।
घाति अघाति कर्म विनशायें, आगे सिद्ध परम पद पायें॥3॥
सिद्धालय में सिद्ध विराजे, हर मंदिर में सिद्ध विराजे।
सिद्ध सावयव ठोस बनायें, ऐसी प्रतिमा सदा बिठाये॥4॥
सुन्दर हो सिद्धों की प्रतिमा, खड्गासन पद्मासन प्रतिमा।
सिद्ध जिनेश्वर सब दुःखहंता, त्रिभुवन पूजित श्री भगवंता॥5॥
अंगोपांग बनाओ सुन्दर, जिनको पूजे शक्र पुरंदर।
चिह्न केश नख नहीं बताये, प्रभु की नाशा दृष्टि कहाये॥6॥
दर्शन ज्ञान–चरित गुणधारी, क्षायिक नवलब्धि के धारी।
गुण गण आठ अनंत बतायें, कर्मों के क्षय से गुण पाये॥7॥
कार्य पूर्व सिद्धों को ध्यायें, मिले सफलता सुख यश पाये।
तन मन प्रभु की भक्ति रचायें, वचन सदा प्रभु के गुण गाये॥8॥
महासति मैना कहलाये, कोढ़ी नृप संग ब्याह रचाये।
पति के संग गुरु दर्शन पाये, गुरु उसको प्रभु भक्ति बताये॥9॥
व्रत संयम मैना अपनाये, सिद्धचक्र सुविधान रचायें।
हर दिन वो अभिषेक दिखाये, न्हवन देख सब अति हर्षाये॥10॥

सति छिड़के सब पे गंधोदक, कितना पावन ये गंधोदक।
सबका कुष्ठ रोग मिट जाये, गंधोदक सब पाप मिटाये॥11॥
सबका तन कंचन बन जाये, प्रभु भक्ति में मन लग जाये।
नृप श्रीपाल प्रभु को ध्याये, गंधोदक सब रोग मिटाये॥12॥
कोढ़ी कामदेव बन जाये, मैना का यश बढ़ता जाये।
सिद्धचक्र है अतिशयकारी, महिमाभारी संकट हारी॥13॥
सिद्धों को सुख-दुःख में ध्याये, कष्टों से प्रभु हमें बचाये।
मानी का ये मान घटायें, दुर्बुद्धि सद्बुद्धि पाये॥14॥
पापी भी व्यसनों को छोड़े, कर्मों की वो कड़ियाँ तोड़े।
रोगी जन बन जाय निरोगी, सिद्धों को ध्या बनते योगी॥15॥
जब भी हमको कर्म रूलायें, कर्म असाता हमें सताये।
सिद्धमंत्र हम जपते जायें, श्रीपति सब सिद्धों को ध्यायें॥16॥
सिद्धं सिद्धं हे प्रभु सिद्धं !, पूर्ण विशुद्धं हे प्रभु सिद्धं !।
शाश्वत रूपं हे प्रभु सिद्धं !, ज्ञान स्वरूपं हे प्रभु सिद्धं !॥17॥
अर्चा पूजा करें वंदना, दुःख क्षय हेतू करें वंदना।
बोधि पाने करें वंदना, जिनपद पाने करें वंदना॥18॥
मैना सति का चमत्कार है, सिद्ध प्रभु को नमस्कार है।
श्री श्रीपाल श्रमण बन जाये, कर्म काट वे सिद्ध कहाये॥19॥
सब सिद्धों को शीश झुकायें, हम भी सिद्ध महापद पायें।
बनी आर्यिका मैना रानी, निश्चित पाये शिव रजधानी॥20॥
सिद्ध प्रभु शाश्वत सुख पाये, हम भी प्रभु से वो सुख पाये।
गुप्तिनंदी गुरु भक्ति कराये, सिद्धचक्र सुविधान रचाये॥21॥

दोहा- चालीसा श्री सिद्ध का, करो कराओ पाठ।
दीप धूप खेकर करो, चालीसे का पाठ॥
सिद्ध प्रभु को है नमन, सिद्ध शरण सुखकार।
आस्था से 'आस्था' नमें, होने भवदधि पार॥

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री णमो सिद्धाणं स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

सिद्धचक्र विधान की आरती

(तर्ज- माईन-माईन...)

सिद्धचक्र मंडल विधान की, आरती हम सब गायें।
ॐ णमो सिद्धाणं बोलें, सिद्धप्रभु को ध्यायें।
बोलो सिद्धप्रभु की जय...

सिद्धशिला से ऊपर अग्रिम, सिद्ध अनंत विराजे।
हर भक्तों के मन मंदिर में, सिद्ध जिनेश विराजे॥
ढाई द्वीप से सिद्ध हुये सब-2.. उनकी आरती गायें।
ॐ णमो सिद्धाणं..... बोलो...... ॥1॥

महासती मैना सुन्दरी ने, कोढ़ी पति को पाया।
सिद्धचक्र मंडल विधान कर, उनका कोढ़ मिटाया॥
सात शतक कोढ़ी का मैना-2, युगपत् कोढ़ मिटाये।
ॐ णमो सिद्धाणं..... बोलो...... ॥2॥

तीन काल और तीन लोक में, सब सिद्धों को ध्यायें।
सिद्धचक्र मंडल विधान की, रचना भव्य रचायें॥
गुप्तिनंदी गुरु ये विधान रच-2, भारी पुण्य कमायें।
ॐ णमो सिद्धाणं..... बोलो...... ॥3॥

करें कराये ये विधान हम, कर्म विधि विनशायें।
सप्त सुरों में प्रभु भक्ति कर, अपना भाग्य जगायें॥
'आस्था' से हम सिद्ध प्रभु को-2, अपना शीश झुकायें॥
ॐ णमो सिद्धाणं..... बोलो...... ॥4॥

***

समुच्चय अर्घ

(शेर छंद)

मैं पूजता अरिहंत सिद्ध सूरि को सदा।
उवज्झाय सर्व साधु और शारदा मुदा।।
गणधर गुरु चरण की नित्य अर्चना करूँ।
दश धर्म सोलह भावना की अर्चना करूँ।।1।।

अरहंत भाषितार्थ दया धर्म को भजूँ।
श्री तीन रत्न रूप मोक्ष धर्म को जजूँ।।
त्रैलोक्य के कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य को ध्याऊँ।
चैत्यालयों का ध्यान लगा अर्घ चढ़ाऊँ।।2।।

सब सिद्ध क्षेत्र तीर्थ क्षेत्र को भजूँ सदा।
औ तीन लोक के समस्त तीर्थ सर्वदा।।
चौबीस जिनवरों व बीस नाथ को ध्याऊँ।
जल आदि अष्ट द्रव्य ले पूर्णार्घ चढ़ाऊँ।।3।।

दोहा : जल आदिक वसु द्रव्य की, लेकर आये थाल।
महाअर्घ अर्पण करें, प्रभु को नमें त्रिकाल।।

ॐ ह्रीं द्रव्य सहित भावपूजा भाववंदना त्रिकाल पूजा त्रिकाल वंदना करे करावै भावना भावै श्री अरहंतसिद्ध आचार्य उपाध्यायसर्वसाधु पंच परमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग करणानुयोग चरणानुयोग द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि दशलाक्षणिकधर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। विदेह क्षेत्रस्थ विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। जल, थल, आकाश, गुफा, पहाड़, सरोवर, नगर-नगरी, ऊर्ध्वलोक, मध्यलोक, अधोलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः। पाँच भरत पाँच ऐरावत संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस

जिनराजेभ्यो नमः। नंदीश्वर द्वीप संबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। पंचमेरू संबंधी अस्सी जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलाशगिरी, चंपापुर, पावापुर, गिरनार, सोनागिर, मथुरा, गजपंथा, मांगीतुंगी, तपोभूमि आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री, मूढ़बद्री, देवगढ़, चंदेरी, पपौरा, हस्तिनापुर, अयोध्या, कुंथुगिरी, पुष्पगिरी, अंजनगिरी, धर्मतीर्थ, वरूर,राजगृही, तारंगा, चमत्कार, महावीरजी, पदमपुरा, तिजारा, अहिच्क्षेत्र, कचनेर, जटवाड़ा, पैठण, गोम्मटेश्वर, चंवलेश्वर, बिजौलिया, चांदखेड़ी, पाटन, कुण्डलपुर, अणिन्दा वृषभदेव णमोकार ऋषि तीर्थ आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारण ऋद्धिधारी सप्त परमर्षिभ्यो नमः। भूत–भविष्यत–वर्तमान काल संबंधी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवंतं कृपावंतं श्री वृषभादि महावीरपर्यंतं चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारत देशे.................... प्रान्ते–नगरे.......... मासानांमासे.........मासे.........पक्षे.........तिथौ..........वासरे मुनि आर्यिकाणां श्रावक श्राविकाणां, क्षुल्लक, क्षुल्लिकानां, सकल कर्मक्षयार्थं (जलधारा) जलादि महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(27 श्वासोच्छवास में 9 बार णमोकार मंत्र पढ़ें।)

शांतिपाठ (हिन्दी)

चौपाई

(शांतिपाठ बोलते समय पुष्पाञ्जलि क्षेपण करते रहें)

शशि सम निर्मल जिन मुखधारी, शील सहस्र गुणों के धारी।
लक्षण वसु शत त्रयपदधारी, कमल नयन शांति सुखकारी॥1॥

(नोट–यहाँ शांतिधारा करें।)

शांतिनाथ पंचम चक्रीश्वर, पूजें तुमको इन्द्र मुनीश्वर।
शांति करो हे शांति ! जिनेश्वर, जगत् शांतिहित नमते गणधर॥2॥

आठों प्रातिहार्य मनहारी, ये जिन वैभव हैं सुखकारी।
तरु अशोक पुष्पों की वर्षा, दिव्य ध्वनि सिंहासन रवि सा॥3॥

छत्र चँवर भामंडल चम-चम, देव-दुंदुभि बजती दुम-दुम।
शांति करो त्रय जग में स्वामी, शीश झुकाता तुमको स्वामी॥4॥
आप अनंत चतुष्टय धारी, मंगल द्रव्य आठ अघहारी।
सर्व विघ्न प्रभु आप नशाओं, हे शांति प्रभु ! शांति दिलाओ॥5॥
पूजक राजा शांति पायें, मुनि तपस्वी शांति पायें।
राष्ट्र नगर में शांति छाये, शांति जगत् में हे जिन ! आये॥6॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् (9 बार णमोकार मंत्र का जाप करें।)

(दोनों हाथ में चावल या पुष्प लेकर करबद्ध हो विसर्जन पाठ पढ़े मंत्र के साथ पुष्पाञ्जलि करें)

विसर्जन पाठ

(दोहा)

जाने अनजाने हुई, प्रभु पूजा में चूक।
मैं अज्ञान अबोध हूँ, क्षमा करो सब चूक॥1॥
जानूँ नहीं आह्वान मैं, पूजा से अनजान।
ज्ञान विसर्जन का नहीं, क्षमा करो भगवान॥2॥
अक्षर पद और मात्रा, व्यंजनादि सब शब्द।
कम ज्यादा कुछ कह दिया, छूट गये हों शब्द॥3॥
मिथ्या हो सब दोष मम, शरण रखो भगवान।
तव पूजा करके प्रभु, बन जाऊँ भगवान॥4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं अस्मिन् नित्य पूजाभिषेक विधाने आगच्छत सर्वे देवाः स्वस्थाने गच्छतः-3जः-3स्वाहा।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(9 बार णमोकार का जाप करें।) (नोट-दीपक लेकर श्रीजी की मंगल आरती करें।)

(यह दोहा बोलते हुए आशिका ग्रहण करें)

दोहा : गंध पुष्प प्रभु रज यही, इसको शीश झुकाय।
पुष्प लिये आह्वान के, अपने शीश लगाय॥

(तुभ्यम् नमस्त्रि बोलते हुये भगवान को गुरु को नमस्कार करें।)

***

प्रज्ञायोगी आचार्य गुप्तिनंदी गुरुदेव विभिन्न मुद्राओं में

पुस्तक पुण्यार्जक

श्री विजेन्द्र जी-श्रीमती निर्मल जी,

शीतल, आदित्य, जितेन्द्र जैन परिवार

गुरुग्राम (हरियाणा)

मुद्रक : राजू ग्राफिक आर्ट (संदीप शाह) जयपुर मो. 9829050791

पुस्तक पुण्यार्जक

श्रीमती मिलन अशोक, अमित–सुनिधि, सुमित–ईशिका, निकुंज–संगीता
कु. गुणी, तन्वी, दिशी राजश्री, आदित्य, अनन्या, रक्षक, दैविक जैन
(BBK) परिवार, हैंदरबाद